Approved as Text-Book by the Patna University.

प्रवेशिका—

संस्कृत-रचनानुवाद-शिक्षा

OR

MATRICULATION
SANSKRIT COMPOSITION & TRANSLATION

प्रणेता—

महामहोपाध्याय

पण्डित रघुनन्दन त्रिपाठी

साहित्याचार्य।

सुबोध ग्रन्थमाला—ग्रन्थ ७

प्रवेशिका
संस्कृत-रचनानुवाद-शिक्षा

OR

MATRICULATION

Sanskrit Composition

AND

TRANSLATION.

—:o:❀:o:—

लेखक—

महामहोपाध्याय पण्डित रघुनन्दन त्रिपाठी,

साहित्याचार्य, व्याकरण-सांख्य-योगोपाध्याय, विद्यासागर,

सदस्य—विहारोत्कल-संस्कृत-मन्त्रणासभा तथा

मन्त्री—विहार संस्कृत-सञ्जीवन-

समाज, आदि ।

—:❀:—

प्रकाशक—

ग्रन्थमाला-कार्यालय

बाँकीपुर ।

संस्करण] १९३३ [मूल्य १।)

सूचीपत्र

पहला अध्याय

दूसरा अध्याय

नोट—प्रत्येक विषय के नीचे विस्तृत अभ्यास है।

विषय. पृष्ठ.

तीसरा अध्याय

चौथा अध्याय

पाँचवाँ अध्याय

विषय. पृष्ठ.

लकारार्थ निर्णय (Use of tenses and moods) १२६–१४१

वाच्य (Voice) १५६–१६३

वाच्यपरिवर्तन (Change of Voice) १६४–१६६

उत्तरार्द्ध.

पहला प्रकरण

दूसरा प्रकरण

तीसरा प्रकरण

विषय. पृष्ठ.

चौथा प्रकरण

पाँचवाँ प्रकरण

भूमिका।

"आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्"

बहुत दिनों से मेरा विचार था कि मैंने ३० वर्ष से ऊपर स्कूल और कालेज में अंग्रेजी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाकर जो अनुभव प्राप्त किया है उसको यदि लिपिबद्ध कर डालूँ तो उससे विद्यार्थियों का बहुत उपकार हो। किन्तु संस्कृत की अनेक पुस्तकों को बाजार में फैली हुई देख कर उस काम से हिचकता था। इतने ही में पटना यूनिवर्सिटी ने स्कूलों में हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करने का नियम प्रचलित कर दिया। इससे हिन्दी द्वारा संस्कृत-शिक्षा को विशेष उत्तेजना मिली। अन्यान्य विश्व-विद्यालयाधीन विद्यालयों में भी हिन्दी द्वारा संस्कृत सिखलाने की व्यवस्था बढ़ती जा रही है। इन सब कारणों से मैंने उपयुक्त पुस्तक का अभाव देख कर अपने अनुभव को पुस्तकरूप में प्रकाशित करने का विशेष सुयोग समझा।

रचना और अनुवाद की शिक्षा के बिना किसी भाषा का ज्ञान होना बहुत ही कठिन है और संस्कृत ऐसी कठिन भाषा का तो कुछ कहना ही नहीं है। आधुनिक अंग्रेजी विद्यालयों में जिस प्रकार संस्कृत की पठन-पाठन-प्रणाली प्रचलित है उसमें रचनानुवाद की शिक्षा विशेष आवश्यक है। क्योंकि व्याकरण की विशेष शिक्षा देने पर भी लड़कों को जैसा लाभ होना चाहिये वैसा उनको इनके बिना नहीं होता और विद्यार्थी भी संस्कृत व्याकरण की शुष्क शिक्षा की अपेक्षा रचना तथा

अनुवाद के द्वारा व्याकरण शिक्षा को बहुत पसन्द करते हैं। विशेष बात यह है कि विश्वविद्यालय के प्रश्नपत्रों में तीन भाग रचनानुवाद के सम्बन्ध में ही प्रश्न रहते हैं और इनके विषय में शिक्षक वैसा ध्यान नहीं देते। इसका विशेष अनुभव विश्व-विद्यालय के परीक्षक होने से भी मुझे है। इसीसे मैंने ऐसी पुस्तक लिखी।

संस्कृत-शिक्षा में व्याकरण का प्रधान स्थान है। विना व्याकरण-ज्ञान के संस्कृत-शिक्षा सुसम्पन्न नहीं हो सकती। इसीसे क्या अनुवाद की पुस्तक हो, वा वाक्यरचना की पुस्तक हो, सब में व्याकरण की शरण लेनी पड़ती है। इसके विना किसी प्रकार संस्कृत शिक्षा का काम चल ही नहीं सकता; पद-पद पर अशुद्धि की संभावना बनी रहती है। इससे इस पुस्तक में भी व्याकरण की सारी आवश्यक बातें आ गयी हैं।

विद्यार्थियों को पढ़ाने के समय जिन २ अभावों का मैंने अनुभव किया है, उन्हीं की पूर्ति के लिये इस पुस्तक में प्रयत्न किया है। इसमें व्याकरण के विषय बड़े ही विशद रूप से समझाये गये हैं। रचना में व्याकरण का विशेषतः बोध कराने के लिये प्रकरणानुसार ऐसे कई एक ज्ञातव्य और कठिन विषयों की कई जगह अवतारणा की है जो पढ़ने के साथ ही हृदय में पैठ जाते हैं। व्याकरण के जो नियम अत्यन्त प्रयोजनीय हैं उनको सूत्र और कारिका के रूप में दे दिया है और उनकी व्याख्या कर दी है। इससे छात्रों को नियम याद कर रखने में बड़ी सुगमता होगी। रचना तथा अनुवाद की ऐसी क्रमिक सुगम रीति बतायी गयी है कि विद्यार्थी सहज ही इन दोनों विषयों को सीख सकते हैं। इनके अतिरिक्त कारक, समास आदि प्रत्येक विषय

के इतने भिन्न २ ढंग के अधिकाधिक अभ्यास नीचे लिख दिये गये हैं जिनके उत्तर करने से रचना और अनुवाद के विषय विशद रूप से हृदयंगम हो जाँयगे। प्रत्येक उदाहरण संस्कृत हिंदी दोनों में है जो रचना तथा हिंदी से संस्कृत और संस्कृत से हिंदी अनुवाद करने में आदर्श का काम देंगे। साथ ही अंग्रेजी से संस्कृत तथा संस्कृत से अंग्रेजी अनुवाद वालों के लिये भी आवश्यक स्थानों पर अनुवाद की सारी ज्ञातव्य बातें बतला दी गयी हैं। रचना और अनुवाद के सम्बन्ध में जो आरम्भिक नियम हैं वे विद्यार्थियों के बड़े काम के हैं। व्याकरण-रचना तथा अनुवाद के सम्बन्ध में ऐसी बहुत सी बातें इसमें लिखी गई हैं जो अब तक किसी पुस्तक में नहीं दिखलायी पड़ी हैं और न किसी वैयाकरण ने ही उन्हें स्पष्ट किया है। एकपद-रचना, अशुद्धि-संशोधन आदि छात्रों के अत्युपयोगी विषय नये ढंग से लिखे और समझाये गये हैं। पटना यूनिवर्सिटी और स्कूल लीविंग परीक्षा के सन् १९२३ के प्रश्न उत्तर सहित दे दिये गये हैं। सारांश यह कि जिससे संस्कृत के जिज्ञासु परीक्षार्थी विद्यार्थी चाहें तो बिना शिक्षक की सहायता के ही थोड़े ही समय में और थोड़े ही परिश्रम में संस्कृत-रचना और अनुवाद में प्रवेश कर सकें और शिक्षक भी सुगम रीति से सहज ही छात्रों को संस्कृत-शिक्षा दे सकें, इसके लिये मैंने यावच्छक्य कोई कोर कसर नहीं रक्खी है। मैं अपने प्रयत्न में कहाँ तक सफल हुआ हूँ, इसका विचार शिक्षक और छात्र ही कर सकते हैं।

प्रधानतः पुस्तक के दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध में मुख्यतः वाक्याङ्ग का और उत्तरार्द्ध में शब्द-सङ्गठन का वर्णन है। इनमें जो सूत्र दिये गये हैं उनमें कितने पाणिनि के, कितने विद्या-

सागर के और कितने स्वकल्पित हैं। सरलता की दृष्टि से इनका सङ्कलन किया है। शास्त्रार्थ वा वाद-विवाद के विचार से इन पर दृष्टि नहीं डाली गयी है। कृदन्त और तद्धित में जितने प्रत्यय हैं और इनके सम्बन्ध में जितने पूर्वापर विचार हैं, अन्यान्य प्रकरणों में इनके अनुसार जितने कार्य होते हैं और जितने इनके साधक, बाधक तथा नियामक हैं उन पर विचार किया जाय तो सम्भव है कि इन प्रकरणों में कुछ न्यूनता दिखलाई पड़े। पर मैं इसके लिये विवश हूँ। क्योंकि सब पर विचारने से संस्कृत ऐसी भाषा के जटिल व्याकरण का संक्षिप्त और सुगम कोई मार्ग ही नहीं निकल सकता। मैं अगले संस्करण में इस न्यूनता की पूर्ति का भी प्रयत्न करूँगा और पुस्तक प्रस्तुत होने पर जो दो चार विषय मेरे मन में उठ रहे हैं उन्हें भी जोड़ दूँगा।

संस्कृत व्याकरण के सरल तथा सुगम पथ के आविष्कारक श्रीईश्वरचन्द्र विद्यासागर और संस्कृत-रचना की नूतन प्रणाली के प्रदर्शक पण्डितवर वामन शिवराम आपटे के संस्कृत-प्रेमी चिर ऋणी हैं। अब तक भिन्न २ भाषाओं में संस्कृत व्याकरण और रचना की जितनी पुस्तकें बनी हैं, सबों ने इनकी पुस्तकों से सहायता ली है। मुझे भी इनसे सहायता मिली है। इनके अतिरिक्त आजकल की बहुत सी भिन्न २ भाषा की प्रचलित व्याकरण और रचना की पुस्तकें मुझे दिखलायी पड़ी हैं और उनसे भी मैंने लाभ उठाया है। अतः मैं इन सबों की हृदय से कृतज्ञता स्वीकार करता हूँ।

पुस्तक-प्रणयन का कार्य्य परिश्रम-सापेक्ष है। मैं बहुत वृद्ध हो गया हूँ। यदि इस पुस्तक के सङ्कलन में मेरे परम प्रिय पण्डित रामदहिन मिश्र अपने अध्यवसाय से सहायता नहीं

देते तो पुस्तक इतनी शीघ्र प्रस्तुत नहीं होती। मैं इसके लिये उन्हें अंतःकरण से आशीर्वाद देता हूँ। मेरे परम बन्धु, संस्कृत हिन्दी के आचार्य, पण्डितप्रवर, 'श्रीकवि' पण्डित विजयानन्द त्रिपाठी, 'विद्यारत्न' ने मुद्रण-पत्र के संशोधन में अमूल्य सहायता की है। इसके लिये मैं उनका भी बहुत कृतज्ञ हूँ।

यदि इस पुस्तक से संस्कृत-शिक्षा को कुछ भी लाभ हो और शिक्षकों तथा छात्रों को कुछ भी सहायता मिले, तो मैं अंतिम समय की इस संस्कृत-सेवा को सफल समझूँगा।

रघुनन्दन त्रिपाठी

द्वितीयावृत्ति की भूमिका

पटना यूनिवर्सिटी तथा विहार की टेक्स्टवुक कमेटी ने मैट्रिकुलेशन और स्कूल लीविंग सार्टिफिकेट परीक्षा के लिये पाठ्य-पुस्तकों में इसे रख कर मुझे अनुगृहीत किया है। इसलिये मैं उन्हें शतशः साधुवाद देता हूँ।

इस वार पुस्तक का आमूल संशोधन कर दिया गया है। शिक्षकों की इच्छानुसार अन्त में संस्कृत अनुवाद के लिये चुने हुए हिन्दी गद्यांश दे दिये गये हैं।

समय और आवश्यकता के अनुसार पुस्तक को और भी उपयोगी बनाने की इच्छा रखता हूँ। प्रकाशक ने मूल्य घटाकर विद्यार्थियों का बड़ा उपकार किया है।

रघुनन्दन त्रिपाठी

रचना के प्रारम्भिक नियम

(Introductory rules of Composition)

आदौ कर्तृपदं वाच्यं द्वितीयादिपदं ततः ।
अन्ते क्रियापदं देयमेतद्वाक्यस्य लक्षणम् ॥

पहले कर्ता, फिर द्वितीयादि कारकान्त पद और अन्त में क्रिया रख कर वाक्य बनाया जाता है। यही रचना का साधारण नियम है। जैसे, "इन्द्रः द्वादश वर्षाणि न ववर्ष।" "स वानरेण सह चिरं गोष्ठीसुखमनुभूतवान्।" "स दीर्घकालं राजानं सेवमानः आस्ते", इत्यादि।

संस्कृत में अन्वय करने की एक ऐसी रीति है कि उपर्युक्त नियम में उलट-फेर होने पर भी न तो किसी प्रकार का व्याकरण-दोष ही माना जाता और न किसी प्रकार की अर्थ-बाधा ही होती है। जैसे, "अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः"। "दृष्टा खलु मया तत्र भवत्या मालविकायाः प्रियसखी बकुलावलिका श्राविता च तमर्थं भवता या संदिष्टाः।" "जगतः पितरौ वंदे पार्वती-परमेश्वरौ।"

पात्र, स्थान, पद, प्रमाण, भाजन आदि कितने शब्द हैं जो विधेय (Predicate) के स्थान पर व्यवहृत होते हैं। ये उद्देश्य (Subject) किसी लिंग या किसी वचन का क्यों नहीं हो, सदा एकवचन और नपुंसक ही रहते हैं। इस अवस्था में क्रिया उद्देश्य के अनुसार होगी, विधेय के अनुसार नहीं। जैसे, "विविधमहमभूवं पात्रमालोकितानाम्"। "संपदः पदमापदाम्" (सन्ति) "गुणाः पूजास्थानं" (सन्ति)।

उद्देश्य-विधेय भाव में यदि प्रकृति-विकृति-भाव रहता है तो उद्देश्य ही के अनुसार क्रिया होती है। जैसे, "पञ्च वृक्षाः

एका नौका भवन्ति।" "सुवर्णं कुण्डलानि भवति।" इनमें 'वृक्षः' और 'सुवर्णं' उद्देश्य हैं; जिनके अनुसार क्रिया हैं, शेष विधेय हैं।

दार, असु, प्राण, अक्षत आदि कितने ऐसे शब्द हैं जो नित्य बहुवचन हैं। ये सब भी विधेय के स्थान में बहुवचन ही प्रयुक्त होते हैं, उद्देश्य भले ही क्यों न एकवचन हो। इस अवस्था में भी क्रिया उद्देश्य ही के अनुसार होगी। जैसे, "हा कथं महाराज दशरथस्य धर्मदाराः प्रियसखी मे कौशल्या।" (वर्तते)। "सार्थवाहस्यार्थपतेः विमर्दको बहिश्चराः प्राणाः" (अस्ति) आदि।

[यदि 'च' और 'वा' के साथ अनेक कर्ताओं तथा भिन्न भिन्न पुरुष के कर्ताओं का प्रयोग हो तो क्रिया कैसी होगी, इसके लिये 'अव्यय' के प्रकरण में 'च' और 'वा' के योग में क्रिया का 'प्रयोग' नामक शीर्षक देखो]

विशेषण प्रायः विशेष्य के पूर्व रहता है। जैसे, "एकदा प्रातः वाटिकायां भ्रमता तेन पुष्पाणि चिन्वता काचित् बालिका दृष्टा।" "शीतलो मृदुश्च पवनो वहति।"

रचनासौन्दर्य के लिये कभी कभी विशेष्य के परे भी विशेषण आता है। जैसे "तस्य च कृषिं कुर्वतः सदैव निष्फलः कालोऽति वर्तते।" "अथैकस्मिन् दिवसे स ब्राह्मणः घर्मार्तः स्वक्षेत्रमध्ये वृक्षच्छायायां प्रसुप्तः।

टिप्पणी—विशेष्य के परे आनेवाले विशेषण प्रायः किसी विशेष अवस्था वा कार्य ही के द्योतन करनेवाले होते हैं। इस पर ध्यान रखना चाहिये।

यदि सर्वनाम और गुणवाचक दोनों विशेषण हों तो सर्वनामसम्बन्धी विशेषण ही पहले आता है। जैसे, "अयं शीत आकाशवायुः तव मुखे घर्मजान् स्वेदलवान् आचामति।" यदि

विशेष्य पर विशेष लक्ष्य होता है तो इसके विपरीत भी होता है। जैसे, "अनिच्छन्नसौ युवा तदुपदेशवर्ती अभवत्।"

यदि किसी विशेष्य पद के साथ विशेषण के रूप में अन्य विशेष्य व्यवहृत हों तो वे मुख्य विशेष्य के पूर्व में रहेंगे। जैसे, "आदर्शः सर्वशास्त्राणां, उत्पत्तिः कलानां, कुलभवनं गुणानां राजा शूद्रको नाम।"

[विशेषण के विशिष्ट व्यवहार के लिये विशेषण के प्रकरण में 'विशेष्य विशेषण' तथा 'संख्यावाचक विशेषण' शीर्षक देखो।]

क्रियाविशेषण प्रायः क्रिया के पूर्व रहता है। जैसे, "यथा-कालं व्यवहर।" "ते स्वकर्म साधु निरवाहयन्।" "किन्नरमिथुनं यदृच्छयाप्राक्षीत्।" "त्वमात्मरुचितं समाचरेति।" कभी कभी इसके विपरीत भी प्रयोग देखा जाता है। जैसे, "सोऽपि तं स्कन्धे कृत्वा सत्वरं स्वपुराभिमुखः प्रतस्थे।"

सम्बन्धपद प्रायः सम्बन्धी पद के अर्थात् जिस पद के साथ उसका सम्बन्ध रहता है, पहले आता है। जैसे, "सर्वेषां मूर्ध्नि वा तिष्ठेत्।" "तव निर्णये स्थास्यामि।" "अयं गण्डस्योपरि विस्फोटकः संवृत्तः"। कहीं कहीं इसके विपरीत भी देखा जाता है। जैसे, 'उर्वशी सुकुमारं प्रहरणमिन्द्रस्य। प्रत्यादेशो रूपगर्वितायाः श्रियः। अलङ्कारः स्वर्गस्य।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'यत्' यदि संपूर्ण वक्तव्य अंश (परे वाक्य) के लिये आवे। जैसे, हिन्दी में 'कि' और अंग्रेजी में that आता है तो वह इसी रूप में नपुंसक एकवचन रह जाता है। जैसे, "ननु वज्रिण एव वीर्यमेतत् विजयंते द्विषतो यदस्य पक्ष्याः।" ऐसी दशा में प्रधान वाक्य में उपपादक (Demonstrative) का वही लिङ्ग होगा जो संज्ञा का होगा। जैसे, "यज्जीवति तन्मरणं यन्मरणं सोऽस्य विश्रामः।"

[सर्वनाम के प्रकरण में यत् तत् का विचार देखो ।]

सम्बोधन प्रायः वाक्य के पहले ही आता है। जैसे, "भोः भोः किमेवं जनविरुद्धं कार्यमनुष्ठीयते।" "भो ब्रह्मन्, कष्टं कष्टं यद्यपि वल्लभोऽयं ते सारमेयः तथापि स्कन्धमारोपयितुं न युज्यते।" "देवि किमत्र क्रियतां दैवायत्ते वस्तुनि"

अधिकरणकारक प्रायः वाक्य वा वाक्यांश के आरम्भ ही में अथवा आधेय वा आधेयार्थ के निकट रहता है। जैसे, "अत्रैव तावत् रथं स्थापय यावदवतरामि।" "अस्मिन्नर्थेऽत्रभवन्तं प्रमाणीकरोमि।" "वयं स्वकर्मण्यभियुज्यामहे।" "लोके गुरुत्वं विपरीततां वा।" और "वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे।" "अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।"

'अथ' आदि आरम्भ-बोधक अव्यय वाक्यारम्भ में ही आते हैं। जैसे, 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।" "अथ कथाप्रारम्भः।" "अथ प्रजानामधिपः प्रभाते।" "यथा यथा भोजयशो विवर्द्धते।" "यावत् लग्नवेला न टलति" आदि। ऐसे ही किञ्च, अपिच, यत् आदि को भी समझना चाहिये।

च, वा, अथवा, चेत्, एव, अपि, इव, हि, नु, वै, स्म, खलु, किल आदि अव्यय वाक्यारम्भ में नहीं आते।

प्रति, सह, ऋते, विना, विभक्ति-विशेष के विधान के लिये व्यवहृत हों तो वे अपनी संज्ञा वा सर्वनाम के परे ही विशेषतः रखे जाते हैं। [उदाहरण के लिये कारक-प्रकरण देखो]

प्रश्न करने में किम् शब्द का कोई पद अथवा, अथ, अपि, कथं, प्रभृति प्रश्नवाचक अव्यय वाक्यारम्भ में ही आते हैं। [उदाहरण के लिये अव्यय-प्रकरण देखो]

अयि, अये, अहह, ननु, हत, हा आदि अव्यय वाक्य के प्रारम्भ में ही आते हैं। [उदाहरण के लिये अव्यय-प्रकरण देखो]

प्रश्न करने में यदि किसी प्रश्नवाचक अव्यय का प्रयोग न हो तो क्रिया का प्रयोग पहले करते हैं। जैसे, "स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः ?"

यदि किसी विषय का विस्तृत रूप से वर्णन करना हो अथवा कोई लम्बी कहानी लिखनी हो तो अस्, भू धातु की क्रिया का प्रयोग पहले करते हैं। जैसे, "आसीत् कल्याणकटक-वास्तव्यो भैरवो नाम व्याधः।" "अस्ति त्रिभुवनप्रख्यातकीर्तिः।" "अभूत् राजा चिन्तामणिर्नाम।" "अभून्नृपो विबुधसखः परन्तपः।"

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पूर्व और समापिका अन्त में आती है। जैसे, अथतेषामेकतमो वेषपरिवर्तनं विधाय सम्मुखो भूत्वा तमूचे।" "प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।" "ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।"

टिप्पणी—प्रतिभाशाली लेखक रचना को हृदयग्राहिणी बनाने के लिये उपर्युक्त सारे नियमों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं और मनमाने प्रयोग करते हैं। पद्यों में तो इन नियमों की कोई आवश्यकता ही नहीं रहती।

अनुवाद के प्रारम्भिक नियम

(Introductory rules of Translation)

अनुवाद ऐसा होना चाहिये कि मूल भाषा का भाव अनुवाद की भाषा में पूर्ण रीति से आ जाय। जो लोग शब्द २ का अर्थ लेकर अनुवाद करने लगते हैं उनसे न तो मूल भाषा का भाव ही व्यक्त होता है और न अनुवाद की भाषा ही अच्छी होती है। इससे चाहिये कि मूल भाषा के वाक्यों को पढ़ कर उनके भाव को ही जिस भाषा में अनुवाद करना हो उसमें प्रकाशित करे। जैसे, मैं एक पुस्तक रखता हूँ (I have a book) का अनुवाद 'अहं एकं पुस्तकं धरामि' न होकर 'मम एकं पुस्तकमस्ति' अथवा 'मम निकटे एकं पुस्तकमस्ति' होगा। ऐसे ही 'कहो तो भंडा फोड़ दूँ' इसका अनुवाद, 'कथय चेत् भाण्डं भेदयेयं' न होकर 'कथय चेत् रहस्यमुद्घाटयेयं' होगा। क्योंकि दोनों वाक्यों के शब्दार्थ भिन्न हैं और भावार्थ भिन्न।

जिस भाषा में अनुवाद करना हो उस भाषा की रचना-शैली पर विशेष ध्यान रखना चाहिये, न कि अनुवाद करने वाले वाक्यों की रचनाशैली पर। जैसे, उसको देख कर मुझको जरा भी सुख नहीं होता (I get no pleasure by seeing him.) इसका अनुवाद उसी वाक्य के ढंग पर 'तं दृष्ट्वा मम किमपि सुखं न भवति' करने से भूल होगी। क्योंकि दोनों क्रियाओं का समान कर्ता नहीं है और न कोई पूर्वकालिक क्रिया ही प्रतीत होती है। इससे उपर्युक्त वाक्य का अनुवाद 'तं पश्यतः मम किमपि सुखं नास्ति' अथवा 'तं दृष्ट्वा अहं किमपि सुखं न लेभे' होगा। ऐसे ही 'वह मुँह देखी करता है'

का अनुवाद 'स पक्षपातं करोति' होगा न कि 'स मुखं दृष्ट्वा करोति।' क्योंकि हिन्दी वाग्धारा (मुहावरे) के अनुसार "मुँह-देखी" का अर्थ पक्षपात ही होता है।

जिस भाषा में अनुवाद करना हो उसके व्याकरण पर विशेष ध्यान देना चाहिये। ऐसा न होने से अनुवाद सब प्रकार उत्तम होने पर भी तुच्छ हो जायगा। इसके लिये विद्यार्थियों को विशेष सावधान रहना उचित है। जैसे, उसने बारह वर्ष तक व्याकरण पढ़ा (He read Grammar for twelve years.) का अनुवाद 'स द्वादशवर्षाणि व्याकरणं पठितवान्' होगा। किन्तु, उसने बारह वर्ष में व्याकरण सीख लिया वा पढ़ लिया (He learnt Grammar in twelve years.) इसका अनुवाद 'स द्वादशभिर्वर्षैः व्याकरणं पठितवान्' होगा। क्योंकि पहले वाक्य में फलप्राप्ति प्रतीत नहीं होती और दूसरे में है। इस कारण संस्कृत वाक्यों की विभक्तियों में परिवर्तन हो गया।

यदि अर्थ स्पष्टतया प्रकाशित न हो अथवा वाक्य भद्दा जान पड़े तो अनेक वाक्यों का वा वाक्यखण्डों का एक वाक्य और एक वाक्य के अनेक वाक्य कर दे सकते हैं। जैसे, (१) अनेक का एक—'एकता का यह खास गुण है की जो काम अकेले नहीं हो सकता वह मिलकर सहज ही किया जा सकता'—"एकतायाः गुणेनेव एकेनासाध्यं कार्यं संहत्या सिद्ध्यति।" (२) एक के अनेक—कोशलाधीश राजा दशरथ के, जिनकी राजधानी अयोध्या थी, राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चार लड़के थे—"कोशलाधीशस्य दशरथस्य अयोध्या राजधानी आसीत्। तस्य रामः लक्ष्मणः भरतः शत्रुघ्नश्च चत्वारः पुत्रा आसन्।"

संस्कृत हिन्दी के अनेकांश में सादृश्य होने पर भी अनुवाद में सर्वत्र समानता नहीं है। क्योंकि दोनों में विभक्तियों के प्रयोग और पदस्थापन-नियम भिन्न २ हैं। जैसे, 'राम लक्ष्मण के साथ वन गये' इसका अनुवाद 'रामः लक्ष्मणेन सह वनं गतः', होगा, न कि 'लक्ष्मण' शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति का 'के' चिन्ह देखकर 'लक्ष्मणस्य' षष्ठी का रूप होगा। ऐसे ही 'वह रात को गया' इसका अनुवाद 'स रात्रौ गतः।' होगा, न कि द्वितीया का चिह्न 'को' देख कर 'स रात्रिं गतः।' होगा, । क्योंकि दोनों वाक्यों में व्याकरणानुसार भिन्न २ विभक्तियाँ होंगी। 'और देना नहीं, चले हैं बात बनाने' का अनुवाद 'अलं-वाग्जालेन, मा देहि' होगा, न कि 'दानं नास्ति, गच्छति वाग्रचनार्थम्।' फिर 'अपश्यत् राम गोविन्दम्' का अनुवाद 'राम ने गोविन्द को देखा' होगा, न कि 'देखा राम ने गोविन्द को।' क्योंकि संस्कृत में पदस्थापन का कोई नियम नहीं है किन्तु हिन्दी आदि भाषाओं में है। अतः ये दोनों बातें अनुवाद की भाषा के अनुकूल होनी चाहिये।

संस्कृत अनुवाद धात्वर्थ ही लेकर करना ठीक है न कि शब्द के साथ कृ आदि धातु का रूप लगाकर। जैसे, वह मेरा शासन करता है, 'स मम शासनं करोति' वैसा अच्छा न होगा जैसा कि 'स मां शास्ति।' ऐसे ही 'वह मुझे आज्ञा देता है' इसका अनुवाद 'स मह्यं आज्ञां ददाति' अच्छा न मालूम होगा जैसा कि 'स मामाज्ञापयति।'

अनुवाद में रचना की सुन्दरता पर भी खयाल रखना चाहिये। इसके लिये समास, उपसर्ग आदि का प्रयोग करना उपयुक्त है। जैसे, 'वन का हाथी उस पेड़ के नीचे आया' इसका अनुवाद 'वनस्य हस्ती तस्य वृक्षस्य अधस्तले समागतः'

होगा, पर रचना ऐसी सुंदर नहीं होगी जैसे कि 'वनगजः तं वृत्तं समाश्रितः' की वाग्रचना है।

संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करने में भी विद्यार्थियों को इन बातों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। ऐसा न होने से वे 'परिहृतराजमण्डलः स राजा वनमध्युवास' का अनुवाद 'छोड़ा है राजमण्डल जो राजा सो वन को गया' करेंगे जो कि न तो शुद्ध अनुवाद ही कहा जा सकता है और न उससे अर्थ ही स्पष्ट होगा। इसलिये स्कूली विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ने के समय उसके व्याकरण तथा रचना-प्रणाली पर विशेष ध्यान देना चाहिये। यद्यपि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से लिखना सम्भव नहीं था तथापि उचित स्थानों पर हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध में भी बहुत कुछ लिख दिया गया है।

Mahesh chandra Dube. X.A
Govt. High School
Bijnor.

श्रीः

प्रवेशिका-संस्कृत-रचनानुवाद-शिक्षा

OR

MATRICULATION

SANSKRIT COMPOSITION.

—:o:❀:o:—

पहला अध्याय

पदप्रकरण (Parts of Speech)

प्रकृतिबोधकः शब्दः—जो प्रकृति (Radicals) का बोध कराता है उसे शब्द कहते हैं। जैसे—भू, स्था, कृ, राम, चन्द्र, सुन्दर, दृढ़, सदा आदि।

टिप्पणी—भू, गम्, स्था, कृ आदि को धातु (Verbal roots) और पृथ्वी, अन्न, जल, सुन्दर, कोमल आदि को प्रातिपदिक (Nominal bases) कहते हैं।

सुप्तिङन्तं पदम्—सुबन्त (विभक्तियुक्त शब्द) और तिङन्त (विभक्तियुक्त धातु) को पद (Inflected words) कहते हैं। जैसे, सुबन्त पद—रामः, हरिः, लता, फलम् इत्यादि और तिङन्त पद—भवति, गच्छति, अस्तु, अपश्यत् आदि हैं।

टिप्पणी—शब्द के परे सु (:), औ, जस् (अः) आदि और धातु के परे ति, तः, अन्ति इत्यादि जो सब प्रत्यय (Suffixes) होते हैं उन्हें विभक्ति (Inflections) कहते हैं।

नापदं शास्त्रेप्रयुञ्जीत—जो शब्द पद नहीं है अर्थात् जिन शब्दों में विभक्तियाँ नहीं लगी हैं उनका प्रयोग संस्कृत भाषा में नहीं होता। राम, कृष्ण आदि शब्दों में विभक्तियों के न रहने से ये न तो पद कहावेंगे और न इनका वाक्यों में प्रयोग ही होगा। इससे अनुवाद करने में या बोलने में पद का ही प्रयोग होगा। और सूर्य, मनुष्य, फल, लक्ष्मी आदि के लिये सूर्यः, मनुष्यः, फलम्, लक्ष्मीः इत्यादि का ही प्रयोग होगा।

पदं पञ्चविधम्—पद पाँच प्रकार के होते हैं। जैसे—(१)विशेष्य, (२) विशेषण, (३) सर्वनाम, (४) अव्यय और (५) क्रिया। इनका वर्णन क्रमशः आगे के अध्यायों में किया जायगा।

टिप्पणी—संस्कृत में प्रधानता दो ही सुबन्त और तिङन्त पद माने गये हैं। पर सूक्ष्म दृष्टि से सुबन्त के विचार करने पर विशेष्य, विशेषण, सर्वनाम और अव्यय, ये चार भेद किये जा सकते हैं। क्रिया तिङन्त कहाती है। अंग्रेजी में आठ प्रकार के पद माने गये हैं। इनमें Noun विशेष्य, Adjective विशेषण, Pronoun सर्वनाम, Verb क्रिया के नाम से व्यवहृत होते हैं और शेष Adverb, Preposition, Conjunction तथा Interjection, ये चारो अव्यय के भीतर चले आते हैं।

दूसरा अध्याय

विशेष्य वा संज्ञा (Noun)

जातिव्यक्तिभावक्रियाबोधकं विशेष्यम्—जिससे जाति (class), व्यक्ति (person), द्रव्य (thing), भाव वा गुण (quality) और क्रिया (action) का बोध हो उसे विशेष्य—(Noun or Substantive) कहते हैं। जातिवाचक विशेष्य—मनुष्यः, पशुः, पक्षी, सिंहः आदि। व्यक्तिवाचक विशेष्य—रामः, श्यामः, देवदत्तः आदि। द्रव्यवाचक विशेष्य—वायुः, जलं, स्वर्णं, मृत्तिका आदि। भावबोधक विशेष्य—सौन्दर्य्यं, साधुता, गुरुत्वम्, यौवनम् आदि। क्रियावाचक विशेष्य—भोजनं, शयनं, पानं, गमनम् आदि।

सूचना—प्रत्येक विशेष्य वा संज्ञा के साथ लिंग, वचन, पुरुष और कारक अवश्य रहते हैं। जैसे 'लता कम्पते'—लता डोलती है। इस वाक्य में लता स्त्रीलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष और कर्ताकारक है।

लिंग (Gender)

पुंस्त्वादिबोधकं लिंगम्—जिससे पुंस्त्व—पुरुषत्व, स्त्रीत्व और नपुंसकत्व का बोध हो उसे लिङ्ग कहते हैं।

लिंगं त्रिविधम्—संस्कृत में लिङ्ग तीन प्रकार के हैं—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग।

टिप्पणी—संस्कृत शब्दों का लिंग-निर्णय सहज नहीं है। क्योंकि संस्कृत में शब्दों का अर्थ देख कर लिंग-निर्णय नहीं होता। दार, भार्या और कलत्र इन तीनों का ही अर्थ स्त्री है, तथापि दार पुंलिंग, भार्या

स्त्रीलिंग और कलत्र नपुंसकलिंग है। कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ-भेद से लिंग-भेद होता है, जैसे मित्र शब्द। यह सखा का बोधक होने से नपुंसक और सूर्य्य का बोधक होने से पुंलिंग होता है। इस प्रकार संस्कृत के प्रत्येक शब्द का लिंग निश्चित है। पर हिन्दी में लिंग-निर्णय अधिकतर व्यवहार पर निर्भर रहता है। संस्कृत शब्दों के लिंग-निर्णय के कुछ नियम लिखे जाते हैं।

पुंलिङ्ग (Masculine)

घञबन्तः—घाजन्तश्च—घञ् और अप्, घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—पाकः, त्यागः, भावः, करः, गरः, विस्तरः, गोचरः, सञ्चयः, विजयः, विनयः इत्यादि। पर भय, मुख, वर्ष, पद, लिङ्ग, भय आदि नपुंसकलिङ्ग होते हैं।

नङन्तः—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—यत्नः, प्रश्नः, स्वप्नः। पर याञ्चा शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है।

क्यन्तः—किप्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—विधिः, निधिः, वारिधिः आदि, पर किप्रत्ययान्त इषुधि शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों होता है।

ईमन्तः—ईमन् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—महिमा, गरिमा, लघिमा इत्यादि। पर प्रेमन् शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक दोनों होता है।

नन्तः—नकारान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे, राजन्-राजा, आत्मन्-आत्मा। मन् प्रत्ययान्त कर्म्मन् और चर्म्मन् आदि शब्द नपुंसक हैं।

दाराक्षतलाजासूनां बहुत्वञ्च—दार, अक्षत, लाज, असु (प्राण) शब्द पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त होते हैं।

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः—साधारण और विशेष सुर (देवता) और असुर (राक्षस) और उनके अनुचर-वाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—देवः, विष्णुः शिवः, दानवः, दैत्यः आदि।

स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः—स्वर्ग, याग (यज्ञ), अद्रि (पर्वत), मेघ, अब्धि (समुद्र), द्रु (वृक्ष), काल (समय), असि (तलवार), शर (बाण), अरि (शत्रु)—ये सब शब्द और इनके पर्यायवाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। किन्तु त्रिविष्टपम् (स्वर्ग), अभ्रं (मेघ)—ये शब्द नपुंसक हैं। द्यौ और दिव् (स्वर्ग) ये स्त्रीलिङ्ग हैं। इषु (बाण) शब्द पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों है। स्वर् (स्वर्ग) अव्यय है।

करगण्डौष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः— कर (किरण, हाथ और बलि), गण्ड (कपोल), ओष्ठ (ओठ), दोः (बाहु), दन्त (दाँत), कण्ठ, केश, नख (नह) और स्तन ये सब शब्द और इनके प्रतिशब्द पुंलिङ्ग होते हैं। पर दीधिति (किरण) शब्द स्त्रीलिङ्ग है, मरीचि शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों है।

मासर्तुरसवर्णाग्निशब्दवायुनराहयः—मास (वैशाख, जेठ आदि महीना), ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म आदि), रस (कटु, तिक्त आदि), वर्ण (शुक्ल, कृष्ण आदि रंग), अग्नि, शब्द, वायु (हवा), नर (आदमी), अहि (साँप)—ये शब्द तथा इनके वाचक शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। किन्तु ऋतुवाचक शरत् और वर्षा शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

वृन्दः खर्वो निखर्वश्च शंखपद्मौ च सागरः—वृन्दः, खर्वः, निखर्वः, शङ्खः, पद्मः और सागरः शब्द पुंलिङ्ग हैं।

अह्नान्ताः—समास-निष्पन्न अह्न और अह-भागान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—पूर्वाह्णः, पराह्णः, मध्याहः, एकाहः, द्व्यहः, त्र्यहः आदि। किन्तु पुण्याह शब्द नपुंसकलिङ्ग है।

रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः—समासोत्पन्न रात्रभागान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे—सर्वरात्रः, मध्यरात्रः आदि। किन्तु संख्यावाचक शब्द के आगे रात्र शब्द रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रम्, पंचरात्रम् इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)

क्तिन्नन्ताः— क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—मतिः, गतिः, सम्पत्तिः आदि। पर ज्ञाति शब्द पुलिङ्ग होता है।

तिथिवाचकाः—तिथिवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—प्रतिपद्, द्वितीया, चतुर्थी, पूर्णिमा आदि।

ऋकारान्ताः मातृदुहितृस्वसृयातृननान्दरः— ऋकारान्त मातृ (माता), दुहितृ (कन्या), स्वसृ (बहन), यातृ (पति के भाइयों की स्त्रियाँ—गोतिनियाँ) और ननांद (ननँद) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

तलन्तश्च—तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—लघुता, सुन्दरता, ब्राह्मणता आदि।

य्वन्तमेकाक्षरम्—एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे-श्रीः, ह्रीः, भूः, भ्रूः आदि।

विंशत्यादिरानवतेः—विंशति से नवति पर्यन्त संख्यावाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे-विंशतिः, त्रिंशत् आदि।

ईकारान्तश्च—ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे-नदी, लक्ष्मीः, गौरी, देवी इत्यादि।

ऊङाबन्तश्च—ऊङ् और आप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे-कुरूः, विद्या, शोभा इत्यादि।

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम्—विद्युत् (बिजली), निशा (रात), वल्ली (लता), वीणा (बीन), दिक् (दिशा),

भू (पृथ्वी) नदी, ह्री (लाज) वाचक सब शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः—समाहारद्विगु समास-निष्पन्न अकारान्त शब्द (जिनके आगे ईप् होता है) स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—त्रिलोकी, पञ्चवटी, द्विपुरी आदि। किन्तु पात्र, युग और भुवन शब्द परे रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—पञ्चपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम्।

नपुंसकलिङ्ग (Neuter)

भावे ल्युडन्तः—भाववाच्य में ल्युट् (अन) प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसक होते हैं। जैसे—गमनं, शयनं, भोजनम् इत्यादि।

क्तान्तश्च— भाव में (क्त) प्रत्यय करने से बने हुए शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—हसितं, गीतं, जीवितम् आदि।

त्वष्यञौ तद्धितौ—तद्धित के त्व और ष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—शुक्लत्वं शौक्ल्यं, सुन्दरत्वं सौन्दर्यं, राजत्वं राज्यम्, मधुरत्वं माधुर्य्यम् इत्यादि।

भावे षण् च— उसका भाव या कर्म, इस अर्थ में तद्धित षण् (अ) प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसक होते हैं। जैसे—शैशवं, गौरवं, लाघवम् आदि।

यद्यढग्यगञण्वुञ्छाश्च— यत्, य, ढक्, यक्, अञ्, अण्, वुञ्, छ प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—स्तेयं, सख्यं, कापेयं, आधिपत्यं, औष्ट्रं, द्वैहायनं, पितापुत्रकं, किरातार्जुनी-यम् आदि।

शतादिः संख्या—शत आदि संख्यावाचक शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—शतं, सहस्रम् आदि पर कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग होता

है। शत, अयुत, प्रयुत, शब्द पुलिङ्ग और नपुंसक दोनों होते हैं। जैसे—अयं शतः, इदं शतमित्यादि।

त्रान्तः—त्र जिनके अन्त में हो ऐसे शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—पत्रं, छत्रं, चरित्रम् इत्यादि। पर भृत्र, अमित्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र, वृत्र, मेढ्र और उष्ट्र पुंलिङ्ग हैं और पत्र, पात्र, पवित्र, सूत्र और छत्र पुंलिङ्ग नपुंसक दोनों होते हैं। यात्रा, मात्रा, भस्त्रा और दंष्ट्रा ये स्त्रीलिङ्ग हैं। मित्र शब्द सूर्य के अर्थ में पुंलिङ्ग और बन्धु के अर्थ में नपुंसक है।

भावे कृत्यान्तः—भाववाच्य में कृत्य (तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप्) प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—भवितव्यं, भवनीयं, भाव्यम् आदि।

डयट्तयडन्तः—डयट् और तयट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक-लिङ्ग होते हैं। जैसे—द्वयं, त्रयं, द्वितयं, त्रितयमित्यादि। ये स्त्रीलिङ्ग भी होते हैं।

क्रियाव्यययोर्विशेषणम्—क्रिया और अव्यय के विशेषण नपुंसक होते हैं। जैसे—साधु वदति—अच्छा कहता है। मनोहरं प्रातः—सुन्दर सवेरा।

द्विहीनेऽन्यच्चखारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्।
शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणस्वलम्॥
हलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम्।
जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम्॥

जो शब्द स्त्रीलिङ्ग वा पुंलिङ्ग नहीं हैं वे ही नपुंसक होते है। खं (आकाश), अरण्यं (वन), पर्णं (पत्ता), श्वभ्रं (बिल), हिम (पाला), उदकं (जल), शीतं (ठंढा), उष्णं (गर्म), मांसं (मांस), रुधिरं (रक्त), मुखं (मुँह), अक्षि (आँख), द्रविणं (धन), बलं (बल), हलं (हर), हेम (सोना), शुल्बं (ताँबा), लोहं (लोहा),

सुखं (सुख), दुःखं (दुख), शुभं (कुशल), अशुभं (अमङ्गल), जलपुष्पं (पानी में उत्पन्न होनेवाले फूल), लवणं (नमक), व्यञ्जनं (दूध, दही आदि), अनुलेपनम् (चन्दन आदि)—ये ऊपर लिखे हुए शब्द तथा इन शब्दों के प्रतिशब्द अर्थात् इन शब्दों के अर्थबोध कराने वाले अन्यान्य शब्द नपुंसक होते हैं। किन्तु अर्थः और विभवः (धन), अवश्यायः, नीहारः और तुषारः (पाला) तथा छदः (पत्ता) पुंल्लिङ्ग हैं। अप् (जल), अटवी (वन) मुद् और प्रीतिः (सुख), वपा और शुषि (बिल), दृश् और दृष्टिः (आँख) तथा मिहिका (पाला) स्त्रीलिङ्ग हैं। आकाशः और विहायस् (आकाश) तथा हेमः—ये पुंलिङ्ग और नपुंसक दोनों होते हैं।

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ—समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभाव समासोत्पन्न शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—पाणिपादं, हस्त्यश्वम्, प्रतिदिनं और यथाशक्ति आदि।

पथः संख्याव्ययात्परः—संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्ती समासोत्पन्न 'पथ' शब्द नपुंसक होता है। जैसे—त्रिपथं, चतुष्पथं, विपथं, कापथम् आदि।

द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तम्—दो स्वर वाले अस्, इस्, उस् और अन् भागान्त शब्द नपुंसक होते हैं। जैसे—अस् भागान्त—यशस्, तेजस् आदि। इस् भागान्त—सर्पिस्, हविस् आदि। उस् भागान्त—वपुस्, धनुस् आदि। अन् भागान्त—नामन्, चर्मन् इत्यादि। पर अर्चिस् शब्द स्त्रीलिङ्ग और वेधस् शब्द पुंलिङ्ग होता है। दो से अधिक स्वर होने के कारण अणिमा, महिमा, चन्द्रमाः आदि पुंलिग और अप्सरस् शब्द स्त्रीलिङ्ग है। ब्रह्मन् शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक दोनों है।

रात्रं प्राक्संख्यान्वितम्—आदि में यदि संख्यावाचक शब्द

हो और अन्त में रात्र शब्द हो तो नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रं, त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम् आदि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों के नियमानुसार लिंग बताओ—

गमन, सप्तरात्र, जरा, विधि, गति, हेमन्त, जन्मन्, पयोधर, मधुरता, उद्धि, स्वर्ण, जलद, निशा, भय, निर्विघ्न, असु, धी, दशन, हानि, कपोल, हस्तपाद, वृक्ष, मुख, रुधिर, त्याग, वसु, गरिमा और कल्याण।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सनियम शुद्ध करो—

अयं कर्म्मः। षट् रसानि। परिमिताः भोजनः। लाजानि शुभसूचकानि भवन्ति। रम्यान् वनान् पश्य। एष हि पुण्याहः। स्वर्गे सुराणि असुराणि च वसन्ति। निर्म्मलः यशः। रजनी प्रभातं जातम्। सहस्राणि बालकाः। भक्तिः करणीयः। मधुरो हि तस्य भाषितः। संहतिः कार्यसाधकः। यौवनो हि दुर्दमनीयः। सुन्दरः वदनः। महान् हि तस्य साधुत्वः। मम कलत्रः श्रेष्ठा। भग्नं साम्प्रतं ममाशा। तस्य महान् विद्या अस्ति। आकाशे मेघं गच्छति। स मित्रः यत्र विश्वासम्। तस्य सुमहत् पीडा जातम्। स प्राणं त्यजति। यतो धर्म्मस्ततो जयम्। शोभनं रात्रिः। सर्वः खलस्य चरितः मशकं करोति।

३. नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद करो—

समय चला जाता है। रात बीत गयी। पृथ्वी पेड़-पौधों से परिपूर्ण है। ये लतायें सुन्दर हैं। इसमें सन्देह नहीं है। मैं फल खाता हूँ। वे स्वर्ग में गये। बहुत से पत्ते हैं। समुद्र का जल मीठा नहीं होता। यह काला मेघ पानी से भरा है।

तुम्हारा मुख मुर्झाया क्यों है ? वसन्त ऋतुओं का राजा है। उसके साथ मेरी दोस्ती नहीं है। यहाँ बीस लड़के हैं। रात में विजली चमकती है। वरसात में वर्षा होती है। राधा कृष्ण की स्त्री है। भोजन परिमाण भर ही करना चाहिये।

४. कौन से ऐसे शब्द हैं जो पुंलिंग और वहुवचन ही होते हैं ?

५. कुछ ऐसे शब्दों को लिखो जिनका दोनों लिंगों में प्रयोग होता है।

वचन (Number)

संख्याबोधकं वचनम्– जिससे पदार्थों की संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

सुपस्त्रीणित्रीणि वचनानि– विशेष्य आदि के सुप् आदि सातों विभक्तियों (कारकों) के तीन वचन होते हैं। एकवचन, द्विवचन और वहुवचन।

एकवचन (Singular)

एक का बोध होने से एकवचन होता है। जैसे—नरः—एक आदमी।

एकशब्द एकवचनान्तः—एक शब्द एकवचनान्त ही होता है। जैसे—एकः नरः—एक आदमी, एका स्त्री—एक स्त्री।

टिप्पणी—यदि एक शब्द का अर्थ कोई कोई हो तो वहुवचन होता है। जैसे, एके उक्तवन्तः—कुछ लोगों ने कहा है।

विंशत्याद्याः सदैकत्वे—विंशतिः (बीस) आदि संख्यावाचक शब्द वहुत्व-बोधक होने पर भी एकवचन ही होते हैं। जैसे—विंशतिः नराः—बीस आदमी, अशीतिः फलानि—अस्सी फल, शतं नराः—सौ आदमी इत्यादि।

टिप्पणी—यदि दो बीस, तीन बीस, दो सौ, चार सौ आदि से द्वित्व बहुत्व का बोध हो तो द्विवचन और बहुवचन भी होता है। जैसे—द्वे विंशती नराः—चालीस आदमी। त्रीणि सहस्राणि फलानि—तीन हजार फल आदि।

द्वित्वबोधका युगादिशब्दाः एकवचनान्ताः—द्वित्वबोधक होने पर भी द्वय, द्वितय, युग, युगल, युग्म, द्वन्द्व, मिथुन आदि सदा एकवचनान्त ही होते हैं। जैसे, बाहुद्वयं—दो बाँह। सुकुमार-चरणयुगम्—दोनों कोमल चरण। यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्—क्योंकि दोनों क्रौंचपक्षियों में से काममोहित एक को मारा।

बहुत्वबोधकाः त्रयपंचकगणादिशब्दाः एकवचनान्ताः—बहुत्वबोधक होने पर भी त्रय, त्रितय, चतुष्टय, चतुष्क, पञ्चक, वर्ग, गण, समूह, मण्डल, कुल आदि शब्द सदा एकवचनान्त होते हैं। जैसे—ब्राह्मणत्रयमागच्छति—तीन ब्राह्मण आते हैं। वेदचतुष्टयम्—चारों वेद। प्रतस्थे मुनिमण्डलम्—मुनिमण्डल चला गया।

द्वन्द्वेऽव्ययीभावे द्विगौ चैकवचनम्—बहुत्वबोधक होने पर भी समाहारद्वन्द्व, अव्ययीभाव और द्विगु समास से बने हुए शब्द एकवचनान्त होते हैं। जैसे, पाणिपादं—हाथ पैर, यथाशक्ति—शक्ति के अनुसार वा शक्तिभर और त्रिभुवनम्—तीनों लोक।

द्विवचन (Dual)

दो का बोध होने से द्विवचन होता है। हिन्दी और अंग्रेजी में दो का बोध करने के लिये दो शब्द का प्रयोग करते हैं। पर संस्कृत में द्वित्व की बोधक विभक्ति ही से द्विवचन

का पता लग जाता है। जैसे, नरौ—दो आदमी। नेत्रे—दो आँखें।

दम्पत्यश्विनौ—दम्पती (स्त्रीपुरुष की जोड़ी), अश्विनौ (अश्विनी के दोनों बेटे) ये दोनों द्विवचनान्त ही होते हैं।

टिप्पणी—जायापती, जम्पती (स्त्रीपुरुष) ये दोनों शब्द भी दम्पती शब्द के समान ही व्यवहृत होते हैं।

द्व्युभौ द्विवचनान्तौ—द्वि और उभ शब्द द्विवचनान्त ही होते हैं। जैसे, द्वौ नरौ—दो आदमी, द्वे फले—दो फल, उभौ रामलक्ष्मणौ वनं जग्मतुः—राम लक्ष्मण दोनों वन चले गये।

टिप्पणी—उभय शब्द एकवचन और बहुवचन होता है। जैसे—उभयः देवासुरगणः, उभये देवासुराः—दोनों देवासुर।

एकशेषद्वन्द्वजाः शब्दाः द्विवचनान्ताः—एकशेष द्वन्द्व समास से जो शब्द बनते हैं वे एकजातीय स्त्रीपुरुष का बोधक होकर द्विवचनान्त हीं होते हैं। जैसे, पितरौ—माँ बाप, श्वशुरौ—सासससुर, भ्रातरौ—भाई बहन।

बहुवचन (Plural)

दो से अधिक वा बहुत्व के बोधक होने से बहुवचन होता है। जैसे, नराः—बहुत से आदमी।

त्रिशब्दमारभ्याष्टादशपर्यन्तसंख्यावाचका बहुवचनान्ताः—त्रि (तीन) शब्द से लेकर अष्टादश (अठारह) पर्यन्त संख्यावाचक शब्द बहुवचनान्त होते हैं। जैसे—त्रयः पुरुषाः—तीन आदमी, एकादश रुद्राः—ग्यारहों रुद्र, अष्टादशपुराणानि— अठारहों पुराण आदि।

दाराक्षतलाजासूनां बहुत्वम्— दार (स्त्री), अक्षत, लाज,(लावा), असु (प्राण), ये नित्य बहुवचनान्त हैं। जैसे, असवः प्रयान्ति—प्राण छूटते हैं।

अप्सुमनस्समासिकतावर्षाणां बहुत्वम्—अप् (जल), सुमनस् (फूल), समा (वर्ष), सिकता (बालुका) और वर्षा ये शब्द नित्य बहुवचनान्त हैं।

गृहाः प्राणाश्च भूम्न्येव—गृह (घरनी) और प्राण शब्द भी नित्य बहुवचनान्त ही होते हैं।

अस्मदोऽविशेषणस्य बहुत्वम्—अस्मद् शब्द का कोई विशेषण नहीं हो तो उससे एकवचन और द्विवचन के स्थान में विकल्प से बहुवचन होता है। जैसे—अहं गच्छामि, आवां गच्छावः, इनके स्थान में 'वयं गच्छामः' कह सकते हैं। पर 'दुर्बलः अहं गच्छामि' इस स्थान पर 'दुर्बला वयं गच्छामः' नहीं कह सकते।

आत्मनि गुरौ बहुत्वम्—उत्तमपुरुष में (अपने विषय में) और किसी का गौरव या आदर प्रकट करने में एकवचन के स्थान में बहुवचन बोलते हैं। जैसे, भद्र दमनक, त्वमस्माकं प्रधानामात्यपुत्रः—सज्जन दमनक, तुम हमारे प्रधान मन्त्री के पुत्र हो। भवद्भ्यो धर्मं श्रोतुमिहागतः—आपसे हम धर्म सुनने के लिये यहाँ आये हैं। इति श्रीशङ्कराचार्याः—शङ्कराचार्य ने ऐसा कहा है।

वंशे परिवारे च बहुवचनम्—वंश और परिवार के बोध होने से बहुवचन होता है। जैसे—रघूणामन्वयं वक्ष्ये—मैं रघु के वंश का वर्णन करता हूँ। जनकानां पुरोहितः—जनक कुल के पुरोहित।

प्रदेशे च—अधिवासियों के नाम पर ही प्रदेश का नाम होता है, इस कारण प्रदेशवाचक शब्द बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अस्ति अवन्तीषु उज्जयिनी नाम नगरी—अवन्ती प्रदेश में उज्जयिनी नाम की नगरी है।

टिप्पणी—प्रदेशवाचक शब्दों के साथ यदि देश, विषय आदि शब्द समास द्वारा युक्त हों जाँय, तो एकवचन ही होता है। जैसे—अस्ति मगधदेशे पाटलिपुत्रनामधेयं नगरम्—मगध देश में पटना नाम का एक शहर है।

कतियतितितिशब्दाः बहुवचनान्ताः—कति (कितने), यति (जितने), तति (उतने) शब्द नित्य बहुवचनान्त हैं। जैसे, कति मानवाः सन्ति—कितने आदमी हैं? यति मानवाः सन्ति तति खादन्तु—जितने आदमी हैं उतने आदमी भोजन करें।

जातौ वा बहुवचनम्—जातिबोधक होने से एकवचन और बहुवचन दोनों होते हैं। जैसे, ब्राह्मणः पूज्यः अथवा ब्राह्मणाः पूज्याः—ब्राह्मण पूजनीय हैं।

अभ्यास

१. नीचे लिखे शब्दों में कौन २ शब्द एकवचन और कौन २ शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं—

गृह, असु, द्वितय, युगल, अक्षत, कुल, दार, एक, तति, लाज, शत, विंशति, एकादश, वर्ग, गण और प्राण।

२. किस २ दशा में एकवचन के स्थान में बहुवचन होता है?

३. कौन २ शब्द नित्यद्विवचन हैं?

४. चार ऐसे शब्दों को लिखो जो एकजातीय स्त्री-पुरुष के बोध करते हों।

५. नीचे लिखे वाक्यों को सनियम शुद्ध करो—

सिकतायां तैलं न लभ्यते। वर्षत्रयैर्व्याकरणमधीतम्। कतयः विद्यार्थिनः पाठशालायां वर्तन्ते। गुरुचरणकमले मम प्रणामाः प्रयान्तु। अस्ति वङ्गविषयेषु कलिकाता नाम नगरी। त्रिभुवनेषु

तस्य समः कोऽपि नास्ति। विंशतयः पुरुषा गच्छन्ति। त्रीणि सहस्रम् फलानि। विप्रगणाः देवान् पूजयन्ति।

६. नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद करो—

भाई बहन जाते हैं। द्रविड़ देश में एक राजा थे। उनके दोनों पैर धोवो। गुरु को प्रणाम करो। कोई २ ऐसा कहते हैं। हजारों पुस्तकें हैं। बाग में कितने पेड़ हैं। पिताजी आये। बालू से तेल नहीं निकल सकता। देवता पर अक्षत चढ़ाओ। मैं बड़ा पण्डित हूँ। मगध में चन्द्रगुप्त नामक एक राजा था। उनके प्राण छूट गये।

पुरुष (Person)

पुरुष तीन प्रकार के हैं—प्रथम पुरुष (Third person), मध्यमपुरुष (Second person) और उत्तम पुरुष (First person) अस्मद् शब्द उत्तम पुरुष, युष्मद् शब्द मध्यम पुरुष और इनके अतिरिक्त जितने शब्द हैं वे सब प्रथम पुरुष होते हैं। जैसे, अहं गच्छामि—मैं जाता हूँ, त्वं गच्छसि—तू जाता है, सः गच्छति—वह जाता है।

संस्कृत का युष्मदर्थवाचक भवत् शब्द मध्यमपुरुष नहीं होता, बल्कि प्रथम पुरुष होता है। जैसे, भवन्त एव ब्रुवन्तु—आप ही लोग कहें।

यदि किसी उच्चपदस्थ वा महान् व्यक्ति को सम्बोधन करना पड़े तो वहाँ मध्यम पुरुष के स्थान पर प्रथम पुरुष ही होता है। जैसे—यथाज्ञापयति देवः—जैसा श्रीमान् कहें।

कारक (Case)

क्रियान्वयि कारकम्—क्रिया के साथ जिसका अन्वय—मेल, साक्षात् सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं। जैसे—देवदत्तः पठति—देवदत्त पढ़ता है। स फलं खादति—वह फल खाता है। कुठारेण काष्ठं छिनत्ति—कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता है। वृक्षात् पत्रं पतति—पेड़ से पत्ता गिरता है। इन वाक्यों में पठति, खादति, छिनत्ति, पतति इन क्रियाओं के साथ देवदत्तः, फलं, कुठारेण, वृक्षात् इन सबों का अन्वय है—साक्षात् सम्बन्ध है, इससे ये कारक कहलाते हैं।

टिप्पणी—पुराने वैयाकरणों में कारक और विभक्ति का प्रकरण अलग अलग नहीं है। पर इसमें कारक और विभक्ति दोनों अलग अलग करके लिख दिये गये हैं।

षट् कारकाणि—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये छः कारक हैं।

टिप्पणी—वैयाकरण लोग सम्बन्ध (Possessive Case) और सम्बोधन (Vocative Case) को कारक नहीं मानते।

कर्ता (Nominative Case)

क्रियासम्पादकः कर्ता—जिसके प्रयत्न से क्रिया सम्पन्न हो अर्थात् क्रिया का जो व्यापार करे उसे कर्ता कहते हैं। जैसे, छात्रः पठति—विद्यार्थी पढ़ता है। रामः हस्तेन खादति—राम हाथ से खाता है। इनमें 'छात्रः' और 'राम' ये ही दोनों पढ़ने और खाने की क्रिया का व्यापार करते हैं और उन्हींके प्रयत्न से क्रिया सिद्ध होती है। इससे ये कर्ता हैं।

तत्प्रयोजको हेतुश्च—कर्ता का जो प्रयोजक अर्थात् जो दूसरे को क्रिया के व्यापार में लगावे उसे भी कर्ता कहते हैं। उसका

दूसरा नाम हेतु भी है। जैसे, गुरुः शिष्यं वेदं पाठयति—गुरु चेले को वेद पढ़ाता है। इसमें शिष्य पढ़नेवाला है और गुरु उसको पढ़ानेवाला। इससे पढ़ना क्रिया का व्यापार करने-वाले शिष्य के प्रयोजक होने से गुरु कर्ताकारक हुआ।

कर्मकारक (Accusative Case)

क्रिययाक्रान्तं कर्म—कर्ता की क्रिया के द्वारा जो आक्रान्त हो अर्थात् क्रिया के व्यापार का फल जिस पर पड़े उसे कर्म कहते हैं। जैसे, अहं चन्द्रं पश्यामि—मैं चन्द्रमा देखता हूँ। त्वं जलं पिबसि—तू जल पीता है। स अन्नं भुंक्ते—वह अन्न खाता है। इनमें पश्यामि, पिवसि, भुंक्ते इन क्रियाओं द्वारा आक्रान्त अर्थात् जिनपर फल पड़ता है। वे 'चन्द्रं','जलं','अन्नं' हैं इससे ये कर्म हुए।

अधिशीङ्स्थासां कर्म—अधिपूर्वक शीङ्, स्था और आस् धातु के अधिकरणकारक को कर्म संज्ञा होती है। जैसे, शिशुः शय्यायामधिशेते—लड़का खाट पर सोता है। अर्द्धासनं गोत्र-भिदोऽधितष्ठौ—इन्द्र के आधे आसन पर बैठे। अध्यास्ते वैकुण्ठं हरिः—वैकुण्ठ में भगवान् रहते हैं। इन वाक्यों में 'शय्यायां', 'अर्द्धासने' और 'वैकुण्ठे' के स्थान पर कर्म कारक हुआ।

उपान्वध्याङ्वसः—उप, अनु, अधि, आङ् पूर्वक वस् धातु के अधिकरण कारक की कर्म संज्ञा होती है। जैसे, हरिः वैकुण्ठं उपहसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति,—भगवान् स्वर्ग में रहते हैं। यहाँ 'वैकुण्ठे' के स्थान पर 'वैकुण्ठं' हुआ।

टिप्पणी—जहाँ उपपूर्वक वस् धातु का अर्थ उपवास होगा वहाँ कर्म नहीं होगा। जैसे, स ग्रामे उपवसति—वह गाँव में उपास करता है।

अभिनिविशश्च—अभि नि पूर्वक विश् धातु का अधिकरण-कारक विकल्प से कर्म होता है। जैसे, अभिनिविशते सन्मार्गं सन्मार्गे वा—वह अच्छी राह पर चलता है।

क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म—उपसर्ग-पूर्वक क्रुध् और द्रुह् धातु के सम्प्रदान कारक की कर्म संज्ञा होती है। जैसे, प्रभुः भृत्यम् अभिक्रुध्यति—मालिक नौकर पर रंज होता है। पिता पुत्रम् अभिद्रुह्यति—पिता पुत्र से डाह करता है। जहाँ इन धातुओं के साथ उपसर्ग नहीं रहता, वहाँ सम्प्रदान कारक अर्थात् चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, राजा भृत्याय शत्रवे क्रुध्यति द्रुह्यति वा—राजा नौकर पर क्रोध और शत्रु से द्रोह करता है।

द्वे कर्मणी दुहादेः। न्यादेश्च—दुह् (दुहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड (दण्ड देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना), ब्रु (कहना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मन्थ् (मथना), मुष् (चोराना), और नी (ले जाना), हृ (चुराना), कृष्, (खींचना), वह (ले जाना) इन सोलहों धातुओं के अपादान आदि कारकों की कर्म संज्ञा होने से दो कर्म होते हैं। जैसे, गां दोग्धि पयः—गाय से दूध दुहता है। व्रजमवरुणद्धि गां—व्रज (गोशाला) में गाय को रोकता है आदि। इनमें से पहले उदाहरण में 'गां' इस पद में द्वितीया न होकर अर्थानुसार पञ्चमी होना उचित था और दूसरे उदाहरण में 'व्रजं' द्वितीया न होकर अधिकरणकारक अर्थात् सप्तमी विभक्ति होना उचित था। पर ऐसे स्थानों में कर्म संज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे कर्मों को गौण वा अप्रधान (Indirect Object) कहते हैं और जो दूसरा कर्म 'दुग्धं' और 'गां' है उनको मुख्य वा प्रधान (Direct Object) कहते हैं।

टिप्पणी—वक्ता की इच्छा हो तो अप्रधान कर्म का अपादान आदि कारकों में भी प्रयोग कर सकते हैं। जैसे—गोः दोग्धि पयः। व्रजे अवरुणद्धि गाम् इत्यादि।

गत्यर्थानां कर्मसंज्ञा प्रयोज्यस्य—गमनार्थक धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म संज्ञा होती है। क्रिया की अणिजन्त अवस्था (जिसमें प्रेरणा—अर्थात् किसी अन्य के द्वारा कार्य कराना न पाया जाय,—न हो) के कर्ता को णिजन्त अवस्था में (प्रेरणार्थ में) प्रयोज्य कहते हैं। जैसे, देवदत्तः गृहं गच्छति—देवदत्त घर जाता है, यज्ञदत्तो देवदत्तं गृहं गमयति—यज्ञदत्त देवदत्त को घर भेजता है। इस वाक्य में 'देवदत्तः' 'गम्' क्रिया के पहले का अर्थात् अणिजन्त अवस्था का कर्ता था। वही दूसरे वाक्य में अर्थात् णिजन्त अवस्था में प्रयोज्य कर्ता हुआ; क्योंकि यज्ञदत्त जो इस वाक्य में कर्ता है वह देवदत्त को घर जाने की प्रेरणा करता है। इससे उसकी कर्म-संज्ञा हुई।

ज्ञानाशनार्थानाञ्च—ज्ञानार्थक (बुध्, आदि) अशनार्थक (अद्, खाद् और भक्ष् धातु को छोड़ कर अश् आदि) धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म संज्ञा होती है। जैसे, ज्ञानार्थक-शिष्यो धर्मं बुध्यते—चेला धर्म समझता है। गुरुः शिष्यं धर्मं बोधयति—गुरु चेले को धर्म समझाता है। भोजनार्थक—पुत्रोऽन्नमश्नाति—बेटा अन्न खाता है। माता पुत्रमन्नमाशयति—माँ बेटे को अन्न खिलाती है। आदयति, खादयति वा अन्नं पुत्रेण इत्यादि में नहीं होता।

शब्दकर्मकाणामकर्मकाणाञ्च—शब्दकर्मक अर्थात् पद, वाक्य, ग्रन्थ, उपदेश आदि शब्दात्मक कर्म वाले और अकर्मक धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म संज्ञा होती है। जैसे, शब्द-

कर्मक—शिष्यो वेदमधीते—चेला वेद पढ़ता है। गुरुः शिष्यं वेदमध्यापयति—गुरु चेले को वेद पढ़ाता है। अकर्मक—शिशुः शेते—लड़का सोता है। माता शिशुं शाययति—माता लड़के को सुलाती है।

विभाषा हृक्रोः—हृ और कृ धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की विकल्प से कर्म संज्ञा होती है। जहाँ कर्म संज्ञा नहीं होती वहाँ तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, भृत्यो भारं हरति, प्रभुः भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति—नौकर बोझा ढोता है, मालिक नौकर से बोझा ढोलवाता है। कुम्भकारः घटं करोति, रमेशः कुम्भकारं कुम्भकारेण वा घटं कारयति—कुम्हार घड़ा बनाता है, रमेश कुम्हार से घड़ा बनवाता है।

करणकारक (Instrumental Case)

साधकतमं करणम्—क्रिया की सिद्धि में जो सर्वप्रधान सहायक है उसे करणकारक कहते हैं। जैसे, स लेखिन्या पुस्तकं लिखति—वह कलम से पुस्तक लिखता है। इसमें लिखने का काम कलम ही से होता है इससे 'लेखिनी' करणकारक हुआ।

दिवः कर्म्म च—दिव् धातु का करण विकल्प से कर्मकारक होता है। जैसे—अक्षैः दिव्यति, अक्षान् वा दिव्यति—वह पासा खेलता है। इसमें अक्षैः अक्षान् दोनों हुए।

सम्प्रदानकारक (Dative Case)

यस्मै दानं सम्प्रदानम्—जिसको कोई वस्तु दान कर दी जाय उसे सम्प्रदान कहते हैं। जैसे, विप्राय गां ददाति—ब्राह्मण को गाय देता है। इसमें 'विप्राय' सम्प्रदान है। धोबी को धोने के लिये देने में 'रजकस्य' षष्ठी होती है।

रुच्यर्थानां प्रीयमाणः— रुच्यर्थक धातु के प्रयोग में प्रीयमाण (जो प्रसन्न हो वा जिसकी रुचि हो) की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे, हरये रोचते भक्तिः—हरि भक्ति से प्रसन्न होते हैं वा हरि को भक्ति अच्छी मालूम होती है अथवा हरि को भक्ति रुचती है। इदं तुभ्यं स्वदते—इसे तुम पसन्द करते हो वा यह तुमको अच्छा लगता है।

स्पृहेरीप्सितः— णिजन्त स्पृह् धातु के प्रयोग में जो कर्ता का ईप्सित—इच्छित हो अर्थात् स्पृहि धातु का जो कर्म हो उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे, बालः पुष्पेभ्यः स्पृहयति—लड़का फूल चाहता है। अत्यन्त इच्छित होने से कर्म में द्वितीया ही होती है।

धारेरुत्तमर्णः— धारि धातु के प्रयोग में जो उत्तमर्ण है अर्थात् ऋण वा उधार देने वाला है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे, अहं तुभ्यं शतं धारयामि—मैं तुम्हारा सौ रुपये का ऋणी (कर्जदार) हूँ।

क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः—क्रोधार्थक, द्रोहार्थक (अपकारार्थक), ईर्षार्थक, (डाहसूचक), असूयार्थक (गुण में दोष प्रकट करनेवाले) धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप किया जाय उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे, प्रभुः भृत्याय क्रुध्यति—मालिक नौकर पर रंज होता है। असुरा देवेभ्यः द्रुह्यन्ति, ईर्ष्यन्ति, असूयन्ति—दैत्य देवताओं से द्रोह और डाह करते हैं।

प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता—प्रति और आङ्पूर्वक श्रु धातु के प्रयोग में पूर्व कर्ता की सम्प्रदान संज्ञा होती है। जैसे, ब्राह्मणाय गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा—ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है। इसमें ब्राह्मण के द्वारा प्रवर्तित

होकर अर्थात् 'मुझे एक गाय दो' इस प्रकार प्रार्थित होकर गाय देने की प्रतिज्ञा करता है। इससे पहले के कर्ता ब्राह्मण की सम्प्रदान संज्ञा हुई।

क्रियया यमभिप्रेति– क्रिया के द्वारा जो अभिप्रेत हो अर्थात् जिसकी प्रीति होने के लिये कोई क्रिया की जाय उसकी संप्रदान संज्ञा होती है। जैसे, माता पुत्राय चन्द्रं दर्शयति—माता पुत्र को चन्द्रमा दिखाती है। गुरवे दक्षिणामाहरति—गुरु को दक्षिणा लाता है, इनमें पुत्र और गुरु की प्रीति साधित है।

अपादानकारक (Ablative Case)

ध्रुवमपायेऽपादानम्– किसी वस्तु से किसी वस्तु का अपाय, विश्लेष (अलगाव) प्रकट हो तो जो ध्रुव (स्थिर) अवधि है, अर्थात् जिससे विश्लेष प्रकट होता हो उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे, वृक्षात् पत्रं पतति—पेड़ से पत्ता गिरता है। इसमें वृक्ष स्थिर है और उससे पत्ते का अलग होना प्रकट होता है। इससे उसमें पञ्चमी विभक्ति हुई। यहाँ ध्रुव का अर्थ अवधिभूत है, वह चल हो वा अचल।

भीत्रार्थानां भयहेतुः—भयार्थक और त्राणार्थक अर्थात् जिन धातुओं से भय और रक्षा का अर्थ होता है उन धातुओं के प्रयोग में भय का जो कारण है वह अपादान होता है। जैसे, स व्याघ्रात् बिभेति—वह बाघ से डरता है। भल्लूकात् त्रायस्व माम्—भालू से मेरी रक्षा करो।

पराजेरसोढः—परापूर्वक जि धातु के प्रयोग में जो विषय असह्य है वह अपादान होता है। जैसे, पापात् पराजयते साधुः—साधु पाप सहने में असमर्थ है।

जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामपादानम्—जुगुप्सार्थक, घृणार्थक, विरामार्थक और प्रमादार्थक धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम और प्रमाद हो वह अपादान होता है। जैसे, पापात् जुगुप्सते साधुः—साधु पाप से घृणा करता है। नरकात् बीभत्सते महात्मा—महात्मा नरक से घिनाता है। अध्ययनात् विरमति छात्रः—विद्यार्थी पढ़ने से हटता है। कलहान्निवर्तते सज्जनः—सज्जन झगड़े से अलग रहता है। धर्मात् प्रमाद्यति नीचः—नीच धर्म से विमुख होता है।

वारणार्थानामीप्सितः—वारण (हटाना) अर्थवाले धातु के प्रयोग में जिससे निवारण करना (हटाना) हो वह अपादान होता है। जैसे, पापात् निवारयति पुत्रं पिता—पिता पुत्र को पाप से अलग करता है।

हेतुरुत्पत्तेः—उत्पत्ति के कारण की अपादान संज्ञा होती है। जैसे, पितुः पुत्रो जायते—बाप से बेटा जनमता है। दुग्धात् घृतमुत्पद्यते—दूध से घी पैदा होता है। धर्मात् सुखं भवति—धर्म से सुख होता है।

भुवः प्रभवः—भू धातु के प्रयोग में प्रकट होने का जो पहला स्थान है वह अपादान होता है। जैसे, हिमवतो गङ्गा प्रभवति—हिमालय से गंगा प्रकट होती है।

यस्यादर्शनमिच्छति—जिसके अदर्शन की अर्थात् वह न देख सके, ऐसी इच्छा करे तो वह अपादान होता है। जैसे, गुरोरन्तर्धत्ते छात्रः—विद्यार्थी गुरु से छिपता है। पितुर्लुकायते पुत्रः—बेटा बाप से छिपता है। अर्थात् पिता और गुरु हमें देख न सकें इससे उनके सन्मुख से हटना चाहते हैं।

त्रपार्थानां यतस्त्रपा—त्रपार्थक अर्थात् लज्जार्थक धातु के प्रयोग में जिससे लज्जित हो वह अपादान होता है। जैसे,

गुरोर्लज्जते—गुरु से लजाता है। मातुस्त्रपते—माता से लज्जित होता है।

आख्यातोपयोगे—उपयोग में अर्थात् नियमपूर्वक विद्याग्रहण करने में जो आख्याता अर्थात् जिसके निकट से विद्याग्रहण किया जाय वह अपादान होता है। जैसे, उपाध्यायात् अधीते छात्रः—विद्यार्थी अध्यापक से पढ़ता है। गुरोः शास्त्रं शृणोति—गुरु से शास्त्र सुनता है।

ग्रहणप्राप्त्यर्थानां तत्स्थानम्—ग्रहणार्थक और प्राप्त्यर्थक धातुओं के प्रयोग में ग्रहण-स्थान (जिसके निकट से ग्रहण किया जाय) और प्राप्तिस्थान (जिसके निकट से प्राप्त हो) अपादान होते हैं। जैसे, आचार्यात् उपदेशं गृह्णाति—आचार्य से उपदेश लेता है। प्रजाभ्यः करमादत्ते—प्रजाओं से कर लेता हैं। पण्डितात् शिक्षां प्राप्नोति—पण्डित से शिक्षा पाता है। गुरोर्ज्ञानं लभते—गुरु से ज्ञान पाता है।

अधिकरणकारक (Locative Case)

आधारोऽधिकरणम्—कर्ता और कर्म का जो आधार हो उसे अधिकरणकारक कहते हैं।

अधिकरणकारक तीन प्रकार के होते हैं—१ औपश्लेषिक (ऐकदेशिक), २ वैषयिक और ३ अभिव्यापक। कितने वैयाकरण दो और मानते हैं—४ कालबोधक और ५ सामीप्यबोधक।

१. औपश्लेषिक—वने वसति (वन के एक हिस्से में रहता है)

२. वैषयिक—धर्मे अनुरागोऽस्ति (धर्म विषय में प्रेम है)

३. अभिव्यापक—तिले तैलमस्ति (तिलभर में तेल है)

४. कालबोधक—वर्षासु वृष्टिर्भवति (वर्षाकाल में पानी पड़ता है)।

५. सामीप्यबोधक—गङ्गायां वसति (गंगा के किनारे वा निकट रहता है ।)

अभ्यास

१. सूक्ष्माक्षरपदों में कारकों के होने के नियम लिखो—

गृहात् प्रस्थितः । व्याघ्रात् रक्षति । सर्वस्वं गुरवे दद्यात् । इदं मह्यं स्वदते । गुरवे दक्षिणामाहरति । चौरात् लुक्कायते । स वेद-मधीते । आरूमध्यास्ते छात्रः । व्यसनात् पुत्रं निवारयति । गुरोर्ज्ञानं लभते । पितुस्त्रपते । मुद्रायै स्पृहयति । शत्रवे क्रुध्यति । दण्डेन प्रहरति । तिलेषु तैलमस्ति । गुरोरालयमाविशति । स मामभिद्रुह्यति । यज्ञदत्तः देवदत्तं गृहं गमयति । शिष्यो गुरुं धर्मं पृच्छति ।

२. कारण बता कर नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो—

रामं ग्रामं गच्छति । त्वं मम शतं मुद्राः धारयति । विष्णुः समुद्रे अधिशयितवान् । कृष्णः द्वारिकायामध्यवसत् । रामः ग्रामाय गच्छति । स भल्लुकं बिभेति । स दरिद्रात् धनं ददाति । माता पुत्राय अभिक्रुध्यति । स मां गां प्रतिशृणोति । पुत्रः पितरं लज्जते । धावतः अश्वस्य स अपतत् । मुनयः तपोवने अधिव-सन्ति । प्रातः भोजनं न त्वां रोचते । स नेत्रात् पश्यति ।

विभक्ति (Case-endings) Inflexion

संख्याकारकयोर्बोधयित्री विभक्तिः— जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं । जैसे—रामः, रामौ, रामाः । यहाँ 'राम' शब्द में प्रथमा विभक्ति होने से एक राम, दो राम और तीन वा बहुत राम का बोध होता है । अहं ग्रामं गच्छामि—इस वाक्य के 'ग्रामं' शब्द में द्वितीया विभक्ति रहने से कर्मकारक का बोध होता है ।

विभक्तयः सप्त— विभक्तियाँ सात हैं—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी।

प्रथमा विभक्ति (First Case-ending)

अभिधेयमात्रे प्रथमा— जहाँ केवल अभिधेय का अर्थात् शब्दार्थ का बोध हो, वहाँ प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—रामः, लता, पुष्पं, चन्द्रः, गिरिः, नारी।

सम्बोधने च—सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे राम !

अव्यययोगे च— इति, अपि आदि कई अव्ययों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे, अभूत् नृपः……दशरथ इत्युदाहृतः—दशरथ नामक एक राजा हुआ। विषवृक्षोऽपि संवर्द्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्—विष का भी पेड़ लगा कर अपने से काटना उचित नहीं है।

उक्ते कर्तरि कर्मणि च प्रथमा—उक्त अर्थात् जिस कर्ता और कर्म के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष हों ऐसे कर्ता और कर्म में (कर्तृवाच्य में कर्ता में और कर्मवाच्य में कर्म में) प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे उक्त कर्ता में—स गच्छति—वह जाता है। वयं गच्छामः—हम जाते हैं। स गृहं गतवान्—वह घर गया है। ताः गृहं गतवत्यः—वे घर गयीं। इन वाक्यों की क्रियायें कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार हैं। इससे इन वाक्यों के कर्ता उक्त हुए। उक्त कर्म में—रामेण रावणः हतः—राम ने रावण को मारा वा राम से रावण मारा गया। मया स्त्री दृष्टा—मैंने स्त्री देखी वा मुझसे स्त्री देखी गयी। मया त्वं दृश्यसे—मैं तुझे देखता हूँ वा मुझसे तू देखा जाता है। इन तीनों वाक्यों में रावणः, स्त्री और त्वं कर्म हैं

जिनके अनुसार क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष हैं। इससे इनमें कर्म उक्त हुए।

अभ्यास

१, नीचे लिखे शब्दों, वाक्यखण्डों और वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

शत्रु, पुस्तक, आग, पानी, पत्ता, भूमि, मोहन और लता। अय राजा, ओ मालिक, अरी छोकरी, हे भाई, राम का बेटा, दो भाई, एक लड़का। अयोध्या में (सप्तमी) दशरथ नाम के (तृतीया) प्रसिद्ध राजा थे। भाई मुझे बचावो। सूर्य चमकता है। कमल खिलेगा। कुत्ता भी पोस कर (संवर्द्ध्य) आप ही आप उसे मारना उचित नहीं है। महाराज, वैदिक धर्म रक्षा करने के लिये (रक्षितुं) आप ही योग्य हैं। धर्म ही धार्मिक को बचाता है। एक समय सब जीव मर जायँगे। मेरा मित्र आवेगा। मुझसे वेद पढ़ा गया। किससे सारा संसार देखा गया?

२, नीचे लिखे वाक्यों को सनियम शुद्ध करो—

बालकान् गच्छन्ति। वृक्षम्। लताम्। गिरिम्। हे देवदत्तम्। सूर्यम् उदेति। हे भगवान्। तेन गच्छति। अनेन कथयति। पाटलिपुत्रे चन्द्रगुप्तेन नाम्ना प्रसिद्धः राजा अभूत्। पापात्मानां संगं परित्यक्तुं साम्प्रतम्। लोकाः शशिनं सुधाकरमिति ब्रुवन्ति। भो बालकान् पाठं पठत। गुरुं शिष्यं शास्त्रं पाठयति। तेन बालकं चन्द्रं दर्शयति। वरं देशमपि त्यक्तुम्। हे भगवान् मयि कृपां क्रियताम्। मया तमुक्तवान्। तेन शिवं सेव्यः।

३, नीचे लिखे वाक्यों में प्रथमा विभक्ति होने के कारण बताओ—

भगवन् मयि कृपां विधेहि। अपि कुशली ते गुरुः। दश-

रथ इत्युदाहृतः। सखि पुष्पवाटिकां गच्छ। मरणं वरं परं नीच-सेवा विधातुं न वरम्। सूतो वाहान् रथं वाहयति। यः करोति रवेर्दिने। कस्त्वम्। तेन कर्म कृतम्। मया चन्द्रो दृश्यते। क्रमा-दमुं नारद इत्यबोधि सः।

द्वितीया (Second Case-ending)

अनुक्ते कर्म्मणि द्वितीया—अनुक्त कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, स चन्द्रं पश्यति—वह चन्द्रमा देखता है। अहं जलं पिवामि—मैं जल पीता हूँ।

टिप्पणी—मानना, जानना, चुनना, समझना आदि कितने ऐसे धातु हैं जिनके दो कर्म होते हैं। जैसे, त्वामनुमनन्ति प्रकृतिं—तुमको लोग प्रकृति समझते हैं। जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं—तुमको मैं प्रधान पुरुष जानता हूँ यथार्थतः ये द्विकर्मक नहीं हैं। विधेयविशेषण हैं।

क्रियाविशेषणे च—क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, स शीघ्रं धावति—वह जल्द दौड़ता है। मधुरं भाषते—मधुर बोलता है। मन्दं मन्दं हसति—धीरे २ हँसता है। इनमें शीघ्र आदि क्रियाविशेषण हैं।

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे—अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति (लगा-तार) बोध होने से अध्व (रास्ता) वाचक और काल (समय) वाचक शब्दों के आगे द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, अध्व-वाचक—क्रोशं गिरिः स्थितः—कोस भर में पर्वत है। काल-वाचक—मासमधीते—महीने भर पढ़ता है।

अभिपरिसर्वोभयैस्तसन्तैः—तस् प्रत्ययान्त अभि, परि, सर्व और उभय अर्थात् अभितः, परितः, सर्वतः और उभयतः शब्दों के

योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, ग्राममभितः—गाँव के चारो तरफ। गृहं परितः—घर के चारो तरफ। सर्वतः कृष्णं—कृष्ण के सब ओर। नदीमुभयतः—नदी के दोनों ओर।

प्रत्यनुहाधिङ्निकषासमयान्तरान्तरेणयावद्भिः—प्रति, अनु, हा, धिक्, निकषा, समया, अन्तरा, अन्तरेण और यावत् शब्द के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, दीनं प्रति दयां कुरु—गरीब पर दया करो। राममनुजातो लक्ष्मणः—राम के पीछे लक्ष्मण हुए। हा कृष्णाभक्तं—कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है। धिक् कृष्णाभक्तं—कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है। ग्रामं, निकषा वा समया नदी वहति—गाँव के पास नदी बहती है। स त्वां मां च अन्तरा उपविष्टः—वह हम तुम दोनों के बीच में बैठा है। श्रममन्तरेण विद्या न भवति—विना परिश्रम के विद्या नहीं होती। वनं यावदनुसरति—जंगल तक वह पीछा करता है।

टिप्पणी—धिक् हा प्रभृति अव्ययों के योग में सम्बोधन में द्वितीया विभक्ति न होकर प्रथमा विभक्ति ही होती है। जैसे, धिङ्मूर्ख, हा भगवति, अरुन्धति। कभी २ कर्तृपद के साथ आने पर भी द्वितीया नहीं होती। जैसे—धिगियं दरिद्रता—(पञ्चतन्त्रम्) इस दरिद्रता को धिक्कार है !

आम्रेडितान्तेषूपर्यादिषु त्रिषु द्वितीया—आम्रेडितान्त अर्थात् दो बार कहे गये, उपरि, अधि और अधः अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, उपर्युपरि लोकं हरिः—भगवान् संसार से ऊपर हैं। अध्यधि लोकं—ठीक संसार के ऊपर। अधोऽधो लोकं—ठीक संसार के नीचे।

कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया—जो उपसर्ग धातुओं के साथ न मिलकर स्वयं उपपद के समान प्रयुक्त होते हैं उन्हें कर्मप्रवचनीय कहते हैं। विशेष २ अर्थ में अनु, उप, अभि, अति,

अव्ययों की कर्मप्रवचनीय संज्ञा होती है और उनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, हीनार्थ में—अनुहरिं सुराः—हरि की अपेक्षा देवता छोटे हैं। उपदेवदत्तं यज्ञदत्तः—यज्ञदत्त देवदत्त से छोटा है। सम्मुख और निकट अर्थ में—हरिमभि-वर्तते—हरि के सामने वा निकट है। श्रेष्ठ अर्थ में—अति देवान् कृष्णः—कृष्ण सब देवताओं के ऊपर हैं।

गत्यर्थधातोरधिकरणे द्वितीया—गमनार्थक धातु के अधिकरण कारक में द्वितीया होती है। जैसे, गतोहं कलिङ्गान्—कलिङ्ग देश में गया। अहमपि महीमटन्—मैं भी पृथ्वी पर घूमता हुआ। विचचार दावम्—जंगल में घूमा।

टिप्पणी—गमनार्थक धातु प्रायः ज्ञानार्थक और प्राप्त्यर्थक होते हैं। इन अर्थों में भी द्वितीया विभक्त होती है। जैसे, ज्ञानार्थक—अश्वत्थामा किं न यातः स्मृतिं ते—अश्वत्थामा का तुम्हें स्मरण नहीं है? प्राप्त्य-र्थक—स परं विषादमगच्छत्—उसको बहुत दुःख हुआ। न तृप्तिमाययौ—तृप्ति नहीं मिली।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

राजा सिंहासन पर बैठता है (अधि+स्था) विष्णु समुद्र में सोते हैं (अधि+शी)। राजा अपनी प्रजा का पालन करता है। देवता और राक्षस अमृत के लिये समुद्र मथते हैं। दादा अपने पोते की कहानी सुनता है। युधिष्ठिर ने जुआ खेला। वह एक महीने में व्याकरण पढ़ गया। शिवजी हिमालय पर रहते हैं (अधि+वस्) हमारे घर में चारो ओर फुलवारी है। बिना पुण्य के सुख नहीं मिलता। नदी किनारे तक तुम्हारे

साथ चलूँगा। जंगल के पास नहीं है। गाँव के सब ओर खेत है। लंका के पास वानरों ने राम को चारों ओर से घेर लिया। शिक्षित आदमी सन्मार्ग पर चलते हैं। वेद की अपेक्षा सब शास्त्रहीन हैं। चौदह वर्ष राम ने वनवास किया। उस राक्षसी ने सौ योजन का मुँह बनाया। तुझे धिक्कार है जो नहीं पढ़ा। फल फूल के बिना पेड़ की शोभा नहीं होती। मालिक नौकर पर क्रोध करता है (अभि + क्रुध्)। वह मीठा बोलता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सनियम शुद्ध करो—

शिवः हिमालये अधिशेते। पर्वतस्य परितः वनम्। रामस्य अन्तरेण अयोध्या शून्या जाता। नास्तिकाय धिक्। देवाः स्वर्गे अनुवसन्ति। दीनानां प्रति दया कर्त्तव्या। नद्याः उभयतः वृक्षाः। नदी यावत् त्वं गच्छ। तव च मम च अन्तरा रामः। यत्नस्य बिना किंमपि न सिद्ध्यति। रामस्य अनु लक्ष्मणो जातः। स नगरे आवसति। द्रुतेन धावति। ग्रामस्य निकषा नदी वहति। क्रोशेषु गिरिः स्थितः। गोः पयः दोग्धि। नृपेभ्यः प्रति कवयो वदन्ति। स नगरे गच्छति।

३. नीचे लिखे वाक्यों में द्वितीया विभक्ति होने के कारण बताओ—

तण्डुलान् ओदनं पचति। दरिद्रान् भर कौन्तेय। रामः ग्रामम् अध्यास्ते। कृष्णः द्वारिकाम् अनुवसति। शीघ्रं गच्छ। स मासमधीते। क्रोशं गिरिः तिष्ठति। नदीम् उभयतः मार्गः अस्ति। वनं यावत् अनुसरति। जपम् अनु प्रावर्षत्। अन्तरेण हरिं न सुखम्। धिक् पापिनम्। गुरुः शिष्यं ग्रन्थं पाठयति। पृथिवी सूर्यमधोऽधः वर्तते। नृपं प्रति कथय।

तृतीया (Third Case-ending)

कर्तृकरणयोस्तृतीया—अनुक्त कर्ता अर्थात् जिसके अनुसार क्रिया के लिंग, वचन आदि न हों (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ताकारक) और करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, रामेण बाणेन हतो बाली—राम ने बाण से बाली को मारा। इसमें 'हतः' इस क्रिया के योग में अनुक्त कर्ता 'रामेण' में तृतीया है और 'बाणेन' करण में तृतीया हुई है। रामेण रुद्यते—राम रोता है। कुठारेण काष्ठं छिनत्ति—कुल्हाड़ी से काठ काटता है।

प्रकृत्यादिभ्यश्च—स्थल-विशेष में प्रकृति आदि कितने शब्द हैं जिनके उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, प्रकृत्या सुन्दरः—स्वभाव से सुन्दर है। जात्या ब्राह्मणः—ब्राह्मण जाति का है। नाम्ना रमेशः—रमेश नाम है। आकृत्या मनोहरः—देखने में सुन्दर है। सुखेन स्वपिति—सुख से सोता है। प्रायेण दुःखितः—प्रायः दुःखी रहता है। दुःखेन वदति—दुःख से बोलता है। वेगेन गच्छति—जल्द जाता है इत्यादि।

अपवर्गे तृतीया— अपवर्ग अर्थात् क्रिया समाप्ति के साथ फल-प्राप्ति होने में कालवाचक और अध्ववाचक शब्दों के उत्तर अत्यन्त संयोग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, द्वादशभिः वर्षैः व्याकरणं श्रूयते—बारह वर्ष में व्याकरण पढ़ा जाता है। क्रोशेन संहिताऽधीता—कोश भर जाते २ संहिता पढ़ ली। जहाँ फल नहीं बोध होता वहाँ द्वितीया ही होती है। जैसे, मास-मधीतो नायातः—महीने भर पढ़ा पर नहीं आया।

सहादियुक्तेऽप्रधाने—सह अथवा सहार्थक साकं, सार्द्धं, समं आदि शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे, रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम—राम सीता और लक्ष्मण के साथ वन गये। शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यच्च गच्छति—शरीर के साथ ही सब कुछ नष्ट हो जाता है। केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्तव्यः—किसी के साथ विरोध न करना चाहिये। आस्स्व साकं मया सौधे—मेरे साथ कोठे पर बैठो। सहार्थक शब्द के अप्रयोग में भी तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, पिता पुत्रेण गच्छति—पिता पुत्र के साथ जाता है।

येनाङ्गविकारः—जिस अङ्ग के विकार से अङ्गी अर्थात् शरीर-धारी का विकार जान पड़े उस अङ्ग के उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, अक्ष्णा काणः—एक आँख का काना है। पादेन खञ्जः—एक पैर से लँगड़ा है।

इत्थम्भूतलक्षणे—जिस लक्षण वा चिह्न के द्वारा कोई व्यक्ति वा वस्तु लक्षित हो उस लक्षणबोधक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, जटाभिः तापसः—जटा है इसीसे तपस्वी मालूम होता है।

ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च—ऊनार्थक—हीनार्थक, वारणार्थक—निषेधार्थक और प्रयोजनार्थक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, ऊनार्थक—एकेन ऊनः—एक (से) कम। विद्यया हीनः—विद्या से हीन। गर्वेण रहितः—गर्व से हीन। अहङ्कारेण शून्यः—विना अहङ्कार के। वारणार्थक—अलंश्रमेण—परिश्रम निरर्थक है। कृतमुपदेशेन—उपदेश देना व्यर्थ है। किं तया क्रियते धेन्वा—उस गाय से क्या काम? प्रयोजनार्थक—देवपादानां सेवकैर्न प्रयोजनम्—स्वामी को सेवकों का कुछ प्रयोजन नहीं है। कोऽर्थः पुत्रेण जातेन—पुत्र उत्पन्न होने का क्या प्रयोजन? भृत्येन को गुणः—नौकर का क्या काम?

हेतौ—हेतु अर्थ में तृतीया विभक्ति होती है। हेतु दो प्रकार

का है—(१) कारणस्वरूप और (२) फलस्वरूप; जैसे, कारण—विद्यया यशः—विद्या से यश होता है। अर्थात् यश का कारण विद्या ही है। फल—अध्ययनेन वसति—पढ़ने के लिये रहता है। अर्थात् उसके रहने का फल पढ़ना ही है।

तृतीया प्रयोज्ये—प्रयोज्य कर्ता अर्थात् णिजन्त अवस्था में जो अणिजन्त कर्ता है उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—देवदत्तः ओदनं पचति, यज्ञदत्तः देवदत्तेन ओदनं पाचयति—देवदत्त भात पकाता है, देवदत्त यज्ञदत्त से भात पकवाता है। इसमें देवदत्त अणिजन्त अवस्था का कर्ता है। णिजन्त अवस्था में उसमें तृतीया विभक्ति हो गयी।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

उसकी पीठ कुबड़ी है। वह स्वभाव ही से कोमल है। मैंने गुरु से दो वर्ष सामवेद का स्वर सीखा पर आया नहीं। ज्योतिष पढ़ने से ग्रहण का ज्ञान होता है। अयोध्या राम से सूनी हो गयी। उस नौकर से क्या होगा? विना चन्द्रमा के रात की शोभा क्या? पलक मारते वह भाग गया। वायु और प्रकाश ही से आदमी का जीवन है। एक ही पक्ष में कारक सीख लिया। मनुष्य अपने किये शुभाशुभ कर्म का फल तीन दिन, तीन मास या तीन वर्ष में पा जाता है। वह भारद्वाज गोत्र है। बेटे के बिना जीना दुर्लभ है। दिन बढ़ने के साथ ही सन्ताप बढ़ा। ब्रह्मा की बनायी सृष्टि है। सीता राम से मिली। ग्वाला गाय को घास खिलाता है। ब्राह्मणों ने देवताओं को यज्ञ से वश कर लिया। पढ़ कर क्या करोगे? पोथी से विद्यार्थी जान पड़ता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

स कर्णस्य बधिरः। अहं मासं व्याकरणमधीतवान्। त्वं जातौ ब्राह्मणः। तव साकं नाहं गच्छामि। मासत्रयेण काव्यं पठित्वा किमपि फलं न लब्धवान्। अलं विवादाय। द्वयोः वर्षयोः न्यूनः सः। विद्याया हीनस्य नरस्य किं प्रयोजनं जीवनस्य। वेगात् नदी वहति। कृपणस्य कृतं धनात्। त्वं दर्पात् शून्यः। धनात् प्रयोजनम्। अलङ्कारेभ्यः बालकमपश्यम्। स वसने मुखमाच्छादयति। आकृतौ सुन्दरः प्रकृतौ च मधुरः। पादयोः खञ्जः। अहं लेखिन्याः लिखामि। रमेशः महेशं धनं चोरयति। अहं पञ्चानां मुद्राणां पुस्तकं क्रीतवान्।

३. नीचे के वाक्यों में तृतीया विभक्ति होने के कारण बतावो—

जात्या वैश्यः। प्रविवेश तया साकम्। लताप्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैरधिज्यधन्वा विचचार दावम्। शशिनेव निशा हीना। रामेण अवरः लक्ष्मणः। पुण्येन दृष्टो हरिः। वृद्धः यूना आगतः। कलहेन किम्। क्लेशेन वदति। भर्तुराज्ञांसूर्ध्ना आदाय। स स्वानं स्कन्धेन उवाह। कतमेन दिग्भागेन गतः स जाल्मः। स्वरेण रामभद्रमनुहरति। धनदेन समस्त्यागे। भक्त्या प्रीतास्मि। अलमतिविस्तरेण। कृतमति प्रसादेन। किं वहुना। अक्षैः दिव्यति।

चतुर्थी (Fourth Case-ending)

सम्प्रदाने चतुर्थी—सम्प्रदानकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, विप्राय गां ददाति—ब्राह्मण को गाय देता है। धनी दरिद्राय धनं ददाति—धनी गरीब को धन देता है।

तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या—तादर्थ्य में अर्थात् जिसके निमित्त कोई वस्तु अभिप्रेत हो वा कोई क्रिया की जाय उसमें चतुर्थी

विभक्ति होती है। जैसे, अश्वाय घासः—घोड़े के लिये घास है। मुक्तये हरिं भजति—मुक्ति के लिये भगवान का भजन करता है।

निवृत्तौ च निवर्तनीयात्—निवृत्तिबोध होने से निवर्तनीय के अर्थात् जिसका निवारण किया जाय, उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, मशकाय धूमः, मशकनिवृत्तये इत्यर्थः—मच्छड़ भगाने के लिये धुँवा किया जाता है। पापाय प्रायश्चित्तम्, पापनिवृत्तये इत्यर्थः—पाप दूर करने के लिये प्रायश्चित्त किया जाता है।

क्लृपि सम्पद्यमाने च—क्लृपि प्रभृति धातुओं के प्रयोग में सम्पद्यमान अर्थात् जो सम्पन्न हो, उसके उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते—भक्ति से ज्ञान होता है। ज्ञानं सुखाय सम्पद्यते—ज्ञान सुख में परिणत होता है। प्रभुवचनं मे सन्तोषाय जायते—स्वामी के वचन से मुझे सन्तोष है। धर्मः स्वर्गाय भवति—धर्म स्वर्ग में पहुँचाता है।

हितसुखयोगे च—हित और सुख शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, ब्राह्मणाय हितं सुखं वा—ब्राह्मण का हित वा सुख हो।

नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलं वषट् योगाच्च—नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं और वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, श्रीगणेशाय नमः—गणेश जी को नमस्कार। स्वस्ति राज्ञे—राजा का कल्याण हो। अग्नये स्वाहा—अग्नि को यह हवन। पितृभ्यः स्वधा—पितरों को यह अन्नजल। दैत्येभ्यो हरिरलम्—भगवान् दैत्यों के लिये समर्थ हैं। इन्द्राय वषट्—इन्द्र को यह दान।

समर्थार्थैश्च—समर्थार्थक शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति

होती है। जैसे, अलं, शक्तः, समर्थः, प्रभुः मल्लो मल्लाय—एक पहलवान दूसरे के लिये यथेष्ट ही है। क्रियायोग में भी होता है। जैसे—प्रभवति मल्लो मल्लाय शक्नोति मल्लो मल्लाय—पहलवान पहलवान का सामना कर सकता है।

मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु—अनादर बोध होने से दिवादिगणीय मन् धातु के अनादर बोधक कर्म में द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—स त्वां तृणं तृणाय वा मन्यते—वह तुम्हें घास बराबर समझता है।

टिप्पणी—शृगाल, काक, नौ, शुक, अन्न कर्म होने से केवल द्वितीया ही होती है। जैसे—त्वामहं शृगालं मन्ये—मैं तुम्हें सियार समझता हूँ। प्राणिवाचक में केवल द्वितीया ही होती है। जैसे, अहं त्वां चौरं मन्ये—मैं तुमको चोर समझता हूँ।

गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि—शारीरिक चेष्टा बोध होने से गमनार्थक धातुओं के अध्व (पथ) वाचक शब्द से भिन्न कर्म में द्वितीया चतुर्थी दोनों होती हैं। जैसे, ग्रामाय ग्रामं वा गच्छति—गाँव में जाता है। चेष्टा नहीं बोध होने से केवल द्वितीया होती है। जैसे, मनसा हरिं व्रजति—मन से भगवान के पास जाता है। इसमें शारीरिक चेष्टा नहीं है।

क्रियार्थोपपदस्य च कर्म्मणि स्थानिनः—तुम् प्रत्ययान्त क्रिया उह्य (understood) होने से उसके कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, जलाय (जलमानेतुं) सरोवरं गच्छति—जल लाने को तालाव पर जाता है। वनाय (वनं गन्तुं) धेनुं मुमोच—वन जाने के लिये गाय को खोला।

तुमर्थाच्च भाववचनात्—तुम् प्रत्यय के अर्थ में भाववाच्य में क्ति घञ, अन् आदि प्रत्यय करके जो शब्द बनते हैं अर्थात् निमित्तार्थक तुम् प्रत्ययान्त पद के बदले भाववाच्य से बने हुए जो

विशेष्य शब्द व्यवहृत हों उनके उत्तर चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे, यागाय याति यष्टुं यातीत्यर्थः—यज्ञ करने के लिये जाता है। स्नानाय (स्नातुं) याति—स्नान करने के लिये जाता है।

निवेदनार्थधातुयोगे च—निवेदनार्थक कथ्, ख्या, शंस् और चक्ष् निपूर्वक विद् आदि धातु के योग में चतुर्थी होती है। जैसे, आर्यें! कथयामि ते भूतार्थं—आर्यें! सच्ची बात तुमसे कहता हूँ। यस्मै ब्रह्मपारायणं जगौ—जिसे वेद का उपदेश दिया।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

उससे निवेदन कर दो। जनक ने प्रेम से राम को जानकी दी। मित्र का सर्वदा हित करना चाहिये। ईश्वर सबको सुख दे। विद्या ज्ञान के लिये होती है। फल मनुष्यों को लाभदायक है। लड़कों को मिठाई अच्छी लगती है। राज्य बढ़ाने के लिये राजा लड़ते हैं। तुमने व्यापार के लिये मुझसे एक हजार रुपये कर्ज लिये हैं। न पढ़ने के कारण तुम्हारे पिता तुम पर रुष्ट हैं। यशस्वी यश चाहते हैं। सभी मुझसे डाह रखते हैं। सज्जन दान के लिये धन इकट्ठा करते हैं। कुण्डल के लिये सोना है। इतना भोजन मेरे लिये पर्याप्त है। ध्यान से मैं तुम्हारे पास पहुँच गया। राम ने शिवजी के धनुष को कमल की डंठी-सा समझ तोड़ दिया। मैंने तुम्हारा संवाद उन्हें दे दिया। पानी को कुएँ पर जाता है। तुम्हारा कल्याण हो। ब्राह्मण को नमस्कार। तुमको दो गाय देने की प्रतिज्ञा करता हूँ। वह मेरे लिये काफी है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

दानेन धनम्। नाहं तस्यै अभिद्रुह्यामि। स रजकाय वस्त्रं ददाति। न त्वां शृगालाय मन्ये। अतस्त्वां दूरादेव नमः। कुण्डलस्य सुवर्णम्। भिक्षुकस्य भिक्षां देहि। रमेशः पथे गच्छति। तस्मिन् स क्रुद्धः भवति। स मां पुस्तकमेकं प्रतिशृणोति। साधोः शिक्षा गुणे सम्पद्यते। दुर्जनानामुपदेशः प्रकोपस्य भवति न शान्तेः। स मामसूयति। पुत्रस्य क्रीडनकमानयति। तव सुखम्। तस्य हितम्। इदं तव रोचते। पुष्पेषु पुष्पवाटिकां याति। अहं तव शतं धारयामि। वीरो वीरस्य समर्थः। आतपेन आतपत्रम्। स पुष्पाणां स्पृहयति।

३. नीचे लिखे वाक्यों में चतुर्थी विभक्ति होने के कारण बताओ—

वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे। यज्ञदत्ताय स्वदतेऽपूपः। स मह्यं द्रुह्यति। रघुनन्दनः हरधनुः तृणाय मेने। काव्यं यशसे। हनुमान् रामाय सीतान्वेषणं प्रतिशुश्राव। धनाय वयं स्पृहयामः। काष्ठानयनाय प्रस्थिता वयम्। कल्पसे रक्षणाय। स्वस्ति भवते। तस्मै दण्डप्रणाममकरवम्। मैथिलाय कथयाम्बभूव। समर्थोऽयमेव भृत्यः मत्कार्याय। धीमते रोचते विद्या। स्वस्त्यस्तु ते। स्वर्गाय धर्ममाचरति। स्नानाय गच्छामि।

पञ्चमी (Fifth Case-ending)

अपादाने पञ्चमी—अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, वृक्षात् पत्राणि पतन्ति—वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

ल्यप्लोपे कर्मण्यधिकरणे च—ल्यप् (क्त्वा और ल्यप्) प्रत्ययान्त क्रिया के लोप में अर्थात् उसके अप्रयोग में कर्म और अधिकरण में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, प्रासादात् प्रेक्षते—प्रासाद-

आरुह्य इत्यर्थः—कोठे पर चढ़ कर देखता है। इसमें 'प्रासाद' कर्म है। आसनात्प्रेक्षते—'आसने' उपविश्य इत्यर्थः—आसन पर बैठकर देखता है। इसमें 'आसने' अधिकरण है।

कालाध्वनोरवधेः—कालपरिमाण और अध्वपरिमाणबोध होने से अवधिबोधक शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, कालपरिमाण—माघात् तृतीये मासि—माघ से तीसरे महीने में। विवाहात् सप्तमे दिवसे—विवाह से सातवें दिन। अध्वपरिमाण—प्रयागात् त्रिंशत् कोशाः—प्रयाग से तीस कोस।

निकृष्टादेकोत्कर्षे—दो वा अनेक पदों में से एक का उत्कर्ष-बोध होने से निकृष्ट के आगे पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—धनात् विद्या गरीयसी—धन से विद्या चढ़ी बढ़ी है।

मर्यादाभिविध्योरायोगे—मर्यादा (सीमा) और अभिविधि (व्याप्ति) बोध होने से 'आ' इस अव्यय के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, मर्यादा—आकैलासात्—कैलास तक। आमुक्तेः संसारः—जब तक मुक्ति नहीं होती तब तक संसार में रहना पड़ता है। अभिविधि—आमूलात् श्रोतुमिच्छामि—आरम्भ से ही सुनना चाहता हूँ।

अन्यार्थैः—अन्य अर्थवाचक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, मित्रादन्यः को मां परित्रातुं समर्थः—मित्र को छोड़ कर और कौन मुझे बचाने के योग्य है? भिन्न, विलक्षण, अतिरिक्त, इतर आदि अन्यवाचक शब्द हैं।

दिग्देशकालवाचिभिः—दिग्वाचक, देशवाचक और कालवाचक शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, दिग्वाचक—पूर्वो ग्रामात्—गाँव से पूरब। उत्तरो गृहात्—घर से उत्तर। देशवाचक—चैत्रो मैत्रात् पूर्वदेशे—चैत्र मैत्र से पूर्व देश में है।

कालवाचक—चैत्रात् पूर्वं फाल्गुनः—चैत्र से पहले फाल्गुन होता है। भोजनात् प्राक्—भोजन से पहले।

बहिराराद् प्रभृतिभिः—बहिः, आरात् और प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, ग्रामात् बहिः—गाँव से बाहर। आरात् वनात्—वन के पास वा दूर। शैशवात् प्रभृति—बचपन से ही।

टिप्पणी—ऊर्ध्वं, परं, अनन्तरं आदि शब्दों के योग में भी पंचमी होती है। जैसे, वत्सरात् ऊर्ध्वं—एक वर्ष के बाद। भाग्यायत्तमतः परम्—इसके बाद भाग्याधीन है आदि।

आआहिभ्यां च—आ और आहि प्रत्ययान्त शब्दों के योग में पंचमी होती है। जैसे, हिमालयात् दक्षिणा भारतवर्षम्—हिमालय से दक्खिन भारत है। दक्षिणाहि वसन्ति चाण्डालाः-दक्खिन में चाण्डाल रहते हैं।

ऋते योगे द्वितीया च—ऋते के योग में पञ्चमी और द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, ऋते परिश्रमात् परिश्रमं वा विद्या न भवति—विना परिश्रम के विद्या नहीं होती।

हेतौ च—हेतुबोध होने से तद्बोधक शब्द में पञ्चमी और तृतीया दोनों होती हैं। जैसे, बालो भयात् भयेन वा कम्पते—लड़का डर से काँपता है।

पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च—पृथक और विना शब्द के योग में पञ्चमी, द्वितीया और तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—श्रमात्, श्रमेण, श्रमं विना किमपि न सिद्ध्यति—विना परिश्रम के कुछ नहीं होता।

स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयेभ्यस्तृतीया च—स्तोक (थोड़ा), कृच्छ्र (कष्ट), अल्प और कतिपय शब्दों के उत्तर पञ्चमी और तृतीया दोनों विभक्तियाँ होती हैं। जैसे, स्तोकात् स्तोकेन वा मुक्तः—

थोड़े ही से बच गया इत्यादि। विशेषण होने से नहीं होता। जैसे, स्तोकः पाकः—थोड़ी रसोई। स्तोकं पचति—थोड़ा पकाता है।

प्रश्नाख्यानयोश्च—प्रश्न और आख्यान के उत्तर में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, कस्मात् त्वं ? नद्याः—कहाँ से तुम आये ? मैं नदी से आता हूँ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

वह आपकी आज्ञा पालने से सकुचता है। समुद्र से लेकर हिमालय तक उसका यश फैला है। वीर होकर शत्रु से डरते हो। साधु लोग सांसारिक विषयों से अपने चित्त को निवृत्त रखते हैं। धन से धर्म और धर्म से सुख होता है। आपने यह बात किससे सुनी ? पेड़ पर चढ़ कर वह तुझे देखता है। बुरे भी भले के साथ से बड़ों के पास पहुँचते हैं। उनके अतिरिक्त मेरा और कोई मित्र नहीं है। जब तक वे प्रसन्न न होंगे तब तक उनकी सेवा करेंगे। संस्कृत की उन्नति काश्मीर ही से पहले हुई। बहुत कष्ट से घर पहँचा। ज्ञान से बढ़ कर और कुछ नहीं है। पुण्य के आगे पाप विलीन हो जाता है। अगस्त्य मुनि घड़े से पैदा हुए थे। सज्जनों के बिना दुखियों का कौन दुःख छुड़ा सकता है। हिमालय से उत्तर तिब्बत में एक झील है। सीतानिर्वासन के समय से ही राम का चित्त स्थिर नहीं है। कुटी के पास ही कूप है। गंगा हिमालय से निकली है। पण्डित से पढ़ता है। नाव पर से उतरता है। विपत्ति से छूटा।

२. नीचे के वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

मातरं लज्जते स मूर्खः। स मां बिभेति। अयमस्य भिन्नः? शैशवस्य प्रभृति सोऽन्धः। तव विना मे न कोऽपि सहायकः। भोजनस्य अनन्तरं पठिष्यामि। अल्पात् परिश्रमात् कार्यं कृतवान्। भारतस्य दक्षिणाहि लङ्का। शिक्षकस्य उपदेशं गृह्णाति। विद्यया बुद्धिरुत्तमा। चौरभये पलायते। त्वं मम पूर्वदेशे। तृणस्य उर्द्धं। नगरस्य वहिः। प्रस्थानस्य पूर्वम् स विवादे विरमति। भयस्य रक्षति। पापेन दुःखमुत्पद्यते। विवाहस्य तृतीये दिने गृहस्य निर्गतः। आशैशवं मां पालयति। मित्रेणान्यः कः उपकरोति। त दिवसमारभ्य स दुःखितोस्ति। त्रायस्व मां भवबन्धनेन। स यवानां गां निवारयति।

३. नीचे के वाक्यों में पञ्चमी विभक्ति होने के कारण बताओ—

ग्रामादायाति। पर्वतो वह्निमान् धूमात्। श्वशुराज्जिह्रेति। कुतो भवान्? पाटलिपुत्रात्। स्वाधिकारात् प्रमत्तः। गोमयात् वृश्चिको जायते। लोभात् क्रोधः प्रभवति। लोकापवादाद्भयम्। अध्ययनात् पराजयते। अस्मात्परम्। ततः प्रभृति। आपरितोषाद्विदुषाम्। विरम्यतामति प्रसंगात्। प्राग्विनशनात्। मतेर्विना न विद्या। पथोऽपसरति चाण्डालः। वर्द्धनाद्रक्षणं श्रेयः। सूर्योपस्थानात् प्रतिनिवृत्तम्। कुतो भवत्यः परित्रातव्याः। नास्ति जीवितात् अन्यत् किमपि प्रियम्।

षष्ठी (Sixth Case-ending)

सम्बन्धे षष्ठी—सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, मम पिता—मेरे बाप। वृक्षस्य शाखा—पेड़ की डाल। राज्ञः पुरुषः—राजा का आदमी। सुवर्णस्य कुण्डलं—सोने का कुण्डल।

कर्तृकर्मणोः कृति---कृत् प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे, कर्ता में—शिशोः शयनम्—बच्चे का सोना। अश्वस्य गतिः—घोड़े की चाल। मम बुभुक्षा—मेरी भूख। कर्म में—अन्नस्य पाकः—अन्न का पकना। सुखस्य भोगः—सुख का भोग।

उभयप्राप्तौ कर्मणि---कर्ता और कर्म दोनों में षष्ठी की सम्भावना होने से केवल कर्म ही में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, धनस्य दानं नृपेण—राजा का धन देना। अर्थस्य हरणं चौरेण—चोर का धन चुराना।

क्वचिद्विभाषा कर्तरि---कहीं २ कर्ता में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, घटस्य कृतिः कुम्भकारेण कुम्भकारस्य वा—घड़ा कुम्हार की कृति है। शिष्यस्य प्रशंसा गुरुणा गुरोर्वा—गुरुकृत शिष्य की प्रशंसा।

न लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृणाम्—ल (शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्), उ, उक, अव्यय (क्त्वा, ल्यप्, तुम्, णमुल्) निष्ठा (क्त, क्तवतु), खलर्थ (सु, दुः और ईषत् उपपद में जो सारे कृत् प्रत्यय होते हैं) और तृन्, इन प्रत्ययों से बने शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति नहीं होती। जैसे, शतृ और शानच्—कार्यं कुर्वन् कुर्वाणो वा—काम करते हुए। क्वसु—अन्नं पेचिवान्-अन्न पकाते, कानच्—गुरुं ववन्दानः—गुरु को प्रणाम करते। उ—जलं पिपासुः—जल पीने के इच्छुक। उक—दैत्यान् घातुकः—दैत्य के मारने वाले। तुम्—ग्रामं गन्तुं—ग्राम जाने के लिये। त्वा—जलं पीत्वा-पानी पीकर। ल्यप्-गुरुं प्रणम्य-गुरु को प्रणाम कर। णमुल्—शास्त्रं श्रावं श्रावं—शास्त्र सुन सुन कर। निष्ठा—विष्णुना हताः दैत्याः—भगवान् ने दैत्यों को मारा। क्तवत्—स गृहं गतवान्—वह घर गया। खलर्थ—

नैतत् सुकरं भवता—यह तुम्हारे लिये सहज नहीं है। नैतत् दुष्करं तेन—उसके लिये यह कठिन नहीं है। सर्वमीषत्करं सुधिया—विद्वानों के लिये सब तुच्छ है। मया सुमर्षणः शत्रुः—मेरे लिये शत्रु-शासन सहज है। त्वया दुःशासनो रिपुः—तुम्हारे लिये शत्रु-शासन कठिन है।

द्विषः शतुर्वा—शतृप्रत्ययान्त द्विष् धातु के कर्म में विकल्प से षष्ठी होती है। चौरं चौरस्य वा द्विषत्—चोर से द्वेष करते हुए।

क्तस्य च वर्तमाने—वर्तमानकाल में किये गये क्त प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, सतां पूजितः, सद्भिः पूजित इत्यर्थः—सज्जनों से पूजित। राज्ञां मतः राजभिः सम्मानित इत्यर्थः—राजाओं से आदृत।

अधिकरणवाचिनश्च—अधिकरणकारक में विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, इदमेषां शयितम्—यह उनके सोने का स्थान है। इदमेषामासितम्—यहाँ वे बैठे थे।

विभाषा भावे—भाववाच्य में किये गये क्त प्रत्यय के कर्ता में विकल्प से षष्ठी होती है। जैसे, छात्रेण छात्रस्य वा हसितम्—विद्यार्थी हँसे। मया मम वा स्थितम्—मैं ठहरा।

कृत्यानां कर्तरि वा—कृत्य प्रत्ययों (तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप्) के योग में कर्ता में विकल्प से षष्ठी होती है। जैसे, पुस्तकं त्वया तव वा पाठ्यम्—तुम्हें पुस्तक पढ़ना चाहिये। मया मम वा चन्द्रो द्रष्टव्यः—चन्द्रमा को देखना मुझे उचित है। मया मम वा अर्थो लभ्यः—मुझे धन प्राप्त करना चाहिये।

अधीगर्थदयेशां कर्मणि—(अधि + इक् + अर्थ) अधिगर्थ अर्थात् स्मृत्यर्थ दय और ईश् धातु के कर्म में विकल्प से षष्ठी विभक्ति

होती है। जैसे, पुत्रः मातुः मातरं वा स्मरति—बेटा मा का खयाल करता है। धनी दरिद्रस्य दरिद्रं वा दयते—धनी दरिद्र पर दया करता है। पिता पुत्रस्य पुत्रं वा ईष्टे—पिता पुत्र पर शासन करता है।

जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्—हिंसा अर्थबोध होने से जासि, नि और प्र पूर्वक हन्, नाट्, क्राथ्, और पिष् धातु के कर्म में षष्ठी होती है। जैसे, हरिः चौरस्य उज्जासयति, निहन्ति, प्रणिहन्ति, निप्रहन्ति, प्रहन्ति, उन्नाटयति, क्राथयति, पिनष्टि वा—हरि चोर को मारता है।

षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन— अतसर्थ प्रत्ययों (अतस्, अस्, अस्तात्, रि, रिष्टात्, आत्) के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। ग्रामस्य दक्षिणतः, दक्षिणात्, पुरः, पुरस्तात्, उपरि, उपरिष्टात्—गाँव के दक्खिन, आगे, ऊपर आदि।

एनपा द्वितीया च—एनप् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी और द्वितीया दोनों होती हैं। जैसे, दक्षिणेन वृक्षवाटिकां वृक्षवाटिकायाः सरः—बाग से दक्खिन में तालाब है।

तृप्त्यर्थानां विभाषाकरणे—तृप्त्यर्थक धातु के करणकारक में विकल्प से षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां काष्ठैर्वा—आग काठ से सन्तुष्ट नहीं होती।

कृत्वसुसुचोः कालाधिकरणे—कृत्वसु और सुच् प्रत्ययों के प्रयोग में कालवाचक शब्द के अधिकरण में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—पञ्चकृत्वः दिवसस्य भोजनम्—दिन में पाँच बार खाता। त्रिर्दिवसस्य आगच्छति—दिन में तीन बार आता है।

तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्—तुला और उपमा भिन्न तुल्यार्थक (तुल्य, सदृश, सम, समान) शब्दों के योग में षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—विनयस्य विनयेन

वा तुल्यः समः सदृशः समानो वा गुणो नास्ति—विनय के समान और कोई गुण नहीं है।

चतुर्थी चाशिषि आयुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः—आशीर्वाद बोध होने से आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ और हित शब्दों के योग में षष्ठी और चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—तव तुभ्यं वा कुशलं भूयात्—तुम्हारा कल्याण हो। नृपस्य नृपाय वा आयुष्यं भूयात्—राजा चिरञ्जीवी हो।

दूरान्तिकार्थैः षष्ठी च—दूरार्थ और अन्तिकार्थ (समीपार्थक) शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्ति होती है। नगरस्य नगरात् वा दूरं—नगर से दूर। ग्रामस्य ग्रामात् वा अन्तिकं—गाँव के पास।

षष्ठी हेतुप्रयोगे—हेतु शब्द के प्रयोग होने से हेत्वर्थ में अर्थात् निमित्तबोधक शब्द में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, अन्नस्य हेतोर्वसति—वह भोजन मिलने के कारण यहाँ रहता है।

सर्वनाम्नस्तृतीया च—हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्त-बोधक सर्वनाम शब्द के उत्तर षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, कस्य हेतोः केन हेतुना स आगतः—किस लिये वह आया है ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

पर्वत के ऊपर और नीचे भी झरना है। रहने के कारण मैं यहाँ आया हूँ। गाँव से उत्तर तालाब है। तुम भूल कर भी अपने मा बाप का स्मरण नहीं करते। सात बार मन्दिर की परिक्रमा करो। बेचारे गरीब पर दया करो। वे मेरे पूजनीय हैं। यह बात सबको विदित है। गाँव के पास नदी

बहती है। शिक्षितों में वे बड़े विद्वान् माने गये हैं। राम-रावण के युद्ध के समान कोई युद्ध नहीं हुआ। ब्रह्मा की सृष्टि। बेटी का धन नहीं लेना चाहिये। पण्डित का हित हो। जल से तृप्त।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करो—

मां दयते। नैतत् मम सुकरम्। जलस्य पिपासुः। इदं भवता यातम्। लक्ष्मीकामुकः हरिः। दिने द्विः भुंक्ते। अन्नस्य भोक्ता। अस्मात् उद्यानात् दक्षिणतः मन्दिरमस्ति। कृष्णेन तुला नास्ति। काव्यं रचनेन उपदेशदानं विद्वद्भिर्मतम्। बालकेन दुग्धं पानम्। स जलस्य पातुमिच्छति। ममैतत्कृतम्। त्वयि सुखं भूयात्। कृष्णः कंसस्य हतवान्। स मित्राय स्मरति। शिवं दर्शनं पुण्यम्।

३. नीचे लिखे वाक्यों में षष्ठी होने का कारण बताओ—

सम्राजो विजयः। धीमतः ईश्वरः सेव्यः। राज्ञो पूजितः। पथो दक्षिणतः। पण्डितस्य सदृशः। तव हितम्। वाचो विस्तरः। अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन्। प्रयामि तस्याः सकाशम्। यदि प्रभविष्यामि आत्मनः। अहमेव मतो महीपतेः। शतकृत्वः तवैकस्याः स्मरत्यहो रघूत्तमः। मम गात्राणामनीशोऽस्मि। तेषां न दयते कस्मात्। शरीरस्य गुणानां च दूरमत्यन्तमन्तरम्। तरोरधस्तादुपविष्टः। मम स्नातम्। मम गुरुः द्रष्टव्यः। स शत्रोः पिनष्टि।

सप्तमी (Seventh Case-ending)

सप्तम्यधिकरणे च—अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, गृहे तिष्ठति—घर में रहता है। नद्यां स्नाति—नदी में नहाता है।

निमित्तात् कर्मयोगे—कर्म के साथ सम्बन्ध रहने से निमित्त-बोधक शब्द के उत्तर सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्। केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः—लोग चाम के लिये बाघ, दाँत के लिये हाथी, केश के लिये चमरी (एक प्रकार की जंगली गाय वा हरिण) और अण्डकोश (जिसमें कस्तूरी रहती है) के लिये गन्धमृग को मारते हैं।

टिप्पणी—'मुक्ताफलाय करिणं हरिणं पलाय'—में जो चतुर्थी विभक्ति है उसे कोई २ वैयाकरण विकल्प चतुर्थी, कोई २ 'क्रियार्थोपपदस्य च' इस सूत्र से चतुर्थी और कोई २ इसे अशुद्ध समझते हैं।

यस्य च भावेन भावलक्षणम्—जिस क्रिया के काल से दूसरी क्रिया का काल निरूपित होता है उसके उत्तर सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, रवावस्तं गते गतः, रवेरस्तंगमनसमकालं गत इत्यर्थः—सूर्य डूबने के साथ चला गया। सूर्ये उदिते स समागतः—सूर्योदय होते वह आ गया।

षष्ठी चानादरे—भावे सप्तमी के स्थान में क्रिया द्वारा यदि अनादर बोध हो तो अनादृत में सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, रुदति पुत्रे रुदतः पुत्रस्य पिता जगाम—रोते हुए बेटे को छोड़ कर बाप चला गया।

यतश्च निर्द्धारणम्—जाति, गुण, क्रिया वा संज्ञा द्वारा समुदाय में से एक के अलग करने को निर्द्धारण कहते हैं। निर्द्धारण में सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, जाति से—नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः—मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। गुण से—गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा—गायों में काली गाय दुधार होती है। क्रिया से—गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्

शीघ्रः—चलनेवालों में दौड़नेवाला जल्द जाता है। संज्ञा से—छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः—विद्यार्थियों में मैत्र चतुर है।

साधुनिपुणाभ्यामर्चायाम्—प्रशंसा बोध होने से साधु और निपुण शब्द के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, व्याकरणे साधुः, साहित्ये निपुणः—व्याकरण में, साहित्य में प्रवीण है।

साध्वसाधुप्रयोगे च—साधु और असाधु के प्रयोग में भी सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, साधुः कृष्णो मातरि असाधुः मातुले—कृष्ण माता के लिये अच्छे और मामा के लिये बुरे थे।

क्तस्य सहेनिना कर्मणि—इनि सहित क्त प्रत्यय के प्रयोग में कर्म में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, अधीती व्याकरणे—व्याकरण के पारदर्शी हैं। गृहीती षट्सु अंगेषु—छओ वेदाङ्गों के अधिकारी हैं।

विशेष—स्निह्, अभिलष्, रम्, व्यव-हृ, वृत्, विश्वस्, वि-तृ, सम्भावि, क्षिप्, मुच्, युज्, प्रहृ, आदि और एतदर्थ धातुओं के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, किं नु खलु बालेऽस्मिन् स्निह्यति मे मनः—क्यों मेरा मन इस लड़के को चाहने लगा। न तापसकन्यकायां शकुन्तलायां ममाभिलाषः—तपस्वी की कन्या शकुन्तला में मेरी अभिलाषा नहीं है। गुणिनि गुणज्ञो रमते—गुणी गुणी से प्रेम करता है। स मयि साधु व्यवहरति—वह मुझसे अच्छा व्यवहार करता है। आर्येऽस्मिन्विनयेन वर्तताम्—आर्यें, इसके साथ अच्छा बर्ताव होना उचित है। पुंसि विश्वसिति कुत्र कुमारी—पुरुष में कुमारी कहाँ विश्वास करती है? वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे—गुरु जैसे बुद्धिमान् को शिक्षा देता है वैसे ही मूर्ख को भी। त्वयि किं न सम्भाव्यते—तुम में क्या नहीं सम्भव है?

मृगेषु शरान् मुमुक्षोः—मृग पर बाण छोड़ने वाले के। त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वयि युज्यते—तीनों लोक की प्रभुता तुम में है। शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि—निरपराधियों को मारने के लिये (तुम्हारा) शस्त्र नहीं है।

अवच्छेदे सप्तमी—अवच्छेद अर्थात् शारीरिक किसी अंग का अलग करना बोध हो तो सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, शूद्रकः सर्वमङ्गलया करे धृतः—देवी ने शूद्रक का हाथ पकड़ा। गृहीत इव केशेषु—केश पकड़े जाने पर।

अध्वनो व्यवधौ प्रथमा च—व्यवधान बोध होने से अध्ववाचक शब्द के आगे सप्तमी और प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे, ग्रामो वनात् पञ्चसु क्रोशेषु पञ्च क्रोशा वा, पञ्चक्रोशव्यवधाने विद्यत इत्यर्थः—वन से गाँव पाँच कोस है।

प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च—प्रसित (अत्यन्त इच्छुक) और उत्सुक शब्द के योग में सप्तमी और तृतीया विभक्ति होती है। जैसे, छात्रो विद्यायां विद्यया वा प्रसितः उत्सुको वा—विद्यार्थी विद्या का अत्यन्त अभिलाषी है।

क्रियामध्येऽध्वकालाभ्यां पंचमी च—दो क्रियाओं के बीच के अध्ववाचक और कालवाचक शब्दों के आगे सप्तमी और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, अयमिह स्थित्वा क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्—यहाँ ही ठहर कर यह कोस भर पर का निशाना मार सकता है। अयमद्य भुक्त्वा द्व्यहे द्व्यहात् वा भोक्ता—आज के भोजन किये वह दो दिन बाद खायगा।

दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीयातृतीयापंचम्यश्च—दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के उत्तर सप्तमी के अलावे द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, दूरं, दूरेण, दूरात्, दूरे वा ग्रामस्य—गाँव से दूर। अन्तिकं, अन्तिकेन, अन्तिकात्, अन्तिके वा

ग्रामस्य—गाँव के पास। विशेषण में नहीं होता। जैसे—दूरं पन्थाः।

स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैश्च—स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षिन्, प्रतिभू, प्रसूत, (कुशल आयुक्त) शब्दों के योग में भी सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे, देवानां देवेषु वा स्वामी—देवताओं के मालिक। स्त्रियां स्त्रियाः वा प्रसूतः—स्त्री से उत्पन्न। व्यवहारस्य व्यवहारे वा प्रतिभूः—व्यवहार में जामिन। नीतौ कुशलः—नीति में पण्डित, इत्यादि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

गाँव के पास मन्दिर है। तुम मुझसे अच्छा बर्ताव करते हो। सुगन्धि के लिये फूल चुनते हैं। रात बीतने पर नींद टूटी। जो अपकारी के लिये साधु हैं वे ही यथार्थ साधु हैं। आप राज्य के ईश्वर हैं और सूर्य चन्द्र साक्षी हैं, मैं झूठा नहीं बोलता। रोते हुए पुत्र पौत्रों को छोड़ सन्यासी हो गये। अनुसूया ने क्रोधान्ध दुर्वासा का चरण पकड़ कर मनाया। षट् शास्त्र किसका पढ़ा है? प्राणियों में बुद्धिजीवी श्रेष्ठ है। मांस के लिये बकरा मारते हैं। तुम अपने काम में बड़े चतुर हो। आत्मा सबमें है। सब अवस्थाओं में धर्म करना चाहिये। बड़ाई की कौन अभिलाषा नहीं करता। यहाँ से दस कोस पर पटना है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करो—

स लगुडेन मां शिरस्ताडितवान्। रुदत्यै स्त्रियै प्रस्थितः। दूराय नगरस्य। सर्वेभ्यः पुत्रेभ्यः रमेशः पितुः श्रेष्ठः पुत्रः। अन्धकारपूर्णायाः रजन्याः गतः। तवैव युक्तमेतत्। पाटलिपुत्रात्

पञ्चानां योजनानां वर्तते। स लोकस्य निपुणः। त्वं ज्ञानाय उत्सुकः। शास्त्रस्य साधुः। शत्रवे शरानहं क्षिपामि। मम वचनं न विश्वसिति। योजनशतस्याधिकात् पश्यति गृध्रः स्वभोजन-वस्तु। नदी नगरात् त्रिभिः क्रोशः वर्तते।

३. नीचे लिखे वाक्यों में सप्तमी विभक्ति होने के कारण बताओ—

त्रिषु लोकेषु विश्रुतः। साधौ साधुः। रमायामुत्सुको हरिः। श्रियामनुरज्यन्ते लोकाः। वधूषु सन्तुष्टासु श्रीरेधते। सर्वेषु शास्त्रेष्वधीति। पर्वतेषु हिमालयोऽत्युच्चः। धीमति छात्रेऽध्यापकस्य परिश्रमः सफलत्वमेति। स्पृहावती वस्तुषु केषु मागधी। भक्तिर्मुक्तौ कल्पते। सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियते सति। पुण्यप्राप्तौ गङ्गायां स्नाति। त्वयि जीवति जीवामि।

सर्वविभक्तिकारक साधारणविधि

उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी—जहाँ उपपद विभक्ति और कारक विभक्ति दोनों की सम्भावना हो तो वहाँ कारक विभक्ति ही होगी। जैसे—मुनित्रयं नमस्कृत्य। इसमें नमः उपपद के योग में चतुर्थी विभक्ति न हो करके कृधातु के योग में कर्म-कारक हुआ।

अपादानसम्प्रदानकरणाधारकर्मणाम्।
कर्तुश्चान्योन्यसन्देहे परमेकं प्रवर्तते॥

अपादान, सम्प्रदान, करण, आधार (अधिकरण) कर्म और कर्ता, इनमें से कहीं दो की प्राप्ति की सम्भावना हो तो पूर्व न होकर पर ही वाला कारक होगा। जैसे—गृहं प्रविश्य निस्सरति। इसमें 'प्रविश्य' के योग में कर्म की प्राप्ति है और 'निस्सरति' के योग में पञ्चमी की प्राप्ति है। इनमें से कारिका

के अनुसार द्वितीया ही होगी, क्योंकि कर्म पञ्चमी के बाद कारिका में पठित है। ऐसे ही 'कन्यां दातुं वरमाह्वयति' आदि समझना चाहिये।

विवक्षावशात् कारकाणि—जहाँ जिस कारक का विधान है वहाँ विवक्षा से अर्थात् वक्ता की इच्छा से दूसरा कारक भी होता है। जैसे, ईश्वराय धनं मा प्रयच्छ, मा प्रयच्छेश्वरे धनम्। प्राज्ञाय विद्यां वितरति, वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्याम्। अरये कुप्यति, अरौ कुप्यति। ग्रामं गच्छति, ग्रामे गच्छति। नृपं धनं याचते, नृपात् धनं याचते।

गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तौ प्रयोजिका—कहीं कहीं क्रिया गम्यमान—उह्य (Understood) होने पर भी कारक विभक्तियाँ होती हैं। जैसे, कुतो भवान्। इसमें 'आगतः'. क्रिया उह्य है। किन्तु 'आगतः' इस क्रिया का अपादान मान कर 'कुतः' में पञ्चमी विभक्ति हुई।

निवृत्तौ च प्रवृत्तिवत् क्रियायाः—क्रिया के प्रवृत्तिस्थल में जिन कारकों का विधान है, क्रिया के निवृत्तिस्थल में भी उन कारकों का विधान होता है। अर्थात् क्रिया के होने में जैसे कारक होते हैं वैसे क्रिया के निषेध में भी होते हैं। जैसे, स चन्द्रं पश्यति—वह चन्द्रमा देखता है, यह क्रिया का प्रवृत्तिस्थल है। स चंद्रं न पश्यति—वह चन्द्रमा को नहीं देखता, यह क्रिया का निवृत्तिस्थल है।

मिश्रित अभ्यास

१. कारक और विभक्ति में क्या अन्तर है, समझावो।

२. इनका अर्थ बताकर सोदाहरण भेद समझावो—

'अत्यन्तसंयोगे द्वितीया' और 'अपवर्गे तृतीया'। 'उपपद-विभक्ति' और 'कारकविभक्ति'। 'करण' और 'हेतु'। 'कर्म' और 'कर्मप्रवचनीय'। तथा 'तादर्थ्ये चतुर्थी' और 'तुमर्थे चतुर्थी।'

३. इन शब्दों के योग से अलग २ एक २ वाक्य बनाओ और बतलावो कि इन शब्दों के योग में कौन २ विभक्तियाँ होती हैं—

धिक्, अधि, ऋते, अन्तरेण, समं, नमः, साधुः, हेतुः, अनु, अनन्तरं, प्रति, दूरं, हितं, हा, उभयतः, पृथक्, स्वामी, तुल्यः।

४. इनका अर्थ करो और उदाहरण दो—

अव्ययोगे प्रथमा। कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया। इत्थंभूतलक्षणे। उभयप्राप्तौ कर्मणि। भावे सप्तमी। अनादरे षष्ठी। भुवः प्रभवः। धारेरुत्तमर्णः।

५. सूक्ष्माक्षर में छपे हुए शब्दों में विभक्तियों के होने के कारण बतावो—

स कथमपि प्राणैः न वियुक्तः। कुक्कुरस्य व्याघ्रात् महत् भयम्। अर्थशास्त्रं प्रति ममाभिलाषः। ज्वलति तस्मिन् स निश्चक्राम। पापात् पाहि मां प्रभो। नदीषु भागीरथी श्रेष्ठा। शत्रुणा नहि सन्दध्यात्। बन्धोः स्मरति बान्धवः। विद्वान् सतां पूजितः। रामाय शतं धारयति। स आत्मन ईष्टे। आतपाय छत्रं गृह्णाति। भवद्भ्यः धर्मं श्रोतुमिहागतः। कष्टेन धनमुपार्जितम्। पृष्ठतः सेवयेदर्कम्। कृतमनेन लोभेन। क्षणं तिष्ठ।

तीसरा अध्याय

विशेषण (Adjective)

जिससे विशेष्य के गुण वा अवस्था प्रकाशित हो उसे विशेषण कहते हैं।

अंग्रेजी में विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिङ्ग, वचन, कारक नहीं बदलते।

हिन्दी भाषा में विशेषण का लिंग कहीं बदलता है और कहीं नहीं। जैसे, उसकी स्त्री बुद्धिमती है। वह बड़ी सरला बालिका है। सुन्दरी रमणियाँ जाती हैं। पयस्विनी गाय ब्राह्मण को दो, इत्यादि—इनमें लिङ्ग-परिवर्तन हुआ है। उसकी प्रकृति चंचल है। जिसकी बुद्धि प्रखर है वह सब कुछ कर सकता है—इनमें विशेषण का लिङ्ग-परिवर्तन नहीं हुआ है। वचन और कारक के कारण विशेषण में कुछ परिवर्तन नहीं होता, पर उनमें विशेष्य ही के वचन और कारक माने जाते हैं।

किन्तु संस्कृत में इन दोनों से विपरीत ही होता है। उसका नियम यह है—

यल्लिंगं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।
तल्लिंगं तद्वचनं सैव विभक्तिर्विशेपणस्यापि॥

जो लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य के होते हैं वे ही लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेषण के भी होते हैं।

जैसे, लिंग में—सुन्दरः पुरुषः, सुन्दरी नारी, सुन्दरं फलम्। वचन में—बुद्धिमान् बालकः, बुद्धिमन्तौ बालकौ, बुद्धिमन्तः बालकाः। कारक में—सुशीलः शिशुः, सुशीलं शिशुं, सुशीलेन शिशुना इत्यादि।

टिप्पणी—विशेषणीभूत सर्वनाम में भी विशेष्य ही के लिंग, वचन और कारक होते हैं। जैसे—अयं पुरुषः, एषा कन्या, तत् फलं, सर्वाणि फलानि, सर्वो गतः इत्यादि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे विशेष्य विशेषणों को यथायोग्य मिलावो—

नदी, गौः, वधूः, सुन्दरी, दुग्धवती, लता, चंचला, वेगवती, कठिनं, तीक्ष्णा, बुद्धिः, हृदयं, अपारं, मधुरं, धनं, फलं, विमला, वारि, स्वच्छं, उक्तिः, एषा, इमे, कन्या, पुरुषाः।

२. नीचे लिखे विशेष्य विशेषणवाले वाक्यांशों का संस्कृत में अनुवाद करो-

प्रजापालक राजा का कोमल हृदय। सान चढ़ी हुई तलवार की तेज धार से। दो सुन्दरी स्त्रियों के चंचल नेत्र। उजले रत्न से निकलती हुई चमक। पुण्यात्मा महर्षियों के उपदेश। मदैले सिंह की मन्द चाल से। मीठे फलों को। नील जलवाली यमुना के दोनों किनारों पर। तपस्वी ब्राह्मणों के लिये। धनधान्य से परिपूर्ण नगर में। चतुर मन्त्रियों की चातुरी से। फले हुए पेड़ से। लाल घोड़े के। इन दोनों स्त्रियों के। मुझ अधर्मी से। मुझ पापी का।

३. नीचे लिखे वाक्यांशों में विशेष्य विशेषण की अशुद्धियों का संशोधन करो—

सुन्दरः धेनुः। श्रीमद्भिः भवतीभिः। विदुषः अध्यापकाः। चत्वारः फलानि। सुन्दरेण नेत्रैः। वनवासिनिभिः मुनिभिः। त्रयः लताः। हसन्त्यः छात्राः। पवित्रायां वाससि। सर्वासां वस्तूनां। गच्छन्तः पुरुषः। एष शिशवः। इमे मुनिः। महतः तरुशाखायाः। शीतलं चन्द्रमाः। मातरि गते सति। अस्ताचलं प्रस्थितेषु सूर्यें। पापिनः नृपः। मूढः विद्वांसः। कार्यकर्ता स्त्री।

विशेष्य और विशेषण (Noun and Adjective)

यदि दो एकवचनान्त पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिंग विशेष्य हों और उनका एक ही विशेषण हो तो वह द्विवचनान्त और पुंलिङ्ग होगा। जैसे, पक्षपातिनौ आवाम् अनयोः अहं देवी च–मैं और देवी इन दोनों के पक्षपाती हैं।

एक एकवचनान्त और एक द्विवचनान्त वा बहुवचनान्त विशेष्य का अथवा बहुत विशेष्य का—वे स्त्रीलिंग, नपुंसक वा स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग वा तीनों लिङ्ग के कोई विशेषण हों, तो नपुंसक और बहुवचन होगा। जैसे, "तस्मिन् सत्यं धृतिर्ज्ञानं तपः शौचं दमः शमः। ध्रुवाणि पुरुषव्याघ्रे लोकपालसमे नृपे"। इस श्लोक में 'ध्रुवाणि' यह विशेषण सत्यं, धृतिः, शमः आदि तीनों लिंगों के विशेष्य के लिये आया है। "अभ्रच्छाया खलप्रीतिः नव-शस्यानि योषितः। किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च" इसमें भी 'उपभोग्यानि' यह विशेषण सबके लिये आया है।

कभी कभी निकट के विशेष्य के लिंग, वचन विशेषण में होते हैं। जैसे—कूपोदकं वटच्छायो श्यामा स्त्री इष्टकालयम्। शीतकाले भवेदुष्णं उष्णकाले तु शीतलम्"। "यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च"। पहले पद्य में 'इष्टकालयं' निकट होने से 'उष्णं' नपुंसक और 'वयं' निकट होने से 'कृतिना' पुंलिङ्ग विशेषण हुए हैं। ऐसे पद्यों में लिङ्ग-विपरिणाम से अन्वय होता है। जैसे, वयं कृतिनः, भुवनानि कृतीनि इत्यादि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

उसके दोनों भाई-बहन सुशील हैं। स्त्री-पुरुष धर्मात्मा हैं। उसकी लड़कियाँ, लड़के आज्ञाकारी हैं। धन, जन, स्त्री, पुत्र

सभी सहनशील हैं। धर्म और धन सुखदायक हैं। लोभ, मोह और अविद्या दुःख के मूल हैं। ज्ञान, धन, पराक्रम सिद्धिप्रद हैं।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

भगवती देवदत्तश्च सुशीले स्तः। वापी तडागश्च स्वच्छे वर्तेते। ज्ञानं धनं बलं सुखदायिनः। कलत्रं पुत्रश्च सुखप्रदौ। तथैव देवतया तयोः कुशलवौ इति नामनी प्रभावश्चाख्याते। खलप्रणयः यौवनानि धनानि किञ्चित् कालोपभोग्याः।

उद्देश्य-विधेय-विशेषण।

अंग्रेजी में जिसको Subjective वा Objective Complement (कर्तृपूरक वा कर्मपूरक) कहते हैं, उसका नाम संस्कृत में विधेय है। यह भी एक प्रकार का विशेषण ही है और विशेष्य के गुण वा अवस्था का वर्णन करता है। जैसे, पुत्रः पितुरवलम्बनं—बेटा बाप का सहारा है। स पण्डितः अस्ति—वह पण्डित है। त्वं राजा असि—तुम राजा हो। इन में अवलम्बनं, पण्डितः, राजा ये विधेय हैं। और पुत्रः, स, त्वं ये तीनों उद्देश्य हैं।

टिप्पणी—जिस व्यक्ति वा वस्तु के विषय में कुछ कहा जाय वह उद्देश्य और उद्देश्य के सम्बन्ध में जो कहा जाय वह विधेय है जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में स्पष्ट है।

विधेय विशेषण में या उद्देश्य विधेय भाव में विभक्ति एक होगी, पर लिंग, वचन समान होने का कोई नियम नहीं है। जैसे, "उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्"—उदारपुरुषों के लिये सारी पृथ्वी ही अपनी है। इसमें वचन एक होने पर भी लिंग भिन्न है। "हा! कथं महाराजदशरथस्य धर्मदाराः प्रिय-सखी मे

कौशल्या"—हा, क्या यही महाराज दशरथ की स्त्री मेरी प्रिय-सखी कौशल्या हैं ? इसमें लिङ्ग एक होने पर भी वचन भिन्न हैं। "भवन्तः अत्र प्रमाणम्"—आप ही इस विषय में जो चाहें कर सकते हैं। इसमें लिङ्ग और वचन दोनों ही भिन्न हैं। 'पिता स्वर्गः पिता धर्मः' इसमें लिङ्ग, वचन दोनों समान हैं।

स्थानम्, आस्पदं, पदं, प्रमाणं, भाजनं, कारणम् ऐसे विधेय-विशेषण सदा एकवचनान्त और नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे, गुणः पूजास्थानं—गुण ही पूजनीय है। निधनता सर्वापदामास्पदम्—गरीबी विपत्तियों का घर है। विविधमहमभूवंपात्रमालोकितानाम्—मैं उसके देखने का विविध पात्र हो गया। संपदः पदमापदां—सम्पत्ति विपत्ति का घर है। वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणम्—वेद प्रमाण हैं, स्मृतियाँ प्रमाण हैं। परार्थं भारवाहीव क्लेशस्यैव हि भाजनम्—दूसरे के लिये बोझा ढोने-वाले के तुल्य वह दुःख ही उठाता है। दिवानिद्रा सर्वरोगकारणम्—दिन का सोना सब रोगों की जड़ है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे विधेय-विशेषण वाले वाक्यों का संस्कृतानुवाद करो और उद्देश्य और विधेय में कहाँ २ समता और कहाँ २ विभिन्नता है, उसे भी बताओ—

पुत्र हमारे स्नेहास्पद हैं। झूठ ही पाप और सत्य ही पुण्य है। शास्त्र ही पण्डितों का नेत्र है। संस्कृत देवताओं की भाषा है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के कारण प्राण ही हैं। इन्द्रिय-संयम ही सम्पत्ति का मार्ग है। अध्यवसाय सिद्धि का मूल है। अभाव ही उद्भावन का कारण है। विद्वान् ही प्रतिष्ठा के पात्र है। स्मृतियाँ ही कर्तव्याकर्तव्य के लिये प्रमाण हैं। धर्म ही स्वर्ग का मित्र है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बता कर शुद्ध करो—

संसारसुखानि केवलं दुःखस्थानमस्ति। ममापि दुर्योधनस्य शङ्कास्थानानि पाण्डवाः, स मम बहिश्चरः प्राणः। निर्बलाः सर्वेषामनादरपात्राणि। राज्ञां दूत एव मुखः। गुणवत्यः स्त्रियः सदा प्रीतिपात्रा भवन्ति। राजा एव प्रजानामवलम्बनम्। सज्जन-सङ्गा एव चरित्रगठनस्य भित्तिः। पुंसः क्षमा अन्या आभूषणम्। बलवानपि निस्तेजाः कस्य नाभिभवास्पदः।

उपमान विशेषण

जिसके साथ तुलना की जाती है उसे उपमान (Thing of comparison) और जिसकी तुलना की जाय उसे उपमेय (Subject compared) कहते हैं। यह भी एक प्रकार का विशेषण ही है। विधेय विशेषण के समान ही उपमान के लिंग, वचन भिन्न होने पर भी विभक्ति एक ही होती है। जैसे, चन्द्र इव मुखं—चन्द्रमा के ऐसा मुख। इसमें दोनों में लिङ्ग भिन्न होने पर भी विभक्ति समान है। ऐसे ही "भुजौ कुसुममिव कोमलौ"—हाथ फूलों के से कोमल हैं। इसमें उपमान 'कुसुमं' एकवचनान्त क्लीब है और उपमेय 'भुजौ' पुंलिङ्ग और द्विवचन है किन्तु विभक्ति दोनों में ही समान है। उपमानवाची पद सदा, इव, वत्, अव्यय द्वारा युक्त रहता है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

तुम्हारा हृदय वज्र के समान कठिन है। पुरुष सिंह के समान बलवान् है। दुष्ट का चरित्र मशक के समान है। व्याध का यह जाल कालपाश के तुल्य है। सर्पविष के समान

तुम्हारा वचन दुःसह है। बच्चों का हृदय कुसुमतुल्य कोमल है। दूब पर की ओस की बूँदें तारा की भाँति चमकती हैं। यम-राज के समान व्याध। वह मुझे छोटे भाई के समान मानता है। वह दैत्य ऊँचे पहाड़ का सा था।

तुलना (Comparison)

द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ—यदि दो में से एक का उत्कर्ष वा अपकर्ष बोध हो तो विशेषण के आगे तरप् और ईयसु प्रत्यय होते हैं और जिससे तुलना की जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे, पृथिव्याः सूर्यो बृहत्तरः—पृथ्वी से सूर्य बड़ा है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरी-यसी—माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बड़ी हैं। इसमें दो में से एक का उत्कर्ष दिखाया गया है। देवात् मनुष्यो निकृष्ट-तरः—देवता से मनुष्य निकृष्ट है। समुद्रात् नदी लघीयसी—समुद्र से नदी छोटी है। इसमें दो में से एक का अपकर्ष दिखलाया गया है। अंग्रेजी में इसको Comparative degree कहते हैं।

अतिशायने तमबिष्ठनौ—बहुतों में से एक का उत्कर्ष बोध हो तो विशेषण के आगे तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं और जिससे तुलना की जाती है उसमें पञ्चमी, वा निर्धारणे षष्ठी वा सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे, पर्वतेभ्यः पर्वतानां पर्वतेषु वा हिमालयः श्रेष्ठः—पर्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है। फलानां फलेभ्यः फलेषु वा आम्रं स्वादिष्टं—फलों में आम सबसे स्वादिष्ट है। इससे बहुतों में से एक का उत्कर्ष दिखलाया गया है। दशरथस्य महिषीभ्यः महिषीणां महिषीषु वा कैकेयी

कनिष्ठासीत्—दशरथ की रानियों में कैकेयी सबसे छोटी थी। राजानः सम्राड्भ्यः हीनतमाः—सम्राटों से राजा बहुत हीन होते हैं। इसमें बहुतों में से एक का अपकर्ष दिखलाया गया है। अंग्रेजी में इसको Superlative degree कहते हैं।

कुछ प्रचलित और प्रयोजनीय विशेषणों के तुलनात्मक प्रयोग

विशेषण Positive	तर, इयस् प्रत्ययान्त Comparative	तम, इष्ठ प्रत्ययान्त Superlative
पटुः	पटुतरः, पटीयान्	पटुतमः, पटिष्ठः
प्रियः	प्रियतरः, प्रेयान्	प्रियतमः, प्रेष्ठः
गुरुः	गुरुतरः, गरीयान्	गुरुतमः, गरिष्ठः
लघुः	लघुतरः, लघीयान्	लघुतमः, लघिष्ठः
दीर्घः	दीर्घतरः, द्राघीयान्	दीर्घतमः, द्राघिष्ठः
वृद्धः	वर्षीयान्, ज्यायान्	वर्षिष्ठः, ज्येष्ठः
अल्पः	कनीयान्, अल्पीयान्	कनिष्ठः, अल्पिष्ठः
बहुः	भूयान्	भूयिष्ठः
दृढः	दृढतरः, द्रढीयान्	दृढतमः, द्रढिष्ठः
मृदुः	मृदुतरः, म्रदीयान्	मृदुतमः, म्रदिष्ठः
कृशः	कृशतरः, क्रशीयान्	कृशतमः, क्रशिष्ठः
प्रशस्यः	श्रेयान्, ज्यायान्	श्रेष्ठः, ज्येष्ठः
युवा	कनीयान्, यवीयान्	कनिष्ठः, यविष्ठः
उरुः	वरीयान्	वरिष्ठः
स्थूलः	स्थवीयान्	स्थविष्ठः
दूरः	दवीयान्	दविष्ठः
क्षुद्रः	क्षोदीयान्	क्षोदिष्ठः

क्षिप्रः	क्षेपीयान्	क्षेपिष्ठः
बहुलः	बंहीयान्	बंहिष्ठः
स्थिरः	स्थेयान्	स्थेष्ठः
पृथुः	प्रथीयान्	प्रथिष्ठः
पापी	पापीयान्	पापिष्ठः
ह्रस्वः	ह्रसीयान्	ह्रसिष्ठः
बाढः	साधीयान्	साधिष्ठः
बलवान्	बलीयान्	बलिष्ठः
अन्तिकः	नेदीयान्	नेदिष्ठः

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

सिंह हाथी की अपेक्षा बलवान् है। मनुष्यों में ब्राह्मण उत्तम हैं। काशी मथुरा की अपेक्षा निकट है। पाण्डवों में भीम बलवान् थे। इस बालक की अपेक्षा यह बालिका पढ़ने में चतुर है। गङ्गा-स्नान सब प्रकार के स्नानों से प्रशंसनीय है। कवियों में कालिदास सर्वोत्तम हैं। इङ्गलैंड की अपेक्षा भारत अधिक उपजाऊ है। जानवरों में हाथी सब से बड़ा है। चींटी सब से छोटी है। कोयल कौवे से भी काली होती है।

२. नीचे लिखे संस्कृत वाक्यांशों को शुद्ध करो—

रामः कृष्णाद्बुद्धिमत्तमः। धर्मो हि तेषां श्रेयान्। देवेषु ब्रह्मा वर्षीयान्। तयोरयं बलिष्ठः। नारीषु तारा बलीयसी। आवयोः स प्रेष्ठः। यमुनाया जलं गङ्गायाः स्वच्छतमम्। कुसुमेषु कमलं कोमलतरम्। पद्यं गद्यान्मधुरतरम्। रामो भरतात् ज्येष्ठः। वाली सुग्रीवात् बलिष्ठः।

संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)

एक, द्वि, त्रि संख्या प्रकाश करते हैं इस कारण ये संख्यावाचक कहाते हैं।

संख्यावाचक शब्द विशेष्य और विशेषण दोनों होते हैं। जब संख्या का बोध होता है तब वे विशेष्य होते हैं और जब उनसे संख्या-विशिष्ट पदार्थ का बोध होता है तब वे विशेषण होते हैं। जैसे, विशेष्य—फलानां विंशतिः। विशेषण—विंशतिः फलानि।

संख्यावाचक शब्दों के विशेषण बनाने के लिये कुछ नियम जानना आवश्यक है। नियम ये हैं—

एक शब्द सदा एकवचन है। इसका रूप सर्व शब्द के समान होता है। जैसे—एकः पुरुषः, एका नारी, एकं फलम्। किन्तु जब इससे कोई कोई का अर्थ प्रकाशित होता है तो बहुवचन होता है। जैसे—एके केचन वदन्ति—कोई २ कहते हैं।

द्वि (दो) शब्द द्विवचनान्त है। इसके एकवचन और बहुवचन में रूप नहीं होते। जैसे—द्वौ पुरुषौ, द्वे नार्य्यौ, द्वे वने आदि। स्त्रीलिङ्ग नपुंसक में एक समान रूप होते हैं।

त्रि (तीन) शब्द से लेकर एकोनविंशति (उन्नीस) तक शब्द सदा बहुवचनान्त हैं। इसमें त्रि (तीन) और चतुर् (चार) शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में भिन्न भिन्न होते हैं।

पञ्चन् (पाँच) शब्द से अष्टादशन् (अठारह) पर्यन्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

एकोनविंशति (उन्नीस) शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग है। और इसके रूप गति शब्द के समान होते हैं। जैसे, एकोनविंशतयः वनानि।

विंशति (बीस) से लेकर नवनवति (निन्नानवे) पर्यन्त शब्द एकवचनान्त और नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं।

जैसे, विंशतिः फलानि—बीस फल, अशीतिः बालकाः—अस्सी लड़के। किन्तु विशेष अवस्था में व्यवहार होने से द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं। जैसे, द्वे विंशती गवाम्—दो बीस गाय। तिस्रो विंशतयः शिशूनाम्—तीन बीस लड़के आदि।

विंशति शब्द से अष्टाविंशति (अट्ठाईस) पर्यन्त शब्द मति शब्द के समान होते हैं। जैसे, चतुर्विंशत्यापि वर्षैरवृष्टे पर्जन्ये न शुष्यति (पञ्चतन्त्रम्)—चौबीस वर्ष तक भी वर्षा न हो तो भी नहीं सूखता।

एकोनत्रिंशत् (उनतीस) से अष्टपञ्चाशत् (अट्ठावन) तक के शब्द भूभृत् शब्द के समान होते हैं। जैसे, त्रिंशत् फलानि, अष्टपञ्चाशत् नद्यः। पञ्चाशत् युवानः। एकोनषष्टि (उनसठ) से नवनवति पर्यन्त शब्द मति शब्द के समान होते हैं। जैसे, षष्टिः तरवः—साठ पेड़। सप्ताशीतिः आम्राणि—सतासी आम।

शतं (सौ), सहस्रं (हजार), अयुतं (दस हजार), लक्षं (लाख) और नियुतं (दस लाख) आदि नित्य एकवचनान्त और नपुंसक हैं। अर्थात् इनके विशेष्य किसी लिङ्ग या वचन के क्यों न हों किन्तु इन संख्यावाचक शब्दों में कभी हेर फेर नहीं होता। जैसे, शतं बालिकाः, सहस्रं बालकाः, अयुतं फलानि इत्यादि। जब इनसे असंख्य का बोध होता है तब बहुवचनान्त होता है। जैसे, शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च—शोक के हजारों और भय के सैकड़ों स्थान हैं।

जब इन शब्दों से आवृत्ति जान पड़े अर्थात् दो सौ, तीन हजार, चार लाख इस प्रकार का प्रयोग हो तो एक, द्वि, त्रि

आदि शब्द संख्या के वचन का अनुसरण करेंगे। जैसे—एकं शतं, द्वे सहस्रे, त्रीणि लक्षानि। 'दशवर्षसहस्राणि रामो राज्यमचीकरत्"—राम ने दस हजार वर्ष राज्य किया था। किन्तु 'द्वे सहस्रे पुरुषाः' इस प्रकार के प्रयोग न होंगे, बल्कि "पुरुषाणां द्वे सहस्रे" इसी प्रकार होगा। क्योंकि उदाहरण में सहस्र शब्द का विशेष रूप से प्रयोग है।

संख्या (Cardinals)

एकं (१) द्विः (२) त्रिः (३) चत्वारः (४) पञ्च (५) षट् (६) सप्त (७) अष्ट (८) नव (९) दश (१०) एकादश (११) द्वादश (१२) त्रयोदश (१३) चतुर्दश (१४) पञ्चदश (१५) षोडश (१६) सप्तदश (१७) अष्टादश (१८) ऊनविंशतिः, एकोनविंशतिः (१९) विंशतिः (२०) एकविंशतिः (२१) द्वाविंशतिः (२२) त्रयोविंशतिः (२३) चतुर्विंशतिः (२४) पञ्चविंशतिः (२५) षड्विंशतिः (२६) सप्तविंशतिः (२७) अष्टाविंशतिः (२८) नवविंशतिः, ऊनत्रिंशत्, एकोनत्रिंशत् (२९) त्रिंशत् (३०) एकत्रिंशत् (३१) द्वात्रिंशत् (३२) त्रयस्त्रिंशत् (३३) चतुस्त्रिंशत् (३४) पञ्चत्रिंशत् (३५) षट्त्रिंशत् (३६) सप्तत्रिंशत् (३७) अष्टात्रिंशत् (३८) नवत्रिंशत्, ऊनचत्वारिंशत्, एकोनचत्वारिंशत् (३९) चत्वारिंशत् (४०) एकचत्वारिंशत् (४१) द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत् (४२) त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत् (४३) चतुश्चत्वारिंशत् (४४) पञ्चचत्वारिंशत् (४५) षट्चत्वारिंशत् (४६) सप्तचत्वारिंशत् (४७) अष्टचत्वारिंशत् (४८) नवचत्वारिंशत्, ऊनपञ्चाशत्, एकोनपञ्चाशत् (४९) पञ्चाशत् (५०) एकपञ्चाशत् (५१) द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत् (५२) त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चा-

शत् (५३) चतुःपञ्चाशत् (५४) पञ्चपञ्चाशत् (५५) षट्पञ्चाशत् (५६) सप्तपञ्चाशत् (५७) अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत् (५८) नवपञ्चाशत्, ऊनषष्टिः, एकोनषष्टिः (५९) षष्टिः (६०) एकषष्टिः (६१) द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः (६२) त्रिषष्टिः त्रयः-षष्टिः (६३) चतुःषष्टिः (६४) पञ्चषष्टिः (६५) षट्षष्टिः (६६) सप्तषष्टिः (६७) अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः (६८) नवषष्टिः, ऊनसप्ततिः, एकोनसप्ततिः (६९) सप्ततिः (७०) एकसप्ततिः (७१) द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः (७२) त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः (७३) चतुःसप्ततिः (७४) पञ्चसप्ततिः (७५) षट्सप्ततिः (७६) सप्तसप्ततिः (७७) अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः (७८) नवसप्ततिः, ऊनाशीतिः, एको-नाशीतिः (७९) अशीतिः (८०) एकाशीतिः (८१) द्व्यशीतिः (८२) त्र्यशीतिः (८३) चतुरशीतिः (८४) पञ्चाशीतिः (८५) षड-शीतिः (८३) सप्ताशीतिः (८७) अष्टाशीतिः (८८) नवाशीतिः, ऊननवतिः, एकोननवतिः (८९) नवतिः (९०) एकनवतिः (९१) द्विनवतिः, द्वानवतिः (९२) त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः (९३) चतु-र्नवतिः (९४) पञ्चनवतिः (९५) षण्णवतिः (९६) सप्तनवतिः (९७) अष्टनवतिः, अष्टानवतिः (९८) नवनवतिः, ऊनशतम्, एकोनशतम् (९९) शतम्, एकशतम् (१००) सहस्रम् (१०००) अयुतं (१००००) लक्षं (१०००००) नियुतं (१००००००) कोटिः (१०००००००)।

अभ्यास

१. नीचे लिखे विशेष्य और संख्यावाचक विशेषणों को यथायोग्य मिला कर द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी में प्रयोग लिखो—

लता, धन, प्रारम्भ, त्रि-चतुर, शत, पञ्चन्, फल, स्त्री, राजा, शत्रु, सैन्य, षष्टि, नवति।

२. नीचे लिखे वाक्यांशों को सकारण संशोधन करो—

विंशतिभिः वत्सरैः। त्रीणि सहस्राणि श्लोकाः। द्वे शतम्। नवतयः पुरुषाः त्रिंशद्भिः मासैः। विंशतिभिः वत्सरैः। चत्वारि तरवः। त्रीणि अयुतम्।

३. नीचे लिखे वाक्यांशों का संस्कृत अनुवाद करो—

कोई कोई महापुरुष। सत्ताईस नक्षत्र। एक हजार घोड़े। चार आदमियों को हजार २ कमलों से। इक्कीस स्त्रियों से। चौबीस ग्राम। दस लड़कियों के हाथ। हजार दुःख। दश अंगालियों ने। बीस बार। तीन स्त्रियाँ।

पूरणवाचक शब्द (Ordinal Numerals)

जब उपर्युक्त संख्यावाचक शब्द पूरणार्थ में व्यवहृत होते हैं तब ये विशेष्य के लिंग, वचन और विभक्ति का अनुसरण करते हैं। पूरणार्थक शब्द ये हैं—

प्रथमः (पहला) द्वितीयः (दूसरा) तृतीयः (तीसरा) चतुर्थः (चौथा) पञ्चमः (५वाँ) षष्ठः (६ठाँ) सप्तमः (७वाँ) अष्टमः (८वाँ) नवमः (९वाँ) दशमः (१०वाँ) एकादशः (११वाँ) द्वादशः (१२वाँ) त्रयोदशः (१३वाँ) चतुर्दशः (१४वाँ) पञ्चदशः (१५वाँ) षोडशः (१६वाँ) सप्तदशः (१७वाँ) अष्टादशः (१८वाँ) ऊनविंशः, एकोनविंशः, ऊनविंशतितमः, एकोनविंशतितमः (१९वाँ) विंशः, विंशतितमः (२०वाँ) त्रिंशः, त्रिंशत्तमः (३०वाँ) चत्वारिंशः, चत्वारिंशत्तमः (४०वाँ) पञ्चाशत्तमः (५०वाँ) षष्टितमः (६०वाँ) सप्ततितमः (७०वाँ) अशीतितमः (८०वाँ) नवतितमः (९०वाँ) शततमः (१००वाँ) सहस्रतमः (१०००वाँ)

ऊनविंशति शब्द से लेकर संख्यावाचक शब्दों के आगे डट् और तम दोनों प्रत्यय होते हैं। जैसे—ऊनविंशः, ऊनविंशतितमः।

षष्टि शब्द से आगे केवल तम होता है। जैसे, एकोनषष्टितमः (५९ वाँ)।

उपर्युक्त पूरणवाचक शब्दों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्द के रूप पुंलिङ्ग में नर, स्त्रीलिङ्ग में लता और नपुंसक में फल शब्द के समान होते हैं। चतुर्थ शब्द से लेकर सहस्रतम पर्य्यन्त शब्द के पुंलिङ्ग में 'नर' शब्द और नपुंसक में 'फल' शब्द के समान होते हैं, किन्तु स्त्रीलिङ्ग में नदी शब्द के समान होते हैं। जैसे—चतुर्थः, चतुर्थी इत्यादि।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद करे—

चौआलिसवें लड़के के हाथ से। इस क्लास के चौंतीसवें छात्र को। चौदहवें मनु। पुस्तक का साठवाँ संस्करण। बारहवें क्लास में। पचपनवाँ लड़का। बाग के सतहत्तरवें पेड़ का फल। अंग्रेज़ी राज्य का एक सौ बासठवाँ वर्ष। तिरसठवीं कहानी। तेरहवीं कथा।

विशेषण रचना

(१) तद्धित प्रत्ययों से बने हुए विशेषण

विशेष्य	प्रत्यय	विशेषण	अर्थ
शिवः	षण्	शैवः	शिवभक्त
रघुः	„	राघवः	रघुवंशी
सभा	ष्यण	सभ्यः	सभासद

इतिहासः	ठिकण्	ऐतिहासिकः	इतिहासज्ञ
शरीरम्	"	शारीरिकम्	देहसम्बन्धी
भगीरथः	ष्णिण्	भागीरथी	भगीरथकन्या गङ्गा
दशरथः	"	दाशरथिः	दशरथ पुत्र
जातिः	ईय	जातीय	जातिसम्बन्धी
पिपासा	इत	पिपासित	प्यासा
धनं	ईन्	धनी	धनवाला
"	मतुप्	धनवान्	"
बुद्धिः	"	बुद्धिमान्	बुद्धिवाला
यशः	विन्	यशस्वी	यशवाला

और भी कितने ऐसे तद्धित प्रत्यय हैं जिनसे विशेषण बनते हैं। जैसे, लोमन् + शः = लोमशः, मांस + लः = मांसलः इत्यादि।

(२) कृदन्त प्रत्ययों से बने हुए विशेषण

विशेष्य	प्रत्यय	विशेषण	अर्थ
दा	तव्य	दातव्य	देने योग्य
निन्द्	अनीय	निन्दनीय	निन्दा के योग्य
शुच्	ण्यत्	शोच्यः	शोचने योग्य
लभ्	यत्	लभ्यः	मिलने योग्य
मुह	क्त	मुग्ध	मोहित
कृ	क्त	कृतः	किया हुआ
अधि + ई	क्त	अधीतः	पढ़ा हुआ

इसी प्रकार और भी कितने ऐसे विशेषण हैं जो कृदन्तीय प्रत्यय से बनते हैं। जैसे, पु + इत्र = पवित्रम्, पच + अक = पाचकः इत्यादि।

क्रियाविशेषण (Adverb)

विशेषण जब क्रिया के गुण और अवस्था को प्रकाशित करता है तब उसको क्रियाविशेषण कहते हैं। क्रियाविशेषण में सदा द्वितीया होती है और वह नित्य एकवचनान्त नपुंसक होता है। जैसे, स साधु वदति—वह अच्छा कहता है। स मधुरं गायति—वह मीठे सुर से गाता है।

अव्ययीभाव और बहुव्रीहि समास से बने हुए कितने विशेषण क्रियाविशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। जैसे, निर्भयं ब्रवीति—निडर हो बोलता है। सहासमधीते—हँसते हुए पढ़ता है। यथाशक्ति करोति कार्यम्—शक्ति भर काम करता है।

कितने प्रकृत्या तृतीया विभक्ति सहित विशेष्य भी क्रिया-विशेषण का कार्य करते हैं। जैसे, वेगेन धावति—तेज दौड़ता है। सुखेन हसति—सुख से हँसता है।

कितने अव्यय भी क्रियाविशेषण का काम देते हैं। जैसे, स शीघ्रं गच्छति—वह जल्द जाता है। स एवमुक्तवान्—उसने ऐसा कहा।

विशेषणीय विशेषण

जब कोई विशेषण का भी विशेषण होता है तब वह विशेष-णीय विशेषण कहलाता है। जैसे, रमेशः अत्यन्तं बुद्धिमान्—रमेश बहुत बुद्धिमान् है। पुष्पं नितान्तं सुगन्धि वर्तते—फूल में खूब सुगन्ध है। इनमें 'अत्यन्तं' और 'नितान्तं' विशेषणीय विशेषण हैं।

अभ्यास

१. हर एक प्रकार के क्रियाविशेषण के पाँच पाँच उदाहरण बनावो।

२. इन शब्दों के विशेषण बनावो—

शील, गमन, विषाद, चरित्र, सुख, बल, निद्रा, स्थान, तप, शक्ति, हर्ष, दिन, दया, भक्ति।

३. इन संज्ञाओं के साथ उचित विशेषणों को मिलावो—

वस्त्र, फूल, जल, गान, बुद्धि, चरित्र, दूध, व्यवहार, आचरण, लोभ, अङ्ग, पुरुष, रात, दिन, मुख, पत्ता, गाय, भोजन, शय्या।

चौथा अध्याय

सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के स्थान पर जो आता है उसे सर्वनाम कहते हैं। जैसे, देवदत्तः आगतः तं प्रणम—देवदत्तजी आये, उन्हें प्रणाम करो। यहाँ 'तं' 'देवदत्तः' के स्थान पर आया है।

वाक्य में सर्वनाम के प्रयोग करने से वाक्य सुन्दर होते हैं और बार बार एक ही संज्ञा को लिखना नहीं पड़ता।

जिस संज्ञा के स्थान पर वा उसके साथ जो सर्वनाम आता है उसमें उसीके लिङ्ग वचन होते हैं। जैसे, क्रियते यद्यदेषा कथयति—जो जो कहती है, वह किया जाता है। यहाँ एषा 'सीता' के स्थान पर है, इसीसे एकवचन स्त्रीलिङ्ग है। तदेव पंचवटीवनम्; सैव प्रियसखी वासंती; त एव जातनिर्विशेषाः पादपाः—वही पञ्चवटी वन है; वही प्रियसखी वासंती है और वे ही पुत्र से भी बढ़े चढ़े वृक्ष हैं। इसमें क्रमशः नपुंसक,

स्त्रीलिंग और पुंलिंग सर्वनाम अपनी अपनी संज्ञा के अनुसार आये हैं।

संस्कृत के जितने सर्वनाम हैं वे रूप की विलक्षणता के कारण पाँच भागों में बाँटे जा सकते हैं। वे ये हैं—सर्वादि, अन्यादि, यदादि, पूर्वादि और इदमादि।

१—सर्वादि

सर्वादि में सर्व, विश्व (सब, all, whole), उभय (दो, both), एक (एक, वही, one ,the same), एकतर (दो में से एक, one of the two)—इनके रूप सर्व शब्द के समान होते हैं।

(क) सर्व शब्द सब का अर्थ-बोध करता है तभी सर्वनाम होता है। यदि इससे कोई दूसरा अर्थ-बोध होता हो तो नर शब्द के ऐसा रूप होता है। जैसे, सर्वाय क्षितिमूर्तये नमः—पृथिवी-मूर्तिधारी शिवजी को प्रणाम है। इसमें सर्व शब्द का शिव अर्थ होने से 'सर्वाय' हुआ 'सर्वस्मै' नहीं हुआ।

(ख) एक शब्द का अर्थ 'वही' होता है। जैसे, मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्—महात्माओं के मन में वही, वचन में वही और काम में भी वही रहता है या महात्माओं के जो मन में वही वचन में, जो वचन में वही काम में रहता है।

(ग) उभय शब्द का द्विवचन नहीं होता—कैयट कहते हैं और उसका द्विवचन होता है—हरदत्त कहते हैं, क्योंकि एकवचन और बहुवचन के ही प्रयोग अधिक मिलते हैं। जैसे, किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य—उन दोनों की शोभा क्या कही जाय (कुमार०) किं तत् साध्यं यदुभये साधयेयुर्न सङ्गताः—कौन ऐसा काम है जो दो मिलकर करें और वह न हो (रघु०)

द्विवचन प्रयोग—उभयोरपि अस्थाने यत्नः—दोनों ने बे ठिकाने काम किया।

२—अन्यादि

अन्यादि में अन्य (दूसरे, other, another), अन्यतर (दो में से एक, one of the two), इतर (दूसरे, another), कतर (दो में से कौन, which of the two), कतम (बहुतों में से कौन, which of the many), एकतम (बहुतों में एक, one of the many)

(क) इन सबों के रूप सर्व शब्द के समान होते हैं पर केवल नपुंसकलिंग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में अन्यत्, अन्यतरत्, एकतमत् आदि रूप होते हैं।

(ख) दो वार अन्य शब्द के प्रयोग होने से एक दूसरा, कुछ कुछ, कुछ दूसरा, कुछ और आदि अर्थ बोध होते हैं। जैसे, अन्यः करोति अन्यः भुंक्ते—एक करता है दूसरा उसका फल भोगता है। अन्यत् भुक्तम् अन्यत् वान्तम्—खाया कुछ कै किया कुछ। मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनाम्—मन में कुछ, वचन में कुछ दूसरा और काम में कुछ और ही दुष्टों के होते हैं।

(ग) जब अन्य शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है तब उसका एक शब्द के समान ही कोई कोई आदि अर्थ होता है। जैसे, विधवाविवाहः शास्त्रनिषिद्ध इत्येके वदन्ति, शास्त्रविहित इत्यन्ते—विधवा विवाह शास्त्र से निषिद्ध है यह कोई कोई कहते हैं और शास्त्र से सम्मत है यह कोई कोई कहते हैं।

३—यदादि

यदादि में यद् (जो, जौन, who), तद् (वह he, she, it, that), एतद् (यह this) और किम् (कौन, who, which, what)—इनके रूप सर्व शब्द के समान होते हैं, केवल प्रथमा और द्वितीया के एकवचन के रूप भिन्न होते हैं।

यत्तदोर्नित्यः सम्बन्धः—(क) यत् और तत् शब्द का नित्य सम्बन्ध है। अर्थात् वाक्य में जब 'यत्' शब्द का प्रयोग होगा तब 'तत्' शब्द का भी प्रयोग होगा। जैसे, यस्त्वां रक्षति स एव मामपि—जो तुम्हें बचाता है वह मुझे भी बचाता है। किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा—उस गाय से क्या मतलब जो न तो ब्याती ही है और न दूध ही देती है।

(ख) कभी कभी तत् शब्द वाक्य में उह्य भी रहता है। जैसे, नहि (तत्) भवति 'यत्' न भाव्यम्—जो होने वाला नहीं है (वह) नहीं होता है।

(ग) यत् शब्द सम्बन्ध भी सूचित करता है। जैसे, बुद्धिर्यस्य बलं तस्य—वही बलवान् है जो बुद्धिमान् है अथवा उसके ही बल है जिसके बुद्धि है।

(घ) यत् शब्द द्विरुक्त होने से 'जो कुछ' 'सब कुछ' अर्थ बोध करता है। जैसे, यथा, मृत्पिण्डतः कर्ता कुरुते यद्यदिच्छति—जैसे मिट्टी के पिण्ड से बनानेवाला जो कुछ चाहता है, बनाता है।

(क) तत् शब्द कभी कभी प्रसिद्ध वा प्रशंसनीय आदि का अर्थ प्रकट करता है। जैसे, सा नारी या पतिव्रता—वह स्त्री प्रशंसनीय है वा स्त्री कहलाने योग्य है जो पतिव्रता है। सा रम्या नगरी—वह प्रसिद्ध सुन्दर पुरी।

(ख) तत् शब्द का जब एव अव्यय के साथ योग होता है तब 'वही' 'ठीक वही' आदि अर्थ बोध होता है। जैसे, तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम—वेही अविकल इन्द्रियाँ हैं वही नाम हैं। तदेव पञ्चवटीवनं—वही पञ्चवटी वन है इत्यादि।

(ग) जब तत् शब्द द्विरुक्त होकर प्रयुक्त होता है तब उसका 'भिन्न भिन्न', 'कई', आदि अर्थ होते हैं। जैसे, तेषु तेषु स्थानेषु—कई स्थानों में। ते ते भावाः—अनेक प्रकार के विचार।

(घ) तत् शब्द सर्वनाम के पूर्व रहने से उसके ऊपर जोर (Emphasis) देता है। जैसे, सोऽहं ब्रवीमि—वही मैं कहता हूँ।

(क) एतत् शब्द जोर देने के लिये पुरुषवाची सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे, एषोऽहमागच्छामि—यह मैं आया।

(ख) निकट बोध के वास्ते एतद् शब्द का प्रयोग होता है। जैसे, एषः छात्रः मम बन्धुः—यह विद्यार्थी मेरा मित्र है। एतदेव हि पाण्डित्यं एषा चैव कुलीनता। एष एव परो धर्मः आयादल्पतरो व्ययः—आमद से कम खर्च करना, यही पण्डिताई, यही कुलीनता और यही धर्म है।

(क) प्रश्न में किम् शब्द का व्यवहार होता है। जैसे, कः कोऽत्र भोः—कौन, कौन यहाँ हैं? कोऽयं द्वितीयः—यह दूसरा कौन है? किम् करोमि—क्या करूँ? आदि।

(ख) किम् शब्द के साथ चित्, चन प्रत्यय और स्वित्, अपि, आदि अव्ययों का योग होता है तब कोई कोई, कुछ आदि अर्थ होता है। जैसे, आसीत् कश्चित् शूद्रको नाम राजा—शूद्रक नामक कोई राजा था। कश्चित् पुरुषः—कोई पुरुष। किञ्चिदपि भक्षय—कुछ भी खा लो। कञ्चन कालं प्रतीक्षस्व—कुछ देर ठहरो।

(ग) कभी कभी किम् शब्द के साथ 'अपि' का योग होने से अनिर्वचनीय, अभूतपूर्व आदि अर्थ होता है। जैसे, तत्तस्य किमपि, द्रव्यं योहि यस्य प्रियो जनः—वह कोई अनिर्वचनीय ही वस्तु है जो किसी का कोई प्यारा है। अस्त्यत्र किमपि कारणम्—इसमें कोई कारण है (जो कहने लायक नहीं है)।

(घ) किम् शब्द का जब यत् शब्द के साथ व्यवहार होता है तब जो कोई, जो कुछ, जिस किसी, जहाँ कहीं, आदि का अर्थ देता है। जैसे, येन केन प्रकारेण—जिस किसी तरह। इदं सुवर्णकंकणं यस्मै कस्मैचिद्दातुमिच्छामि—जिस किसी को मैं यह सोने का कंगना देना चाहता हूँ। यो वा को वा भवाम्यहम्-मैं जो कोई क्यों न होऊँ।

४—पूर्वादि

पूर्वादि में (पूर्व की ओर, पहले, east, prior in point of place or time), पर (बाद, अगला, after, next), अवर (छोटा, पहला, lower, younger, posterior), दक्षिण (दक्खिन, दहिना, south, right), उत्तर (north), अपर। (दूसरा, other, another), अधर (निचला, छोटा, low, under, inferior), स्व (अपना, निज, self, one's own)

पूर्व से अधर शब्द तक दिक्, देश और कालवाचक होने अर्थात् पूर्वदिक्, पूर्व काल, पूर्वदेश इत्यादि अर्थ बोध होने से से ही सर्वनाम होते हैं। जैसे, पूर्वस्यां दिशि—पूरब की ओर, पूर्वस्मिन् काले—पहले समय में, पूर्वस्मिन् देशे—पूर्व देश में। दक्षिणस्मिन्देशे—दक्खिन देश में इत्यादि। यदि इनसे सर्वनाम का बोध नहीं होता तो सामान्य अकारान्त शब्द के समान इनके रूप होते हैं।

स्व शब्द अपना अर्थबोधक होने से सर्वनाम होता है, नहीं तो नहीं। जैसे, स्वस्मै रोचते—अपने को अच्छा मालूम होता है। शूद्रा एव भार्या शूद्रस्य सा च 'स्वा' च विशः—शूद्र की स्त्री शूद्रा और वैश्य की स्त्री वैश्या (स्वा) हो।

५—इदमादि

इदमादि में इदम् (यह, this), अदस् (वह, that), युष्मद् (तू, तुम, thou, you), अस्मद् (मैं, हम, I, we) और भवान् (आप, you, your honour)—इन सबों के रूप भिन्न भिन्न होते हैं।

इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्त्ति चैतदो रूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टं तदिति परोक्षे विजानीयात्॥

(क) पास की वस्तु वा व्यक्ति के लिये इदम् शब्द, अधिक पास की वस्तु वा व्यक्ति के लिये एतद् शब्द, सामने के दूरवर्त्ती पदार्थ वा व्यक्ति के सम्बन्ध में अदस् और परोक्ष (जो वक्ता के सामने नहीं हो) पदार्थ वा व्यक्ति के लिये तद् शब्द व्यवहार में लाया जाता है।

(ख) पुनरुक्तिबोध होने से अर्थात् जिस व्यक्ति वा वस्तु के सम्बन्ध में एक बार कुछ कह कर फिर उसके विषय में कुछ कहना हो तो द्वितीया विभक्ति में, तृतीया विभक्ति के एकवचन में और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति के द्विवचन में इदम् शब्द के स्थान में एन आदेश होता है। जैसे, अनेन व्याकरणमधीतम्, एनं छन्दः अध्यापय—इसने व्याकरण पढ़ लिया है, अब इसे छन्द पढ़ाइये। अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं स्वम्—इनका पवित्र कुल है, इनको बहुत धन है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द के द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी के एकवचन में क्रमशः त्वा, ते, ते; मा, मे, मे; द्विवचन में

क्रमशः वाम्, नौ और बहुवचन में क्रमशः वः, नः आदेश होते हैं। इनके प्रयोग करने के नियम ये हैं—

(क) ये सब आदेश वाक्य वा श्लोक के चरण के आरम्भ में च, वा, हा, अह, एव इन पाँच अव्ययों के योग में और सम्बोधन के परे नहीं होते। जैसे, वाक्यारम्भ में—मम गृहं गच्छ—मेरे घर जाओ। इसमें 'मम' का 'मे' नहीं हुआ। पाँच अव्ययों के योग में—स त्वां मां च जानाति—वह तुझे और मुझे भी जानता है। इदं पुस्तकं तवैवास्ति—यह पुस्तक तुम्हारी ही है। हा मम मन्दभाग्यम्—हाय मेरा दुर्भाग्य। इनमें क्रमशः त्वा, मा, ते, मे आदेश नहीं हुआ।

सम्बोधन के ठीक परे—बन्धो, मम ग्रामं गच्छ—भाई, मेरे घर चलो। यहाँ 'मम' के स्थान पर 'मे' नहीं हुआ।

(ख) यदि 'च' आदि अव्ययों का युष्मद् अस्मद् के त्वा, ते, मा, मे आदि संक्षिप्त रूप (Short form) से कोई सम्बन्ध नहीं हो तो ये आदेश हो सकते हैं। जैसे, शिवः रामश्च मे इष्टदेवः—शिव और राम मेरे इष्टदेव हैं। यहाँ 'मे' का सम्बन्ध इष्टदेव से है और च शिव और राम को जोड़ता है।

(ग) यदि सम्बोधन के साथ कोई विशेषण हो तो युष्मद् अस्मद् के आदेश हो सकते हैं। जैसे, हरे दयालो नः पाहि—हे दयालु हरि, हमारी रक्षा करो।

(क) सम्मान के अर्थ में युष्मद् के स्थान में भवत् शब्द का प्रयोग होता है। जैसे, रक्तमुखेन स प्रोक्तः—भो भवान् अभ्यागतः अतिथिः तद् भक्षयतु (भवान्) मया दत्तानि जम्बूफलानि—रक्तमुख ने उससे कहा सुनिये, आप अभ्यागत और अतिथि हैं, इससे आप मेरे दिये हुए जामुन के फल खाइये।

टिप्पणी—भवत् शब्द यद्यपि मध्यमपुरुष के स्थान में प्रयुक्त होता है तथापि वह सदा प्रथम पुरुष (Third person) ही रहता है।

(ख) सम्मान न भी बोध हो तो भी युष्मद् के स्थान में भवत् शब्द का प्रयोग होता है। जैसे, अहमपि भवन्तं किमपि पृच्छामि—मैं भी आपसे कुछ पूछता हूँ।

(ग) सम्मान बोध होने से कभी कभी 'भवत्' शब्द के पहले 'अत्र' और 'तत्र' का प्रयोग करते हैं। सम्मान का पात्र यदि उपस्थित हो तो अत्रभवत् और उपस्थित न रहने से तत्रभवत् का प्रयोग करते हैं। जैसे, अत्रभवतः विदाङ्कुर्वन्तु, अस्ति तत्रभवान् भवभूतिः नाम काश्यपः—आप लोग यह जानें कि श्री पूज्यपाद काश्यपगोत्र भवभूति हैं। अत्रभवान् वशिष्ठः आज्ञापयति—पूज्यपाद वशिष्ठ जी आज्ञा देते हैं। अपि कुशली तत्रभवान् कण्वः—पूजनीय कण्व जी कुशल से हैं ?

(घ) भवत् शब्द के पूर्व एष और स का भी प्रयोग होता है। जैसे, एषभवान् अत्र वर्तते—आप यही हैं। सभवान् मामेतदुक्तवान्—श्रीमान् ने मुझे ऐसा कहा।

इन सर्वनामों के अलावे त्वत्, त्व, त्यद् आदि कई और सर्वनाम हैं जो कम प्रयुक्त होते हैं।

युष्मद्, अस्मद् और भवत् शब्दों को छोड़ कर सब सर्वनाम विशेष्य और विशेषण दोनों हो सकते हैं। जैसे, 'सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः'—सबके स्वभाव ही की परीक्षा होती है और गुणों की नहीं। 'अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते'—क्योंकि सब गुणों के ऊपर स्वभाव ही रहता है। इसमें 'सर्वस्य' विशेष्य और 'सर्वान्' विशेषण है।

सर्वनाम शब्दों के आगे सम्बन्धार्थ में ईय आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—मदीय, मामक, मामकीन (मेरे, my, mine,) अस्मा-

कौन, अस्मदीय (हमारा, ours), यौष्माक, यौष्माकीण,भवदीय, (तुम्हारा, your, yours), स्वीय, स्वकीय (अपना, own), परकीय (दूसरे का, another's), तदीय (उसका, his)।

हिन्दी और अंग्रेजी में सर्वनाम नीचे लिखे कई भागों में बँटे हुए हैं—

१—पुरुषवाची सर्वनाम (Personal pronoun)

पुरुषवाची सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—(१) उत्तम पुरुष (first person)। जैसे—अहं, आवां, वयम्—मैं, हम। (२) मध्यमपुरुष (second person)। जैसे—त्वं, युवाम्, यूयम्—तू, तुम, तुम लोग। (३) अन्य वा प्रथमपुरुष (third person)। जैसे—सः, अयं, हरिः, आदि सब शब्द। क्योंकि ये पुरुष के बोधक हैं।

२—निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)

अन्य पुरुष के तद्, अदस्, इदम्, एतद् शब्द ही इस सर्वनाम के उदाहरण में आते हैं, क्योंकि इनसे निश्चय जाना जाता है।

३—सम्बन्धवाची सर्वनाम (Relative Pronoun)

सम्बन्धवाची सर्वनाम यत् और तद् शब्द हैं, क्योंकि इन दोनों का सम्बन्ध नित्य है।

४-अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)

किम् शब्द के साथ चित्, चन, अपि, स्वित् प्रत्यय लगाने से यह सर्वनाम बनता है। जैसे—कश्चित्, कश्चन, कोऽपि, आदि। इनसे किसी का निश्चय नहीं होता।

५–प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)

जिससे प्रश्न जाना जाय वह प्रश्नवाचक सर्वनाम है। जैसे, किम् शब्द के रूप—कोऽस्ति, कः आगच्छति आदि।

६—निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

निजवाचक सर्वनाम में 'स्वयं' का विशेष प्रयोग होता है। यह अव्यय है। जैसे, स स्वयमागमिष्यति—वह आप आवेगा। आत्मन् शब्द का भी प्रयोग इस अर्थ में होता है। जैसे, स आत्मानं बहु मन्यते—वह अपने को बहुत लगाता है। स्व, स्वकीय, आत्मीय, निज ये भी निजवाचक सर्वनाम की भाँति व्यवहृत होते हैं। जैसे—स, स्वं, स्वकीयं, आत्मीयं, निजं वा रूपं दर्शयति—वह अपना रूप दिखलाता है।

अभ्यास।

१. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

उभे नराः ग्रामं गच्छन्ति। सर्वाणां प्राणिनां नरः श्रेष्ठः। अयं गृहम्। अस्यां नगरे गच्छ। तस्यै बालिकाय नमः। नः गृहमस्ति। पूर्वायां दिशि सूर्य्यः उदेति। पश्चिमस्यामस्तं याति। मे ते च स मित्रमस्ति। मित्र नः रक्ष। मे पुस्तकं देहि। स नारी तां बालकं तान् फलान् ददौ। आहमिदं तडागे स्नास्यामि। छात्रयोः एकतमः पठतु। विद्यार्थिनामेकतरः सुबोधः अस्ति। तस्मात् नद्या जलमानय। ते मे वा दोषः नास्ति। एष बालिका बुद्धिमति। कोऽयं बालिका। अहं स्वस्मै स्पृहयामि। अन्यंगृहम्।

२. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो।

ईश्वर सब की रक्षा करता है। वह मेरा भाई है। दो में से कोई एक लड़का पढ़े। दोनों भाई स्कूल गये। जो तुम्हें विपद्

में न छोड़े वही तुम्हारा सच्चा मित्र है। यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरी इच्छा पूरी कीजिये। कोई कोई कहते हैं कि समुद्र-यात्रा शास्त्र से निषिद्ध है। दूसरे ही दिन वह पेड़ पर से गिर पड़ा। वह बहुत पानी पीता है। किसने यह संसार बनाया? कहाँ से (कुतः) आये और कहाँ (कुत्र) जावोगे? कौन तुम्हारे कमल हैं? मेरे घर में कुछ नहीं है। अपने अपराध पर ध्यान दो। आप क्या करते हैं? तुम जानते हो कि यह काम किसने किया? यह पुस्तक किसकी है? इसमें न तो तेरा और न मेरा ही दोष है। हे भगवन्! मुझे बचाइये। उस लड़की को घर भेज दो। दोनों में कौन अच्छा है? पूर्व दिशा में जाओ। बहुत से मनुष्य चेष्टा करते हैं, पर कुछ ही लोग सफल होते हैं। हिमालय उत्तर दिशा में है। क्या आप जाने को तैयार हैं? उनमें से कोई साथ चले।

अव्यय (Indeclinables)

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

तीनों लिङ्गों, सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में जिन शब्दों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो उन्हें ही अव्यय कहते हैं। अव्यय की सारी विभक्तियों का लोप हो जाता है। केवल प्रयोग काल में अन्तस्थित र् और स् का विसर्ग हो जाता है।

चादिः प्रादिः स्वरादिश्च तद्धितस्य वदादयः।
तुम् क्त्वा णम् ल्यप् कृदन्तस्य भवन्त्यव्ययसंज्ञकाः।

चादि, प्रादि, स्वरादि, वदादि तद्धित प्रत्ययान्त शब्द और कृदन्तीय तुम्, क्त्वा, णम्, ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं।

१. चादि—च (और) वा (विकल्प) हा (खेद) एव (निश्चय) एवं (ऐसे ही) इव (ऐसा) नूनं (निश्चय) शश्वत् (फिर फिर, नित्य, (साथ) क्वचित् (कहीं) हन्त (खेद, दुःख) सार्द्धं, साकं, सह (साथ) मा (नहीं) रे, अरे (नीच सम्बोधन) कच्चित् (प्रश्न में) उत, आहो, किमु (अथवा, वा, या) स्वाहा (हवन में) स्वधा (पिंड पानी देने में) किम् (प्रश्न) स्वस्ति (मङ्गल) अयि (कोमल सम्बोधन) ओं (स्वीकार) अहो (आश्चर्य) हे (संबोधन) खलु (निषेध, निश्चय) किल (वार्ता, मिथ्या) अथ (अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न) ननु (प्रश्न) नु (तर्क) जातु (कभी) इत्यादि।

२. प्रादि—प्र (प्रकर्ष) परा (विपरीत, उलटा) अप (वियोग, त्याग) सम् (भलीभाँति) अनु (पीछे) अव (निश्चय, अनादर) निस् (निषेध, निश्चय) निर् (निषेध, बाहर होना) दुस्, दुर् (दुष्ट, निन्दा) वि (विगत, विशेष) आङ् (थोड़ा, अभिव्याप्ति, (मर्यादा) नि (अत्यन्त) अधि (अधिकता, अतिशय) अपि (भी, प्रश्न) अति (अतिशय, प्रशंसा) सु (अच्छा, अत्यन्त, वेपरिश्रम) उत् (ऊपर, उत्कर्ष) अभि (सम्मुख, चारो ओर से) प्रति (सम्मुख, वदले में) परि (सब ओर, छोड़ कर) उप (समीप) इत्यादि।

३. स्वरादि—स्वर् (स्वर्ग, परलोक) अन्तर् (भीतर, चित्त) प्रातः (सवेरे) पुनः (फिर, विशेष) उच्चैः (ऊँचा, बड़ा) नीचैः (नीचा, छोटा) शनैः (धीरे धीरे, देर करके) ऋते (छोड़ कर, बिना) युगपत् (एक ही काल में) आरात् (दूर, समीप) पृथक् (भिन्न, अनेक रूप, बिना) ह्यः (पिछला दिन) श्वः (आगामी दिन) दिवा (दिन) दोषा, नक्तं (रात) सायं (साँझ) चिरं (बहुत काल) मनाक्, ईषत् (थोड़ा) तूष्णीं, जोषं (चुपचाप) समं (बराबर) वहिः (बाहर)

आविः (प्रकट) धिक् (धिक्कार) समया (समीप, बीच) निकषा (समीप) स्वयं (आप, खुद) मृषा (व्यर्थ) इत्यादि ।

४. वदादि तद्धित प्रत्ययों से बने हुए अव्यय—

वत्—शूद्रवत् (शूद्र के ऐसा) दा—यदा (जब) दानीम्—तदानीं (उस समय) धुना—अधुना (इस समय) र्हि—तर्हि (तो) द्यः—सद्यः (तत्क्षण) द्य—अद्य (अब, इस समय) एद्यवि—परेद्यवि (दूसरे दिन) एद्युस्—पूर्वेद्युः (पहले ही दिन) था—सर्वथा (सब तरह) थम्—कथं (कैसे, क्यों) धा—पञ्चधा (पाँच तरह से) रि—उपरि (ऊपर) रिष्टात्—उपरिष्टात् (ऊपर) स्तात्—पुरस्तात् (आगे) अस्—पुरः (आगे) आत्—दक्षिणात्, अतस्—दक्षिणतः, आहि—दक्षिणाहि, एन—दक्षिणेन (दक्खिन, दक्खिन से, दक्खिन की ओर) कृत्वस्—पञ्चकृत्वः (पाँच बार) शस्—बहुशः (बहुत बार) चित्, चन—कश्चित्, कश्चन (कोई) सात्—विप्रसात् (ब्राह्मण के अधीन) इत्यादि ।

५. तुमादि कृदन्त प्रत्ययों से बने हुए अव्यय—

तुम्—गन्तुं (जाने के लिये) त्वा—कृत्वा (करके) ल्यप्—आदाय (ले करके) णम्—स्मारं स्मारं (स्मरण कर करके) ।

टिप्पणी—अव्ययीभाव समास से जो शब्द बनते हैं वे भी बहुधा अव्यय ही होते हैं । जैसे, यथाशक्ति—शक्तिभर, प्रतिदिन—हर एक दिन आदि । इनमें विशेषता यही है कि अकारान्त अव्ययीभाव समासोत्पन्न शब्दों में पञ्चमी विभक्ति छोड़ कर सब जगह 'अम्' हो जाता है । जैसे, प्रतिगृहम्—हर एक घर में । पञ्चमी में 'प्रतिगृहात्' होता है । तृतीया तथा सप्तमी में विकल्प से 'अम्' होता है । जैसे—प्रतिगृहं, प्रतिगृहेण और प्रतिगृहं, प्रतिगृहे इत्यादि ।

सोदाहरण आवश्यक अव्यय

अकस्मात्—(अचानक, unexpectedly) स अकस्मादागतः—वह अचानक आ गया।

अग्रतः, अग्रे—(आगे, पहले, before) रामः ममाग्रत एव गतः—राम मेरे सामने वा पहले ही चला गया।

अचिरात्—(जल्द, तुरत, soon) कृष्णः अचिरादेवागमिष्यति—कृष्ण जल्द ही आवेगा।

अतः—(इसी से, इसी लिये, so, therefore) त्वमतीव दरिद्रः अतः तुभ्यं दातुमिच्छामि—तुम बहुत दरिद्र हो, इसीसे तुम्ही को देना चाहता हूँ।

अतीव—(बहुत, very much) अहमतीव दरिद्रः—मैं बहुत ही गरीब हूँ।

अत्र—(यहाँ, here) त्वमत्र तिष्ठ—तुम यहाँ बैठो। इस विषय में (in this matter) तदत्र देवपादाः प्रमाणम्—इसमें आपही जो चाहें करें।

अथ—(आरम्भे, in the beginning) अथ कथा प्रारभ्यते—यहाँ से कथा आरम्भ होती है। (बाद, अनन्तर, पीछे, then) अथ तान् सिंहः प्रत्युवाच—बाद सिंह ने उनसे कहा। (यदि, if) अथ तवैतावानाग्रहः तदा कथयामि—यदि तुम्हारा इतना आग्रह है तो कहता हूँ। (प्रश्न में, in question) अथ त्वं तत्र यास्यसि—क्या तुम वहाँ जाओगे? (और भी, and, also) भीमोऽथार्जुनः—भीम और अर्जुन। गणितमथ कलां कौशिकीं-गणित और कौशिकी कला भी। (सन्देह, अनिश्चय, doubt, uncertainty) शब्दो नित्योऽथानित्यः—शब्द नित्य है वा अनित्य।

अथकिम्—(हाँ, ऐसा ही, और क्या, yes, exactly so, what else) शकारः—चेट प्रवहणमागतम् ? चेटः—अथकिम्—शकार ने पूछा क्या सवारी आ गयी ? चेट ने कहा—हाँ।

अथवा—(या, ऐसा क्यों or, or why) राजा—भोः कोऽत्र द्वारि तिष्ठति ? अथवा अपरेण किं प्रयोजनम् ? राजा—द्वार पर कौन है ? या दूसरे से क्या मतलब ? अथवा नियोगः खल्वीदृशो मन्दभाग्यस्य—ऐसा क्यों, मुझ अभागे को तो ऐसा हुक्म ही दिया गया है।

अद्य—(आज, to-day) गृहमद्य गमिष्यामि—आज घर जाऊँगा।

अद्यत्वे—(अब, now) अद्यत्वे किं करिष्यसि—अब क्या करोगे ?

अद्यापि—(अब तक, आज तक, till now, even to this day) अद्यापि न स गृहात् प्रतिनिवृत्तः—अब तक वह घर से नहीं लौटा।

अद्यैव—(अभी, at once) अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा—अभी मर जायँ वा युगान्तर में मरें।

अद्यप्रभृति—(आज से वा अब से लेकर, from this day) अद्यप्रभृति प्रतिदिनं पठिष्यामि—आज से लेकर प्रतिदिन पढ़ूँगा।

अधः, अधस्तात्—(नीचे, below, underneath तस्य तरोरधस्तात् उपविष्टः—उस पेड़ के नीचे बैठा।

अधुना—(अब, इस समय, now, at present) अधुना किं भविष्यति—अब क्या होगा ?

अन्तः—(भीतर, in) अन्तः सारशून्योऽयं जनः—इनके भीतर कुछ भी सार नहीं है।

अन्ततः, अन्ततोगत्वा—(अंत में, आखिरकार, at last) अन्ततः स पराजितोऽभूत्—आखिर में वह हार गया।

अन्तरा—(विना, without) श्रममन्तरा विद्या न भवति-विना परिश्रम के विद्या नहीं होती। (बीच में, between) रमेशः त्वां मां च अन्तरा उपविशति—रमेश हमारे तुम्हारे बीच में बैठता है।

अन्तरेण—(विना, without) अन्तरेण हरिं न सुखम्—भगवान् के विना सुख नहीं है।

अन्यत्र—(और जगह, दूसरी ठौर, elsewhere) अहमितोऽन्यत्र गच्छामि—मैं यहाँ से दूसरी जगह चला जाता हूँ।

अन्यथा—(नहीं तो, otherwise) अध्ययने श्रमं कुरु अन्यथा दुःखमवाप्स्यसि—पढ़ने में परिश्रम करो नहीं तो दुःख पाओगे।

अन्यदा—(दूसरे समय, at another time) कार्यमेतदन्यदा भविष्यति—यह काम दूसरे वक्त होगा।

अन्येद्युः—(अन्य दिन, दूसरे दिन, another day) अन्येद्युरात्मानुचरस्य भावं—दूसरे दिन, अपने सेवक का भाव।

अपि—(प्रश्ने, in asking question) अप्येतत् तपोवनम्—क्या यही तपोवन है ? (भी, और, even, also, to, and) यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बान्धवाः मे—जहाँ पर पेड़ और जानवर भी मेरे बन्धु थे। अपि सिञ्च अपि स्तुहि—पटावो और स्तुति करो। (सन्देह, अनिश्चय, doubt, uncertainty) अपि स चौरो भवेत्—हो सकता है, वह चोर हो। (आशा और प्रतीक्षा, hope, expectation) अपि जीवेत् ब्राह्मणशिशुः—आशा है कि ब्राह्मण का लड़का जी जायगा। (सम्भावना, possibility) अपि स शिरसा पर्वतं भिंद्यात्

वह अपने सिर से ही पर्वत को ढा सकता है । (यद्यपि, यदि, though, if) पातितोऽपि कराघातैः—यद्यपि हाथों से मार कर गिराया गया ।

अभितः—(चारों तरफ, on all sides) अभितो ग्रामं नदी वहति—गाँव के चारों ओर नदी बहती है ।

अमुत्र– (परलोक में, जन्मान्तर में, in the next world, hereafter) इहामुत्र सुखी भव—इस लोक और परलोक में सुखी हो ।

अयि—(कोमल सम्बोधन में, in gentle address) अयि जात ! कथयितव्यं कथय—बेटा, जो कहना है वह कहो । (प्रश्न में, in asking question) अयि जीवितनाथ जीवसि ?—हे प्राणनाथ क्या आप जीते हैं?

अये—(आश्चर्य, surprise, wonder) अये भगवती अरुन्धती—अहा भगवती अरुन्धती हैं ? (खेद, भय, grief, fear) अये महत् कष्टमापतितम्—हा, बड़ा कष्ट आ पड़ा । अरे (नीच सम्बोधन, an address of contempt) अरे वञ्चक ! किं त्वया पापकर्मणा कृतम्—अरे सियार ! तुझ पापी ने यह क्या किया ?

अलम्– (निषेध में, no need) अलं विवादे—झगड़े का कुछ काम नहीं है । (सामर्थ्य में, in ability) दैत्येभ्यो हरिरलम्—दैत्यों के लिये हरि समर्थ हैं ।

अल्पशः—(थोड़ा थोड़ा करके, little by little) अल्पशो भोजनं देहि—थोड़ा थोड़ा भोजन दो ।

अवश्यम्—(निश्चय, जरूर, surely) तेनावश्यं कर्त्तव्यम्—वह जरूर करेगा ।

अहह—(प्रसन्नता, आश्चर्य, joy, astonishment)

अहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः—महात्माओं के चरित्र के बड़प्पन की कोई सीमा नहीं है। (खेद, दुःख, grief or excessive torment) अहह तात, प्रणस्तव दारुणः—हाय पिता जी आपका प्रण बड़ा ही कठिन है।

अस्तम्—(नाश, लोप, disappearance) अस्तंगतो भानुः—सूर्य डूब गये।

अहो—(बहुत प्रसन्नता, खेद वा शोक-प्रकाश, expression of joy, grief or sorrow)

(क) अहो मधुरमासां कन्यकानां दर्शनम्—अहा ! कैसा इन कन्याओं का सुखदायी दर्शन है ?

(ख) अहो मे दुर्दैवम्—हाय मेरा दुर्भाग्य ! (सम्बोधन में, vocative porticle) अहो राजानः—हे राजागण।

आः—(हर्ष, joy) आः स्वयं मृतोऽसि—अहा, आप ही मर गया है। (दुःख, pain) ओः शीतम्—ओः कैसी ठंढक है। (क्रोध, anger) आः कथमद्यापि राक्षसत्रासः—ओः ! क्या अब तक भी राक्षसों का उपद्रव है ?

आम्—(स्वीकार, हाँ, yes) आं, देव्याः पार्श्वगतोऽसौ जनश्चित्रे दृष्टः—हाँ, देवी के पास जो खड़े हैं वे चित्र में देखे गये हैं। (स्मरण, खयाल करने में, in recollection) आं ज्ञातं कण्वशिष्याः तपस्विनो देवं द्रष्टुमिच्छन्ति—खयाल पड़ा, तपस्वी कण्व के चेले राजा से भेंट किया चाहते हैं।

आदितः—(शुरू से, पहले से, from the beginning) आदित एव श्रमः कार्यः—शुरू से ही परिश्रम करना उचित है।

आरात्—(पास और दूर, near, far off) आरात् वनात् —वन से दूर या वन के पास।

आशु—(शीघ्र, soon) आशुतोषो महादेवः—शिवजी शीघ्र प्रसन्न होने वाले हैं।

इतः—(यहाँ से, from this place) इतो गच्छ—यहाँ से चले जावो।

इतस्ततः—(इधर उधर, here and there) शृगालः इतस्ततः परिभ्रम्य तं प्रदेशमाजगाम—सियार इधर उधर घूम फिर कर उसी जगह आ पहुँचा।

आहोस्वित्—(देखो, अथवा)

इति—(यह, this) ततः कालिदास इत्युवाच—बाद कालिदास ने यह कहा। (इसीसे, इसलिये, because, therefore) वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि—परदेशी हूँ, इसी से पूछता हूँ। (इस प्रकार, such, so) इत्युक्तवंतं परिरभ्य दोर्भ्यां—इस प्रकार कह रहे उनको दोनों हाथों से आलिङ्गन करके। (समाप्ति, ends) इति पञ्चमोऽङ्कः—पाँचवाँ अङ्क समाप्त हुआ। (इस ढंग से, as follows) रामाभिधानो हरिरित्युवाच—रामनामक हरि ने इस ढंग से कहा। (योग्यता, as regards) पितेति स पूज्यः—पिता है, इसी हेतु पूजनीय हैं।

इदानीम्— (इस समय, now, at present) इदानीं किं कर्तुमिच्छसि—इस समय क्या करना चाहते हो ?

इत्थम्—(इस प्रकार, thus) इत्थं बहु विलप्य—इस प्रकार बहुत रोकर।

इव—(सादृश्य, comparison) संसारः समुद्र इव—संसार समुद्र के समान है। (उत्प्रेक्षा, अनुमान, as if, as though) मृगानुसारिणं पिनाकिनमिव पश्यामि—मृग के पीछा करने वाले शङ्कर जैसे देख रहा हूँ। (कैसे, क्योंकर, how, possibly) परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः—

जो पराधीन है वह प्रीति का रस कैसे जान सकता है। (थोड़ा-कुछ, वैसा ही, a little, somewhat) कडार इवायं-कुछ धुमैला सा यह जान पड़ता है। (वाक्यालङ्कार, सचमुच, indeed) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्—सुन्दर-मूर्ति के लिये सचमुच कौनसी वस्तु भूषण नहीं होती।

इह—(यहाँ, here) इहागच्छ, इह तिष्ठ—यहाँ आवो, यहाँ बैठो।

ईषत्—(थोड़ा, little, slightly) ईषदुष्णं कवोष्णं—थोड़ा जो गर्म है वह कवोष्ण है।

उच्चैः—(ऊँचे स्वर से, जोर से, loudly) उच्चैः गर्जति वारिदः—मेघ खूब ज़ोर से गरजता है।

उत—(या, or) देवदत्तः व्याकरणमधीते उत साहित्यम्-देवदत्त व्याकरण पढ़ता है कि साहित्य। (संदेह, अनिश्चय, doubt, uncertainty) स्थाणुरयमुत पुरुषः—यह खूँटा है कि आदमी।

उभयतः—(दोनों तरफ, on both sides) नदीमुभयतो वृक्षाः—नदी के दोनों ओर पेड़ हैं।

उभयेद्युः—(दोनों दिन, both days) उभयेद्युः न भुक्तवान-दोनों दिन नहीं खाया।

ऋते—(बिना, without) ऋते धर्मात् कुतः सुखम्—धर्म के बिना सुख कहाँ है?

एकदा—(एक समय, once) एकदा महति अन्धकारे-एक समय घने अन्धकार में।

एव—(निश्चय, surely, certainly) विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः-विकार के कारण रहने पर भी जिनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता वे ही धीर हैं।

(वही, same, very) अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव—धन की गर्मी से हीन पुरुष वही है। (ठीक, just so, thus) एवमेव—ठीक वैसा ही।

एवम्—(ऐसा, so, thus) एवं बहु विलप्य उवाच—इस प्रकार खूब रोकर बोला। (अच्छा, हाँ, ठीक है, yes, indeed) एवमेतत्—ऐसा ही है। एवं कुर्म्मः—ठीक अच्छा, ऐसा ही करें।

ओम्—(अच्छा, हाँ, yes, very well) ओमित्युच्यताममात्यः—मन्त्री से कह दो, हाँ या अच्छा।

कच्चित्—(प्रश्न में, In asking question) शिवानि वस्तीर्थजलानि कच्चित्—तीर्थ का जल तो बाधाहीन है न?

कथम्—(क्यों, कैसे, why, how) कथं पृच्छसि भो दण्डिन्—हे दण्डी महाराज, क्यों वा किस लिये पूछ रहे हैं? कथमेतत् करोमि—कैसे यह करें ?

कदा, कर्हि— (कब, when) कदागतोऽसौ—वह कब गया!

कदाचित्—(कभी, once at any time) कदाचित् वृद्धशशकस्य वारः समायातः—कभी बूढ़े खरहे की पारी आयी।

कामम्—(यह बात ठीक है, यह मैं मानता हूँ, granted that, admitting) कामं न तिष्ठति मदाननसंमुखी सा—यह ठीक है कि वह मेरे सामने नहीं ठहरती। (भले ही, जाने दो, let them go, don't care of) कामं सन्तु सहस्रशो नृपतयः—भले ही हज़ारों राजा पड़े रहें। (यथेष्ट, enough) कामं मृषा वदतु किन्तु न कार्यसिद्धिः—जितना चाहें (यथेष्ट) झूठ बोले पर काम सिद्ध न होता।

किन्तु—(पर, लेकिन, but) स करोतु किन्तु नाहं करोमि—वह करे, पर मैं नहीं करता।

किम्—(प्रश्न में, in asking question) किमस्मिन्वने व्याधाः संचरन्ति—क्या इस वन में व्याध फिर रहे हैं? (कुत्सित, बुरा, bad) स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं—जो अपने मालिक को अच्छी सलाह नहीं देता वह बुरा नौकर है। (या, whether) ज्ञायतां किमेतदारण्यकं ग्राम्यं वेति—इस बात का निश्चय तो करो कि यह जंगली है या गँवैया।

किमु—(क्या और, how much more) किमु यत्र चतुष्टयं—जहाँ चारों हैं वहाँ का और क्या कहा जाय। (सन्देह, doubt) किमु विषविसर्पः किमु मदः—यह विष का प्रसाद है वा अत्यन्त प्रसन्नता।

किल—(सचमुच, निश्चयेन, indeed, assuredly) अर्हति किल कितव उपद्रवम्—वह धूर्त ऐसे ही उपद्रव का पात्र है। (कहने में, reported, so said) बभूव योगी किल कार्तवीर्य्यः—जैसा कहा जाता है, कार्तवीर्य नामक एक योगी थे। (सम्भावना, probability) पार्थः किल विजेष्यते कुरून्—अर्जुन कुरुओं को जीतेंगे यह जाना जाता है।

कृतम्—(निषेध, no need) वत्स, कृतं सन्देहेन—बेटा, सन्देह करना बेकार है।

कृते (लिये, for, for the sake of) अल्पस्य यशसः कृते जीवनं मा त्यज—थोड़े से यश के लिये जीवन मत छोड़ो।

कुतः—(कहाँ से, whence) कुत आगतः—कहाँ से आये?

कुत्र—(कहाँ, where) कुत्र गतोऽसौ दासः—वह नौकर कहाँ गया?

केवलं—(बस एक, सिर्फ, only, merely) भो न केवलं रूपे शिल्पेऽप्यद्वितीया मालविका—बस एक रूप ही में नहीं बल्कि शिल्प में भी मालविका के समान कोई नहीं है।

क्व—(कहाँ, where) भोः क्व इदानीं महाराजः—ओ, इस समय महाराज कहाँ है ?

क्व-क्व—(बहुत बड़ा अन्तर, great difference) तपः क्व वत्से क्व च तावकं वपुः—बेटी, कहाँ तपस्या और कहाँ तुम्हारा शरीर ?

क्वचन, क्वचित्, कुत्रचित्—(कहीं, किसी स्थान पर, anywhere) क्वचित् वैद्यो न विद्यते—कहीं पर वैद्य नहीं हैं।

खलु—(निश्चय, सचमुच, surely, indeed) महतीयं खल्वनर्थपरम्परा—यह अनर्थजाल सचमुच बड़ा भारी है।

क्षणं—(थोड़ी देर, little) क्षणं तिष्ठ—थोड़ी देर ठहरो।

क्षणात्—(जल्द, in a moment) स क्षणात् मृतः—वह जल्द ही मर गया। (क्षण भर में, in an instant) क्षणादूर्ध्वं न जानामि विधाता किं विधास्यति—क्षण भर आगे की बात आदमी नहीं कह सकता कि ब्रह्मा क्या करेगा।

च—(और, and) चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च—चक्र के समान दुःख और सुख घूमा करते हैं। (द्वन्द्व समास में, in combination) पाणी च पादौ च पाणिपादं—हाथ और पैर। (इस पर भी, तो भी, लेकिन, still, never-the-less, but) शांतमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः—यह आश्रम शांत है इस पर भी दाहिनी भुजा फड़क रही है। (श्लोक का चरण पूरा करने में, to fulfil a line of a stanza) दुःखानि च सुखानि च।

चिरं, चिरेण, चिराय, चिरात्, चिरस्य—(बहुत काल तक, for a long time) वत्स, चिरं जीव—बेटा, बहुत दिनों तक जीता रह। चिरान्महता स्नेहेन मृगकाकौ निवसतः—बहुत दिनों से बड़े प्रेम के साथ मृग और कौवा रहते थे।

चेत्—(यदि, अगर तो, if) त्वमागमिष्यसि चेत् सोऽप्यागमिष्यति—यदि तुम आओगे तो वह भी आवेगा।

जातु—(कदाचित्, कभी, एकदम से, at all, possibly) न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति—कामों के उपभोग अर्थात् सुख विलास से इच्छायें कभी पूरी नहीं होतीं। किं तेन जातु जातेन—उसके पैदा होने से सम्भवतः कुछ लाभ नहीं।

झटिति—(बहुत जल्द, quickly, in haste) झटिति प्रविश गेहं—जल्द घर में बैठो।

तत्—(इससे, therefore, as, so) तदत्र सरसि स्नात्वा सुवर्णकङ्कणं गृहाण—इससे इस तालाब में स्नान करके यह सोने का कंगन लो। (तब, इस दशा में, then, in that case) तथापि यदि महत्कुतूहलं तत्कथयामि—तो भी यदि तुमको बहुत चाव है तो मैं कहता हूँ।

ततः—(तब, बाद, इससे, after) ततः कतिपयदिवसापगमे—बाद कुछ दिन बीतने पर। ततो मामपि तत्र नय—इससे मुझे भी वहाँ ले चलो।

तत्र—(वहाँ, there) न कोऽपि तत्र वर्तते—वहाँ कोई नहीं है।

तथा—(इस प्रकार, so, thus, in that manner) तथा मां वञ्चयित्वा–इस प्रकार मुझे ठग कर। (और, and, also) अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा—अनागतविधाता और प्रत्युत्पन्नमति। (अच्छा, yes) स तथेति निष्क्रान्तः—वह 'अच्छा' कहकर चला गया। यथा के साथ इसका अधिक व्यवहार होता है।

तथाहि, तथा च—(क्योंकि, देखो, कहा है, for, for in-

stance,so, it has been said) ये दोनों ही उदाहरण देने में आते हैं। इत्युक्तं—तथाहि—ऐसा कहा है, देखिये।

तदा, तदानीम्—(तब, then) यदाहं शब्दं करोमि तदा त्वमुत्थाय पलायिष्यसे—जब मैं शब्द करूँतब तुम उठकर भाग जाना। यदा के साथ इसका व्यवहार अधिक होता है।

तावत्—(पहले, first) प्रिये, इतस्तावत् आगम्यताम्—प्रिये, पहले इधर आओ। (तब तक, while) वैशम्पायनवृत्तान्तमेव तावत् पृच्छामि—तब तक वैशम्पायन का ही वृत्तान्त पूछता हूँ। (अब, now) गच्छ तावत्—अब जाओ। (सचमुच, यथार्थ, indeed, really) त्वमेव तावत् प्रथमो राजद्रोही—सचमुच पहला राजद्रोही तो तुम्हीं हो।

तर्हि—(तब, तो, then) यदि जलं पास्यसि तर्हि व्रतभंगो भविष्यति—यदि जल पिओगे तो व्रतभंग हो जायगा।

तु—(किन्तु, but) रामः पठति श्यामस्तु क्रीडति–राम पढ़ता है किन्तु श्याम खेलता है। (केवल, only) एकं तु सुतमुखदर्शनं न लेभे—केवल बेटे के मुख देखने का ही सुख नहीं उठाया। (स्वयं, on one's part) अवनिपतिस्तु तामनिमेषलोचनो ददर्श—राजा स्वयं उसको एक टक देखने लगे।

तूष्णीं—(चुपचाप, silent) श्रुत्वैतत् तूष्णीं स्थितः—यह सुन कर वह चुपचाप रह गया।

दिवा—(दिन में, in the day time) मा दिवा स्वाप्सीः–दिन में मत सोवो।

दिष्ट्या—(भाग्य से, सुख से, fortunately, happily) दिष्ट्या प्रतिहतं दुर्जातम्—भाग्य ही से बाधायें दूर हो गयीं। (बधाई, congratulation) दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्द्धते—महाराज को इज विजय पर बधाई है।

धिक्—(धिक्कार, fie) धिक् त्वामाम्रतरो परापरपरिज्ञाना-नभिज्ञो भवान्—रे आम का पेड़ तुझे धिक्कार है, क्योंकि तुझे अपने पराये का कुछ भी ज्ञान नहीं है।

न, ना, नो—(नहीं, not) न दृष्टोऽयं मया—मैंने इसे नहीं देखा।

न न—(हाँ, अवश्य, certainly) नेयं न वक्ष्यति मनोगत-माधिहेतुं—इसने अपने मन के दुःख का कारण अवश्य कह दिया।

नक्तं—(रात में, at night) नक्तं न सुष्वाप—रात में नहीं सोया।

ननु—(निश्चय, surely) ननु भवतीभ्यामेव स्थिरीकर्तव्या शकुंतला—तुम ही दोनों को चाहिये कि शकुंतला को समझावो बुझावो। (प्रश्न, question) ननु समाप्तकृत्यो गौतमः—क्या गौतम ने अपना काम पूरा कर लिया? (सम्बोधन में, as a vocative particle) ननु मूर्खाः किं कुरुत—रे मूर्खों, क्या कर रहे हो?

नमः—(नमस्कार, salutation) श्रीगणेशाय नमः।

नाना—(बहुत प्रकार के, various, many) नानापुराण-निगमागमसंमतं—अनेक पुराण, वेद और शास्त्र से अनु-मोदित।

नाम—(named, by name) पुष्पपुरी नाम नगरी-पटना नाम का शहर। (निश्चय, indeed) मया नाम जितं—मैंने सचमुच जीत लिया। (स्वीकार, granted) एवमस्तु नाम—ऐसा ही हो (आश्चर्य, wonder) अन्धो नाम पर्वतमा-रोहति—अंधा पहाड़ पर चढ़ जाता है। (क्रोध, anger) ममापि नाम दशाननस्य परैः परिभवः—क्यों मैं दशानन होकर

दूसरे से हार जाऊँगा ? (सम्भावना, in possibility) अपि नाम कुलपतेरियमसवर्णक्षेत्रसम्भवा स्यात्—क्या शकुन्तला कुलपति कण्व की अन्य जाति की स्त्री से जनमी हुई हो सकती है ?

नीचैः—(नीचे, low, small) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—मनुष्यों की दशा चक्र के हाल की भाँति नीचे ऊपर आती जाती रहती है।

नु—(विकल्प, in uncertainty) स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—स्वप्न है, या माया है, या मतिभ्रम है ? (सचमुच, indeed) कथं नु गुणवद्विंदेय कलत्रं—कैसे सचमुच गुणवती स्त्री पाऊँ।

नूनं—(निश्चय, surely, indeed) नूनमेषा घुणाक्षरन्यायेन निर्मिता—यह जरूर घुणाक्षरन्याय से बन गई है।

पश्चात्—(पीछे, बाद, afterwards) स पश्चात् गतः—वह पीछे गया। प्रथमं पठ पश्चात् चिन्तय—पहले पढ़ो, पीछे स्मरण करो।

परश्वः—(दूसरे दिन, परसों, day after tomorrow) स परश्व आगमिष्यति—वह परसों आवेगा।

परम्—(क़िन्तु, लेकिन, but) परं भवानपि नखायुधः—लेकिन तुम भी तो नखवाले हो।

परेद्युः, परेद्यवि—(दूसरे दिन the next day) परेद्युः तत्र गम्यताम्—दूसरे दिन वहाँ जाओ।

पार्श्वतः—(दहिने बायें, दोनों बगल से, both sides) अन्ये पार्श्वतो ययुः—और लोग अगल बगल से गये।

पुनः—(फिर, again) स पुनरागच्छति—वह फिर आता है।

पुनः पुनः—(वार वार, repeatedly) स्वपाठान् पुनः पुनः पठ—अपने पाठों को वार वार पढ़ो ।

पुरः, पुरतः, पुरस्तात्—(आगे, before) विष्णुशर्मा राजपुत्राणां पुरस्तात् एवमब्रवीत्—विष्णुशर्मा ने राजपुत्रों के आगे यह कहा ।

पुरा—(पहले समय में, in ancient time) आसीत् पुरा शूद्रको नाम महीपतिः—पहले शूद्रक नामक एक राजा था।

पूर्वेद्युः—(पिछले दिन, yesterday) पूर्वेद्युः स गतः—पिछले दिन वह चला गया ।

पृष्ठतः—(पीछे से, from behind) पृष्ठतो लक्ष्मणो ययौ—पीछे से लक्ष्मणजी गये ।

पृथक्—(अलग, भिन्न, different) त्वं तस्मात् पृथक्—तुम उससे अलग हो ।

प्रभृति—(से लेकर, from) शैशवात् प्रभृति पोषितां प्रियाम् लड़कपन से पोसी पाली हुई प्यारी को ।

प्राक्—(पहले ही, before) प्रागुक्तमेतत्—यह पहले कह दिया गया है ।

प्रातः—(सवेरे, in the morning) प्रातरुत्थाय प्रातः-कृत्यं कुर्यात्—प्रातःकाल में उठकर प्रातःकाल के कार्य करे ।

प्रायः, प्रायेण, प्रायशः—(खासकर, अक्सर, generally, nearly) प्रायो भृत्यास्त्यजंति प्रचलितविभवं स्वामिनं सेवमानाः—स्वामी की सेवा करने वाले नौकर जब स्वामी को धनहीन होते देखते हैं तब अक्सर छोड़कर चल देते हैं। प्रायेणैते दुर्लभाः—अक्सर ये दुर्लभ होते हैं ।

बत—(हा, हाय, alas) अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयं—हा, कैसा बड़ा भारी पाप हम करने को तैयार हो गये

थे। (आश्चर्य वा आनंद, surprise or joy) अहो बत महच्चित्रम्—अहा ! बड़ा अचरज है।

बहुशः—(बहुत, much) बहुशो भोजनं ददाति—बहुत भोजन देता है।

भूयः—(बारंबार, फिर फिर, again) भूयो मा वद—फिर मत बोलो।

भोः—(सम्बोधन) भोः विद्वन्—हे पण्डितजी।

मा—(नहीं, not) मा कुरु धन-जन-यौवन-गर्वं—धन, जन और यौवन का घमंड मत करो।

मध्यतः, मध्य—(बीच में, amidst) मार्गस्य मध्यत एव प्रतिनिवृत्तः—बीच राह से ही वह लौट गया।

मिथः—(चुपचाप, परस्पर, in secret) तैर्मिथः मन्त्रितम्—उन्होंने चुपचाप वा आपस में सलाह की।

मिथ्या, मृषा—(झूठ, a lie) मृषा मा वद—झूठ मत बोलो।

मुहुः—(बारंबार, फिर फिर, repeatedly, again and again) बालो मुहुः रोदिति—लड़का बार बार रोता है।

यत्—(कि, as) मया भद्रं न कृतं यदत्र मारात्मके विश्वासः कृतः—यह मैंने अच्छा नहीं किया कि मारनेवाले में विश्वास किया। (जो, that) किं त्वं मत्तोऽसि यदेवमसंबद्धं प्रलपसि—क्या तुम पागल हो जो इस तरह अंड बंड बकते हो ?

यतः—(जहाँ से, जिससे, from which place, from whom) यतस्त्वया ज्ञानमशेषमाप्तं—जिससे तुमने सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। (क्योंकि, for, because) स पाठं शीघ्रमवगच्छति यतः स बुद्धिमान्—वह पाठ जल्द समझ जाता है क्योंकि वह बुद्धिमान् है।

यथा—(जैसा, as) यथाज्ञापयति देवः—जैसी आपकी

आज्ञा। (ऐसा, like) आसीदियं दशरथस्य गृहे यथा श्रीः—दशरथ के घर लक्ष्मी की ऐसी यह थी। (जैसे कि, for instance) इ यं स्वरे, यथा दध्यानय—स्वर परे रहने से इ का य होता है जैसे कि दध्यानय = दधि + आनय। (जिससे, so that) त्वं दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि—तुम उस सिंह चोर को दिखलाओ जिससे मैं उसे मारूँ।

यथा तथा—(जैसा तैसा, as so) यथा राजा तथा प्रजा—जैसा राजा होता है वैसी प्रजा होती है।

यथायथम्—(ठीक ठीक, truly, properly) यथायथं वद-सच सच कहो।

यदा, यर्हि—(जब, when) यदा यदा हि धर्मस्य—जब जब धर्म की।

यदि—(अगर, if) यदि ते ब्राह्मणस्य प्रयोजनं—यदि तुम्हें ब्राह्मण की आवश्यकता हो।

यावत्—(तक, till) स्तनत्यागं यावत् पुत्रयोरवेक्षस्व—दूध छोड़ने तक इनकी रखवाली करो।

यावत् तावत्—(जब तक, तब तक, so long as) तावत् भयस्य भेतव्यं यावद्भयमनागतम्—जब तक भय न आया हो तभी तक डरना चाहिये। (सब, all) यावद्दत्तं तावद्भुक्तं—सब (जो दिया सो) खा लिया।

युगपत्—(एक ही समय में, simultaneously) तौ युगपदूचतुः—दोनों ने एक साथ ही कहा।

रे—(नीच सम्बोधन) रे दुरात्मन्—अरे दुष्ट।

वरम्—(अच्छा है, better) याञ्चा मोघा वरमधिगुणे—बड़े आदमियों से की गई प्रार्थना विफल हो जाय तो भी अच्छा है।

वरं न—(अच्छा, लेकिन नहीं, better, but not) वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः—मर जाना अच्छा पर अधमों की शुश्रूषा अच्छी नहीं।

बहिः—(बाहर, out, outside) बहिर्ययौ—बाहर गया।

वा—(या, or) रामो गोविंदो वा गच्छतु—राम या गोविंद जाय। (और, and) पत्रलेखे, कथय महाश्वेतायाः कादंबर्याश्च कुशलं कुशली वा सकलः परिजन इति—पत्रलेखा, कादंबरी और महाश्वेता का कुशल कहो और सारा परिवार तो कुशल से है न? (ऐसा, like) पद्मिनी वान्यरूपां—दूसरी तरह की (मुर्झायी) कमलिनी सी।

विना—(बिना, without) प्रयत्नेन विना किमपि न सिध्यति—बिना उपाय किये कुछ नहीं होता।

वृथा—(व्यर्थ, in vain) वृथा जल्पसि किं मूढ़—रे मूढ़, क्यों बेकार बक रहा है?

वै—(श्लोक का चरण पूरा करने में आता है।)

व्यर्थं—(useless) देखो 'वृथा'।

शनैः—(धीरे, धीरे, slowly, gently) शनैः शनैरुपगम्य तेन व्याघ्रेण स पान्थो धृतः—धीरे धीरे जाकर बाघ ने पथिक को पकड़ लिया।

शश्वत्—(सदा, हमेशः, always, again and again) शश्वत् पाठपरायणो भव—सदा पढ़ने में लगे रहो।

सकृत्—(एक बार, थोड़ा, only once) सकृत् कन्या प्रदीयते—कन्या एक ही बार दी (व्याही) जाती है। सकृत् कृतप्रणयोऽयं जनः—थोड़ा प्रेम इसने भी किया था।

सत्यं—(हाँ, कुछ ठीक है, accepted) यदुक्तं तत्सत्यम्—जो कहा वह ठीक है।

सदा, सर्वदा—(हमेशः, always) त्वं सदा चञ्चलोऽसि-तू हमेशः चंचल रहता है।

सम्प्रति— (अब, इस समय, now) सम्प्रति स्वाभिप्रायं वद-अब अपना मतलब कहो।

सम्यक्— (अच्छी तरह, ठीक ठीक, right, properly) न सम्यगभिहितं त्वया—तुमने ठीक ठीक नहीं कहा।

सह, साकं, सार्द्धं—(साथ, with) पिता पुत्रेण सहागताः—पिता पुत्र के साथ आये।

सहसा— (एक व एक; suddenly) सहसा विदधीत न क्रियाम्—एक ब एक कोई काम करना न चाहिये।

साक्षात्—(प्रत्यक्ष, सामने, in presence) दुष्टः साक्षात् न निन्दति—दुष्ट सामने निंदा नहीं करता।

साम्प्रतम्—(इस समय, now, at present) साम्प्रतं मा वद—इस समय मत बोलो। (उचित, proper) एतन्न साम्प्रतम्—यह उचित नहीं है।

सायं— शाम को (in the evening) सायं सन्ध्यामुपासीत—शाम को सन्ध्या करे।

सु, सुष्ठु—(अच्छा, good) सुष्ठु वदति—अच्छा कहता है।

स्थाने—(ठीक, justly, properly) स्थाने खलु वाक्यनिवृत्तिः मोहश्च—ठीक समय पर कहना समाप्त हुआ और मूर्च्छा हुई। (यह बहुत ठीक है कि, it is quite proper that) स्थाने प्राणाः कामिनां दूत्यधीनाः—यह बात ठीक है कि कामियों के प्राण दूतियों के अधीन होते हैं।

स्म—(वर्तमानकाल में भूतकाल बतलानेवाला अव्यय, an indeclinable used with verbs in the present

tense to indicate past tense) यजति स्म युधिष्ठिरः—युधिष्ठिर ने यज्ञ किया।

स्वयम्—(आप, ownself) स स्वयमेव पचति—वह आप ही पकाता है।

हंत—(हर्ष, आश्चर्य, joy, surprise) हंत प्रवृत्तं संगीतकम्—अहा! संगीत आरम्भ हो गया। (शोक में, हाय, alas) हंत धिङ् मामधन्यम्—हा मुझ अभागे को धिक्कार है!

हा—(दुःख और शोक में, grief, pain) हा प्रिये जानकी—हाय प्यारी जानकी।

हि—(निश्चय, सचमुच, indeed, surely) एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति—गुण के समूह में एक दोष निश्चय छिप जाता है। (क्योंकि, इसीसे, for, because) अग्निरिहास्ति धूमो हि दृश्यते—यहाँ आग है, क्योंकि धुँआ दिखलायी पड़ता है।

हे—(सम्बोधन) हे राजन्, देहि मे दानम्—हे राजा, मुझे दान दे।

ह्यः—(बीता हुआ दिन, yesterday) ह्यः सोऽत्रागतः—कल वह यहाँ आया।

वक्तव्य—अव्यय के लिये विशेषणप्रकरण में क्रियाविशेषण को भी देखो।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

कल से वह बीमार है। राम समझदार है; पर परिश्रमी नहीं है। परसों मोहन अपने भाई के साथ कलकत्ता चला गया। एक समय कुछ सिंहों ने एक सियार को जाते देखा। बहुत दिनों से उसका कुछ समाचार नहीं मिला। तुम क्या करते हो मेरी बात नहीं सुनते। दो लड़के हुए, पर अभाग्य-

वश एक सवेरे और एक शाम को मर गया। श्याम अच्छा लड़का है इससे सब उसको बहुत चाहते हैं। प्रतिदिन सवेरे हाथ मुँह अच्छी तरह धोकर ध्यान से पढ़ने बैठो। मेरे केशव और माधव नामक दो भाई थे। वह गरीब है पर ईमानदार है। वह बहुत सुन्दर है। साधु शोक और चिन्ता से परे हैं। उसे तुरत बुलाओ। वह निश्चिन्तता से आता जाता है। बार बार अपना पाठ याद करो। बिना परिश्रम दुनिया में कुछ नहीं होता। सबके साथ साधुता से व्यवहार करो।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

अद्य प्रभृतेः स पठिष्यति। स मृषां वदति। प्राते शयनं मा कुरु। अद्य दिवायां सूर्यों न दृश्यते। पुरायां विक्रमादित्यनामा नृपः बभूव। नानां कथां कथयित्वा सुतः। अहमतीवः दुखितः अस्मि। यदिः त्वं ममबन्धुः तर्हिः मद्गृहमागच्छ। भूयं सीता वनं जगाम। सहसा कथां मा कथय। वयमेकत्रे निवसामः। अरे प्रिय मित्र! अयं श्वा उच्चः शब्दायते।

'च' और 'वा' अव्ययों के योग में क्रिया के प्रयोग

जब दो एकवचन कर्ता 'च' के द्वारा संयुक्त किये गये हों तो क्रिया द्विवचनान्त होगी। जैसे, रामः लक्ष्मणश्च वनं जग्मतुः —राम और लक्ष्मण वन गये।

जब एक वाक्य में भिन्न भिन्न कर्ता विभिन्न होकर एक ही प्रकार का कार्य करते हों तो क्रिया एकवचनान्त होगी। जैसे, सतीव योषित् प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि—सती स्त्री की तरह निश्चला प्रकृति जन्मान्तर में भी पुरुष के साथ रहती है। इसमें दो भिन्न भिन्न कर्ता विभिन्न होकर एक प्रकार का कार्य करते हैं।

जब दो कर्ताओं में से एक एकवचन और एक द्विवचन वा बहुवचन हो, वा दोनों द्विवचन वा बहुवचन हों, अथवा दो से अधिक एकवचन कर्ता हों और 'च' के द्वारा संयुक्त हों तो क्रिया बहुवचनान्त होगी। जैसे, स तस्य द्वौ भ्रातरौ च तत्र गतवन्तः—वह और उसके दो भाई वहाँ चले गये। अध्यापकाः छात्राश्च पाठशालामगच्छन्—पंडित और विद्यार्थी पाठशाला गये। रामः सीता लक्ष्मणश्च वनं जग्मुः—राम, सीता और लक्ष्मण बन गये।

यदि एक वाक्य में अनेक कर्ता हों और उनका क्रिया के साथ अलग अलग सम्बन्ध सूचित होता हो तो क्रिया एकवचनान्त होगी। जैसे, न मां त्रातुं तातः प्रभवति नचांबा न भवती—न पिता मुझे बचा सकते हैं, न माता ही बचा सकती है और न आप ही रक्षा कर सकती हैं। इसमें कर्ता का अलग अलग सम्बन्ध है।

जब एक वाक्य में भिन्न भिन्न लिङ्ग, वचन के अनेक कर्ता हों तो क्रिया निकट के कर्ता के अनुसार होगी। जैसे, आदित्यचन्द्रावनिलानलौ च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च। अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मोपि जानाति नरस्य वृत्तम्—सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी, जल, हृदय, यम, दिन, रात, दोनों सन्ध्या और धर्म मनुष्य के कार्य को देखा करते हैं। इसमें अनेक प्रकार के कर्ता हैं। पर अन्तिम कर्ता 'धर्मः' के अनुसार 'जानाति' क्रिया हुई।

जब एक वाक्य में मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष वा प्रथम पुरुष और उत्तम पुरुष अथवा तीनों पुरुष हों तो क्रिया उत्तम पुरुष ही की होगी। जैसे, (क) त्वञ्चाहञ्च पचावः—तू और मैं

पकाता हूँ। (ख) स चाहञ्च पचावः—वह और मैं पकाता हूँ। (ग) अहं च, त्वं च, स च पचामः—मैं, तू और वह पकाते हैं।

जब एक वाक्य में मध्यम पुरुष और प्रथम पुरुष के कर्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार होगी। जैसे, स च त्वं च पुस्तकं पठथः—वह और तू पुस्तक पढ़ता है।

जब दो वा उससे अधिक कर्ताओं का बोध किसी सर्वनाम वा संज्ञा से हो तो क्रिया उसी के अनुसार होगी। जैसे, माता मित्रं पिता चेति स्वभावात् त्रितयं हितम्—माता, मित्र और पिता स्वभाव ही से तीनों हितकारी हैं। यहाँ 'त्रितयं' के अनुसार क्रिया हुई।

जब दो वा अधिक एकवचन कर्ता 'वा' और इस अर्थ के बोधक 'किंवा', 'अथवा' द्वारा मिले हों तो क्रिया एकवचनान्त होगी। जैसे, रामो गोविन्दः कृष्णो वा गच्छतु—राम, गोविंद वा कृष्ण जायँ।

जब भिन्न भिन्न पुरुष वा वचन के अनेक कर्ता हों और वे 'वा' द्वारा संयुक्त हों तो क्रिया निकट के कर्ता के अनुसार होगी। जैसे, ते वा अयं वा पारितोषिकं गृह्णातु—वे चाहे यह इनाम ले।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों के कारण बताकर शुद्ध करो—

पटुत्वं सत्यवादित्वं कथायोगेन बुध्येते। राजा राज्ञीपतयोः पादान् जग्राह। ते अहं च ग्रामं गच्छन्ति। त्वं चाहं च गच्छथ। भृत्यः अहं च गच्छतः। सत्यस्य मित्राणि च गताः। रामः कृष्णौ वा अवागमिष्यतः। अहं वा ते वा गमिष्यामि। तीर्थोदकञ्च वह्निश्च नान्यत शुद्धिमर्हति। आयुः कर्म्म च वित्तं

च विद्या निधनमेव च पञ्चैतत्सृज्यते। रामः कृष्णश्च जल्पति। न च त्वं न च स मां त्रातुं प्रभवतः।

उपसर्गयोग से धातु के अर्थभेद

(Different meaning of verbs with preposition)

अंग्रेजी में preposition मिलाने से जैसे धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं वैसे ही उपसर्ग मिलाने से संस्कृत में भी धातुओं के अनेक अर्थ होते हैं। जैसे—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

उपसर्ग धातु के अर्थ को बलपूर्वक दूसरी ओर खींच ले जाता है। देखिये कि एक 'हृ' धातु के जिसका अर्थ चुराना वा ले जाना (to take things from one place to another) है, उपसर्गयोग से कितने अर्थ होते हैं। प्र+हृ= प्रहार—मारना (beating), आ+हृ=आहार—भोजन करना (eating), सम्+हृ=संहार—नाश करना (destroying), वि+हृ=विहार—खेलकूद, घूमना फिरना (walking, playing), परि+हृ=परिहार—छोड़ देना (giving up) इत्यादि।

उपसर्ग के योग से अकर्म्मक भी सकर्म्मक हो जाता है। जैसे, 'भू' धातु का 'होना' अर्थ है। इस अर्थ में यह अकर्म्मक है, पर 'अनु' उपसर्ग लगा देते हैं तो इसका अर्थ 'अनुभव करना' हो जाता है। इस अर्थ में यह सकर्म्मक हो गया। जैसे, पापी दुःखमनुभवति—पापी दुःख भोगता है।

कुछ सोपसर्ग धातु के अर्थ नीचे दिये जाते हैं—

अय्—(जाना, to go) परा+अय् (भागना, to run away) स पलायते—वह भागा जाता है।

अर्थ—(माँगना, to beg) अभि + अर्थ = (सम्मान करना, to welcome) स तमभ्यर्थयते—वह उसका स्वागत करता है।

आप्—(पाना to get) १ वि + आप् (फैलना, to spread) रजः आकाशं व्याप्नोति—धूल आकाश तक फैल जाती है। २ सम् + आप् (पूरा होना) ग्रन्थः समाप्तः—ग्रन्थ पूरा हो गया।

अस्—(फेंकना, to throw) १ अभि + अस् (रटना, to recite) छात्रः पाठमभ्यस्ति—विद्यार्थी पाठ याद करता है। २ निर् + अस् (अलग करना, हटाना) निरस्यति।

आस्—(बैठना, to sit) १ अधि + आस् (अधिकार करना, to occupy) स राजासनमध्यास्ते—वह राजसिंहासन पर अधिकार करता है। २ उप + आस् (पूजा करना, to worship) भक्ताः शिवमुपासते—भक्त शिव की पूजा करते हैं।

इं—(जाना, to go) १ अव + इ (जानना, to know) दुर्वासमवेहि माम्—मुझे दुर्वासा जानो। २ प्रति + इ (विश्वास करना, to trust) स मयि न प्रत्येति—वह मुझ में विश्वास नहीं करता। ३ उत् + इ (उगना, to rise) उदेति सविता ताम्रः—सूर्य लाल उगते हैं। ४ उप + इ (आप पास आना, to betake oneself to) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः—उद्योगी के पास लक्ष्मी आप आती है। ५ अभि + इ (सामने आना) अभ्येति। ६ अनु + इ (पीछे आना, सम्बन्ध होना) अन्वेति। ७ अप + इ (अलग होना) अपेति।

ईक्ष्—(देखना, to see) १ अप + ईक्ष् (अपेक्षा करना, to wait) क्षणमपेक्षस्व—थोड़ी देर ठहरो। २ (चाहना, to expect, to require) किं फलमपेक्षसे—क्या फल चाहता है? रामः त्वामपेक्षते—राम तुम्हें चाहते हैं। ३ परि + ईक्ष् (परीक्षा करना, to examine) गुरुः छात्रं परीक्षते—गुरु

छात्र की परीक्षा लेते हैं। ३ उप + ईक्ष् (खयाल न करना, to disregard) दरिद्रमुपेक्षते—वह गरीब का खयाल नहीं करता। ४ अव + ईक्ष (जाँच करना, to inspect) कस्ते कार्याणि अवेक्षते—तुम्हारे काम की जाँच कौन करता है?

कृ—(करना, to do) १ अनु + कृ (नकल करना to imitate) पुत्रः पितरमनुकरोति—बेटा बाप की नकल करता है। २ प्रति + कृ (प्रतिकार करना, बचाव करना, to remedy) आगतं तु भयं वीक्ष्य प्रतिकुर्यात् यथोचितम्—आया हुआ भय देखकर उससे बचने का उपाय करना चाहिये। ३ अधि + कृ (अधिकार करना, to occupy) स राज्यमधिकरोति—वह राज दखल करता है। ४ निर + कृ (अलग करना, हटाना) निराकरोति। ५ अप + कृ (अपकार करना, बुरा करना) अपकुरुते। ६ परि + कृ (शोधना) परिष्करोति।

कल्प्—(समर्थ होना, to be able) १ सम् + कल्प् (मन में लाना) संकल्पते, संकल्पं करोतीत्यर्थः। २ वि + कल्प् (संदेह करना) विकल्पते।

क्रम्—(पैर रखना, to step) १ परा + क्रम् (बल दिखाना) पराक्रमते। २ उप + क्रम् (आरम्भ करना) उपक्रमते, आरम्भं करोतीत्यर्थः।

क्षिप्—(फेंकना, to throw) १ सम् + क्षिप् (छोटा करना, कम करना) संक्षिपति। २ उत् + क्षिप् (ऊपर फेंकना) उत्क्षिपति। ३ आ + क्षिप् (दोष लगाना) आक्षिपति। ४ अव + क्षिप् (नीचे फेंकना) अवक्षिपति।

गम्—(जाना, to go) १ अव + गम् (जानना, to know नावगच्छामि ते मतिम्—तुम्हारी बुद्धि का पता नहीं मिलता। २ अनु + गम् (पीछा करना, to follow) वत्से, मामनुगच्छ—

बेटी, मेरा पीछा करो। ३ निर्+गम् (बाहर होना, to go out) स गृहान्निर्गतः—वह घर से निकल गया। ४ अधि+गम् (पाना, to get) परिश्रमस्यास्य फलं शीघ्रमधिगमिष्यसि—इस परिश्रम का फल शीघ्र ही पाओगे। ५ आ+गम् (आना, to come) आगच्छ मित्र—आओ मित्र। ६ सम्+गम् (मिलना to join) मित्रेण संगच्छते साधुः—साधु मित्र से मिलते हैं। ७ उत्+गम् (ऊपर उड़ना, to rise up) पक्षी आकाशमुद्गच्छत्—चिड़िया आकाश में उड़ गई।

गृह्—(लेना, to take) १ अनु+गृह् (कृपा करना, to favour) गुरो मामनुगृहाण—गुरु जी मुझ पर कृपा कीजिये। २ प्रति+गृह (लेना, to accept) स वृत्तिं प्रतिगृह्णाति—वह वृत्ति स्वीकार करता है। ३ वि+गृह् (लड़ना, to fight) विगृह्णाति, युद्धं करोतीत्यर्थः। ४ नि+गृह् (तिरस्कार करना, दण्ड देना, रोकना, to punish, to check) शीघ्रमयं दुष्टवणिक् निगृह्यताम्—जल्द इस दुष्ट बनिये को दण्ड दो। इन्द्रियाणि निगृह्यन्ताम्—इन्द्रियों को रोको।

चर्—(घूमना, फिरना, to wander) १ आ+चर् (व्यवहार करना, बर्तना, to behave) पुत्र मित्रवदाचरेत्—पुत्र के साथ मित्र का सा व्यवहार करे। २ अनु+चर् (पीछा करना, to follow) सत्यमार्गमनुचरेत्—सन्मार्ग में चले। ३ परि+चर् (सेवा करना, to serve) भृत्याः स्वामिनं परिचरन्ति—नौकर स्वामी की सेवा करते हैं। ४ सम्+चर् (चलना, फिरना) किं वने व्याधाः सञ्चरन्ति—क्या जंगल में बहेलिये घूमते हैं?

चि—(चुनना, to pluck) १ उप+चि (बढ़ना, to grow) उपचीयते शरीरम्—तुम्हारा शरीर बढ़ रहा है। २ अप+चि (घटना, to decrease) अपचीयते स्वास्थ्यम्—

तुम्हारा स्वास्थ्य क्षीण हो रहा है। ३ सम्+चि (बटोरना, to gather) कृपणः अर्थं संचिनोति—कृपण धन बटोरता है।

ज्ञा—(जानना, to know) १ अनु+ज्ञा (आज्ञा देना, to order) तत् अनुजानीहि मां गमनाय—सो मुझे जाने के लिये आज्ञा दें। २ प्रति+ज्ञा (प्रतिज्ञा करना, to promise) कथं वृथा प्रतिजानीते—क्यों झूठ मूठ प्रतिज्ञा करता है? ३ अव+ज्ञा (अनादर करना, खयाल में न लाना, to hate, to neglect) दरिद्रं नावजानीयात्—गरीब का अनादर मत करो। ४ अप+ज्ञा (झुठाना to deny) शतमपजानीते—सौ झुठलाता है।

तृ—(तैरना, to cross) १ अव+तृ (उतरना, to descend) राजा रथादवततार—राजा रथ से उतरे। २ वि+तृ (देना, to give) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां—गुरु बुद्धिमान् को विद्या देते हैं।

दिश्—(देना, to give) १ उप+दिश् (शिक्षा देना, to advise) उपदिशति गुरुः छात्रम्—गुरु विद्यार्थी को सिखलाते हैं। २ सम्+दिश् (संदेश कहना, to send a message) किं संदिशति—क्या संवाद भेज रहे हैं?

द्रु—(जाना, to go) १ उप+द्रु (उत्पात करना) उपद्रवति, अनिष्टोत्पादनं करोतीत्यर्थः। २ वि+द्रु (भागना) विद्रवति, पलायते इत्यर्थः।

धा—(धारण करना, to contain) १ सम्+धा (मेल करना, to make peace) शत्रुणा नहि संदध्यात्—शत्रु के साथ मेल नहीं करे। २ वि+धा (करना, to do) सहसा विदधीत न क्रियाम्—एकाएक कोई कार्य नहीं करना चाहिये। ३ परि+धा (पहनना, to put on) वस्त्रं परिधत्स्व—कपड़ा पहनो। ४ अभि+धा (कहना, to speak) सत्यमभिधेहि—

सच सच कहो। ५ अपि + धा (मूँदना, to cover) कर्णौ अपिदधाति—कान बंद करता है। ६ अव + धा (ध्यान देना, to attend) क्षणमवधत्स्व—कुछ देर सोचो।

नी—(ले जाना, to lead) १ प्र + नी (बनाना, रचना, to compose) स पुस्तकमेकं प्रणिनाय—उसने एक पुस्तक बनाई। २ अप + नी (हटाना to remove) अपनेष्यामि ते दर्पम्—तेरा घमंड दूर कर दूँगा। ३ आ + नी (लाना, to bring) फलमानयति—फल लाता है। ४ परि + नी (ब्याह करना, to marry) नलः दमयन्तीं परिणीतवान्—नल ने दमयन्ती से ब्याह किया। ५ निर् + नी (ठीक करना, to decide) कलहस्य मूलं निर्णयति—झगड़े की जड़ को ठीक करता है। ६ अनु + नी (मनाना, to conciliate) अनुनय मित्रं कुपितम्—क्रोधित मित्र को मनाओ। ७ उप + नी (यज्ञोपवीत देना) उपनयति।

पत्—(गिरना, to fall) प्र + नि + पत् (प्रणाम करना, to bow down to) प्रणिपत्य गुरुं—गुरु को प्रणाम करके। २ आ + पत् (संघटित होना, to happen) अहो कष्टमापतितम्—आह! बड़ा भारी कष्ट आ पड़ा। ३ उत् + पत् (उड़ना, to fly) कपोताः उत्पतिताः—कबूतर उड़ गये।

पद्—(जाना, to go) १ प्र + पद् (पाना, भजना, to get) ये यथा मां प्रपद्यन्ते—जो जैसे मुझे प्राप्त करता वा भजता है। २ उत् + पद् (पैदा होना, to be produced) दुग्धात् नवनीतमुत्पद्यते—दूध से मक्खन निकलता है। ३ वि + पद् (विपद् में पड़ना, मरना) विपद्यते, विपन्नो भवतीत्यर्थः। ४ उप + पद् (योग्य होना) नैतत् त्वय्युपपद्यते—यह आपके लिये उचित नहीं है।

बन्ध्—(बाँधना, to tie) १ सम्+बन्ध् (सम्बन्ध करना) सम्बध्नाति। २ उत्+बन्ध् (फाँसी लगाना) उद्बध्नाति। ३ निर्+बन्ध् (आग्रह करना) निर्बध्नाति।

बुध्—(जानना, to know) १ उत्+बोधि (उत्तेजना देना) उद्बोधयति। २ सम्+बोधि (सम्बोधन करना) सम्बोधयति।

भू—(होना, to be) अनु+भू (अनुभव करना, to feel) सन्तः सुखमनुभवन्ति—सन्त सुख पाते हैं। २ प्र+भू (उत्पन्न होना, to arise) लोभात् क्रोधः प्रभवति—लोभ से क्रोध होता है। (प्रभाव दिखलाना, योग्य होना, to be able) प्रभवति शुचिर्बिम्बोद्ग्राहे मणिः—स्वच्छमणि प्रतिबिम्ब-ग्रहण में समर्थ है। ३ परा or परि+भू (हराना, to defeat) बलवान् दुर्बलान् पराभवति—बलवान् दुर्बलों को दबाता है। ४ अभि+भू (दबाना, चढ़ाई करना, to attack) कस्त्वामभि-भवितुमिच्छति—कौन तुम्हें दबाना चाहता है? ५ सम्+भू (सम्भव होना, to be possible) अयमुपायः सम्भवति—हाँ, यह उपाय होना सम्भव है। (पैदा होना, to be born) सम्भवामि युगे युगे—हरेक युग में जन्म लेता हूँ।

मन्—(सोचना, जानना, to think) १ अव+मन् (अना-दर करना, to disregard) नावमन्येत निर्धनम्—निर्धन का अनादर न करना चाहिये। २ अनु+मन् (आज्ञा देना, to permit) त्वां गमनाय अनुमन्ये—मैं तुम्हें जाने का हुक्म देता हूँ। ३ सम्+मन् (आदर देना, to regard) ब्राह्मणं संम-न्यते—ब्राह्मण को आदर देता है।

मन्त्र्—(सलाह करना, to consult) १ नि+मन्त्र् (न्यौता देना, to invite) ब्राह्मणान् निमन्त्रयस्व—ब्राह्मणों को न्यौता दो। २ आ+मन्त्र् (मिलना, विदा होना, to take leave of)

तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रये—वनज्योत्स्ना से विदा ले लूँ। ३ अभि + मन्त्र् (मन्त्र से संस्कार करना) अभिमन्त्र्य जलं—जल का मन्त्र से संस्कार करके।

मृश्—(छूना, to touch) १ परा + मृश् (विचार करना) परामृशति। २ वि + मृश् (चिन्ता करना) विमृशति।

युज्—(मिलना, to combine) १ उत् + युज् (उद्योग करना) उद्युङ्क्ते, उद्योगं करोतीत्यर्थः। २ प्र + युज् (प्रयोग करना) प्रयुंक्ते। ३ नि + युज् (लगाना) नियुंक्ते। ४ अनु + युज् (पूछना) स किमनुयुंक्ते—वह क्या पूछता है?

रम्—(क्रीड़ा करना, to sport) १ वि + रम् (विश्राम करना, अलग होना, to rest, to stop) विरम पापात्—पाप से अलग हो। २ उप + रम् (मरना, to die) स शोकेन उपरतः—वह शोक से मर गया।

रुध्—(रोकना, घेरना, to oppose, to surround) १ अनु + रुध् (अनुरोध करना, सिफारिश करना, to recommend) अनुरुणद्धि। २ वि + रुध् (विरोध करना, to oppose) विरुणद्धि।

रुह्—(जनमना, to grow) १ आ or अधि + रुह (चढ़ना, to ascend) गिरिमारोहति—पहाड़ पर चढ़ता है। २ अव + रुह् (उतरना, to descend) पर्वतादवरोहति—पहाड़ से उतरता है।

लप—(बोलना, to speak) वि + लप् (रोना, पछताना, to lament) विललाप विकीर्णमूर्द्धजा—बिखरे बालवाली रति ने विलाप किया। २. प्र + लप् (अल्ल बल्ल बकना, to talk incoherently) मूर्खाः प्रलपन्ति—मूर्ख अल्ल बल्ल बकते

हैं। ३ अप+लप् (छिपाना, to conceal) दुष्टः सत्यमपलपति—दुष्ट सच्ची बात को छिपाता है।

वद्—(बोलना, to speak) १ वि+वद् (झगड़ना, to quarrel) क्षेत्रे विवदन्ते कृषकाः—खेत में किसान लड़ते हैं। २ प्रति+वद् (जवाब देना, खंडन करना, to contradict) तान् प्रत्यवादीदथ राघवोऽपि—राम ने भी उन्हें जवाब दिया।

वस्—(रहना, to live) उप्+वस् (उपास करना, to fast) एकादश्यामुपवसति—एकादशी को उपास करता है। २ प्र+वस् (बाहर जाना, परदेश रहना) प्रवसति ते पतिः—तेरा पति परदेश है।

वह्—(ले जाना, to carry) उत्+वह् (विवाह करना, to marry) रामः सीतामुदवहत्—राम ने सीता से ब्याह किया। २ आ+वह् (उपजाना, to produce, देना) महदपि राज्यं सुखं नावहति—भारी भी राज सुख नहीं देता है।

वृत्—(होना, to be) १ प्र+वृत् (लगना, to engage) प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः—राजा प्रजा की भलाई में लग जायँ। २ प्र+वृत् (आरम्भ होना, to commence) ततः प्रववृते युद्धम्—तब युद्ध छिड़ा। ३ नि+वृत् (लौटना, हटना, to return) यद्गत्वा न निवर्तन्ते—जहाँ जाकर नहीं लौटते। ४ अनु+वृत् (अनुसरण करना, to follow) साधवो महात्मानमनुवर्तन्ते—सज्जन महात्माओं का अनुसरण करते हैं— ५ परि+वृत् (घूमना, फिरना, to turn round, to change) चक्रवत् परिवर्तन्ते—पहिये की भाँति घूमते हैं —उलटते पलटते हैं। मतिः परिवर्तते—बुद्धि पलटती है।

सद्—(जाना, to go) १ प्र+सद् (प्रसन्न होना, to

favour) प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वम्—देवी प्रसन्न हो, संसार को पालो। २ वि+सद् (दुःख उठाना, पछताना, to be sorry) यूयं मा विषीदत—आप न पछतायँ। ३ अव+सद् (थकना, to be weary) शरीरमवसीदति—शरीर दुखी है। ४ आ+सद् (पाना, पहुँचना, to get) पान्थः कूपमेकमाससाद—राही एक कुएँ पर पहुँचा। ५ नि+सद् (बैठना, to sit down) इतो निषीद—यहाँ बैठो।

सृ—(जाना, to go) १ प्र+सृ (फैलना, to extend) प्रससार यशस्तव—तुम्हारा यश फैल गया। २ अनु+सृ (पीछा करना, to follow) वनं यावदनुसरति—जंगल तक पीछा करता है। ३ निर्+सृ (निकलना, to come out) क्षतात् रक्तं निःसरति—घाव से रक्त निकलता है। ४ अप+सृ (दूर होना, हटना to go away) दूरमपसर—दूर हो, हटो।

स्था—(ठहरना, to stay) १ प्र+स्था (जाना, to set out) प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय—मुनि ने आश्रम के लिये यात्रा की। २ अनु+स्था (करना, to do) किमनुतिष्ठसि—क्या करते हो?। ३ उत्+स्था (उठना, to stand up) उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द—हे गोविन्द उठिये। ४ उप+स्था (पूजा करना, to worship) द्विजो देवमुपतिष्ठते—ब्राह्मण देवता की पूजा करता है।

हृ—(चुराना, ले जाना, to steal, to carry) १ उप+हृ (भेंट देना, to offer) देवेभ्यो बलिमुपहरति—देवता को बलि देता है। २ आ+हृ (लाना, to collect) द्विजः पुष्पाणि आहरति—ब्राह्मण फूल लाता है। ३ अप+हृ (लूटना, to rob) चौरो धनमाहरति—चोर धन लूटते हैं। (आरम्भ की कारिका देखो।)

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यांशों का संस्कृत में अनुवाद करो—

थोड़ी देर ठहरो। तुम्हारे कामों की कौन जाँच करता है? मुझे तुम्हारा विश्वास नहीं है। पुत्र के मरने पर पिता ने बहुत विलाप किया। बड़ों का पीछा करो। मैंने यह किताब बनाई। अपने किये पर पछताओ। वह घर लौटा। वह शिव की पूजा करता है। आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं? उसने सौ रुपये देने की प्रतिज्ञा की। तुम कोठे से उतरो। गुरु को प्रणाम करके पढ़ना आरम्भ करो। शंकर ने पार्वती से ब्याह किया। मैं तुम्हें दो पुस्तकें उपहार दूँगा। पेड़ पर मत चढ़ो। दुष्ट लड़के हमेशः झगड़ते रहते हैं। कपड़ा पहनकर मेला देखने चलो। इससे हम क्या आशा करें? राजा गढ़ से बाहर निकले। सबके साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिये।

२. नीचे लिखे उपसर्ग सहित धातुओं के अर्थ लिखो—

उप + आस्, अव + ज्ञा, अभि + अस्, आ + मन्त्, अनु + ग्रह्, अनु + गम्, अप + ईक्ष्, प्रति + इ, उप + ईक्ष्, प्र + नी, अव + तृ, सम् + चि, अप + सृ, वि + सद्, अधि + रुह्, प्रति + वद्, और नि + युज्।

पाँचवाँ अध्याय

क्रियाप्रकरण (Verb)

धात्वर्थः क्रिया—धातु के अर्थ को क्रिया कहते हैं।

क्रियावाचकप्रकृतिः धातुः—क्रियावाचक प्रकृति को धातु कहते हैं। जैसे—भू, स्था, गम्, हन्, कृ, वद् आदि।

एक एक धातु से एक एक क्रिया समझी जाती है। जैसे—

स गच्छति, अहं करोमि, रामः एवमुक्तवान्, सः वनं गतः इत्यादि। इनमें गच्छति, करोमि, उक्तवान्, गतः क्रिया हैं।

संस्कृत में मुख्य और गौण भेद से क्रिया दो प्रकार की होती है—एक तिङन्त क्रिया और दूसरी कृदन्त क्रिया। धातु के उत्तर तिप्, तस्, अन्ति आदि के योग से जो क्रिया बनती है उसे तिङन्त क्रिया और धातु के उत्तर क्त, क्तवतु, तव्य आदि प्रत्यय करके जो क्रिया बनती है उसे कृदन्त क्रिया कहते हैं। जैसे, ऊपर के उदाहरणों में गच्छति, करोति, तिङन्त क्रिया और उक्तवान्, गतः, कृदन्त क्रिया है। इन दोनों प्रकार की क्रियाओं में कितनी समापिका क्रिया हैं और कितनी असमापिका वा अपूर्ण क्रिया हैं। जिन क्रियाओं के प्रयोग करने से वाक्यार्थ पूरा हो जाय और किसी प्रकार की आकांक्षा न रहे, उसे समापिका क्रिया कहते हैं। जैसे—अहं जलं पिबामि, तेन दुग्धं पीतम्, इत्यादि। इनमें पिबामि, पीतम्, समापिका क्रिया है, क्योंकि इनसे वाक्यार्थ पूरा हो जाता है। और जिन क्रियाओं के प्रयोग से वाक्यार्थ पूरा नहीं हो, और किसी प्रकार की आकांक्षा बनी रहे उसे असमापिका क्रिया कहते हैं। जैसे—स ग्रामं गत्वा, अहं पुस्तकं पठन्, इत्यादि। इसमें गत्वा, पठन् असमापिका क्रिया हैं, क्योंकि इनके कहने पर भी वाक्यार्थ पूरा नहीं होता और एक प्रकार की कुछ और कहने या सुनने की आकांक्षा बनी रहती है।

१—तिङन्त क्रिया

जितने धातु हैं वे दस भागों में रूप-रचना के भेद से तिङन्त में बाँटे गये हैं जिन्हें गण (class) कहते हैं। अंग्रेजी में इन्हें first conjugation, second conjugation इस प्रकार कहते हैं। वे ये हैं—

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनक्र्यादिचुरादयः॥

१ भ्वादि, २ अदादि, ३ जुहोत्यादि, ४ दिवादि, ५ स्वादि, ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि, ९ क्र्यादि और १० चुरादि।

धातुओं के दस लकार होते हैं। इन लकारों से काल और अवस्था का बोध होता है। इन दसों लकारों के रूप भिन्न भिन्न होते हैं जैसे कि अँग्रेजी में Mood (लकार) और Tense (काल) के अनुसार Verb के भिन्न भिन्न रूप होते हैं। हिन्दी में भी भिन्न भिन्न रूप होते हैं। दसों लकार इस प्रकार के हैं।

१ लट् (वर्तमान काल, Present or Present Indicative mood), २ लिट् (परोक्ष अनद्यतन [२४ घंटे के बाद] भूत, Past perfect), ३ लुट् (अनद्यतन भविष्य, Future), ४ लृट् (भविष्य, Future), ५ लोट् (अनुज्ञा, सम्भावना आदि, Imperative) ६ लङ् (अनद्यतन भूत, Past perfect), ७ लिङ् (विधि, सम्भावना आदि, Subjunctive mood and Potential mood), ८ आशीर्लिङ (आशीर्वाद में, Benedictive), ९ लुङ् (सामान्य भूत, Past) १० लृङ् (हेतुहेतुमद्भूत, Conditional) [इनका विशेष वर्णन आगे होगा।] इन दसों लकारों के योग से जो तिङन्त क्रिया बनती हैं वे सब समापिका क्रिया होती हैं।

धातुओं के आगे ति, तः, अन्ति, ते, आते, अन्ते आदि जो विभक्तियाँ आती हैं उनके दो भेद होते हैं—एक परस्मैपद और दूसरा आत्मनेपद।

परस्मैपदी धातुओं के उत्तर परस्मैपद की, आत्मनेपदी धातुओं के आगे आत्मनेपद की और उभयपदी धातुओं के आगे दोनों प्रकार की विभक्तियाँ आती हैं। परस्मैपदी—भवति

(भू+तिप्) आत्मनेपदी—एधते (एध्+ते) उभयपदी—यजति, यजते वा (यज्+तिप्, ते आदि।

टिप्पणी—यदि क्रिया का फल कर्तृगामी अर्थात् कर्ता के लिये हो तो आत्मनेपद और परगामी अर्थात् दूसरे के लिये हो तो परस्मैपद का प्रयोग होता है। किन्तु व्यवहार करने में इसका भेद लक्षित नहीं होता और न कोई इसका ध्यान रखता है। जो जहाँ चाहता है व्यवहार करता है।

उपसर्गयोग से अर्थ बदल जाने के कारण कितने परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी और आत्मनेपदी परस्मैपदी हो जाते हैं। जैसे, जयति महाराजः—महाराज विजयी होते हैं। राजा शत्रून् पराजयते—राजा शत्रुओं को परास्त करते हैं। यहाँ परस्मैपदी 'जी' धातु 'पराजय' अर्थ में आत्मनेपदी हो गया। और, रमते च मनोरमा—मनोरमा (कौमुदी की टीका)-विहार करती है। पाठाद्विरमति—पढ़ने से मुख मोड़ता है। यहाँ आत्मनेपदी 'रम्' धातु 'विराम' अर्थ में परस्मैपदी हो गया। भावकर्म में परस्मैपदी धातु आत्मनपदी हो जाते हैं। जैसे, स भवति; स चन्द्रं पश्यति (तिङन्त) तेन भूयते; त्वया चन्द्रः दृश्यते (भाव, कर्म)। [इनका विशेष वर्णन आत्मनेपद और परस्मैपद के प्रकरण में देखो]

शब्दों ही की भाँति लकारों की विभक्तियों के भी तीन पुरुष औ तीन वचन हैं। जैसे—प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष तथा एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में [वाच्य के लिये अलग प्रकरण देखो] अस्मद् शब्द के प्रयोग में उत्तमपुरुष (First person) युष्मत् शब्द के प्रयोग में मध्यमपुरुष (Second person) और इनसे भिन्न समस्त शब्दों के प्रयोग में अन्य वा प्रथमपुरुष होता है।

पा धातु (कर्तृवाच्य) पीना

वचन	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स पिबति	त्वं पिबसि	अहं पिबामि
द्विवचन	तौ पिबतः	युवां पिबथः	आवां पिबावः
बहुवचन	ते पिबन्ति	यूयं पिबथ	वयं पिबामः

दृश् धातु (कर्मवाच्य) देखना

एकवचन—मया स दृश्यते, तेन त्वं दृश्यसे, त्वया अहं दृश्ये
द्विवचन—मया तौ दृश्येते, तेन युवां दृश्येथे, त्वया आवां दृश्यावहे
बहुवचन—मया ते दृश्यन्ते, तेन यूयं दृश्यध्वे, त्वया वयं दृश्यामहे

२—कृदन्त क्रिया

प्रधानतः कृदन्तीय क्रिया निष्ठाप्रत्ययौ (क्त, क्तवत्) और कृत् प्रत्ययों (तव्य, अनीय, यत्) से बनती हैं। ये कभी कभी समापिका क्रिया की भाँति व्यवहृत होती हैं और कभी विशेषण की भाँति। जैसे स ग्रामं गतः—वह घर गया। गतं न शोचामि—जो बीत गया उसे नहीं सोचता। त्वया कर्म कर्तव्यम्—तुम्हें काम करना चाहिये। कर्तव्यं कर्म कुरु—जो तुम्हारा करने योग्य काम है उसे करो।

कृदन्तीय क्रियाओं में प्रधानतः क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्, तुमुन् प्रत्यय हैं जिनसे असमापिका क्रिया बनती है।

[कृदन्तीय प्रत्ययों का विशेष वर्णन कृदन्त प्रकरण में देखो।]

सकर्मक और अकर्मक

क्रिया दो प्रकार की होती है। एक सकर्मक (Transitive) और दूसरी अकर्मक (Intransitive) जिन क्रियाओं

के कर्म रहते हैं उन्हें सकर्मक और जिनके कर्म नहीं रहते उन्हें अकर्मक कहते हैं। जैसे, सकर्मक—अहं चन्द्रं पश्यामि—मैं चन्द्रमा देखता हूँ। अकर्मक—शिशुः रोदिति—लड़का रोता है।

टिप्पणी—जिस क्रिया के व्यापार और फल अलग अलग रहें वह सकर्मक और जिस क्रिया के व्यापार और फल एक में रहें वह अकर्मक है। जैसे अहं चन्द्रं पश्यामि, इस वाक्य में 'पश्यामि' क्रिया का व्यापार 'अहं' में है और देखने का फल देख पड़ना 'चन्द्र' में है। और शिशुः रोदिति इस वाक्य में रोने का काम और रोना फल दोनों ही लड़के में हैं।

संस्कृत में साधारणतः गमनार्थ, भोजनार्थ, दर्शनार्थ, पठनार्थ, पूजनार्थ, बन्धनार्थ, प्राप्त्यर्थ, मोचनार्थ, ज्ञानार्थ, चिन्तनार्थ आदि धातु सकर्मक होते हैं।

विद्यमानार्थ, लज्जार्थ, स्थित्यर्थ, जागरणार्थ, वृद्ध्यर्थ, क्षयार्थ, भयार्थ, जीवनार्थ, मरणार्थ, नर्तनार्थ, निद्रार्थ, रोदनार्थ, वासार्थ, स्पर्द्धार्थ, कम्पनार्थ, मोदनार्थ, हर्षार्थ, हसनार्थ, शयनार्थ, क्रीड़ार्थ, रुच्यर्थ और दीप्त्यर्थ आदि धातु अकर्मक हैं।

द्विकर्मक धातु

कितने ऐसे धातु हैं जो द्विकर्मक (The roots of double objects) हैं। वे इस प्रकार हैं—

> दुह्याच्पच्दण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशास्जिमन्थ्मुषाम्।
> कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यात् नीहृकृष्वहाम्॥

दुह् (दुहना, to milk), याच् (माँगना, to beg), पच् (पकाना, to cook), दण्ड् (दण्ड देना, to punish), रुध् (रोकना, to obstruct or to confine), प्रच्छ् (पूछना, to ask), चि (चुनना, to puck), ब्रू (कहना, to tell),

शास्(शिक्षा देना, to instruct), जि (जीतना, to conquer), मन्थ (मथना, to churn), मुष् (चुराना, to steal), नी (ले जाना, to carry), हृ (ले जाना, to take away), कृष् (खींचना, to draw) और वह (ले जाना, to lead).

टिप्पणी—ऊपर जितने धातु लिखे गये हैं उन धातुओं के अर्थबोध करानेवाले भी जितने धातु हैं वे भी द्विकर्मक होते हैं। जैसे, ब्रू—कथ्, वद्, वच्, भाष्, गद्, अभि+धा आदि।

द्विकर्मक धातु के जो भिन्न भिन्न दो कर्म होते हैं उनमें से एक का नाम मुख्य कर्म (Direct object) और दूसरे का नाम गौण कर्म (Indirect object) है। मुख्य और गौण कर्म पहचानने का सहज उपाय यह है कि दोनों कर्मों में जो कर्म अन्य कारक भी हो सकते हैं पर वक्ता की इच्छानुसार वैसा न होकर कर्म हो गये हैं वे ही गौण वा अप्रधान (Secondary) हैं और जो कर्म के अतिरिक्त दूसरा कारक हो ही नहीं सकते वे ही मुख्य कर्म (Primary) हैं। जैसे, छात्रः वृक्षं फलानि चिनोति—विद्यार्थी पेड़ से फल बटोरता है। इसमें 'वृक्षं' कर्म 'वृक्षात्' अपादान भी हो सकता है, इससे यह गौण कर्म हुआ और फलानि कर्म कारक के अतिरिक्त दूसरा नहीं हो सकता, इससे यह मुख्य कर्म हुआ।

दुह्—गोपो गां दोग्धि पयः—अहीर गौ से दूध दुहता है। याच्—दीनः दातारं याचते वस्त्रम्—गरीब दाता से वस्त्र माँगता है। पच्—पाचकः तण्डुलानोदनं पचति—रसोइया चावल से भात पकाता है। दण्ड्—राजा वैश्यान् शतं दण्डयति—राजा बनियों से सौ रुपये दण्ड लेता है। रुध्—गोपो गोष्ठमवरुणद्धि गाम्—अहीर गोष्ठ (खरका, बथान) में गायों को घेर रखता है। प्रच्छ्—पथिकः पान्थं पन्थानं पृच्छति—बटोही राही से राह

पूछता है। चि—बालकः वृक्षमवचिनोति पुष्पाणि—लड़का पेड़ से फूल चुनता है। ब्रू—गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते—गुरु चेले के लिये धर्म कहता है। शास्—जनकः शिशून् धर्मं शास्ति—पिता पुत्रों को धर्म सिखलाता है। जि—देवदत्तः यज्ञदत्तं शतं जयति—देवदत्त यज्ञदत्त से सौ रुपये जीतता है। मन्थ्—देवासुराः क्षीरनिधिं सुधां ममन्थुः—देवता और असुरों ने समुद्र से अमृत को मथा। मुष्—तस्करः गृहस्थं शतं मुष्णाति—चोर गृहस्थ के सौ रुपये चुरा लेता है। नी, हृ, कृष् और वह्—स ग्राममजां नयति, हरति, कर्षति, वहति वा—वह बकरी को गाँव पर ले जाता है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

क्या आप काशी ले चलेंगे ? पृथु राजा ने प्रजाओं का कष्ट दूर करने को पृथ्वी से शस्य को मथा। सञ्जय धृतराष्ट्र से कुरुक्षेत्र-युद्ध का सब वृत्तान्त कहते थे। उसने मुझसे दस रुपये माँगे। मैंने उनसे चार प्रश्न पूछे। हे ब्राह्मण देवता, आप बकरा समझकर कुत्ते को कंधे पर ले जाते हैं। सेनापति ने युद्ध से भागे हुए सैनिकों को छावनी में घेर रक्खा। गुरु बालकों को नीति का उपदेश देते हैं। हाकिम ने अपराधी को सौ रुपये दण्ड दिया। डाकुओं ने बटोही का सब धन लूट लिया।

२. नीचे लिखे वाक्यों में (—) रेखास्थान को पूर्ण करो—

एते बलीवर्दा एतान् भारान्—वक्ष्यन्ति। तस्कराः—धनं मुमुषुः। शिष्याः—प्रश्नान् पप्रच्छुः। गोपी—नवनीतं मथ्नाति। स—दुग्धं दोग्धि। अहं—पत्राणि चेष्यामि। शकुनिः—राज्यं

जिगाय। स त्वां—रोत्स्यति। पाचकः—मिष्टान्नं पचतु। देवाः—रत्नानि दुदुहुः।

लकारार्थनिर्णय (Use of tenses and moods)

लट् (Present tense indicative)

वर्तमाने लट्।

वर्तमानकाल Present indefinite में लट् लकार होता है। जैसे, स गच्छति—वह जाता है।

तात्कालिक वर्तमान (Present Progressive tense) में भी लट् लकार होता है। जैसे, बालकः हसति—बालक हँस रहा है। कभी कभी मूल धातु में शतृ प्रत्यय करके 'अस्' धातु के रूप लगा करके अनुवाद करते हैं। जैसे, स शास्त्रं पठन्नस्ति—वह शास्त्र पढ़ रहा है।

वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा—वर्तमानकाल के समीपवर्ती भूतकाल के अर्थ में और वर्तमानकाल के निकटवर्ती भविष्यत्काल के अर्थ में विकल्प से लट् लकार होता है। भूतसामीप्य में—जैसे, कदा आगतोऽसि ? अयमागच्छामि—कब आये हो ? मैं अभी आया हूँ। भविष्यत्सामीप्य में—कदा गमिष्यसि, एष गच्छामि—कब जाओगे ? अभी जाऊँगा।

यावत्पुरानिपातयोर्लट्—यावत् और पुरा अव्ययों के योग में भविष्यत्काल में लट् होता है। जैसे, यावत्—अवलम्बस्व चित्रफलकं यावदागच्छामि—मैं आऊँगा जब तक चित्र रक्खे रहो। पुरा—आलोके ते निपतति पुरा सा बलिव्याकुला वा—अथवा वह पूजा-पाठ में लगी हुई तुम्हें दिखलायी पड़ेगी।

विभाषा कदाकर्ह्योः—कदा और कर्हि अव्ययों के योग में

भविष्यत्काल में विकल्प से लट् होता है। जैसे, कदा कहिं वा गमिष्यामि गच्छामि वा—न जाने—कब जाऊँगा, मैं नहीं जानता।

लट् स्मे—स्म शब्द के योग में भूतकाल में लट् लकार होता है। जैसे, कस्मिंश्चिदधिष्ठाने विक्रमो नाम नृपतिः प्रतिवसति स्म—किसी स्थान में विक्रम नामक राजा रहते थे।

ननौ पृष्टप्रतिवचने—प्रश्न के उत्तर देने में 'ननु' शब्द का योग होने से भूतकाल में लट् होता है। जैसे, रामः किमागच्छत्? ननु आगच्छति—क्या राम आ गया, हाँ वह आ गया।

अन्यान्य स्थलों में भी वर्तमानकाल होता है। जैसे—

(क) उपन्यास और इतिहास (Historical Present) में भूतकाल का अर्थ बोध होने से लट् लकार होता है। जैसे, अस्ति दाक्षिणात्ये महिलारोप्य नाम नगरम्—दक्षिण देश में महिलारोप्य नामक एक नगर था। काको ब्रूते, किमर्थमागतोऽसि—कौवे ने कहा, किसलिये आये हो ?

(ख) नित्य वा अभ्यस्त क्रिया (Habitual action) बोध होने से लट् होता। जैसे, मृगः प्रत्यहं तत्र गत्वा शस्यं खादति—मृग हरेक दिन जाकर वहाँ खेत चरता था।

(ग) प्रश्न करने में कभी कभी भविष्यकाल में लट् लकार होता है। जैसे, किं करोमि क गच्छामि—क्या करूँगा कहाँ जाऊँगा।

(घ) नियम (conditional) का बोध होने से भविष्यकाल में लट् लकार होता है। जैसे, योऽन्नं ददाति (दाता, दास्यति वा) स स्वर्गं याति (याता, यास्यति वा)—जो अन्न देगा वह स्वर्ग में जायगा।

(ङ) कथं शब्द के योग में सब कालों में विकल्प से लट्

और विधिलिङ् होता है। जैसे, कथमेवं वदसि वदेः वा—तुम क्यों ऐसा कहते हो? (कहा, कहोगे)?

(च) निन्दा बोध होने से 'अपि' और 'जातु' अव्ययों के योग में सब कालों में लट् होता है। जैसे, अपि निंदसि पितरौ—क्या तू मा-बाप की निंदा करता है, (की है, करोगे)?

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

वह रोज अपने मित्र के साथ स्कूल जाता है। बंदर कच्चे फल खाते हैं। झूठे को सब घृणा करते हैं। कौआ उसी डाल पर रोज सोता था। जो बड़ों की निंदा करेगा वह नरक में जायगा। तुम्हें मालूम नहीं कि मैंने कब दिया। क्यों ऐसा काम किया। गोदावरी के किनारे एक बड़ा पेड़ था। जब वह कोठरी में बैठेगा तब उससे बोलूँगा। आकाश में तारे चमकते हैं। वह एक पेड़ काट रहा है। वसन्त में फूल फूलते हैं। माता अपने बच्चों को प्यार करती है। वर्षा होती है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बता कर शुद्ध करो—

वृक्षात् फले पतति। पाटलिपुत्रे एको नृपो आसीत् स्म। यावदहं गमिष्यामि तावत् त्वमत्र तिष्ठ। छात्राः गुरोः पाठं शृणोति। दीनः राजानं धनं याचन्ते। किं तत्र गमिष्यसि? ननु गमिष्यामि। हिरण्यको भोजनं कृत्वा बिले सुष्वाप। आसीत् कल्याणकटके भैरवो नाम व्याधः।

लोट् (अनुज्ञा, Imperative Mood)

विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्। लोट् च— विधि (आदेश अनुज्ञा, command) निमन्त्रण (न्यौता, invitation) आमन्त्रण (अनुमति, permission) अधीष्ट (सत्कारपूर्वक व्यापार, honorary office of duty) संप्रश्न (पूछना, asking question) और प्रार्थना (prayer) इन अर्थों में विधिलिङ् और लोट् लकार होते हैं। जैसे, विधि—सदा सत्यं ब्रूयात् ब्रवीतु वा—सदा सच बोलो वा बोलना चाहिये। निमन्त्रण—इह भुंजीत भुंक्तां वा भवान्—आप भोजन करें। आमन्त्रण—इह आसीत् आस्तां वा—यहाँ बैठ सकते हैं। अधीष्ट—पुत्रमध्यापयेत् अध्यापयतु वा भवान्—आप यहाँ मेरे लड़कों को पढ़ा दिया करें। संप्रश्न—किं भो वेदमधीयीय उत तर्कम्—महाशय, क्या मैं वेद पढ़ूँ या तर्कशास्त्र? प्रार्थना—किं भोजनं लभेय लभै वा—क्या मुझे थोड़ा भोजन मिलेगा? अथवा कृपा करके मुझे थोड़ा भोजन दीजिये।

समर्थनाशिषोर्लोट्—समर्थ अर्थ बोध होने में और आशीर्वाद में लोट् होता है। जैसे समर्थ—अहं सिन्धुमपि शोषयाणि—मैं समुद्र भी सुखा डालूँगा। आशीर्वाद—ईश्वरस्त्वामवतु—ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें। पुत्रम् लभस्वात्मगुणानुरूपं—अपने तुल्य गुणवान् पुत्र प्राप्त करो।

(क) अधिकतर लोट् लकार में मध्यमपुरुष ही का प्रयोग होता है और कर्ता लुप्त ही रहता है। जैसे, त्यज दुर्जनसंसर्गं—दुर्जनों का संग छोड़ो। अनृतं मा वद—झूठ मत बोलो। कभी कभी सम्बोधन का प्रयोग भी होता है। जैसे, शृणुत रे पौराः

—अरे नगर के रहने वालो, सुनो। सखे, छिन्धि तावन्मम बन्धनम्—मित्र, मेरा बन्धन काटो।

(ख) कभी कभी आदेश आदि बोध होने से अन्यपुरुष का भी प्रयोग होता है। जैसे, स आगच्छतु—वह आवे। स पश्यतु—वह देखे। अंग्रेज़ी में ऐसे स्थानों पर let का प्रयोग होता है। संस्कृत अनुवाद करने के समय उसे एकदम छोड़ देना चाहिये। जैसे, Let him see—स पश्यतु, इत्यादि।

(ग) कभी कभी लोट् (Imperative Mood) का अर्थ तव्य, अनीय आदि प्रत्ययों से भी बोध होता है। जैसे, त्वया प्रातरेव गन्तव्यम्—तुम कल सवेरे ही जाना। नैतत्त्वया करणीयम्—यह तुम्हें न करना चाहिये।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

यहाँ आवो। वहाँ जावो। तुम्हारा बेटा बहुत दिनों तक जीवे। अपना महीना ले लो। अपना कपड़ा लावो। मेरे प्यारे पुत्रो, परस्पर मत लड़ो। दुर्जनों का साथ छोड़ो। धन, जन, यौवन का गर्व छोड़ो। पिता, मेरा अपराध क्षमा करें। दरिद्रों को धन दो। वहाँ जाकर बैठो। तुम मेरे घर कल भोजन करने आना। माता पिता की सेवा करो। तुमको नित्य पूजा करनी चाहिये। थोड़ी देर ठहर जावो। सच बोलने की चेष्टा करो। हे ईश्वर, हम लोगों को सदा पाप से बचाओ। मेरे सामने से हट जावो। मैं पाँच सेर खा जाऊँगा। कृपाकर आप यहाँ बैठें। मैं व्याकरण पढ़ूँ कि साहित्य।

लिट्, लङ्, लुङ्, भूतकाल, (Past Tense)

भूतकाल में लिट्, लङ् और लुङ् लकार होते हैं। पहले इन तीनों लकारों का प्रयोग इस प्रकार होता था।

परोक्षे लिट्—अनद्यतन परोक्ष भूत में अर्थात् वक्ता के असाक्षात् में २४ घंटा पहले जो हो गया है उसके बोध करने में लिट् लकार होता है। जैसे,कृष्णः कंसं जघान—कृष्ण ने कंस को मारा।

अनद्यतने लङ्—अनद्यतन भूत अर्थात् २४ घंटा पहले जो हो गया है उसके बोध होने से लङ् लकार होता है। जैसे, रामः गृहमगच्छत्—राम घर गया।

लुङ्—साधारण भूतकाल का बोध होने से लुङ् होता है। जैसे, अहमद्य गृहमगमम्—मैं आज घर गया।

टिप्पणी—आजकल इन तीनों लकारों के प्रयोग करने में कोई निश्चित नियम नहीं दिखलायी पड़ता। भूतकाल के बोध होने ही से लोग इनमें से झट किसी का प्रयोग कर बैठते हैं, पर ऐसा उचित नहीं है। इन नियमों पर ध्यान देना उचित है।

अत्यन्तापह्नवे चित्तविक्षेपे च लिट् वक्तव्यः—किसी विषय को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार (absolute denial) करने में और चित्तविक्षेप अर्थात् चित्त की अस्थिरता (unconsciousness) बोध होने से उत्तमपुरुष में लिट् होता है। जैसे, अस्वीकार में—कलिङ्गेष्ववात्सीः नाहं कलिङ्गान् जगाम—उड़ीसा में तुम रहते थे ? नहीं, मैं तो कभी उड़ीसा गया ही नहीं। चित्तविक्षेप में—सुप्तोऽहं किल विललाप—सोये सोये में बहुत अल्लबल्ल बक गया। बहु जगद पुरस्तात् तस्य मत्ता किलाहम्—उसके सामने पगली बनी हुई मैंने न जाने क्या क्या कह दिया।

टिप्पणी—यह खूब ध्यान रखना होगा कि उत्तम पुरुष में लिट् का कभी

प्रयोग नहीं होता। अहं ग्रामं जगाम—मैं घर गया, इस प्रकार का वाक्य लिखना एकदम अशुद्ध है।

माङि लुङ्—मा के योग में लुङ् और लोट् भी होता है। जैसे, लुङ्—मा भूदेवं क्षणमपि च ते विद्युता विप्रयोगः—इस प्रकार क्षण भर भी बिजली से तुम्हारा बिछोह न हो। लोट्—मा कुरु धनजनयौवनगर्वं—धन, जन और यौवन का गर्व मत करो।

स्मोत्तरे लङ् च—'स्म' सहित 'मा' के योग में लङ् और लुङ् दोनों होते हैं। जैसे, लङ्—त्वयि मा स्म शासति भवत् पराभवः—जब तक आप शासन करते रहे तब तक हार न हुई। लुङ्—भवान् मा स्म वधीत् न्यायं—आप न्याय की हत्या मत करें।

टिप्पणी—लङ्, लुङ् और लृङ् लकार में स्वरादि धातु के आदि में 'आ' का और व्यञ्जनादि धातु के आदि में 'अ' का आगम होता है। उपसर्ग के योग में भी 'आ' 'अ' उपसर्ग के बाद ही आता है, परन्तु मा का योग होने से लङ् और लुङ् लकार में धातु के आदि में अ, आ का आगम नहीं होता।

(क) हिन्दी के सामान्य (Past), आसन्न (Present perfect) और पूर्णभूत (Past perfect)के अनुवाद इन्हीं लकारों अथवा क्त, क्तवत् प्रत्ययों से होता है। जैसे, रामः गृहमगच्छत् (जगाम वा अगमत् वा गतः वा गतवान्) राम घर गया (गया है वा गया था)।

टिप्पणी—पूर्णभूत का अनुवाद अस् धातु में भूतकाल का प्रयोग करके और मुख्य धातु में क्त प्रत्यय करके भी करते हैं। जैसे, स ग्रामं गत आसीत्—वह घर गया था।

(ख) हिन्दी के अपूर्णभूत (Past progressive) का अनुवाद इन तीनों लकारों से अथवा अस् धातु का प्रयोग

करके होता है। जैसे, ते विद्यालयमगच्छन् वा गच्छन्ति स्म—वे पाठशाला जा रहे थे। अथवा मुख्य धातु में शतृ प्रत्यय करके और अस् धातु में भूतकाल का प्रयोग करके भी अनुवाद करते हैं। जैसे, ते पाठशालां गच्छन्तः आसन्—वे पाठशाला जा रहे थे।

(ग) संदिग्धभूत का अनुवाद मुख्य क्रिया में क्त प्रत्यय करके और अस् धातु के विधिलिङ् का प्रयोग करके करते हैं। जैसे, स तत्र गतो भवेत्—वह वहाँ गया होगा।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

तुम्हारे केश पक गये। वह मुझसे मिला। मैंने एक सिंह जंगल में देखा था। मैं चारो ओर से बाग घूम आया। लड़का चन्द्रमा को देख रहा था। मैं रामायण पढ़ गया। वह अभी आया है। उसने कहा कि मैं पानी पी गया। लड़के पत्थर फेंकते थे। मैंने उनका कोई पत्र नहीं पाया। मैंने उन्हें विपत्ति से बचाया था। मैंने तलवार से उसकी गरदन काट ली। किसने यह काम कर दिया! तुमने इस पुस्तक को पढ़ा है! नहीं, मैंने इसे नहीं पढ़ा। ईश्वर ने ही सारा संसार रचा। मैंने उसका केश पकड़ा। उसको किताब दे दी है।

२. कारण बताकर नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

अहमेतत् चकार। मा साहसमकार्षीः। व्याध बाणेन मृगान् अहनत्। अहमेकं भीषणं सिंहमापश्यत्। अहं तं भृत्यमाज्ञापयामास। वयं संगीतं शुश्रुमः। दुःखं मास्माभवत् तव। पिता दुष्टं पुत्रं अप्रहरत्। अस्मिन्नेव समये स अगच्छत्। मत्समक्षमेव स स्वयमेवोवाच।

लुट् और लृट् (Future tense)

भविष्यत्काल में लुट् और लृट् दोनों लकार होते हैं।

अनद्यतने लुट्—अनद्यतन भविष्य (आने वाली रात के आधे भाग के बाद) बोध होने से लुट् लकार होता है। जैसे, अहं श्वो गृहं गन्ता—मैं कल घर जाऊँगा या जाने वाला हूँ। इस लकार का बहुत कम प्रयोग होता है।

लृट् शेषे च—भविष्यकाल में लृट् लकार होता है। जैसे, यास्यत्यद्य शकुन्तला पतिगृहम्—आज शकुन्तला पति के घर जायगी।

टिप्पणी—सामान्य भविष्य बोध होने से दोनों लकार हो सकते हैं। जैसे, स गृहं गन्ता गमिष्यति वा—वह घर जायगा।

(क) बल का अभिप्राय (intention) और स्थिर निश्चय (determination) आदि बोध होने से लुट् लकार के साथ एव आदि निश्चयवाचक अव्ययों का प्रयोग होता है। जैसे, अहमेतत्करिष्याम्येव—मैं इसे करूंगा ही (I will do it)

(ख) कभी कभी विधिलिङ्, तव्य, अनीय आदि से भी भविष्यकाल का अनुवाद होता है। जैसे, त्वं तत्र गच्छेः—तुम वहाँ जाना (You shall go there.) तेनाहं नैव हन्तव्यः-वह मुझे कभी नहीं मारेगा (He shall not kill me.)

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

अभी मैं भोजन करूँगा। इस हफ्ते में घर जावोगे? श्याम गंगास्नान करेगा। इसे मेरी पेटी में रख दो। वह अन्धे को एक पैसा देगा। तुम अपनी किताब कब पढ़ोगे? मैं अपनी

शक्तिभर चेष्टा करूँगा। जो लड़का परिश्रम करके पढ़ेगा वह जरूर इनाम पावेगा। इन पुस्तकों को घर ले जावोगे? मेरे घर कब आओगे? सूर्य्य जल्द ही उगेगा। एक दिन मनुष्य जरूर मरेगा। गाय तुम्हें न मारेगी।

विधिलिङ् (Subjunctive Mood and Potential Mood)

विधि आदि अर्थ में धातु के उत्तर विधिलिङ् होता है।

विधि दो प्रकार का है—प्रवर्तना और निवर्तना। सत्कार्य में प्रवृत्ति को प्रवर्तना और असत्कार्य से निवृत्ति को निवर्तना कहते हैं। जैसे; प्रवर्तना—सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्—सच और प्रिय बोलना चाहिये। निवर्तना—न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्—अप्रिय सत्य न बोलना चाहिये।

विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्—(इस सूत्र के अर्थ और उदाहरण लोट लकार के प्रारम्भ में देखो)

इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ—इच्छार्थक धातुओं के योग में लिङ् और लोट् दोनों लकार होते हैं। जैसे इच्छामि अत्र भवान् भुञ्जीत भुँक्ताम् वा—मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ भोजन करें।

शक्ते लिङ्कृत्यौ (शक्ति लिङ् च)—सामर्थ्य (ability) बोध होने से विधिलिङ् अथवा तव्य, अनीय, ण्यत् आदि प्रत्ययों का व्यवहार होता है। जैसे, त्वं भारं वहेः वा त्वया भारो वोढव्यः—तुम बोझा ले जा सकते हो।

अर्हे कृत्यतृचश्च—योग्यता (fitness) बोध होने से भी धातु के आगे विधिलिङ्, तव्य, अनीय अथवा तृच् प्रत्यय होते हैं। जैसे, त्वं मम कन्यां उद्वहेः (वा त्वया मम कन्या उद्वोढव्या अथवा त्वं मम कन्यायां उद्वोढा) तुम मेरी कन्या ब्याहने योग्य हो।

सम्भावनायां लिङ्—सम्भावना (Possibility) बोध होने से धातु के आगे विधिलिङ् होता है। जैसे, स पुरस्कारं प्राप्नुयात्—वह पुरस्कार पावेगा। स ग्रामं गच्छेत्—वह घर जाय।

जातु यदोर्लिङ्। यदायद्योरुपसंख्यानम्—जातु, यत्, यदा और यदि के योग में लिङ् लकार होता है। जैसे, जातु यत् यदा यदि वा त्वादृशो हरिं निन्देत् न मर्षयामि—कभी, यदि तुम्हारे ऐसा भगवान् की निन्दा करेगा तो मैं न सहूँगा। लृङ भी होता है।

सम्भावनावचनेऽयद्योगे वा—सम्भावनावाचक शब्द के योग में लिङ् और लृट् होता है। पर यत् के योग में केवल लिङ् ही होता है। जैसे, सम्भावयामि भुञ्जीत, भोक्ष्यते वा भवान्—मैं खयाल करता हूँ कि आप खायँगे। अपि जीवेत् (जीविष्यति) स ब्राह्मणशिशुः—ब्राह्मण का लड़का क्या जी जायगा? सम्भावयामि यत् भुञ्जीथाः त्वम्—मैं सम्भावना करता हूँ कि तुम खावोगे।

हेतुहेतुमतोर्लिङ् वा—दो क्रियाओं के कार्य कारण बोध होने से दोनों क्रियाओं में लिङ् होता है। लृङ् भी होता है। जैसे, कृष्णं नमेत् नंस्यति चेत् सुखं यायात् यास्यति वा—कृष्ण को नमस्कार करोगे तो सुख होगा। (If you bow down to Krishna, you will attain happiness.)

(क) हेतुहेतुमद्भूत का अनुवाद विधिलिङ् वा लृङ् लकार से होता है, जैसे कि ऊपर के उदाहरण में है।

(ख) संदिग्धभूत का अनुवाद मुख्य धातु में क्त प्रत्यय करके और भू धातु का विधिलिङ् जोड़ करके करते हैं। जैसे, स तत्र गतो भवेत्—वह वहाँ गया होगा।

(ग) शिष्टाचार दिखलाने में कार्य-कारण सम्बन्धी (Conditional) वाक्य के दूसरे वाक्य में लोट् भी होता है। जैसे, नचेदन्यकार्यातिपातः (भवेत्) प्रतिगृह्यतामतिथि-सत्कारः—यदि और कामों में बाधा न पड़े तो अतिथि सत्कार स्वीकार कीजिये।

(घ) अंग्रेजी May, might, can, could, must, would, should और ought जिनसे Potential mood की क्रियायें बनती हैं उनका अनुवाद प्रायः विधिलिङ् से होता है। क्रमशः ये उदाहरण हैं। May he be happy (इच्छामि) स सुखी भवेत्—वह सुखी हो। He may come स (हि नाम) आगच्छेत्—वह शायद आवे। It might be so—एवं स्यात् अथवा एवं भवितव्यं—ऐसा हो। I can go there—अहं तत्र गन्तुं शक्नोमि or पारयामि—मैं वहाँ जा सकता हूँ। (मुख्य धातु में तुम् प्रत्यय और समर्थार्थक धातु का प्रयोग करके) He could not go—स गन्तुं न शशाक—वह जा न सका। We must go—अस्माभिरवश्यमेव गन्तव्यम् अथवा वयं निश्चयं गमिष्यामः वा वयं नूनमेव गच्छेम—हम लोग जरूर जायँ, जायँगे या हमें जरूर जाना चाहिये। He would or should go there—स तत्र गच्छेत् वा तेन तत्र गन्तव्यम्—वह वहाँ जाय। We ought to obey it—अस्माभिरिदमवश्यं कर्तव्यम्—हमें यह करना उचित है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

दूसरे के लिये धन और जीवन छोड़ देना चाहिये। राजा को प्रजापालन करना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि वह घर

जाय। आपत् के लिये धन बचावे। क्रोध छोड़ देना चाहिये। यदि पानी पड़ेगा तो मैं घर नहीं जाऊँगा। बुरी संगति छोड़ देना सबको चाहिये। बेटा मा बाप का कहना माने। वह चीठी पढ़ सकता है। हम लोग समय बरबाद न करें। तब तक मैं इसे पालूँगा जब तक उड़ने लायक न हो। दुःख के बिना सुख नहीं मिल सकता। अगर तुम घर न गये तो वह न बचेगा। मैं उठ नहीं सकता। दूसरों की चीज़ें न लें।

लृङ् (Conditional)

जब दो क्रियाओं की अनिष्पत्ति (अर्थात् यदि एक क्रिया संघटित होती तो दूसरी भी क्रिया होती, किन्तु एक क्रिया नहीं घटित हुई इसीसे दूसरी क्रिया भी नहीं हुई) बोध होने से दोनों ही क्रियाओं में लृङ् लकार होता है। जैसे, सुवृष्टिश्चेद-भविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत्—अगर अच्छी वर्षा होती तो सस्ती होती (अर्थात् अच्छी वर्षा नहीं हुई इसी से सस्ती नहीं हुई)। यहाँ विधिलिङ् के ऐसा कार्य कारण भाव नहीं है।

आशीर्लिङ् (Benedictive)

आशीर्वाद अर्थ में धातु के आगे लिङ् लकार होता है। जैसे, तव पुत्रः चिरं जीव्यात्—तुम्हारा बेटा चिरंजीवी हो।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

यदि तुम्हारे पिता यहाँ रहते तो मुझे बहुत धन देते। राजा चिरंजीवी हों। यदि यह चित्र उसे मैं देता तो वह बहुत खुश होता। परीक्षा में सफल हो। अगर वे मेरे घर आते तो

मैं उनके घर जाता। तुम्हारी इच्छायें पूर्ण हों। तू बेटी, वीर की माता हो। न्यौता देते तो जरूर आता। मेरे सम्राट् को ईश्वर चिरंजीव रक्खें।

क्रियार्थक संज्ञा (Infinitive mood)

एक प्रकार की क्रिया होती है जिसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं। जैसे, पठनं छात्राणां धर्मः—पढ़ना विद्यार्थियों का धर्म है। (Learning is the duty of students.)

जब क्रिया के साथ ऐसी संज्ञायें लगती हैं तब उनका अनुवाद 'तुम्' प्रत्यय लगाकर होता है। अहं तं द्रष्टुमिच्छामि—मैं उन्हें देखना चाहता हूँ (I want to see him.)। स स्नातुं याति—वह स्नान करने या नहाने जाता है (He goes to bathe.)।

पूर्वकालिक क्रिया वा कालबोधक कृदन्त (Participles)

कालबोधक कृदन्त कई प्रकार के हैं—

(क) एक प्रकार का कालबोधक कृदन्त वह है जो 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनता है जिसे पूर्वकालिक क्रिया (Indeclinable participle) कहते हैं। जैसे, श्यामः समुपसृत्य सविनयमवादीत्—श्याम ने पास जाकर आदर के साथ कहा (Shyam drawing near modestly said.) तत्र गत्वा तमहमपश्यम्—वहाँ जा कर मैंने उसे देखा (After going there I saw him.)। स तत् कर्म सम्पाद्य प्रतस्थे—वह वह काम करके चला गया (Having finished the work, he went away.)

टिप्पणी—जब केवल धातु रहता है तब 'क्त्वा' प्रत्यय होता है और

धातु के साथ कोई उपसर्ग रहता है तब 'ल्यप्' होता है। दोनों के अर्थ और व्यवहार एक ही प्रकार के हैं। ये अव्यय हैं।

(ख) एक प्रकार का कालबोधक कृदन्त वह है जो वर्तमानकाल में शतृ और शानच् प्रत्यय करने से बनता है और क्रिया तथा विशेषण दोनों का काम देता है। यह वर्तमान कालबोधक कृदन्त (Present Participle) कहलाता है। जैसे, स परिभ्रमन् पठति—वह टहलता हुआ पढ़ता है (He reads walking.) स हसन् उक्तवान्—वह हँसता हुआ बोला (He smiling said.) अहं तमायान्तमपश्यम्—मैंने उसे आते देखा (I saw him coming.) स शयानः पठति —वह सोये सोये पढ़ता है (He reads lying down.)

टिप्पणी—परस्मैपदी धातुओं से शतृ और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् प्रत्यय होता है।

(ग) एक प्रकार का कालबोधक कृदन्त वह है जो भूतकाल में 'क्त' और 'क्तवतु' प्रत्यय करने से बनता है जो पूर्ण क्रिया और विशेषण दोनों का काम देता है। यह भूतकाल बोधक (Past Participle) कहलाता है। जैसे, पूर्ण क्रिया—अहं चन्द्रं दृष्टवान् अथवा मया चन्द्रः दृष्टः—मैंने चन्द्रमा को देखा वा मुझसे चन्द्रमा देखा गया (I saw the moon or the moon was seen by me.) विशेषण—पठितं पुस्तकं मा पठ—पढ़ी हुई पुस्तक मत पढ़ो (Do not read the book which you have read.)

(घ) एक प्रकार का कालबोधक कृदन्त वह है जो भविष्यकाल में स्यत् और स्यमान प्रत्यय करने से बनता है। यह भी विशेषण और क्रिया दोनों का काम देता है। यह भविष्यकालबोधक कृदन्त (Future Participle) कहलाता है। जैसे,

वनं गमिष्यन् रामो मातरं प्रणनाम—वन जानेवाले राम ने माता को प्रणाम किया (Ram, who would go to the forest, saluted his mother.)

टिप्पणी—परस्मैपदी धातुओं से स्यत् और आत्मनेपदी धातुओं से स्यमान प्रत्यय होते हैं।

वक्तव्य—इन सबों का विशेष वर्णन कृदन्त के प्रकरण में देखो।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

वह खाकर स्कूल जायगा। वह पुस्तक पढ़ते पढ़ते बैठ गया। सो करके मत पढ़ो। देखी हुई चीज को अब क्या देखोगे? वह रोते रोते लौट गया। मोहन खूब भोरे उठकर पढ़ता है। डर कर भागा। दौड़ता हुआ आकर मुझसे बोला। जाते हुए मैंने यह कहा। टहलना स्वास्थ्यकर है। खेलना अच्छा नहीं है। पढ़ना अच्छा काम है। बीती बात को बिसारिये। काम करनेवालों को बुलाओ। रोकर दुखी मत हो।

णिजन्त धातु (Causative verbs) प्रेरणार्थक क्रिया—

जब कोई किसी से कोई कार्य करने को कहता है तब कहनेवाला प्रयोजक और जिससे काम करने को कहा जाता है वह प्रयोज्य कहलाता है। इसी अवस्था में जो प्रयोजक की क्रिया होती है वह णिजन्त कहलाती है। जैसे, रामः ओदनं पचति, श्यामः रामेण ओदनं पाचयति—राम भात पकाता है, श्याम राम से भात पकवाता है। इसमें अणिजन्त (Premitive)

अवस्था में 'पकाना' क्रिया का कर्ता 'राम' था और णिजन्त (causative) अवस्था में 'पकवाना' क्रिया का कर्ता 'श्याम' है। इसलिये णिजन्त में 'श्याम' को 'प्रयोजक कर्ता' 'राम' को 'प्रयोज्य कर्ता' और 'पाचि' को णिजन्त धातु कहते हैं।

धातुओं के आगे णिच् प्रत्यय करने से णिजन्त धातु बनते हैं। णिच् प्रत्यय करने से अकर्मक धातु सकर्मक हो जाते हैं। जैसे, शिशुः शेते, माता शिशुं शाययति—लड़का सोता है, माता लड़के को सुलाती है। इसमें 'शेते' क्रिया अकर्मक है पर णिजन्त में सकर्मक हो गया है। णिजन्त धातु उभयपदी होते हैं।

क्रिया की अणिजन्त अवस्था का जो कर्म्म णिजन्त अवस्था में प्रयोज्य कर्ता होता है उसमें विशेषतः तृतीया ही विभक्ति होती है। जैसे, भूपालः गोपालं त्यजति, रामपालः भूपालेन गोपालं त्याजयति—भूपाल गोपाल को छोड़ता है, रामपाल भूपाल से गोपाल को छोड़वाता है।

किन्तु निम्नलिखित धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता में तृतीया न होकर द्वितीया विभक्ति होती है—

गमनाहारबोधार्थशब्दार्थाकर्मधातुपु।
अणिजन्तेपु यः कर्ता स्याण्णिजन्तेपु कर्म तत्॥

गमनार्थ (जाना आदि अर्थ के बोधक), आहारार्थक (भोजनार्थक), बोधार्थ (समझना आदि अर्थ के बोधक), शब्दार्थ (शब्दकर्मक) और अकर्मक धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता अर्थात् अणिजन्त अवस्था के कर्ताकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे क्रमशः—

अणिजन्त (Premitive)

गमनार्थ—रामः ग्रामं गच्छति—राम घर जाता है।
आहारार्थ—शिशुरन्नं भुंक्ते—लड़का अन्न खाता है।
बोधार्थ—शिष्यो धर्मं बुध्यते—चेला धर्म समझता है।
शब्दार्थ—वटुः वेदमधीते—विद्यार्थी वेद पढ़ता है।
अकर्मक—शिशुः शेते—लड़का सोता है।

णिजन्त (Causative)

श्यामो रामं ग्रामं गमयति—श्याम राम को गाँव पर भेज रहा है।
माता शिशुमन्नं भोजयति—माता बच्चे को अन्न खिलाती है।
गुरुः शिष्यं धर्मं बोधयति–गुरु चेले को धर्म समझा रहा है।
गुरुः वटुं वेदमध्यापयति–गुरु विद्यार्थी को वेद पढ़ाता है।
माता शिशुं शाययति—माता पुत्र को सुलाती है।

विशेष—गमनार्थ में—प्रवेशन (बैठना) आरोहण (चढ़ना) तरण (तैरना) मोचन (छोड़ना) प्रापण (पहुँचाना) प्राप्ति (मिलाना) आदि भी लिये जाते हैं। इसीसे 'प्रावेशयन्मन्दिरमध्यमेनम्'—मन्दिर में उन्हें पैठाया। 'ननु मां प्रापय पत्युरन्तिकम्'—मुझे पति के पास पहुँचा दो, आदि पद सिद्ध होते हैं। आहारार्थ में—अशन, भोजन, अभ्यवहार, प्रत्यवसान (खाना) और पानार्थ आदि का भी ग्रहण होता है। इसीसे 'स मां जलं पाययति'—वह मुझे जल पिलाता है, इत्यादि प्रयोग सिद्ध होते हैं। बोधार्थ में—ग्रहणार्थ (लेना) दर्शनार्थ (देखना) श्रवणार्थ (सुनना) आदि का भी ग्रहण है। इसीसे गायकः त्वां गीतं श्रावयति—गवैया तुझे गीत सुनाता है, इत्यादि प्रयोग होते हैं। ग्रहणार्थ में द्वितीया और तृतीया दोनों के प्रयोग देखने में

आते हैं। जैसे, 'तस्याः दारिकायाः यथार्हेण कर्मणा मां पाणिम् अग्राहयेताम्' (दशकुमार)—(उनने) उस कन्या का पाणि विधि के साथ मुझसे ग्रहण कराया। 'विदितार्थस्तु पार्थिवः त्वया दुहितुः पाणिं ग्राहयिष्यति'—वृत्तान्त जानकर राजा अपनी कन्या का पाणि तुमसे ग्रहण करावेगा। शब्दार्थ में—अध्ययन, पठन, वाचन और श्रवण आदि भी गिने जाते हैं। इसीसे 'पण्डितः त्वां शास्त्रं श्रावयति'—पण्डित तुमको शास्त्र सुनाते हैं, आदि सिद्ध होते हैं।

नीवह्योर्न—नी और वह धातु के गमनार्थ होने पर भी प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया होती है। जैसे, भृत्यो भारं नयति वहति वा—नौकर बोझा ले जाता है; भृत्येन भारं नाययति वाहयति वा—मालिक नौकर से बोझा लिवा ले जाता है।

नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः—वह् धातु का यदि सारथि कर्ता हो तो तृतीया न होकर द्वितीया होती है। जैसे, अश्वा रथं वहन्ति—घोड़े रथ खींचते हैं, सारथिः अश्वान् रथं वाहयति—सारथि घोड़ों से रथ खिचवाता है।

आदिखाद्योर्न—अद् और खाद् के (आहारार्थक होने पर भी) प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया होती है। जैसे, शिशुः मिष्टान्नं खादति अत्ति वा—बच्चा मिठाई खाता है; माता शिशुना मिष्टान्नं खादयति आदयति वा—माता बच्चे को मिठाई खिलाती है।

भक्षेरहिंसार्थस्य न—भक्ष् धातु से जब हिंसा बोध नहीं होता तब उसके प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया होती है और हिंसा बोध होने से द्वितीया ही होती है। जैसे, अहिंसा में—पुत्रः अन्नं भक्षयति—बेटा अन्न खा रहा है; माता पुत्रेण

अन्नं भक्षयति—माता बेटे को अन्न खिला रही है। हिंसा में—मार्जारः मूषिकं भक्षयति—विड़ाल चूहा खाता है; स मार्जारं मूषिकं भक्षयति—वह विड़ाल को चूहा खिलाता है।

जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम्— जल्प्, भाष्, वि-लप्, आ-लप् आदि धातु शब्दकर्मक न होने पर भी इनके प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, पुत्रः धर्मं जल्पति, भाषते आलपति वा—पुत्र धर्म कहता है; पिता पुत्रं धर्मं जल्पयति, भाषयति, आलापयति वा—पिता पुत्र से धर्म कहवाता है।

स्मरतिजिघ्रतीत्यादीनां न— स्मृ (स्मरण करना) घ्रा (सूँघना) आदि धातुओं के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया विभक्ति नहीं होती है। जैसे, देवदत्तः मातरं स्मरति, सौरभं जिघ्रति—देवदत्त माता को स्मरण करता है, सुगन्धि सूँघता है; यज्ञदत्तः देवदत्तेन मातरं स्मारयति, सौरभं घ्रापयति वा—यज्ञदत्त देवदत्त को माता का स्मरण कराता है, सुगन्ध सुँघाता है।

दृशेश्च— णिजन्त धातु के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, भक्ताः हरिं पश्यन्ति—भक्त हरि को देखते हैं; गुरुः भक्तान् हरिं दर्शयति—गुरु भक्तों को भगवान् को दिखाते हैं।

हृक्रोरन्यतरस्याम्— णिजन्त में हृ और कृ धातु के प्रयोज्यकर्ता में विकल्प से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे, भृत्यः कटं करोति हरति वा—नौकर चटाई बनाता है वा ले जाता है। प्रभुः भृत्यं भृत्येन वा कटं कारयति, हारयति वा—मालिक नौकर से चटाई बनवाता है या लिवा जाता है।

अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वा— अभिपूर्वक वादि धातु (चुरादि) और दृश् धातु का जब णिजन्त में आत्मनेपद में प्रयोग हो तो प्रयोज्य कर्ता में विकल्प से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे,

श्यामः रामेण रामं वा गुरुम् अभिवादय—श्याम राम से गुरु को प्रणाम कराता है। माता शिशुना शिशुं वा चन्द्रं दर्शयते—माता बच्चे को चन्द्रमा दिखाती है।

नीचे कुछ धातुओं के णिजन्त में लट् लकार के रूप लिखे जाते हैं। णिजन्त धातु उभयपदी होते हैं—

अस् (होना) भावयति, अस् (फेंकना) आसयति, इ (जाना) गमयति, अधि + इ (पढ़ना) अध्यापयति, प्रति + इ (समझना, जानना) प्रत्याययति, ऋ (जाना) अर्पयति, कृ (करना) कारयति, क्री (खरीदना) क्रापयति, ख्या (कहना) ख्यापयति, गम् (जाना) गमयति, गै (गाना) गापयति, ग्रह (लेना) ग्राहयति, घ्रा (सूँघना) घ्रापयति, चि (चुनना) चापयति, जन् (पैदा होना) जनयति, जागृ (जागना) जागरयति, जि (जीतना) जापयति, ज्ञा (जानना) ज्ञपयति, ज्ञापयति, दा (देना) दापयति, दृश् (देखना) दर्शयति, पच् (पकाना) पाचयति, पा (पीना) पाययति, पा (पालन करना) पालयति, पू (पवित्र करना) पावयति, प्री (प्रसन्न करना) प्रीणयति, प्राययति, प्लु (डूबना) प्लावयति, बुध् (जानना) बोधयति, ब्रू (बोलना) वाचयति, भी (डरना) भाययति, भापयति, भीषयते, भुज् (खाना) भोजयति, भू (होना) भावयति, मुह् (मुग्ध वा मूर्छित होना) मोहयति, या (जाना) यापयति, युज् (जोड़ना) योजयति, रम् (खेलना) रमयति, रुह् (जनमना) रोपयति, रोहयति, विश् (पैठना) वेशयति, शम् (शान्ति करना) शमयति, श्रु (सुनना) श्रावयति, स्था (ठहरना) स्थापयति, स्ना (नहाना) स्नापयति, स्नपयति, स्मृ (स्मरण करना) स्मारयति, हन् (मारना) घात-

यति, हा (छोड़ना) हापयति, ह्व (ले जाना) ह्वारयति, ह्री (लजाना) ह्रेपयति, ह्वे (बुलाना) ह्वापयति।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

आचार्य विद्यार्थियों को वेद पढ़ाते हैं। प्यासी हुई गायों को पानी पिलावो। नौकर ने दिया बुझा दिया। मेरे भाई ने मुझसे किताबें मँगवायीं। उसने मुझसे शिव जी को प्रणाम कराया। माधो ने साधो को बाजार भेजा। क्यों तुम मेरे मन को क्लेशित करते हो? माँ ने पुत्र को चित्र दिखलाया। चोर राहियों को डराता है। मैंने उसके पास संवाद भेजवा दिया। उसने लड़कों को मिठाई खिलायी। पुत्र ने पिता को जगाया।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण दिखा कर शुद्ध करो—

प्रभुः सेवकं भारं नयति। गुरुः छात्रैः वेदं पाठयति। देवदत्तः मैत्रमन्नं पाचयति। महेशः रमेशेन ग्रामं गमयति। स मया गीतं श्रावयिष्यति। नृपतयः ब्राह्मणान् मिष्टान्नं भक्षयाञ्चक्रुः। सारथिः अश्वैः रथं वाहयिष्यति। अश्वपतयः घोटकैः जलं पाययन्ति। राजा चण्डालं विद्रोहिणः घातयामास। रामः हनुमता विपुलान् राक्षसान् हानयति। जनकः पुत्रं मोदकं खादयामास। विदूषकः सर्वैः हासयति।

सन्नन्त धातु (Desiderative Verbs) इच्छार्थक क्रिया

इच्छा अर्थ में धातु के आगे सन् प्रत्यय होता है। सन् प्रत्ययान्त धातु को सन्नन्त कहते हैं। णिजन्त के समान ही सन्नन्त भी एक स्वतन्त्र धातु हो जाता है। जैसे, निन्दितु-

मिच्छति = निनिन्दिषति—निन्दा करने की इच्छा करता है। शयितुमिच्छति = शिशयिषते—सोने की इच्छा करता है।

सन्नन्त में परस्मैपदी धातु परस्मैपदी और आत्मनेपदी धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, पिबति—पिपासति, लभते-लिप्सते।

कितने धातुओं से भिन्न भिन्न अर्थ में सन् प्रत्यय होता है। जैसे,

धातु	भिन्न अर्थ	रूप	अर्थ
गुप्	निन्दा	जुगुप्सते	दूसता है
तिज्	क्षमा	तितिक्षते	सहता है
मान्	विचार	मीमांसते	विचारता है
कित्	रोगोपशम	चिकित्सति	आराम करता है
शान्	तेज	शीशांसते	तेज करता है
वध्	चित्तविकार	बीभत्सते	घिनाता है

नीचे कुछ विशेष धातुओं के लट् में सन्नन्त रूप लिखे जाते हैं—

धातु	विग्रह	रूप	अर्थ
अद्	अत्तुमिच्छति	जिघत्सति	खाना चाहता है
आप्	आप्तुमिच्छति	ईप्सति	पाना चाहता है
अधि + इ	अध्येतुमिच्छति	अधिजिगांसते	पढ़ना चाहता है
कृ	कर्तुमिच्छति	चिकीर्षति	करना चाहता है

इसी प्रकार विग्रह और अर्थ अन्यान्य नीचे लिखे धातुओं के भी समझना चाहिये।

कॄ (फेंकना) चिकरिषति, क्रम् (चलना) चिक्रमिषति, ग्रह (पकड़ना) जिघृक्षति, चि (चुनना) चिचीषति, जि (जीतना) जिगीषति, तॄ (तैरना) तितीर्षति, तॄ (तैरना)

तितरिषति, तॄ (तैरना) तितरीषति, दह् (जलाना) दिधक्षति, दा (देना) दित्सति, दृश् (देखना) दिदृक्षते, धृ (धरना) धित्सति, धा (धरना) दिधीर्षति, नम् (प्रणाम करना) निनंसति, नी (ले जाना) निनीषति, नृत् (नाचना) निनर्तिषति, पत् (गिरना) पित्सति, पिपतिषति, पच् (पकाना) पिपक्षति, पू (पवित्र करना) पिपविषति, प्रच्छ् (पूछना) पिपृच्छिषति, वृध् (बढ़ना) विवर्द्धिषते, विवृत्सति, बुध् (जानना) बुभुत्सते, ब्रू or वच् (बोलना) विवक्षति, भिद् (काटना) बिभित्सति, भुज् (खाना) बुभुक्षति, भू (होना) बुभूषति, मा (नापना) मित्सति, मुच् (छोड़ना) मुमुक्षति, मुष् (चुराना) मुमुषिषति, मृ (मरना) मुमूर्षति, रम् (खेलना) रिरंसते, रुद् (रोना) रुरुदिषति, रुध् (रोकना) रुरुत्सति (ते), रुह् (चढ़ना) रुरुक्षति, लिख् (लिखना) लिलेखिषति, विद् (जानना) विविदिषति, वृत् (वर्तन) विवर्तिषते, शी (सोना) शिशयिषते, शुभ् (शोभना) सुशोभिषते, श्रि (सेवना) शिश्रीषति शिश्रयिषति वा, सिच् (सींचना) सिसिक्षति, सृज् (बनाना) सिसृक्षति, स्तु (स्तुति करना) तुष्टूषति (ते), स्था (ठहरना) तिष्ठासति, स्मृ (स्मरण करना) सुस्मूर्षते, स्वप् (सोना) सुषुप्सति, हन् (मारना) जिघांसति, हृ (चुराना) जिहीर्षति।

अभ्यास

१. नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

नर्तकी नाचना चाहती है। चोर चुराना चाहते हैं। मैं पानी पीना चाहता हूँ। वह जानना चाहता है। वे नगर जीतना चाहते हैं। मोहन गङ्गा तैरना चाहता है। गङ्गा में

स्नान करना चाहता है। अपने शिशु का अपराध क्षमा करो (तिज्) उस रोगी की दवा करो (कित्)। क्या तुम गायों को छोड़ देना चाहते हो? मोहन यहाँ ठहरना चाहता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

पुत्रः पितरं निनमिषति। त्वं धनं लिप्ससि। अहं तव दोषान् तितिक्षामि। कः किचीर्षति। त्वं फलं बुभोजिषति। स फलमेतत् जिग्रहयिषति। पथिकाः शिशयिषन्ति। बालकाः रिरंसन्ति।

अतिशयार्थक क्रिया (Frequentative Verbs)

यङन्त धातु।

पौनःपुन्य (frequency) और अतिशय (intensity) अर्थ में उन धातुओं से, जिनमें एक स्वर है और आदि में व्यञ्जन है, यङ् प्रत्यय होता है। यङन्त धातु आत्मनेपदी होता है और लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में भ्वादि धातुओं के समान रूप होते हैं। जैसे, स पापठ्यते अर्थात् स पुनः पुनः पठति—वह बारंबार पढ़ता है। त्वं मांसं पापच्यसे—तू मास बार बार पकाता है।

यङन्त धातुओं के लट् में कुछ रूप लिखे जाते हैं—

अट् (चलना) अटाट्यसे, अश् (खाना) अशास्यते, अस् वा भू (होना) बोभूयते, कृ (करना) चेक्रीयते, कृष्—चरीकृष्यते, क्रम् (चलना) चंक्रम्यते, गम् (जाना) जंगम्यते, गै (गाना) जेगीयते, ग्रह्, (लेना) जरीगृहयते, घ्रा (सूँघना) जेघ्रीयते, चल् (चलना) चञ्चल्यते, जन् (जनना) जञ्जन्यते, ज्वल् (बलना) जाज्वल्यते, तप (दुःख सहना) तातप्यते, दश् (काटना) दंदश्यते,

दीप् (बलना) देदीप्यते, दृश् (देखना) दरीदृश्यते, नी (ले जाना) नेनीयते, नृत् (नाचना) नरीनृत्यते, पा (पीना) पेपीयते, प्रच्छ् (पूछना) परीपृच्छ्यते, भिद् (काटना) बेभिद्यते, मुह् (मुग्ध होना) मोमुह्यते, रुद् (रोना) रोरुद्यते, लिह् (चाटना) लेलिह्यते, लुप् (लोप होना) लोलुप्यते, वृत् (वर्तना) वरीवृत्यते, शी (सोना) शाशय्यते, शुच् (सोचना) शोशुच्यते, श्रु (सुनना) शोश्रूयते, सिच् (सींचना) सेसिच्यते, स्था (ठहरना) तेष्ठीयते, स्मृ (स्मरण करना) सास्मर्यते, स्वप् (सोना) सोषुप्यते, हन् (मारना) जेघ्नीयते, जघन्यते ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद करो—

वह बार बार आता है । बालिका दुहरा तिहरा कर गाती है । बालिका नाचती है और फिर नाचती है । बुड्ढा बेटे के लिये बार बार पछताता है । बच्चे चाँद को बार बार देखते हैं । तू क्यों बार बार पुकार रहा है ? वह अपना पाठ बार बार पढ़ता है । वह अपना काम फिर २ करती है ।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

नटी नरीनृत्यति । व्याधः हरिणं हाहन्यते । बालिका कथं रुरुद्यते । वयं फलानि जारीगृह्यते । त्वं जलं पापीयते । तारका भृशं दीदीप्यते । कृषकः क्षेत्रं कहीकृष्यते । राजा वनं अटाटयन् कुटीरं ददर्श ।

नामधातु (Nominal Verbs)

शब्दों के आगे अर्थ-विशेष में कितने ऐसे प्रत्यय होते हैं जिनसे वे शब्द धातु हो जाते हैं । जैसे, अपण्डितो पण्डितो

भवति इति पण्डितायते—जो पण्डित नहीं है वह पण्डित होता है इस अर्थ में 'पण्डितायते' यह प्रयोग हुआ। 'स पुत्रायते'-- वह पुत्र के ऐसा आचरण करता है, इत्यादि।

काम्य, क्यच् और णिच् प्रत्ययान्त नामधातु परस्मैपदी होते हैं और क्यङ् प्रत्ययान्त नामधातु आत्मनेपदी होते हैं। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में उसके रूप भ्वादि गण के समान होते हैं।

अपने सम्बन्ध में इच्छा बोध होने से काम्य प्रत्यय होता है। जैसे, आत्मनः पुत्रमिच्छति = पुत्रकाम्यति—पुत्र की कामना करता है। आत्मनः धनमिच्छति = धनकाम्यति—धन होना चाहता है।

निज इच्छा बोध होने से क्यच् भी होता है। जैसे, आत्मनः यशः इच्छति = यशस्यति—अपना यश चाहता है।

आचरण अर्थ में उपमान कर्म के उत्तर क्यच् प्रत्यय होता है। जैसे, पुत्रमिवाचरति पुत्रीयति छात्रम्—विद्यार्थी के साथ पुत्र का सा व्यवहार करता है।

टिप्पणी—क्यच् परे होने से इ, उ, ऋ के स्थान में क्रमशः ई, ऊ, री होता है। जैसे, कविमिवाचरति कवीयति सखायम्—मित्र के साथ कवि का सा व्यवहार करता है। विष्णुमिवाचरति विष्णुयति द्विजम्—ब्राह्मण से भगवान् के समान आचरण करता है। मातरमिवाचरति मात्रीयति परस्त्रीम्।

अन्यान्य कई स्थानों में भी क्यच् प्रत्यय होता है। जैसे, नमः करोति = नमस्यति—नमस्कार करता है। उदकं पिपासति = उदन्यति—जल पीना चाहता है। धनाय आकांक्षति = धनायति—धन चाहता है।

आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उपमान के उत्तर क्यङ् होता है। जैसे, नृप इवाचरति = नृपायते—राजा के ऐसा आचरण

करता है। पिता इवाचरति = पित्रीयते—पिता के ऐसा आचरण करता है।

करना अर्थ में शब्द, वैर, कलह आदि शब्दों के उत्तर क्यङ् प्रत्यय होता है। जैसे, शब्दं करोति = शब्दायते—शब्द कराता है। वैरायते, कलहायते, इत्यादि।

अनुभव अर्थ में कितने शब्दों के आगे क्यङ् प्रत्यय होता है। जैसे, सुखमनुभवति = सुखायते—सुख का अनुभव करता है। दुःखायते, कृच्छ्रायते, आदि।

उद्गिरण वा उद्वमन—ऊपर आना अर्थ में कितने शब्दों के आगे क्यङ् प्रत्यय होता है। जैसे, बाष्पम् उद्वमति = बाष्पायते—भाफ निकलती है। फेनायते, धूमायते, उष्मायते।

अभूततद्भाव (जो नहीं हो वह हो) अर्थ में पण्डित, मन्द, शीघ्र, भृश, चपल, उत्सुक, सुमनस्, उन्मनस् और वचस् शब्दों के उत्तर क्यङ् होता है। जैसे, अमन्दो मन्दो भवति मन्दायते-जो मन्द नहीं वह मन्द होता है। ऐसे ही शीघ्रायते, भृशायते, चपलायते, उत्सुकायते, सुमनायते, उन्मनायते, वाचायते।

उगल कर चबाने के अर्थ में रोमन्थ शब्द से क्यङ् होता है। जैसे, उद्गीर्य्य चर्वयति रोमन्थायते—उगल कर चबाता है।

टिप्पणी—(क) क्यङ् प्रत्यय करने पर स्त्रीलिंग शब्द पुंलिङ्ग हो जाता है। जैसे, कुमारी इव आचरति कुमारीयते—क्वारी के ऐसा आचरण करता है। कोपध में नहीं होता। जैसे, पाचिकायते।

(ख) क्यङ् प्रत्यय करने पर शब्द के अन्तस्थित न का लोप होता है। जैसे, राजा इवाचरति = राजायते। सान्त के सकार का विकल्प से प्रायः लोप होता है। जैसे, पय इवाचरति—पयायते, पयस्यते।

आचरण अर्थ में कर्तृवाचक उपमान के परे क्विप् होता

है। क्विप् का सब कुछ लोप हो जाता है। यह परस्मैदी होता है। जैसे, पुत्र इवाचरति पुत्रति। शिष्यति, सखयति, गुरवति, पितरति इत्यादि।

कितने ही शब्दों के आगे अर्थ-विशेष में णिच् प्रत्यय होता है। यह परस्मैपदी और णिजन्त धातु के समान होता है। जैसे, करना अर्थ में—प्रश्नं करोति = प्रश्नयति—प्रश्न करता है। असिना लुनाति = असयति—तलवार से काटता है, इत्यादि।

णिच् प्रत्यय से बने हुए कुछ विशिष्ट नामधातु के लट् लकार के रूप नीचे लिखे जाते हैं—

दात्रेण लुनाति दात्रयति—दाव से काटता है। वेदमाचष्टे वेदायति—वेद की व्याख्या करता है। सत्यमाचष्टे सत्यापयति—सच बोलता है। प्रियं करोति वा चष्टे प्रापयति—अच्छा करता है वा प्रिय बोलता है। स्थिरं करोति स्थापयति—अचल करता है। बहुलमाचष्टे करोति वा बंहयति—बहुत बोलता है वा करता है। दीर्घं करोति द्राघयति—लंबा बनाता है। पृथुं करोति प्रथयति—प्रसिद्ध करता है। भृशं करोति भ्रशयति—बहुत करता है। दृढं करोति द्रढयति—दृढ़ बनाता है। स्थूलं करोति स्थवयति—मोटा बनाता है। दूरं करोति दवयति—अलग करता है। युवानं करोति युवयति, कनयति—जवान बनाता है। अन्तिकं करोति नेदयति—निकट लाता है। वृद्धं करोति ज्यापयति, वर्षयति—बुड्ढा बनाता है। आशिषं करोति आशिषयति—आशीर्वाद देता है। मिश्रं करोति मिश्रयति—मिलाता है। मुण्डं करोति मुण्डयति—हजामत बनाता है। लवणं करोति लवणयति व्यञ्जनम्—तरकारी नमकीन बनाता है। सूत्रं करोति सूत्रयति—सूत्र बनाता है। कृतं गृह्णाति कृतयति—उपकार मानता है। श्लोकैरुपस्तौति उपश्लोक-

यति—श्लोकों से स्तुति करता है। वर्मणा संनह्यति संवर्मयति—कवच से छिपाता है। वस्त्रेण समाच्छादयति संवस्त्रयति—कपड़े से छिपाता है। तूस्तानि विहन्ति वितूस्तयति—सटे हुए केशों को अलग करता है। हस्तिना अतिक्राम्यति अतिहस्तयति—हाथी पर चढ़ कर पार करता है। वर्णं गृह्णाति वर्णयति—वर्णन करता है। पाशं विमुञ्चति विपाशयति—बन्धन खोलता है। रूपं पश्यति रूपयति—रूप देखता है, इत्यादि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद करो—

गायें पागुर करती हैं। पानी बफाता है। दवा बुड्ढे को जवान बनाती है। उसको कपड़े से छिपा दो। क्यों पानी मलिन करते हो? दीवार को उजली बना दो। परिश्रम शरीर को कठिन बना देता है। शिक्षक शिष्य को पुत्र के समान देखता है। पुत्र पिता को नमस्कार करता है। गंगाजल से बर्तन पवित्र कर लो। आग धुँआती है। दशरथ को रामविरह से बहुत दुःख हुआ। कौरव पाण्डवों से वैर रखते हैं। बाढ़ का पानी हाथी पर चढ़कर पार करता है। वह अपना गौरव चाहता है। वह झोपड़ी ही को महल सा मानता है। यह कौवा हंस की नकल करता है। यदि स्वर्ग चाहते हो तो पुण्य करो। बुड्ढी युवती बनना चाहती है। आप क्यों उदास होते हैं? गुरु जी विद्यार्थियों से प्रश्न पूछते हैं। फेन भरी नदी देखने में अच्छी मालूम होती है। उसे निकट में करता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बता कर शुद्ध करो—

अधुना सर्वे कवयन्ति। कीटा रोमन्थायन्ते। चन्द्रकराः प्रासादं धवलयन्ते। मुनयः तपयन्ति। अनलः सर्वदा धूमायति।

स प्रभुः भृत्यान् सखायते। पिपासाकुलोऽसौ उदकायते। धूमयानं दूरमन्तिकयति। पुत्रीयमानेन नृपेण मुनिरनायि। शब्दायन्तो बालकानाह्वय। यशःस्थापयमाना पुरुषाः प्रशस्यन्ते। कथमुन्मनायति बालः।

वाच्य (Voice)

संस्कृत में प्रधानतः तीन वाच्य हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। कर्मकर्तृवाच्य नाम का एक और चौथा वाच्य है। वाच्य के स्थान पर प्रधान शब्द भी जोड़ा जाता है और कर्तृवाच्य आदि के स्थान पर कर्तृप्रधान आदि भी बोला जाता है।

कर्तृवाच्य (Active Voice)

कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके।
द्वितीयान्तं भवेत् कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम्॥

कर्तृवाच्य के कर्ताकारक में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है और क्रियापद कर्ता के अधीन होता है अर्थात् कर्ता में जो पुरुष और वचन रहते हैं वे ही क्रिया में भी होते हैं। जैसे, शिशुः पुस्तकं पठति—लड़का पोथी पढ़ता है। त्वं गृहं गच्छ—तुम घर जावो। वयं ग्रन्थान् अपठामः—हम लोगों ने ग्रन्थ पढ़े। (यह तिङन्त में नियम है।)

क्त, क्तवतु प्रत्ययान्त से भी कर्तृवाच्य होता है, पर ऐसी क्रियाएँ लिंग वचन का ही अनुसरण करती हैं, पुरुष का नहीं। जैसे, स ग्रामं गतः, त्वं ग्रामं गतः, अहं ग्रामं गतः। सा कार्यं कृतवती—उसने काम किया (कृदन्त देखो)

कर्मवाच्य (Passive Voice)

कर्मवाच्यप्रयोगे तु तृतीया कर्तृकारके।
प्रथमान्तं भवेत् कर्म कर्माधीनं क्रियापदम् ॥

कर्मवाच्य के कर्ताकारक में तृतीया विभक्ति तथा कर्म-कारक में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया कर्म के अधीन होती है अर्थात् कर्म में जो पुरुष और वचन होता है वही क्रिया में भी होता है। जैसे, अहं घटं करोमि (कर्तृ०) मया घटः क्रियते (कर्म०)—मैं घड़ा बनाता हूँ या मुझ से घड़ा बनाया जाता है। रामो युवां पश्यति (कर्तृ०) रामेण युवां दृश्येथे (कर्म०)—राम से तुम दोनों देखे जाते हो वा राम तुम दोनों को देखता है। स अस्मान् वदति (कर्तृ०) तेन वयं उद्यामहे (कर्म०) वह हमसे कहता हैं या हम उससे कहे जाते हैं।

कृत् प्रत्ययान्त से भी कर्मवाच्य होता है। इसमें भी क्रिया लिङ्ग, वचन और कारक में कर्मानुसारिणी होगी, पुरुष में नहीं। जैसे, मया त्वं दृष्टः—मैंने तुम्हें देखा। त्वया सा दृष्टा—तुमने उसे देखा। तेन वयं दृष्टाः—उन्होंने हमें देखा। तैः ग्रामो गन्तव्यः—वे गाँव पर जाँय।

भाववाच्य (Intransitive Voice)

कर्मभावो भाववाच्ये तृतीया कर्तृकारके।
प्रथमापुरुषस्यैकवचनं तु क्रियापदे ॥

भाववाच्य के कर्ताकारक में तृतीया विभक्ति होती है; कर्म नहीं रहता और क्रियापद सदा प्रथम पुरुष और एक-वचन होता है। जैसे, त्वया मया देवदत्तेन अन्यैः वा रुद्यते—तू, मैं, देवदत्त वा और लोग रोते हैं। इसमें कर्ता सब पुरुष

के और बहुवचन भी है पर क्रिया एकवचन अन्य पुरुष ही की है।

कृत् प्रत्ययान्त करने से भी भाववाच्य होता है। उसमें क्रिया सदा एकवचन नपुंसक होती है। जैसे, तेन मया अन्यैर्वा हसितम्—तू, मैं, वा दूसरे हँसे। युष्माभिः स्थातव्यम्—तुम ठहरो वा तुम्हें ठहरना चाहिये।

टिप्पणी—सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार के धातुओं से कर्तृवाच्य होता है। सकर्मक धातुओं से केवल कर्मवाच्य होता है और अकर्मक धातुओं से भाववाच्य होता है जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में स्पष्ट है।

कर्मकर्तृवाच्य (Passive Active Voice)

क्रियमाणं तु यत्कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति ।
सुकरैस्तैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्तेति तद्विदुः ॥

जहाँ कर्म, कर्ता के विना प्रयत्न के ही स्वयं सिद्ध होता है (अर्थात् कर्म इतने सहज से सिद्ध हो जाता है कि किसी यत्न की आवश्यकता ही नहीं प्रतीत होती, वह विना प्रयत्न के ही सिद्ध होता है, ऐसा बोध हो, वहाँ कर्म ही कर्ता की भाँति हो जाता है) वहाँ कर्म-कर्तृवाच्य होता है। कर्म-कर्तृवाच्य में कर्म ही कर्ता हो जाता है और उसमें प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया कर्मवाच्य के समान होती है। जैसे, भक्तं (स्वयमेव) पच्यते—भात (आप ही आप) पकता है; वृक्षाः (स्वयमेव) भिद्यन्ते—पेड़ (आप ही आप) कटते हैं। इन दोनों उदाहरणों में भात आप पकता है, पेड़ आप कटते हैं। ऐसा अर्थ प्रकट करने से पकाने वाले और काटने वाले के रहने पर भी प्रयोजन नहीं पड़ता, इससे वे अविवक्षित हो गये।

टिप्पणी—कभी कभी सकर्मक धातु में कर्म का प्रयोग नहीं करते। इस दशा में यह भी भाववाच्य हो जाता है। जैसे—गृध्र उवाच (कर्तृ०) गृध्रेण ऊचे (कर्म०) (आत्मनेपद हो चाहे परस्मैपद)

भावे कर्मणि वाच्ये च सदा स्यादात्मनेपदम्।
लङादिषु चतुर्ष्वेव यकारस्यागमो भवेत्॥

कर्मवाच्य, भाववाच्य और (कर्मकर्तृवाच्य में) सदा आत्मनेपद होता है और लट्, लोट्, लङ् और विधि लिङ, इन चार लकारों में य का आगम होता है। अन्यान्य लकारों में नहीं होता। जैसे, तेन चन्द्रः दृश्यते—वह चन्द्रमा देखता है। 'दृश्यते' में लट् होने से य का आगम है। 'रावणेन सीता जह्रे'—रावण सीता को ले गया। इसमें लिट् होने से य का आगम नहीं हुआ।

कर्म वा भाववाच्य बनाने में नीचे लिखे धातुओं में ये परिवर्तन होते हैं—

धातु	परिवर्तन	लट्	धातु	परिवर्तन	लट्
अस	भू	भूयते	वस्	उष्	उष्यते
ग्रह्	गृह्	गृह्यते	वद्	उद्	उद्यते
जागृ	जागर्	जागर्य्यते	वप्	उप्	उप्यते
दिव्	दीव्	दीव्यते	वह्	ऊह्	उह्यते
प्रच्छ्	पृच्छ्	पृच्छ्यते	व्यध्	विध्	विध्यते
पृ	पूर्	पूर्यते	भ्रस्ज्	भृज्ज्	भृज्जते
वच्, ब्रू	उच्	उच्यते	मस्ज्	मज्ज्	मज्ज्यते
शास्	शिष्	शिष्यते	यज्	ईज्	ईज्यते
शी	शय्	शय्यते	स्मृ	स्मर्	स्मर्य्यते
स्वप्	सुप्	सुप्यते	ह्वे	हू	हूयते

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों को बतलाओ कि ये किस वाच्य के हैं—

याचकाः दातारं गच्छन्ति। साधवः पितरं पूजयन्ति। वृक्षात् फलैः पत्यते। त्वया गम्यते। रामेण रुद्यते। अहं शये। रामेण त्वं दृश्यसे। परिहीयते गमनवेला। एकैव मूर्तिर्विभिदे त्रिधा सा। युष्माभिः हस्यते। तेन स्थितम्। मत्यै सम्पद्यते विद्या। नक्षत्रैः दीप्यते। त्वया पयः पीयताम्। मम प्रार्थना श्रूयताम्। विद्या विद्योतते।

२. नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों को कर्म और भाववाच्य में अनुवाद करो–

मैं उससे देखा गया। सब लोग मरेंगे। हम वहाँ न जायँगे। प्यासे से जल पीया गया। तुम क्यों हँस रहे हो। तुम सो जावो। तुम से एक सुनहुला हिरण देखा गया। लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है। मेरी बात मान ली गयी। काम आप ही आप होता है। पण्डित सब से आदर पाते हैं। प्रयाग एक प्रधान तीर्थ माना जाता है। कुत्ते से वह पीछा किया जाता है। ईश्वर ने संसार को बनाया।

३. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

मया फलं ग्रह्यते। त्वया स वच्यते। रामेण रावणं हतवान्। स सुप्यते। मया बीजानि उप्यते। अस्माभिः स्थीयन्ते। नृपैः धनं दीयन्ते। मयूरा नृत्यन्ते। बालकैः अहं दृश्यते। पापैः भवन्ति। व्याधाः पक्षिणः हन्यन्ते। पुत्रः पितां नम्येत। नृपः गजा दास्यन्ति। शिशवः क्रिड्यन्ते। मया ग्रन्थान् पठ्यत। मात्रा शिशुं चुम्बति। भवन्तः मां त्रायन्ते।

वाच्यपरिवर्तन (Change of voice)

कर्तृवाच्य क्रिया सकर्मक होने से कर्मवाच्य में और अकर्मक होने से भाववाच्य में परिवर्तित की जा सकती है तथा कर्म वा भाववाच्य की क्रिया कर्तृवाच्य में परिवर्तित हो सकती है। जैसे, स ग्रामं गच्छति (कर्तृ०) तेन ग्रामः गम्यते (कर्म०) स रोदिति (कर्तृ०) तेन रुद्यते (भाव०)। इन्हीं वाक्यों के उलट देने से कर्म-भाव-वाच्य के वाक्य कर्तृवाच्य के हो जायँगे।

वाच्य परिवर्तन करने के समय समापिका क्रिया उसके कर्ता, कर्ता के विशेषण, कर्म और कर्म के विशेषण, इन्हीं सबों में परिवर्तन होता है। जैसे, सुशीलः छात्रः स्वकीयं पाठं पठति (कर्तृ०) सुशीलेन छात्रेण स्वकीयः पाठः पठ्यते (कर्म०)—सुशील विद्यार्थी अपना पाठ पढ़ता है। इस वाक्य में कर्ता, कर्म, उनके विशेषण और क्रिया में परिवर्तन हुआ है।

वाच्यपरिवर्तन करने के समय इन बातों पर ध्यान देना चाहिये—

(क) पहले समापिका क्रिया, कर्ता और कर्म को ढूँढ़ निकालो।

(ख) देखो कि कर्ता और कर्म का कोई विशेषण है या नहीं।

(ग) यह निश्चय करो कि क्रिया किस वाच्य की है।

(घ) क्रिया देखकर वाच्य स्थिर करो। जैसे, कृत्य प्रत्ययान्त (तव्य, अनीय, यत्) क्रिया कर्तृवाच्य कभी नहीं होती।

टिप्पणी—जहाँ कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य में क्रिया का एक ही प्रकार का रूप होता है—जैसे, 'ग्रामं गतः' (कर्तृ०) 'तेन ग्रामं गतः' (कर्म०) इत्यादि, वहाँ कर्ता और कर्म को देखकर वाच्य स्थिर करना चाहिये।

(ङ) कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा देखो तो समझो कि क्रिया कर्म और भाववाच्य की है तथा कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया देखो तो समझो कि क्रिया कर्तृवाच्य की है।

वाच्यान्तर करने में इन बातों पर विशेष ध्यान चाहिये।

(क) क्रिया जिस काल वा जिस लकार की होगी वाच्यान्तर में भी वह उसी काल और उसी लकार की होगी। जैसे, स उक्तवान् (कर्तृ०) तेन उक्तम् (कर्म०)। स गच्छति (कर्तृ०) तेन गम्यते (कर्म०)

(ख) कर्ता या कर्म का जो विशेषण होगा उसमें वही विभक्ति और वचन होंगे जो कर्ता और कर्म में होंगे। जैसे, शयाना भुञ्जते यवनाः (कर्तृ०) शयानैः यवनैः भुज्यते—मुसलमान सोये २ खाते हैं। इत्यादि।

(ग) स्थान, पद, पात्र आदि जो शब्द सदा एकवचन और नपुंसकलिङ्ग होते हैं वे जब विधेय-विशेषण रूप में आते हैं तब उनमें वाच्यपरिवर्तन करने पर एकवचन ही होता है। जैसे, गुणाः पूजास्थानंगुणिषु (कर्तृ०) गुणैः पूजास्थानेन (भूयते) गुणिषु (कर्म०)।

(घ) यदि कर्तृवाच्य में समापिका और असमापिका इन दोनों क्रियाओं का एक ही कर्म हो तो कर्मवाच्य में समापिका क्रिया के साथ ही उस कर्म का सम्बन्ध होगा। जैसे, भवान् पण्डितमाहूय निमन्त्र्यताम् (कर्तृ०) भवता पण्डितः आहूय निमन्त्र्यताम् (कर्म०)—आप पण्डित को बुलाकर न्यौता दें।

वाच्यान्तर-रचना

कर्मवाच्य बनाने में प्रथमान्त कर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देना होता है और कर्तृवाच्य

में जो क्रिया कर्ता के अनुसार होती थी उसे कर्म के अनुसार बना देनी पड़ती है। जैसे, अहं सूर्यं पश्यामि (कर्तृ०) मया सूर्यः दृश्यते (कर्म०)—मैं सूर्य को देखता हूँ।

कभी कभी कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य क्त प्रत्यय करके भी बनाते हैं। जैसे, अहं चन्द्रं अपश्यम् (कर्तृ०) मया चन्द्रः दृष्टः (कर्म०)।

टिप्पणी—कृत् प्रत्ययान्त क्रियापद विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। इससे कर्ता और कर्म में जो लिङ्ग, वचन और कारक होते हैं वे ही उसमें भी होते हैं। जैसे, सा उक्तवती, तेन ग्रन्थः पठितः, मया ग्रामो गन्तव्यः, इत्यादि।

कर्तृवाच्य क्तवतु प्रत्ययान्त क्रिया के कर्म वा भाववाच्य में क्त प्रत्ययान्त कर देते हैं। जैसे, रामो वनं गतवान् (कर्तृ०) रामेण वनं गतम् (कर्म०)—राम वन गये। अहं प्रस्थितवान् (कर्तृ०) मया प्रस्थितम् (कर्म०)—मैंने यात्रा की।

कर्तृवाच्य क्त प्रत्ययान्त क्रिया को कर्म या भाववाच्य बनाने में केवल विभक्ति का परिवर्तन होता है अर्थात् कर्ता में प्रथमा के स्थान पर तृतीया और कर्म में द्वितीया के स्थान पर प्रथमा और क्रिया कर्मानुसारिणी होती है। जैसे, अहं काशीं गतः (कर्तृ०) मया काशी गता (कर्म०) मैं काशी गया।

टिप्पणी—ऊपर कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के जितने प्रकार कहे गये हैं उन्हीं के परिवर्तन कर देने से अर्थात् कर्मवाच्य क्रिया के कर्ता में तृतीया के स्थान पर प्रथमा और कर्मानुसारिणी क्रिया को कर्ता के अनुसार कर देने से कर्मवाच्य क्रिया कर्तृवाच्य हो जाती है।

कर्म वा भाववाच्य में किये गये कृत्य (तव्य, अनीय, यत्) प्रत्ययान्त क्रियाओं से यदि भविष्यकाल का बोध हो तो उनको लृट् वा लोट् लकार से कर्तृवाच्य बनाते हैं। जैसे, वृष्ट्या

भाव्यम् (भाव०) वृष्टिर्भविष्यति (कर्तृ०)—वर्षा होगी। और यदि औचित्य, अनुज्ञा आदि अर्थ बोध हो तो अर्थानुसार विधिलिङ् लोट् लकार से कर्तृवाच्य बनाते हैं। कर्म कर्तृ-वाच्य का वाच्यान्तर भाववाच्य सा होता है। जैसे, हीयते हि मतिस्तात (कर्तृ०) मत्या हीयते (कर्म०) जैसे, त्वया मदालयः गन्तव्यः (कर्म०) मदालयं गच्छ (कर्तृ०) मेरे घर चलिये। त्वया गुरुः पूजनीयः (कर्म०) त्वं गुरुं पूजयेः (कर्तृ०) तुमको गुरु की पूजा करनी चाहिये।

द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

गौणे कर्मणि दुह्यादेः— द्विकर्मक धातु से कर्मवाच्य बनाने में दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ् और मुष् धातुओं के गौणकर्म में (Indirect object) प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया उसी कर्म के अनुसार होती है। मुख्य कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे, गोपः गां दुग्धं दोग्धि (कर्तृ०) गोपेन गौः दुग्धं दुह्यते (कर्म०) छात्रः गुरुं धर्मं पृच्छति (कर्तृ०) छात्रेण गुरुः धर्मं पृच्छ्यते (कर्म०)।

प्रधाने नीहृकृष्वहाम्— द्विकर्मक नी, हृ, कृष्, और वह् धातुओं के मुख्य कर्म (Direct object) में प्रथमा विभक्ति होती है, गौण कर्म ज्यों का त्यों रहता है, जैसे, भृत्यः भारान् गृहं वक्ष्यति (कर्तृ०) भृत्येन भारा गृहं वक्ष्यन्ते (कर्म०—नौकर घर बोझा ले जायगा।

णिजन्त द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया— बुद्ध्यर्थक, भक्षार्थक और शब्दकर्मक धातुओं के दोनों कर्मों में से जिसमें इच्छा

हो उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे, गुरुः छात्रं धर्मं बोधयति (कर्तृ०) गुरुणा छात्रः धर्मं वा छात्रं धर्मः बोध्यते (कर्म०)।

प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः— अन्य णिजन्त द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य बनाने में प्रयोज्य कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे, श्यामः रामं ग्रामं गमयति (कर्तृ०) श्यामेन रामः ग्रामं गम्यते (कर्म०)—श्याम को राम गाँव पर भेज रहा है।

कर्तृवाच्य में जिन धातुओं के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया विभक्ति होती है; कर्मवाच्य में उनके अणिजन्त अवस्था के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे, सुग्रीवः रामेण वालिनं घातयति—सुग्रीव वालि को राम से मरवाता है। (कर्तृ०) सुग्रीवेण रामेण वाली घात्यते—सुग्रीव द्वारा राम से वालि मरवाया जाता है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे हिन्दी वाक्यों को कर्म और भाववाच्य में अनुवाद करो-

पिता ने पुत्र से कुशल प्रश्न पूछा। तुम चोरों को बुलाकर पीटो। मैंने जंगल में एक बाघ देखा। तुम्हें वीर पुत्र पैदा हो। जानकी जंगल के दुःख कैसे सहेगी। मैंने उनको पुस्तक दिलवा दो। दुर्जनों को दूर ही से त्याग करना चाहिये। गानेवाले बुलाये गये। पाँच मनुष्य मार डाले गये। भोर में पक्षी अपने खोतों से बाहर हो जाते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को व्याकरण समझाते हैं। हमने वृद्ध पुरुषों की बातें मान लीं। पढ़ो, नहीं तो परीक्षा पास नहीं कर सकते। सूत ने मुनियों से महाभारत को कथा कही। हमसे बहुत बड़ा हाथी देखा गया। किसानों से खेत जोता गया। यज्ञदत्त देवदत्त को घर भेजेगा। विद्या-

र्थियों ने मास्टरों का पीछा किया। उस लड़के को सब कोई प्यार करते हैं। पतिव्रताओं को पति को देवता समझना चाहिये। घर में वह बुलाया जाय।

२. नीचे लिखे वाक्यों का वाच्य-परिवर्त्तन करो—

देवासुरैः क्षीरनिधिः अमृतं मथ्यते। दोषा वाच्या गुरोरपि। मातापितरौ भक्त्या सततं पूजयितव्यौ। विद्या ददाति विनयम्। प्रविशन्ति मुखे मृगाः। यस्तिष्ठति स बान्धवः। यथाहं अन्यं ह्रदं प्राप्नोमि तदद्य विधीयताम्। स मम पाशान् छेत्स्यति। न सर्वमेतत् धनं गृहं नेतुं युज्यते। त्वया वाच्यं धर्मबुद्धिः चौर इति। जलकल्लोलैः स्राव्यते मे शरीरम्। दैवमत्र अतिरिच्यते। यदि अहं वध्यः तदा हन्तव्यः। वसन्ति मुनयो वने। भवान् कुत आगच्छति। असत्यं मा वद। त्वं कुत्र गमिष्यसि। पक्षिभिः जिज्ञासा समारब्धा। यः स्वभावो हि यस्य स्यात् तस्यासा दुरतिक्रमः। महाश्वेता कादम्बरीमनामयं पप्रच्छ।

३. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

चेतो विक्रियन्ते। मया तव किं दोषं कृतवान्। अहं तव अनुचरो भवितव्यम्। मालाकारेण फलानि चेतव्यम्। पिता शिशून् सौरभं घ्राप्यते। कैकेय्या दशरथात् द्वौ वरौ वव्रे। द्वावेव कथयिष्यध्वे पन्थानौ वदतां वर। वह्यन्तां भारान् गृहं भृत्यैः। श्रूयतां तस्य हितवचनानि। तेन लज्जितव्यः। त्वया शय्या परिहर। पण्डितैः उपायं चिन्तयेत्। त्वया अहं जेष्यते। दरिद्रः विप्रेण धनिनं वस्त्रं याचितवान्। भवता अत्र आस्ताम्। अद्यापि जीव्यते मे तातः। मया मिथ्या न ब्रूयते। जीवरेव भृत्योः भेतव्यानि। कदा विमुक्तेन अहं भाव्यम्। अहं त्वां चन्द्रं दर्शयिष्यते। त्वं मम राजदर्शनं कारय। रामेण ग्रामः छागं नीतः।

आत्मनेपद और परस्मैपद प्रक्रिया

विशेष २ अर्थों और उपसर्गों के योग में परस्मैपदी धातु आत्मनेपदी, आत्मनेपदी परस्मैपदी और उभयपदी आत्मनेपदी वा परस्मैपदी होते हैं। इनके विधान के नीचे नियम लिखे जाते हैं।

आत्मनेपद-विधान

भावकर्म्मणोः—भाववाच्य और कर्मवाच्य धातुओं में आत्मनेपद होता है। जैसे, भक्तैः हरिः सेव्यते—भक्तों से हरि सेवित होते हैं। काष्ठं भिद्यते—काठ आप ही कटता है।

विपराभ्यां जेः—वि और परा पूर्वक जि धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, विजयतां महाराजः—विजयी हों। अध्ययनात् पराजयते—पढ़ने से हार मानता है। स शत्रून् पराजयते—वह शत्रुओं को हराता है।

परिव्यवेभ्यः क्रियः—परि, वि और अव पूर्वक क्री धातु (उभयपदी) आत्मनेपदी होता है। जैसे, तन्तुवायः वस्त्रं विक्रीणीते—जुलाहा कपड़ा बेचता है। ऐसे ही परिक्रीणीते और अवक्रीणीते समझो।

नेर्विशः—निपूर्वक विश् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, रामो गृहं निविशते—राम घर में पैठता है। निविशते यदि शूकशिखा पदे—धान की शिखा जब पैर में चुभती है।

आङि नुप्रच्छ्योः—आ पूर्वक नु और प्रच्छ धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, शृगालः आनुते-सियार चिल्लाता है। आपृच्छस्व गुरून्—बड़ों से आज्ञा लो।

आङो दो नास्यविहरणे—आस्यविहरण (मुख फैलाना) से भिन्न अर्थ में आ पूर्वक दा धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे,

स पुस्तकमादत्ते—वह पोथी लेता है। मुँह फैलाने में—सिंहः मुखं व्याददाति—सिंह मुँह खोलता है।

भुजोऽनवने—अवन (रक्षा) भिन्न अन्य अर्थं (खाना, भोग करना आदि) में भुज् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, वृद्धो जनो दुःखशतानि भुंक्ते—बुड्ढा सैकड़ों प्रकार के दुःख भोगता है। बुभुजे पृथिवीपालः पृथिवीमेव केवलाम्—राजा ने केवल पृथ्वी का भोग किया। रक्षार्थ में—राजा महीं भुनक्ति—राजा पृथ्वी पालते हैं।

क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च—अनु, सम्, परि, आ पूर्वक क्रीड् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, बालकः संक्रीडते, अनुक्रीडते, परिक्रीडते, आक्रीडते—लड़का खेलता है।

टिप्पणी—सम् पूर्व्वक क्रीड् धातु कूजन (बोलना, बजना) अर्थ में आत्मनेपदी नहीं होता। जैसे, विहगाः संक्रीड़न्ति—चिड़ियायें चहचहाती हैं। चक्रं संक्रीडति—पहिया घरघराती है। (समोऽकूजने)

समवप्रविभ्यः स्थः—सम्, अव, प्र और वि पूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, न कोऽपि असत्यवादिनः वाक्ये सन्तिष्ठते—असत्यवादी के कहने पर कोई नहीं करेगा। क्षणमवतिष्ठस्व—थोड़ी देर ठहरो। रामो वनं प्रतस्थे—राम ने वन को प्रस्थान किया।

उदोऽनूर्ध्वकर्म्मणि- ऊर्द्ध्व कर्म (उठना) छोड़कर अन्य अर्थों में स्था धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, मुक्तावुत्तिष्ठते जनः—मनुष्य मुक्ति के लिये लालसा करता है। उद्वहन् मुदमुदस्थित-क्रतौ—प्रसन्न होते हुए यज्ञ करने के लिये उद्योग करने लगे।

उपान्मन्त्रकरणे—मन्त्रोच्चारणपूर्वक पूजा अर्थ में उपपूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, ब्राह्मणाः सूर्यमुपतिष्ठन्ते—ब्राह्मण मन्त्र पढ़ कर सूर्य की उपासना—पूजा करते हैं।

उपाद्देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिषु—देवपूजा, सङ्गति (मिलन) और मैत्रीकरण अर्थ में तथा पथवाचक शब्द कर्ता होनें से उपपूर्वक स्था धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, देवपूजा—स शिवमुपतिष्ठते—वह शिव की पूजा करता है। सङ्गतिकरण—गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते—गंगा यमुना से मिलती है। मित्रकरण—सज्जनः सज्जनमुपतिष्ठते—सज्जन सज्जन से मेल करता है। पथ कर्ता—मार्गोऽयं पाटलिपुत्रमुपतिष्ठते—यह राह पटने को जाती है।

टिप्पणी—(क) अकर्मक उपपूर्व्वक स्था धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, भोजनकाले उपतिष्ठते—भोजन के वक्त पहुँच जाता है (अकर्मकाच्च)

(ख) लिप्सा (लाभ की इच्छा) बोध होने से उपपूर्वक स्था धातु विकल्प से आत्मनेपदी होता है। जैसे, भिक्षुकः धनिनमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा—भिखमंगा धनी के पास कुछ मिलने की इच्छा से जाता है। (वा लिप्सायाम्)

अपह्नवे ज्ञः— अपह्नव (अपलाप, झुठलाना, denial) बोध होने से ज्ञा धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, अधुना स शतमपजानीते—वह अब सौ झुठला रहा है।

सम्प्रतिभ्यामनाध्याने— अनाध्यान (अस्मरण) बोध होने से अर्थात् स्मरण भिन्न अर्थ में सम् और प्रति पूर्वक ज्ञा धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, स शतं संजानीते—वह सौ रुपये चाह रहा है। अहं शतं प्रतिजाने—मैं सौ की प्रतिज्ञा करता हूँ।

उद्विभ्यां तपः (अकर्मकात् स्वांगकर्मकाच्च)—अकर्मक वा स्वाङ्ग कर्मक अर्थात् जहाँ कर्ता का कोई अपना अंग हो वहाँ उत्, वि पूर्वक तप् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, रविः उत्तपते, वितपते—सूर्य उगते हैं। स्वहस्तौ वितपते—वह अपने हाथ

गरमाता है। अन्य कर्म होने से नहीं होता। जैसे, उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः—सोनार सोना तपाता है।

उदश्चरः सकर्मकात्—सकर्मक होने से उत् पूर्वक चर् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, राजा धर्ममुच्चरते—राजा अपना धर्म छोड़ रहे हैं। अकर्मक होने से नहीं होता। जैसे उच्चरति धूमः—धुआँ उठ रहा है।

समस्तृतीयायुक्तात्—तृतीयान्त पद के योग में सम् पूर्वक चर् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, राजा रथेन सञ्चरते—राजा रथ पर चलते है।

आङो यमहनः (अकर्मकात् स्वांगकर्मकाच्च)—अकर्मक वा स्वाङ्ग-कर्मक (अपना अंग कर्म) होने से आ पूर्वक यम् और हन् धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, अकर्मक—स आहते—वह पीड़ित होता है। वृक्षः आयच्छते—पेड़ पसरता है। स्वाङ्ग-कर्मक—बालकः स्वहस्तमायच्छते—लड़का अपना हाथ फैलाता है। वृद्धः स्वमस्तकमाहते—बुड्ढा अपना कपार पीटता है। अन्यत्र नहीं होता। जैसे, रज्जुमायच्छति—रस्सी खींचता है। श्वानमाहन्ति—कुत्ते को मारता है।

समुद्भ्यां यमोऽग्रन्थे—सम् और उत् पूर्वक यम् धातु आत्म-नेपदी होता है पर ग्रन्थ कर्म होने से नहीं होता है। जैसे, कृषकः धान्यानि संयच्छते—किसान धान बटोरता है। स भारमुपय-च्छते—वह बोझ उठाता है। ग्रन्थ कर्म होने से नहीं हुआ। जैसे, वटुः वेदमुद्यच्छति—विद्यार्थी वेद पढ़ने की बड़ी चेष्टा करता है।

उपात् यमः स्वीकरणे—स्वीकरण अर्थात् विवाह अर्थ बोध होने से उपपूर्वक यम् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, रामः सीतामुपयेमे—राम ने सीता से ब्याह किया।

स्पर्द्धायामाङो ह्वः—स्पर्द्धा अर्थात् युद्धार्थ ललकारने (Challenge) के अर्थ में आङ् पूर्वक ह्वे धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, कृष्णः चाणूरमाह्वयते—कृष्ण चाणूर को लड़ने के लिये ललकारते हैं।

वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः—वृत्ति (अप्रतिबन्ध, बेरोक) सर्ग (उत्साह) और तायन (वृद्धि) अर्थबोध होने से, क्रम् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, वृत्ति—शास्त्रेषु क्रमते बुद्धिः—शास्त्र में इसकी बुद्धि बेरोक रहती है। सर्ग—अध्ययनाय क्रमते शिष्यः—विद्यार्थी पढ़ने में उत्साह दिखाता है। तायन—अस्मिन् शास्त्राणि क्रमन्ते—इसमें शास्त्रों की वृद्धि हुई है।

आङो ज्योतिरुद्गमने—ज्योतिष्क पदार्थों के ऊर्द्धगमन अर्थात् सूर्य, चन्द्र, तारा आदि के उदय होने के अर्थ में आपूर्वक क्रम् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, सूर्य आक्रमते—सूर्य उदय लेते हैं। अन्य पदार्थ के ऊपर उठने में नहीं होता। जैसे, आक्रामति धूमो हर्म्यतलात्—कोठे से धुआँ उठता है।

वेः पादविहरणे—पादविक्षेप अर्थ बोध होने से वि पूर्वक क्रम् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, साधु विक्रमते वाजी—घोड़ा अच्छा पैर फेंक रहा है। दूसरे अर्थ में नहीं होता। जैसे, विक्रामति सन्धिः—सन्धि विच्छिन्न होती है।

प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्—आरम्भ अर्थ में प्र और उप पूर्वक क्रम् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, पठितुं प्रक्रमते, उपक्रमते वा छात्रः—विद्यार्थी पढ़ना शुरू करता है। अन्यार्थ में नहीं होता। जैसे, प्रक्रामति—जाता है। उपक्रामति—आता है।

समोऽकर्मकगमादेः—अकर्मक होने से सम् पूर्वक आदि (गम्, प्रच्छ् श्रु, दृश्, विद्, ऋच्छ् और ऋ) धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, नैतत् संगच्छते—यह उचित नहीं है। केन संविदते-

कौन नहीं जानता। हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः—जो हित समझ कर बात नहीं सुनता वह बुरा मालिक है। सकर्मक होने से नहीं होता। जैसे, अहं मित्रं संगच्छामि—मैं मित्र से मिलता हूँ, इत्यादि।

स्वराद्यन्तोपसर्गात् युजेः—स्वरादि और स्वरान्त उपसर्गों (अर्थात् सम्, निर् और दुर् उपसर्गों को छोड़ कर) के परे युज् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, प्रभुः भृत्यं कर्मणि नियुंक्ते—मालिक नौकर को काम में लगाता है। स मामनुयुंक्ते—वह मुझसे प्रश्न करता है वा किसी के विरुद्ध कुछ कहता है। वीरः युद्धाय उद्युंक्ते—वीर युद्ध के लिये उद्योग करता है।

टिप्पणी—यज्ञपात्र के प्रयोग होने से परस्मैपदी होता है। जैसे, ब्राह्मणः यज्ञपात्रं प्रयुनक्ति—ब्राह्मण यज्ञपात्र का उपयोग करता है।

भासनोपसम्भाषाज्ञानयत्नविमत्युपमन्त्रणेषु वदः—भासन (पारदर्शिता-प्रदर्शन। किसी विषय का पूरा पूरा ज्ञाता होना) उपसम्भाषा (सांत्वना) ज्ञान, यत्न, विमति (भिन्न भिन्न सम्मति) और उपमन्त्रण (प्रार्थना, अनुरोध) अर्थ में वद् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, भासन—विष्णुशर्मा शास्त्रे वदते–विष्णुशर्मा शास्त्र में योग्यता दिखलाते हैं। उपसंभाषा—प्रभुः भृत्यानुपवदते—मालिक नोकर को सन्तुष्ट कर रहा है। ज्ञान—शास्त्रे वदते—शास्त्र जानता है। यत्न—कृषकः क्षेत्रे वदते—किसान खेत में यत्न करता है। विमति परस्परं विवदमानानां धर्मशास्त्राणां—परस्पर भिन्न भिन्न होते हुए भी धर्मशास्त्रों के। उपमन्त्रण—दरिद्रः धनिनमुपवदते—गरीब धनी से प्रार्थना करता है।

व्यक्तवाचां समुच्चारणे—अधिक मनुष्यों के स्पष्ट उक्ति बोध होने से सम्, प्र पूर्वक वद् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे,

सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः—एक साथ ब्राह्मण बोल रहे हैं। अन्यत्र नहीं होता। जैसे, खगाः सम्प्रवदन्ति—चिड़ियायें चह-चहाती हैं।

अनोरकर्मकात्—अकर्मक अनुपूर्वक वद् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, कृष्णः रामस्य अनुवदते—राम जैसा कहता है वैसा ही कृष्ण भी कहता है। सकर्मक होने से परस्मैपद होता है। जैसे, उक्तमनुवदति—कही हुई बात को कहता है।

विभाषा विप्रलापे—विप्रलाप (किसी नियम को लेकर तर्क करने में,) अर्थ में वि प्र पूर्वक वद् धातु विकल्प से आत्मनेपदी होता है। जैसे, विप्रवदन्ति विप्रवदन्ते वा नैयायिकाः—नैयायिक तर्क कर रहे हैं।

उन्नयनोपनयविगणनेषु नियः—उन्नयन (ऊपर उठाना) उपनयन (यज्ञोपवीत देना) और विगणन (ऋण, कर आदि देना) अर्थ में नी धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, स दण्ड-मुन्नयते—वह लाठी उठाता है। गुरुः माणवकमुपनयते—गुरु बालक को यज्ञोपवीत देते हैं। स करं विनयते—वह अपना कर चुकाता है।

कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि—कर्म कर्ता ही में रहे और उसके शरीर न हो तो वि पूर्वक नी धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, धीरः क्रोधं विनयते—धीर मनुष्य क्रोध को दबाता है। यहाँ क्रोध कर्म शरीरधारी नहीं है और कर्ता धीर में ही वह रहता भी है। अन्यत्र नहीं होता है। जैसे, शिष्यः गुरोः क्रोधं विनयति—चेला गुरु के क्रोध को ठंढा करता है। यहाँ क्रोध कर्म शिष्य में नहीं है।

ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः—सन्नन्त ज्ञा, श्रु, स्मृ और दृश् धातु आत्मनेपदी होते हैं। जैसे, स इदं जिज्ञासते—वह यह जानना

चाहता है। बालिका गीतं शुश्रूषते—लड़की गीत सुनना चाहती है। स नष्टं वस्तु सुस्मूर्षते—वह नष्ट वस्तु का खयाल करता है। बालः चन्द्रं दिदृक्षते—लड़का चन्द्रमा देखना चाहता है।

टिप्पणी—(क) अनुपूर्वक ज्ञा धातु सन्नन्त होने पर भी आत्मनेपदी नहीं होता। (नानोर्ज्ञः) जैसे, अनुजिज्ञासति।

(ख) प्रति वा आङ् पूर्वक होने से श्रु धातु आत्मनेपदी नहीं होता। (प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः) प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति।

अवाद् गिरतेः—अवपूर्वक गृ धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, बालको मिष्टान्नमवगिरते—लड़का मिठाई खाता है।

समः प्रतिज्ञाने—प्रतिज्ञा अर्थ में सम् पूर्वक गृ धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, शब्दं नित्यं संगिरते—शब्द नित्य है, इस बात को कहते हैं। अन्यत्र नहीं होता। जैसे, ग्रासं संगिरति—कौर निगलता है।

स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले—यदि कर्ता आप क्रिया का फलभागी हो तो स्वरित और ञित् (साधारणतः उभयपदी) धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, विप्रः यजते—ब्राह्मण अपने लिये यज्ञ करता है। परगामी अर्थात् दूसरे के लिये होने से परस्मैपदी होता है। जैसे, यजति पुरोहितः—पुरोहित यजमान के लिये यज्ञ करता है।

आशंसेराशंसायाम्—आशंसा (आशा) बोध होने से आ पूर्वक शंस् धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, तदानाशंसे विजयाय सञ्जय—तब मैंने विजय की आशा नहीं की।

वेः शब्दकर्मणोऽकर्मकाच्च कृञः—शब्द कर्म अथवा अकर्मक होने से विपूर्वक कृधातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, नरोऽयं स्वरान् विकुरुते—वह आदमी कई प्रकार की बोली बोलता है।

छात्राः विकुर्वते—विद्यार्थी अपने मन के काम करते हैं। अन्यत्र आत्मनेपद नहीं होता। जैसे, क्रोधः चित्तं विकरोति—क्रोध से मन में विकार उत्पन्न होता है।

अधेः प्रहसने—प्रहसन (क्षमा, forgiving) और अभिभव (अनादर, दबाना, Overpowering) अर्थ में अधिपूर्वक कृ धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, राजा शत्रुमधिकुरुते—राजा अपने शत्रुओं को दबाता या क्षमा कर देता है।

आशिषि नाथः— आशीर्वाद अर्थ में नाथ धातु आत्मनेपदी होता है। जैसे, पिता पुत्रं नाथते—पिता पुत्र को आशीर्वाद देता है।

परस्मैपदविधान

अनुपराभ्यां कृञः—अनु, परा पूर्वक कृञ् धातु परस्मैपदी होता है। जैसे, गुरुमनुकरोति शिष्यः—चेला गुरु की नकल करता है। तस्य निमन्त्रणं पराकुरु—उसका न्यौता न लो।

अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः—अभि, प्रति, अति पूर्वक क्षिप् धातु परस्मैपदी होता है। जैसे, अर्जुनः बलेन कर्णमभिक्षिपति—अर्जुन कर्ण को अपने बल से दबा देते हैं, इत्यादि।

प्राद्वहः—प्र पूर्वक वह् धातु परस्मैपदी होता है। जैसे, नदी प्रवहति—नदी बहती है।

व्याङ्परिभ्यो रमः— वि, आङ्, परि पूर्वक रम् धातु परस्मैपदी होता है। जैसे, पापकार्याद्विरम—पाप कार्य से अलग हो। स आरमति—वह आराम करता है। त्वां दृष्ट्वैव परिरमामि—तुमको देखने ही से मैं प्रसन्न होता हूँ।

उपादकर्मकाद्वा—उप पूर्वक रम् धातु अकर्मक होने से विकल्प से परस्मैपदी होता है। जैसे, निरीक्षितुं नोपरराम वल्लवीः—ग्वालिनों को देखने से अर्जुन नहीं हटे। यत्रोपरमते चित्तं—जहाँ चित्त शान्त होता हो।

बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः—णिजन्त बुध्, युध्, नश्, जन्, इङ्, प्रु, द्रु और स्रु धातु केवल परस्मैपदी होते हैं। जैसे, धर्मः सुखं जनयति—धर्म से सुख होता है। बोधयति, योधयति, नाशयति, जनयति, अध्यापयति, प्रावयति और स्रावयति।

निगरणचलनार्थेभ्यश्च—णिजन्त भोजनार्थक और चलनार्थक धातु परस्मैपदी होते हैं। जैसे, वायुः वृक्षं कम्पयति—हवा पेड़ को हिलाती है। निगारयति, भोजयति, भक्षयति, चलयति, वेपयति, कम्पयति इत्यादि। पर अद् धातु केवल परस्मैपदी न होकर आत्मनेपदी भी होता है।

अणावकर्मकात् चित्तवत् कर्तृकात्—अणिजन्त अवस्था में जो धातु अकर्मक हैं और जिनके कर्ता प्राणी हैं वे धातु णिजन्तावस्था में परस्मैपदी होते हैं। जैसे, कृष्णः शेते, यशोदा कृष्णं शाययति—यशोदा कृष्ण को सुला रही है। इसमें प्राणिवाचक कर्ता है। जलं शुषयति, भानुः जलं शोषयति, शोषयते वा—सूर्य्य जल सुखा रहे हैं। यहाँ प्राणिवाचक कर्ता नहीं है, इसी से उभयपदी हुआ।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

लड़का घर में पैठता है (नि+विश्)। हरिश्चन्द्र ने दक्षिणा

के लिये अपने स्त्री-पुत्र को भी बेंच दिया। चन्द्रगुप्त ने सब राजाओं को पराजित किया था। तुम क्यों नहीं हमसे बोलते (आ+प्रच्छ्)। वह कल ही घर से प्रस्थान करेगा। ज्ञान के लिये यत्न करो (उत्+स्था)। वे सूर्य का उपस्थान करते हैं। माता पुत्रशोक से छाती पीटती है (आ+हन्)। भीम ने वक राक्षस को युद्ध के लिये ललकारा। जिसने उनका गान नहीं सुना (सम्+श्रु)। उनका जीना व्यर्थ है। देखो, घोड़े कैसे पैर उठाते हैं। तुम अपना अपराध मत छिपाओ (अप+ज्ञा)। राम ने वालि को मारने की प्रतिज्ञा की (सम्+ज्ञा)। तुम निन्दनीय आचरणों से जन्म भर दुःख भोगोगे। राम ने सीता का पाणिग्रहण किया (उप+यम्)। आप किससे यह प्रश्न पूछ रहे हैं (सन्नन्त ज्ञा)। तुम उसके स्वर की ठीक नकल करते हो (अनु+कृ)। संतोष देने से वह चुप हुआ। राजा घोड़े पर चढ़कर फिर रहे हैं (सम्+चर)।

२. नीचे लिखे वाक्यों का क्रियाओं में नियमसहित आत्मनेपद और परस्मैपद होने का कारण बताओ—

रामः शालां न्यवीक्षत। विजयतां महाराज। पतङ्गः मुखं व्याददाति। आक्रामति धूमो हर्म्यतलात्। देवाः राक्षसानधि-कुर्वते। लेखमनुवदति। प्रलापात् विरम। आपृच्छस्व प्रिय-सखममुम्। संक्रीडन्ति पक्षिणः। स धनार्जनाय उत्तिष्ठते। प्रतस्थे दिग्जिगीषया। राजा राजानमुपतिष्ठते। बाष्पमुच्चरति। सुन्दरी बालामुपयच्छते। उत्तपते वितपते पाणी। न त्र्यम्ब-कादन्यमुपस्थितासौ। गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते। सम्पदः परमुप-तिष्ठंति। वक्तुं धीरः स्तनितवचनः मानिनीं प्रक्रमेथाः। विन-यस्व क्रोधम्।

३. नीचे लिखे दोनों प्रकार की क्रियाओं में अर्थभेद बतावो—

आददाति, आदत्ते। संगच्छति, संगच्छते। उपक्रमति, उपक्रमते। उच्चरति, उच्चरते। उत्तिष्ठति, उत्तिष्ठते। सञ्चरति, सञ्चरते। संक्रीडति, संक्रीडते। उत्तपति, उत्तपते। यजति, यजते। संजानाति, संजानीते। भुनक्ति, भुंक्ते। आह्वयति, आह्वयते।

४. नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाओं को सकारण शुद्ध करो—

आसनात् उत्तिष्ठस्व। दुष्यन्तः आश्रमं न्यविशत्। किं वृथा प्रतिजानासि। धूर्तः प्रागुक्तमपजानाति। तौ विवदन्तौ गृहं जग्मतुः। मातरमापृच्छ, परदेशं गच्छ। भीमः कीचकमाह्वयति। दूतः वक्तुं प्रचक्राम। कथं त्वं ग्रामं विक्रीणासि। आह्वन्ति स्वशिरः सदा। मूर्खा निरर्थकं विवदन्ति। बालः चन्द्रं दिदृक्षति। उत्तपते दुग्धम्। संशृणोतु महाभागः। सन्तः सन्तमुपतिष्ठन्ति। अस्मिन् वेताः क्रमन्ति। पापी पापकर्मणो न विरमते। गृहं गन्तुमुपक्रामति। प्रवहति नदी वेगेन। क्रोधोऽनिष्टं जनयते। वानरः अपक्वफलानि भुनक्ति। गुरुः शिष्यानाह्वयते। गृहीत्वा शतं मुद्राः अपजानासि। साधुः साधुना सङ्गच्छति। यः परस्वमाददाति स चौरः। इन्द्रं पराजयत् इति मेघनादस्य इन्द्रजित् इति नामान्तरम्। पक्षिणः संप्रवदन्ति।

उत्तरार्द्ध

पहला प्रकरण

कृदन्त (Verbal Affixes)

धातु के आगे शतृ, शानच्, क्त, क्ति, तुमुन् आदि जो प्रत्यय होते हैं उन्हें कृत्प्रत्यय कहते हैं और इन प्रत्ययों से जो पद बनते हैं वे कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया प्रकरण में भी प्रसङ्गतः कृत् प्रत्ययों का कुछ उल्लेख किया जा चुका है।

क्त्वा, ल्यप्, तुम्, णमुल् आदि प्रत्ययान्त शब्द असमापिका क्रिया और अव्यय होते हैं। शतृ, शानच्, क्वसु, कानच् आदि प्रत्ययान्त शब्द असमापिका क्रिया और विशेषण होते हैं। कृत्य (तव्य आदि) प्रत्यय, और निष्ठा (क्त, क्तवत्) प्रत्ययान्त पद समापिका क्रिया और विशेषण होते हैं और क्ति, ल्युट्, (अन) ण्वुल् (अक्) आदि प्रत्ययों से कृदन्तीय शब्द बनते हैं।

कृत् प्रत्ययान्त पद जब क्रिया होते हैं तब उनमें कर्तृवाच्य में कर्ता के लिङ्ग, वचन और विभक्ति और कर्मवाच्य में कर्म के लिङ्ग, वचन और विभक्ति होती है। जैसे, कर्तृवाच्य—स उक्तवान्, सा उक्तवती—उसने कहा। कर्मवाच्य—तेन फलं लब्धम्, तेन मुद्रा प्राप्ता—उसने फल, रुपया पाया।

कृत् प्रत्ययान्त शब्द जब विशेषण होता है तब वह कर्तृवाच्य में कर्ता का और कर्मवाच्य में कर्म का विशेषण होता है। जैसे, शूकरेणापि आगत्य प्रलयघनघोरगर्जनं कुर्वाणेन

व्याधः मुष्कदेशे हतः छिन्नमूलद्रुम इव पपात—आकर प्रलय काल के मेघ के समान घनघोर गरजते हुए शूकर के द्वारा अण्ड-कोश के स्थान पर आहत होकर व्याधा कटे हुए पेड़ के समान गिर पड़ा। इसमें 'कुर्वाणेन' शूकरेण, इसका कर्तृवाच्य में विशेषण है और 'हतः' व्याधः, इसका कर्मवाच्य में विशेषण है। 'शूकरेण' अपने विशेषण 'कुर्वाणेन' के साथ ही अनुक्त कर्ता में तृतीया है और 'हतः' व्याधः के विशेषण होने से कर्म में प्रथमा है।

तुम् तुमुन् (Infinitive Mood)

जब दोनों क्रियाओं का एक कर्ता हो तो निमित्तार्थबोधक धातु के आगे तुम् प्रत्यय होता है। जैसे, रामः अन्नं भोक्तुं व्रजति—राम अन्न खाने जा रहा है। इसमें खाना निमित्त है और खाने तथा जाने का कर्ता राम ही है (तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्।) तुमन्त पद अव्यय और असमापिका क्रिया होता है।

(क) हिन्दी में जहाँ 'खाने को' 'देखने के लिये' 'पढ़ने के वास्ते' 'जाने के निमित्त' 'देने के अर्थ' और अंग्रेजी में to go, to drink, to see आदि के अर्थ होते हैं वहीं तुम् प्रत्यय होता है जैसा कि ऊपर स्पष्ट है।

(ख) जहाँ निमित्तबोध नहीं होता वहाँ तुम् नहीं होता। जैसे, उसे पढ़ता देखा (I saw him read) इसका अनुवाद 'अहं तं पठितुमपश्यम्' नहीं होगा। क्योंकि यहाँ 'पढ़ते' क्रिया निमित्त में नहीं है। इसका अनुवाद 'अहं तं पठन्तमपश्यम्' होगा।

(ग) जब समापिका और असमापिका क्रिया का कर्ता अलग अलग हो तो तुम् प्रत्यय नहीं होता है। जैसे 'प्रभुः भृत्यं

गन्तुमादिशति'—मालिक नौकर को जाने के लिये कहते हैं। (The master orders the servant to go) ऐसा लिखना या बोलना गलत होगा। क्योंकि इसमें जाने का कर्ता भृत्य होता है, मालिक नहीं जाता और आज्ञा देने का कर्ता प्रभु है। इससे दोनों क्रियाओं के कर्ता भिन्न हो गये।

(घ) ऐसे वाक्यों के संस्कृत अनुवाद करने में निमित्तार्थ चतुर्थी का व्यवहार किया जाता है। जैसे, प्रभुः गमनाय भृत्यमादिशति।

(ङ) तुम्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, स्यतृ, स्यमान, क्वसु, कानच् के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

समानकर्तृक अर्थात् एक कर्ता होने से इच्छार्थक धातुओं के योग में अन्य धातुओं से तुम् होता है। जैसे, इच्छामि भोक्तुम्—खाना चाहता हूँ। पातुं व्यवस्यति—पीने की इच्छा करता है। पठितुं कामयते—पढ़ना चाहता है। (समानकर्तृकेषु तुमुन्)

समानार्थक शब्दों के योग में धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे, लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः—जो ललाट में लिखा है उसे कौन मिटा सकता है। पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुं—प्रजापालन में तुम योग्य हो। (पर्याप्तिवचनेषु अलमर्थेषु) ऐसे ही पटुः, कुशलः, निपुणः, क्षमः, योग्यः, अलम्, इत्यादि को भी समझना चाहिये।

टिप्पणी—अन्यार्थ में नहीं होता। जैसे, अलं रुदित्वा—रोना बेकार है, अर्थात् मत रोवो।

भेजने में, अनुमति देने में, क्रिया करने के उपयुक्त समय में उपस्थित होने आदि के अर्थ में काल, समय, वेला, अवसर आदि कालवाचक शब्दों के योग में तुम् प्रत्यय होता है। जैसे,

कालः, समयो, वेला वा भोक्तुम्—खाने का यहीं समय है। अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुं—अपने को प्रकट करने का यही अवसर है। (कालसमयवेलासु तुमुन्)

टिप्पणी—अन्य अर्थ में नहीं होता। जैसे, भूतानि कालः पचतीति वार्ता—काल जीवों को पका रहा है, यही वार्ता है।

शक् (सकना), धृष् (ढीठ होना), ज्ञा (जानना), ग्ला (मुर्झाना), घट् (चेष्टा करना), रभ् (आरम्भ करना), लभ् (पाना), क्रम् (चलना), सह (सहना), अर्ह् (पूजा करना) इन दस धातुओं के और अप्, भू, विद् प्रभृति अस्त्यर्थक धातुओं के योग में तुमुन् होता है। (शक् धृष्ज्ञा ग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्) जैसे, वक्तुं मिथः प्राक्रमतैवमेनम्—इस तरह उसने एकान्त में उससे कहना प्रारंभ किया। न विषेहे विपत्तिमवलोकयितुम्—वह विपत्ति देखना सह नहीं सका। अस्ति, विद्यते, भवति वा भोक्तुमन्नम्—खाने के लिये अन्न रक्खा है, इत्यादि।

टिप्पणी—उपर्युक्त दस धातुओं के अर्थवाचक अन्यान्य धातुओं के योग में भी तुम्—होता है। जैसे, न पारयामि निवेदयितुम्—निवेदन नहीं कर सकता। न युक्तमत्रावस्थातुं—यहाँ ठहरना उचित नहीं है।

काम और मनस् शब्द परे रहने पर तुम् के मकार का लोप हो जाता है। जैसे, स तत्र गन्तुकामः—वहाँ वह जाने-वाला है या जाना चाहता है। अहमिदं कर्तुमनाः—मैं यह करना चाहता हूँ।

कभी कभी अंग्रेजी का Infinitive mood संस्कृत में संज्ञा द्वारा अनूदित होता है। जैसे, To swim is very easy—सन्तरणमतिसुकरम्—तैरना बहुत सहज है। To sleep by day is bad—दिवास्वापोऽहितकरः—दिन का सोना बुरा है।

तुमन्त पद बचाने की एक रीति

लुट् लकार की ता विभक्ति के लोप करने से धातु का जो अवयव बच जाता है उसके आगे तुम् जोड़ देने से तुमन्त पद हो जायगा। जैसे, कर्ता—कर्तुम्, हाता-हातुम्, सेविता-सेवितुम्, नाशिता, नेष्टा—नशितुं, नेष्टुम्, इत्यादि।

तुम् प्रत्ययान्त कुछ पद

अद्—अत्तुम्, अस् या भू—भवितुम्, इ—एतुम्, अधि+इ—अध्येतुं, ईक्ष—ईक्षितुम्, कृष्—कर्ष्टुम्, क्री—क्रेतुम्, क्षम्—क्षन्तुम्, क्षिप्—क्षेप्तुम्, गुप्—गोप्तुं, गोपितुं, गोपायितुम्, गै—गातुम्, ग्रह्—ग्रहीतुम्, चि—चेतुम्, चिन्त्-चिन्तयितुम्, चुर्—चोरयितुम्, जागृ—जागरितुम्, तॄ—तरितुं, दंश्—दंष्टुम्, दह्—दग्धुं, दुह्—दोग्धुम्, दृश्—द्रष्टुम्, नश्—नष्टुम्, पा—पवितुम्, प्रच्छ्—प्रष्टुम्, ब्रू या वच्—वक्तुम्, भञ्ज्—भंक्तुम्, भुज्—भोक्तुम्, मृ—मर्तुम्, मुह्—मोग्धुं, मोहितुं, मोढुम्, यज्—यष्टुम्, रुह्—रोढुम्, लभ्—लब्धुम्, लिख्—लेखितुम्, वस् (वसना) वस्तुम्, वह्—वोढुम्, शी—शयितुम्, श्रु—श्रोतुम्, सह्—सहितुं, सोढुम्, सिच्—सेक्तुम्, सृज्—स्रष्टुम्, स्तु—स्तोतुम्, स्पृश्—स्प्रष्टुम्, स्मृ—स्मर्तुम्, हन्—हन्तुम्, ह्वे—ह्वातुम्।

---

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

गङ्गा स्नान करने चलो। इस काम को सिवा तुम्हारे दूसरा कौन कर सकता है। क्या तुम नयी पुस्तक पढ़ना चाहते हो? चोरी करना पाप है। वह अपने शत्रुओं को मारना चाहता है। दीनों की प्रार्थना स्वीकार करने की चेष्टा

करो। वहाँ जाने का मेरा मन है। तुम जानते हो कि कैसे बोलना चाहिये। हम जानते हैं कि तुम पास करने में समर्थ हो। खाने का यह समय है। वह गाना जानता है। तुम खुश करना जानते हो। मेरा नौकर बाजार से फल लाने गया है।

२. नीचे लिखे वाक्यों में बताओ कि किस कारण तुम् प्रत्यय का व्यवहार किया गया है—

त्वद्दते प्रापयितुं क ईश्वरः। पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति। जानासि देवीं विनोदयितुम्। न चेद्रहस्यं प्रतिवक्तुमर्हसि। समयः खलु स्नानभोजने सेवितुम्। पुनरपि वक्तुकाम इव आर्यो लक्ष्यते। तैर्विना नोत्सहे वस्तुम्। तथा विनिर्जेतुमियेष नैषधम्। अलं विलम्ब्य त्वरितुं हि वेला। अस्ति मे विभवः सर्वं परिज्ञातुम्। तपो महत् सा चरितुं प्रचक्रमे।

क्त्वा और ल्यप् (Indeclinable participle)

जब एक वाक्य में दो क्रियायों का एक ही कर्त्ता हो तो अनन्तर—बाद अर्थ में पूर्व क्रियाबोधक धातु के उत्तर क्त्वा प्रत्यय होता है। (समानकर्तृकयोः पूर्वकाले)। जैसे, स भुक्त्वा व्रजति-वह भोजन के अनन्तर-बाद जाता है। ये भी अव्यय हैं।

निषेध अर्थबोध होने से 'अलं' और 'खलु' शब्द के योग में क्त्वा विकल्प से होता है। (अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा) जैसे, अलं स्थित्वा श्मशानेऽस्मिन्—इस श्मशान में ठहरना व्यर्थ है। निर्द्धारितेऽर्थे लेखेन खलूक्त्वा खलु वाचिकम्—जब पत्र में लिख दिया तब जबानी कुछ कहना व्यर्थ है। जहाँ क्त्वा नहीं होता वहाँ तृतीया होती है। जैसे, अलं स्थित्या, खलु वचनेन।

धातु के पूर्व उपसर्ग सहित समास होने से क्त्वा का ल्यप् हो जाता है पर नञ् समास में नहीं। जैसे, अलं विलम्ब्याचल-राजपुत्रि—हे पर्वतराजकुमारी विलम्ब करना व्यर्थ है। नञ् समास में—शब्दमात्रान्न भेतव्यम् अज्ञात्वा शब्दकारणम्—शब्द का कारण न जानकर शब्द मात्र से ही नहीं डर जाना चाहिये।

विशेष—(१) ल्यप् प्रत्यय करने पर यम्, रम्, नम् और गम् धातु के मकार का विकल्प से लोप होता है। जैसे, विरत्य, विरम्य:; प्रणत्य, प्रणम्य; इत्यादि।

(२) कृत्प्रत्यय के जहाँ ककार या पकार का लोप होता है वहाँ ह्रस्व स्वरान्त धातु के आगे 'त्' आगम होता है। जैसे, प्रणत्य, इन्द्रजित् इत्यादि।

(३) ल्यप् प्रत्यय होने से णिच् का लोप हो जाता है। जैसे, वि + नाशि + ल्यप् = विनाश्य इत्यादि।

पर पूर्व स्वर लघु होने से णिच् के 'इ' का अय् हो जाता है। जैसे, विगणय्य नयन्ति पौरुषम् इत्यादि।

(क) जहाँ हिन्दी में, 'जाकर', 'खाकर', या 'खाने के अनन्तर, उपरान्त वा वाद' और अंग्रेजी में going, having gone, आदि से असमापिका क्रिया का अर्थ बोध होता है वहीं 'क्त्वा' और 'ल्यप्' होते हैं। जैसे, घर जाकर उसने अपनी माता को देखा। गृहं गत्वा स मातरमपश्यत् (Having gone home, he saw his mother.)

(ख) उद्दिश्य, वर्जयित्वा, अधिकृत्य इत्यादि कितने क्त्वा और ल्यप् प्रत्ययान्त पद हैं जो हिन्दी में अव्यय का और अंग्रेजी में Preposition का काम देते हैं। जैसे, नगरमुद्दिश्य प्रस्थितः—नगर की ओर चला (Went towards city.) पत्राणि वर्जयित्वा न किमपि प्राप्तम्—सिवा चिट्ठियों के या

चिट्ठियों के अतिरिक्त कुछ नहीं पाया (Without these letters did not get anything.) कतमत् प्रकरणमधिकृत्य गास्यामि—कौन विषय गाऊँ या किस विषय का गान करूँ (With reference to what subject shall I sing)

(ग) अनेक समापिका क्रियाओं को 'च' आदि अव्ययों के द्वारा जोड़ कर वाक्य बनाने की अपेक्षा पूर्वकालिक क्रियाओं से बनाना अच्छा होता है। जैसे, ग्रामं गत्वा मातापितरौ प्रणम्य आवश्यकवस्तून्यादाय पुनः प्रतिनिवृत्तः—घर जाकर और माता पिता को प्रणाम करके जरूरी चीजों को लेते हुए फिर लौट आया।

कुछ क्त्वा और ल्यप् प्रत्ययान्त पद

अद्—जग्ध्वा, प्र+अद्—प्रजग्ध्य, आप्—आप्त्वा, प्राप्य, कृ-कृत्वा, उपकृत्य, क्री-क्रीत्वा, वक्रीय, क्लिश-क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा, खन्—खनित्वा, खात्वा, गण्—गणयित्वा, गै—गीत्वा, गम्—गत्वा, आगत्य, आगम्य, ग्रह्—गृहीत्वा, प्रगृह्य, जि—जित्वा, पराजित्य, ज्ञा—ज्ञात्वा, विज्ञाय, तॄ—तीर्त्वा, वितीर्य्य, दा-दत्वा, आदाय, दृश—दृष्ट्वा, धा—हित्वा, विधाय, नश्—नशित्वा, नष्ट्वा, नंष्ट्वा, नह्—नद्ध्वा, संनह्य, नृत—नर्तित्वा, पा—पीत्वा, पू—पूत्वा, पवित्वा, पृच्छ्—पृष्ट्वा, आपृच्छ्य, प्र+नि+पत्—प्रणिपत्य, बन्ध्—बध्वा, ब्रू या वच्—उक्त्वा, भू—भूत्वा, अनुभूय, भ्रम्—भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा, भ्रस्ज्—भृष्ट्वा, मुह्—मुग्ध्वा, मोहित्वा, मुहित्वा, मुढ्वा, यज्—इष्ट्वा, रभ्—रब्ध्वा, आरभ्य, रुह्—रुढ्वा, आरुह्य, वद्—उदित्वा, वस्—उषित्वा, प्रोष्य, वह्-उढ्वा, विश्—विष्ट्वा, प्रविश्य, व्यध्-विद्ध्वा, शास्—शासित्वा, शिष्ट्वा, शी—शयित्वा, अधिशय्य, सह्—सोढ्वा, प्रसह्य, सृ—सृत्वा, उपसृत्य, सृज्—सृष्ट्वा, विसृज्य, स्था—स्थित्वा, प्रस्थाय,

स्वप्—सुप्त्वा, हा—हित्वा, विहाय, हृ—हृत्वा, प्रहृत्य, ह्वे-हूत्वा, आहूय इत्यादि।

टिप्पणी—प्रायः तुम् प्रत्यय के समान ही इसकी भी रूपरचना होती है।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

वह काम करके घर गया। खा लो तब जाओ। खाने के बाद थोड़ा आराम कर लो। पढ़ने के अनन्तर एक वार फिर उसे देख लेना चाहिये। पहाड़ पर चढ़कर हम बहुत सुन्दर दृश्य देखते हैं। माता पिता को प्रणाम करके पुत्र चल पड़ा। उसने अपना भोजन लेकर गरीव को दे दिया। आप पुस्तक बनाकर प्रसिद्ध हो गये। मैं आपको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। दोनों घोड़ों पर चढ़कर चले गये। मैं जलपान कर बाजार जाऊँगा। इस प्रकार विश्वास दिलाकर वहाँ रह गया। भूल-कर भी झूठ मत बोलो। मेरी बात सुन लो तब बोलो।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करो—

स चौरं पलायितुं ददर्श। मह्यं निवेदितुं स आगतः। अहं तमागन्तुं वदिष्यामि। स मम भारं वहितुं न समर्थः। नारायणं नमस्कृत्वा। वालं रोदितुमपश्यम्। कार्यं स्थिरीकृत्वा कलि-कातानगरं गच्छ। प्रोक्त्वा वार्तां मुनिः प्रतस्थे। स ब्राह्मणः बहु विमृष्ट्वा तं पशुं सारमेयं मत्यंभूमौ प्रक्षिप्त्वा, दैवं निर्भर्त्स-यित्वा स्वगृहमुद्दिश्य प्रस्थितः। मम क्रोडे मस्तकं स्थाप्य स्वपिहि। विस्मय मातरं कथं जीवसि? मत्संदेशं संगृहीत्वा द्रुतं गच्छ।

शतृ और शानच् (Present Participle)

लट् लकार (वर्तमानकाल) में कर्तृवाच्य में परस्मैपदी धातु से शतृ और आत्मनेपदी धातु से शानच् और उभयपदी धातुओं से दोनों होते हैं। (लटः शतृशानचावप्रथमा समानाधिकरणे) जैसे, ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति—गाँव पर जाते हुए घास छूता है। शीतेन कम्पमानो दरिद्रोऽग्निशरणं ययौ—जाड़े से काँपता हुआ गरीब आग के पास गया। कार्यं कुर्वन् कुर्वाणो वा पठति—काम करते हुए पढ़ता है।

(क) जहाँ हिन्दी में करते हुए, खाते हुए और अंग्रेजी में doing, eating आदि क्रियाद्योतक और participle रहते हैं उनका इन्हीं 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों से अनुवाद होता है। जैसे, लड़की हँसती हुई गयी–बालिका हसन्ती अगच्छत्। (The girl went smiling.) मैंने उसका गीत सुना—अहं तं गायन्तमश्रृण्वम् (I heard him sing.)

हिन्दी में 'जब कि', जाते ही जाते, और अंग्रेजी में while, when आदि रहते हैं वहाँ भी इन्हीं प्रत्ययों से अनुवाद होता है—जैसे, दुष्ट लड़के पढ़ते २ वा पढ़ने के समय, झगड़ते रहते हैं। दुष्टा बालकाः पठन्तः कलहायन्ते (Wicked boys quarrel while reading.) जब कि वह घर जा रहा था एक साँप देखा—गृहं न गच्छन् स सर्पमेकं ददर्श (When he was going home, he saw a snake.)

शतृ प्रत्ययान्त शब्द बनाने का यह एक साधारण सा नियम है कि धातु के अन्ति (प्रथम पुरुष third person बहुवचन) प्रत्यय के रूप से निकाल देने से जो बचता है यही पुंलिङ्ग में प्रथमा का एकवचन रूप हो जाता है। जैसे

'गच्छन्ति' 'पचन्ति' 'खादन्ति' वदन्ति'। इत्यादि में से 'ति' हटा देने से 'गच्छन्' 'पचन्' 'खादन्' 'वदन्' शब्द शतृ प्रत्ययान्त के पूर्वोक्त रूप हो गये। मूल रूप 'गच्छत्' है।

टिप्पणी—कितने धातु ऐसे हैं। जिनके लट् प्रथम पुरुष बहुवचन में 'अति' न होकर 'अत्' ही रहता है। शतृ प्रत्यय में उनके नान्त रूप न होकर तान्त ही रहते हैं। जैसे, शासत्, जाग्रत्, दरिद्रत्, चकासत्, जक्षत्, दिध्यत् और विव्यत् तथा जुह्वत्, विभ्यत्, ददत् इत्यादि जुहोत्यादि गण के धातु जो द्वित्व होते हैं।

दशों गणों के लट् की 'अन्ति' विभक्ति में जिन धातुओं से जो कार्य होते हैं वे सब कार्य शतृ प्रत्यय में भी होते हैं। जैसे कृष्—कर्षत्, स्था—तिष्ठत्, स्मृ—स्मरत्, इष्—इच्छत्, प्रच्छ्—पृच्छत्, व्यध्—विध्यत्, वन्ध्—वन्धत्, प्र+आप्—प्राप्नुवत्, अस्—सत्, हन्—घ्नत्, भुज्—भुञ्जत्, हा–जहत्, कथ्—कथयत्, अध्यापि—अध्यापयत् इत्यादि।

पुंलिङ्ग में शतृ प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गायत्' और स्त्रीलिङ्ग में नदी शब्द के समान होता है। जिन धातुओं के अन्त में अत् रहता है उनका रूप पुंलिङ्ग में भूभृत् शब्द के समान होता है।

जिस आत्मनेपदी धातु के उत्तर शानच् प्रत्यय करना हो उसके लट् लकार के आते विभक्ति में जो रूप होता है उससे आते हटा लेने पर जो बचता है उसके आगे आन जोड़ देने से शानच् प्रत्ययान्त हो जाता है। जैसे, अधी+शानच्=अधीयान (अधी+लट्+आते=अधीयाते; अधीयाते—आते=अधीय; अधीय+आन=अधीयान)।

आकार के परे (अर्थात् भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि गणीय धातुओं के) शानच् का 'आन' मान हो जाता है जैसे, सेव्—सेवमान, दीप्—दीप्यमान, इत्यादि।

लट् लकार की 'आते' विभक्ति में जो धातु सम्बन्धी कार्य होते हैं वे शानच् प्रत्यय करने पर भी होते हैं। जैसे, वृत्—वर्तमान, मृ—म्रियमाण, जन्—जायमान, पूर्—पूर्यमाण, भुज्—भुञ्जान, आस्—आसीन, मन्त्र्—मन्त्रयमाण।

कर्मवाच्य और भाववाच्य आत्मनेपदी होते हैं और उनमें स्वर के परे शानच् होने से आन के स्थान पर मान होता है। जैसे, भूयते—भूयमान, पीयते-पीयमान, कृ—क्रियमाण, वच्—उच्यमान इत्यादि।

शतृ और शानच् प्रत्ययों से जो शब्द बनते हैं वे विशेषण होते हैं, इसलिये इनमें विशेष्य ही के लिंग, वचन और विभक्ति होती है। जैसे, रुदती बालिका, रुदन्तौ बालकौ, पतत् फलं, सेवमाना नारी, कम्पमानौ छात्रौ, गच्छतः पुरुषस्य, गच्छन्त्याः स्त्रियः, शोभमानं बालकं, सेव्यमानो गुरुः, दृश्यमानं जगत् इत्यादि।

शतृ और शानच प्रत्ययान्त शब्दों के साथ आस् (बैठना), स्था (ठहरना, खड़ा होना), कभी भू और अस् आदि धातु भी व्यवहृत होते हैं जिससे काम का होता रहना (Continuity of action) प्रकट होता है। जैसे, स तदागमनं प्रतीक्षमाणः तस्थौ—उसके आने की बाट जोहता हुआ ठहरा। स द्वादश-वर्षाणि तत्र वसन् आस्ते—वह बारह वर्ष से वहाँ रहता है। स गच्छन्नस्ति—वह जा रहा है।

स्यतृ और स्यमान (Future Participles)

क्रिया की असमाप्ति बोध होने से भविष्यकाल में, कर्तृ-वाच्य में परस्मैपदी धातुओं से स्यतृ और आत्मनेपदी धातुओं से स्यमान प्रत्यय होते हैं। लृट् विभक्ति में धातुओं के जो

कार्य होते हैं वे इन प्रत्ययों में भी होते हैं और विषयों में ये शतृ शानच् ही के भाँति माने जाते हैं। जैसे, वक्ष्यमाणं वचनमुवाच—कहा जानेवाला वचन कहा। अनुयास्यन् मुनितनयां विनयेन मारितः—मुनिकन्या का पीछा करने ही वाला था कि विनय ने रोक दिया। भयेन कम्पिष्यमाणो नरः मरिष्यति—भय से जो काँपेगा वह मरेगा। कभी कभी इच्छा वा उद्देश्य बोध होने से भी ये प्रत्यय होते हैं। जैसे, करिष्यमाणः सशरं शरासनं—धनुष पर बाण चढ़ाने की इच्छा करते हुए। वन्यान् विनेष्यन् इव दुष्टसत्वान्—जंगली दुष्ट जानवरों को सुमार्ग में लाने के उद्देश्य से।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

दो लड़कियाँ हँसते २ घर जाती हैं। अपराधियों ने डरते २ कहा कि महाराज हमारा दोष नहीं है। तुमने उसे घर जाते देखा है? मैंने उसको यहाँ खेलते देखा है। जब वह नहा रहा था उसका कपड़ा बह गया। घर लौटते हुए मैंने अपने भाई को द्वार पर देखा। वह चिल्लाते हुए बोला। घर में पैठते नहीं देखा। रोते को रुलाना और सोते को जगाना न चाहिये। वह जाड़े के मारे काँप रहा है। खाये जानेवाले फल को खावो। दी जानेवाली वस्तु दे दो। आनेवाले अतिथि की पूजा करना। करनेवाले का काम देखना। घर जाते जाते लौट पड़ा।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करो—

शय्यायां शयन् कुमारः रुरोद। धनं लभन् हृष्यति। स्यन्दमानाः मे नेत्रे किमशुभं जनयिष्यतः। वयं तं पण्डितान् जानतः

तदन्तिकं पठितुं गताः । ते दीनेभ्यो धनं ददन्तः सुखी भवन्ति। भृत्यः कर्म कुर्वन् गम्यति। पतमानानि फलानि चिनुत। गुञ्जन्त्यः भ्रमराः पुष्पेभ्यः पुष्पाणि गच्छन्ति। जीवान् हन्तः पुरुषाः पापिनो भवन्ति। शिवं पूजयन्तः नार्य्यः ध्यायन्ति। पितरं सेवतः मे रात्रिर्गता। अग्निः सर्वान् दिशं मलियन् खाण्डवं ददाह। जाग्रन्तं पथिकमाह्वय। गमिष्यमाणं पुरुषं मा निवारय। क्लेशान् सहन् विद्यामर्जय। तेन सह युद्धन् तस्य प्राणाः गताः।

क्त और क्तवतु (Past Participles)

भूत काल में धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इन दोनों प्रत्ययों से बने हुए पद विशेषण होते हैं। इसलिये ये विशेष्य के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं। पुरुष के साथ इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। ये तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं और अकारान्त तथा वत्प्रत्ययान्त शब्द के समान इनके रूप होते हैं।

सकर्मक धातु के आगे कर्मवाच्य में क्त प्रत्यय होता है। ऐसे क्त प्रत्ययान्त शब्द कर्म के विशेषण होते हैं। जैसे, मया चन्द्रो दृष्टः—मैंने चन्द्रमा देखा। त्वया फलं भुक्तं—तूने फल खाया। तेन नदी विलोकिता—उसने नदी देखी।

कर्मवाच्यविहित क्तप्रत्ययान्त शब्द

अद्—जग्ध, खन्—खात, गुह्—गूढ़, ग्रन्थ्—ग्रथित, तृ-तीर्ण, त्रै—त्रात, दह्—दग्ध, आ+दा—आदत्त, आत्त, दृ—दीर्ण, पच्—पक्व, पुष्—पुष्ट, पुर्—पूर्ण, बन्ध्—बद्ध, भञ्ज्—भग्न, भ्रस्ज्—भृष्ट, मन्थ्—मथित, मा—मित, यज्—इष्ट, युज्—युक्त, रुध्—रुद्ध, लिह्—लीढ, लू—लून, वह्—

उदित, वह्—ऊढ, व्यध्—विद्ध, शास्—शिष्ट, सह्—सोढ, हा—हीन, ह्वे—हूत।

टिप्पणी—कर्मवाच्य में द्विकर्मक धातु के उत्तर क्त प्रत्यय होने से गौण कर्म के अनुसार नी, हृ, कृष् और वह् धातु के उत्तर क्त प्रत्यय होने से मुख्य कर्म के अनुसार और णिजन्त धातु के उत्तर क्त प्रत्यय होने से प्रयोज्य कर्ता के अनुसार जो कर्म हो जाता है, लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं। जैसे, छात्रैः अध्यापकः शब्दार्थं पृष्टः—विद्यार्थियों ने अध्यापक से शब्द का अर्थ पूछा। मया छागः ग्रामं नीतः—मैं बकरे को गाँव पर ले गया। गुरुणा शिष्यः शास्त्रं बोधितः—गुरु ने शिष्य को शास्त्र समझाया। (वाच्य प्रकरण देखो।)

अकर्मक धातु के आगे और कर्म की विवक्षा न रहने से सकर्मक धातु के उत्तर भाववाच्य में क्त प्रत्यय होता है। यह सदा क्लीबलिङ्ग प्रथमा एकवचनान्त होता है। जैसे, मया रुदितम्—मैं रोया। तेन कथितम्—उसने कहा।

सब धातुओं से, सब काल में भाववाच्य में क्त प्रत्यय होता है। ऐसे शब्द भाववाचक संज्ञा के समान व्यवहृत होते हैं और उनका रूप सब विभक्तियों में फल शब्द के समान होता है (नपुंसके भावे क्तः)। जैसे, जीवितं मे द्वितीयं—तू दूसरा जीवन ही है। जीवितेनालम्—जीना व्यर्थ है।

कर्तृवाच्यविहित क्तप्रत्ययान्त शब्द

क्रुध्—क्रुद्ध, क्लम्—क्लान्त, क्षि—क्षीण, क्षै—क्षाम, जन्—जात, जागृ—जागरित, जॄ—जीर्ण, दीप्—दीप्त, नश्—नष्ट, अस् or भू—भूत, भ्रन्श्—भ्रष्ट, भ्रम्—भ्रान्त, मस्ज्—मग्न, मुह्—मुग्ध, मूढ, रम्—रत, लस्ज्—लज्जित, ली—लीन, वस्—उषित, व्यथ्—व्यथित, शी—शयित, शुभ्—शोभित, शुष्—शुष्क, स्था—स्थित, पच्—पक्व।

गत्यर्थक धातु, अकर्मक धातु, शी, स्था, आस्, वस्, जन्, श्लिष्, जॄ और रुह् धातु के उत्तर भूतकाल में कर्तृवाच्य में क्त प्रत्यय होता है। (गत्यर्थाकर्मक श्लिषशीङ्स्थासवस जनरुहजीर्यतिभ्यश्च) जैसे, गृहं गतो देवदत्तः—देवदत्त घर गया। बालकः सुप्तः—लड़का सो गया। लक्ष्मीमाश्लिष्टो हरिः—हरि ने लक्ष्मी का आलिङ्गन किया। हरिः शेषमधिशयितः—हरि शेष पर सोये। हरिः वैकुण्ठमधिष्ठितः—हरि वैकुण्ठ में रहे। स शिवमुपासितः—उसने शिव की उपासना की। स हरिदिनमुपोषितः—वह एकादशी को उपास रहा। लक्ष्मणः राममनुजातः—राम के पीछे लक्ष्मण हुए। हरिः गरुड़मारूढः—हरि गरुड़ पर चढ़े। अनन्तः विश्वमनुजीर्णः—अनन्त संसार के बाद बुड्ढे हो गये।

निश्चलार्थक, गमनार्थक और भोजनार्थक धातुओं के उत्तर अधिकरण में क्त प्रत्यय होता है। जैसे, मुकुन्दस्यासितमिदम्—यहीं मुकुन्द बैठे थे। इदं यातं रमापतेः—रमापति के जाने का यही मार्ग है। भुक्तमेतदनन्तस्य—अनन्त ने यहीं भोजन किया था।

मत्यर्थक, बुद्ध्यर्थक और पूजार्थक धातुओं के परे वर्तमान काल में क्त प्रत्यय कर्मवाच्य में होता है। (मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च) जैसे, इदमस्माकं मतम्—यह हमारी राय है। विदितमेतद्भवतां—यह आप लोगों को मालूम है। सतां पूजितोऽयं मुनिः—यह मुनि सज्जनों से समादृत हैं।

टिप्पणी—शीलित, रक्षित, क्षान्त, आक्रुष्ट, जुष्ट, रुष्ट, रुषित, अभिव्याहृत, हृष्ट, तुष्ट, कान्त, संयत, उद्यत, दयित, स्निग्ध और ज्वलित—ये शब्द वर्तमान काल में क्त प्रत्यय करने से बने हैं।

भूतकाल में कर्तृवाच्य में सब प्रकार के धातुओं के उत्तर क्तवतु प्रत्यय होता है। क्तवतु प्रत्ययान्त पद समापिका क्रिया के कार्य करते हैं और कर्ता के विशेषण होते हैं। क्त प्रत्यय परे रहने पर धातु से जो कार्य होते हैं वे सब कार्य क्तवतु प्रत्यय करने पर भी होते हैं। पुंलिङ्ग में श्रीमत्, स्त्रीलिंग में नदी और नपुंसक में भी श्रीमत् की भाँति इसके रूप होते हैं। जैसे, तौ गृहं गतवन्तौ—वे घर गये। बालिका गीतं श्रुतवती—लड़की ने गीत सुना। वृक्षात् फलं पतितवत्—पेड़ से फल गिरा। छात्राः गुरुं प्रश्नं पृष्टवन्तः—लड़कों ने गुरु से प्रश्न पूछा।

क्तवत् प्रत्ययान्त शब्द

अधि + इ—अधीतवत्, कृ—कृतवत्, गम्—गतवत्, गै—गीतवत्, ग्रह्—गृहीतवत्, त्यज्—त्यक्तवत्, दा—दत्तवत्, धा—हितवत्, पठ्—पठितवत्, पा—पीतवत्, प्रच्छ्—पृष्टवत्, ब्रू or वच्—उक्तवत्, रुद्—रुदितवत्, लभ्—लब्धवत्, वप्—उप्तवत्, स्मृ—स्मृतवत्, हन्—हतवत्, हस्—हसितवत्, हृ—हृतवत्।

टिप्पणी—(क) 'क्त' प्रत्यय के आगे 'वत्' जोड़ देने से 'क्तवत्' प्रत्ययान्त और 'क्तवत्' से 'वत्' निकाल देने से 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द बन जाते हैं।

(ख) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य या कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाने में और अनुवाद करने में लट्, लिङ्, लुङ् लकार के रूप सहज न होने के कारण इन प्रत्ययों से ही वाच्यान्तर और अनुवाद का काम चला जा सकता है। जैसे, तेन व्याकरणमधीतं (कर्म०) स व्याकरणमधीतवान् (कर्तृ०) स साहित्यमधीतवान् वा अध्यगीष्ट (कर्तृ०) तेन साहित्यमधीतम् इत्यादि।

———

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का अनुवाद करो—

हम लोगों ने गंगास्नान किया। लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा। तुम लोगों ने मेरे भाई को उसके पास जाने की आज्ञा दी। गदहा जंगल में छोड़ दिया गया। मैं वहाँ सो गया। वह हँस पड़ी। वह नगर के लोगों का हाल जानता है। आकाश में तारे चमकते थे। वर्षा में गंगा बढ़ गयी थी। राजा ने अपराधियों को क्षमा किया। बाप ने बेटे को हृदय से लगाया। व्याध ने हरिण को बाण से मारा। बिल्ली से पकड़ा मूस देखा गया। बकरा गाँव में लाया गया। तुमने क्या कर लिया? पेड़ से पत्तियाँ झड़ीं। मुझसे कितने पाप किये गये। पास आये हुए शत्रुओं को देखकर सिपाहियों ने युद्ध ठाना। उनका हँसना और बोलना बहुत मधुर होता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को कारण बताकर शुद्ध करो—

ते तत्र गतः। अहं किं कृतम्। त्वं हसितम्। विद्यार्थिभिः वेदानधीतवन्तः। मया ते तत्र स्थापितम्। किं वयं गुरोः न अधीताः। अहं शिक्षकं पृष्टः। भगवता इदमासितम्। विदुषा तेन पूजितः। मया तस्मिन् दया कृतम्। पत्नी पति कथितवान्। देवाः विष्णुं स्तुवेत्। तत्र शूद्रकनाम्ना राज्ञा उषितवान्। अस्माकं सर्वाणि पापानि प्रनष्टवान्। बालकैः शय्यायां शयिताः। देवी ते करे धृता। मया बहु चेष्टितः। सैन्यं शत्रून् जितवान्। त्वया क्षेत्रं बीजानि वप्तानि फलञ्च लब्धः।

कृत्य प्रत्यय

(Future of Potential Passive Participle)

तव्यानीयौ च यच्च ण्यत् क्यप् चैते कृत्यसंज्ञकाः— तव्य, अनीय, यत्, ण्यत् और क्यप् ये पाँचों कृत्य प्रत्यय कहलाते हैं।

कर्म और भाववाच्य में भविष्यत्काल में, योग्यार्थ में, औचित्यार्थ में, शक्त्यर्थ में, आवश्यकार्थ में और अनुज्ञा में कृत्य प्रत्यय होते हैं। इनके क्रमशः उदाहरण लिखे जाते हैं— शिशुना शय्यायां शयितव्यम्—लड़का विस्तरे पर सोवेगा। त्वया कन्या वोढव्या—यह कन्या तुम्हारे व्याहने योग्य है। एकाकिना पथि न गन्तव्यम्—अकेले रास्ते में न जाना चाहिये। तेन भारो वोढव्यः—वह वोझ ढो सकता है। लुब्धकेन मृगमांसार्थिना गन्तव्यम्—बहेलिया मृगमांस के लिये जरूर जायगा। त्वया मम गृहं गन्तव्यम्—तुम मेरे घर जाओ।

टिप्पणी—कर्मवाच्य में कृत्यप्रत्यय निष्पन्न शब्द कर्म के विशेषण होते हैं और भाववाच्य में नपुंसक प्रथमा का एकवचन होता है। जैसे, मया लता द्रष्टव्या—मैं लता देखूँगा। मया फलं भोक्तव्यम्—मैं फल खाऊँगा। त्वया लज्जितव्यम्—तुमको लजाना चाहिये।

तव्य और अनीय

प्रत्येक धातु से तव्य और अनीय प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होते हैं, जैसा कि ऊपर कहा गया है, पर वस् धातु से तव्य प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है। जैसे, आसीत्कल्याणकटकवास्तव्यो भैरवो नाम व्याधः—कल्याणकटक में रहनेवाला भैरव नाम का एक व्याध है।

कुछ तव्य और अनीय प्रत्ययान्त शब्द

आप्—आप्तव्य, आपनीय, ई—एतव्य, अयनीय, कृ—कर्तव्य करणीय, गम्—गन्तव्य, गमनीय, ग्रह्—ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, चित्—चिन्तयितव्य, चिन्तनीय, जि—जेतव्य, जयनीय, त्यज्—त्यक्तव्य, त्यजनीय, नी—नेतव्य, नयनीय, प्रच्छ्—प्रष्टव्य, प्रच्छनीय, ब्रू or वच्—वक्तव्य, वचनीय, भी—भेतव्य, भयनीय,

भू—भवितव्य, भवनीय, भृ—भर्तव्य, भरणीय, लभ्—लब्धव्य, लभनीय, वह्—वोढव्य, वहनीय, शी—शयितव्य, शयनीय, श्रु—श्रोतव्य, श्रवणीय, सृज्—स्रष्टव्य, सर्ज्जनीय, स्था—स्थातव्य, स्थानीय, स्पृह्—स्पृहयितव्य, स्पृहणीय, स्मृ—स्मर्तव्य, स्मरणीय, ह्वे—होतव्य, ह्वनीय, हृ—हर्तव्य, हरणीय।

ण्यत्

ऋकारान्त और व्यञ्जनान्त धातु के उत्तर ण्यत् होता है। जैसे, तेन एतत् धार्यम्—उसे यह धारण करना चाहिये। मया पुस्तकं पाठ्यम्—मैं पुस्तक पढ़ूँगा या मुझे पुस्तक पढ़ना चाहिये या पुस्तक पढ़ना मेरा कर्तव्य है।

कुछ उदाहरण

कृ—कार्य, भृ—भार्य, हृ—हार्य, स्मृ—स्मार्य, पच्—पाच्य, वच—वाच्य, (शब्दार्थ में) वाक्य, त्यज्—त्याज्य, भुज्—भोज्य, (भोगार्थ में) भोग्य, युज्—योज्य, योग्य (उपयुक्तार्थ में), छिद्—छेद्य, विद्—वेद्य, बुध्—बोध्य, मन्—मान्य, भक्ष्—भक्ष्य, श्वस्—श्वास्य, हस्—हास्य, ग्रह्—ग्राह्य, वह्—वाह्य, दह्—दाह्य, भव्—भाव्य।

यत्

स्वरान्त धातु, पवर्गान्त धातु और शक्, सह् आदि धातुओं के उत्तर यत् प्रत्यय होता है। स्वरान्त धातु के 'आ' का 'ए' हो जाता है। जैसे, सुशीलैः बालकैः कुसङ्गः हेयः—अच्छे लड़कों को कुसङ्ग छोड़ देना चाहिये। तेनार्थो लभ्यः—उसे धन मिलना चाहिये। त्वया दुःखं सह्यम्—तुमको दुःख सहना चाहिये।

कुछ अन्य उदाहरण—चि—चेय, जि—जेय, नी—नेय, दा—देय, पा—पेय, धा—धेय, मा—मेय, हा—हेय, स्था—स्थेय, ज्ञा—ज्ञेय, श्रु—श्रव्य, भू—भव्य, शप्—शप्य, लभ्—लभ्य, गम्—गम्य, नम्—नम्य, रम्—रम्य, शक्—शक्य।

क्यप्

इ, दृ, भृ, कृ, जुष्, शास् और स्तु धातुओं के आगे क्यप् प्रत्यय होता है। जैसे, मया शिवः जुष्यः स्तुत्यो वा—मुझे शिव की सेवा करनी चाहिये।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत अनुवाद करो—

हम लोगों को अपने देश का इतिहास और भूगोल जानना चाहिये। असत्य बोलना उचित नहीं है। किसी की घृणा मत करो। प्रातःकाल ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये। इस अपराध के लिये उसे दण्ड दो। कुसंगति में मत रहो। स्वच्छ भोजन और साफ पानी पीना चाहिये। तुम श्लोक का अर्थ समझ सकते हो। विद्यार्थी गुरुओं से सन्देह निवृत्त कर लें। भाई सावधान हो जावो। किये हुए काम का फल भोगोगे। वहाँ न जावो। सबको अपना कर्तव्य पालन करना उचित है। बिना हवा पानी के आदमी कैसे जी सकता है?

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

न स्थातव्यों न गन्तव्यो दुर्जनेन समं क्वचित्। प्रवृत्तिःकुत्र कर्तव्यः जीवितव्यः कथं नु वा। राज्ञा मन्त्रिणः प्रच्छितव्यः। स देवी पूजनीयः। मया अर्था लब्धव्यानि। प्रभाते शयनं न कर्तव्यः। महापुरुषेषु भक्तिः विधेयः। कथमियं दुःखरात्रिर्यापः

नीया। पालनीया गुरोर्वचः। युक्तियुक्तमुपादेयः वचनं बालिकादपि। क्षन्तव्यं मेऽपराधः। शत्रोरपि गुणा वाच्यः।

कुछ अन्य कृदन्त प्रत्यय

भाववाच्य में धातुओं से क्ति प्रत्यय होता है। 'क्ति' का केवल 'ति' रहता है। जैसे, मतिः, बुद्धिः, नीतिः दृष्टिः, शान्तिः, गतिः, प्रीतिः इत्यादि। क्ति प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। (स्त्रियां क्तिन्)

भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाच्य में घञ् प्रत्यय हाता है। जैसे, पाकः, भागः, त्यागः, नाशः इत्यादि। अकर्तरि च कारके घञ्) घञ् प्रत्ययान्त शब्द पुलिङ्ग ही होता है।

भाववाच्य में धातुओं से 'अ' प्रत्यय भी होता है। जैसे, भवः, कोपः, तोषः, हर्षः, जपः, मदः इत्यादि।

भाववाच्य में धातु के उत्तर ल्युट् (अन्) होता है। जैसे, गमनं, शयनं, भोजनम् इत्यादि। करण और अधिकरण अर्थ में 'अन' होता है। जैसे, करणम् (जिससे किया जाय), शयनम् (जिस पर सोया जाय)। (भावकरणाधिकरणेषु ल्युट्) अन प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक होते हैं।

कर्तृवाच्य में धातु से उत्तर तृच् (तृ) और ण्वुल् (अक्) ये दोनों प्रत्यय होते हैं। जैसे—कर्ता, योद्धा, भविता, नेता, वेत्ता, सेविता, गन्ता इत्यादि। पाचकः, पाठकः, नायकः, मायकः, पालकः, दायकः, सेवकः, जनकः, रोधकः, इत्यादि। (ण्वुल्तृचौ) तृच् और अक् प्रत्ययान्त शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं।

कर्तृवाच्य में धातु के उत्तर 'णिन्' (इन्) होता है जैसे,

प्रवासी, विद्रोही, अधिकारी, अभिलाषी, स्थायी, द्वेषी, संचारी इत्यादि ।

सुबन्त पद के परवर्ती भिन्न २ धातुओं के उत्तर भिन्न २ अर्थों में यह प्रत्यय होता है। जैसे, उष्णभोजी—गरम खाने की इच्छा रखनेवाला। मनोहारी, अग्रयायी, मिथ्यावादी, मित्रघाती इत्यादि ।

'पच्' आदि धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे, पच्—पचः, दिव्—देवः, चल्—चलः, धृ—धरः इत्यादि ।

सुबन्त पद के परवर्ती भिन्न धातुओं के उत्तर भिन्न २ अर्थों में यह प्रत्यय होता है। जैसे, शोकहरः, पूजार्हः धनदः, सर्वज्ञः, मधुपः, प्रकृतिस्थः, पङ्कजम्, पारगः, पतङ्गः, शोकापहः, प्रभाकरः, हितकरः, अग्रसरः, रात्रिचरः, मित्रघ्नः इत्यादि ।

कर्मवाच्य पद के परवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अण् होता है। जैसे—कुम्भकारः, सूत्रधारः, तन्तुवायः, वारिवाहः, भाष्यकारः इत्यादि ।

सु, दुर् और ईषत् परवर्ती धातुओं से कर्म और भाववाच्य में खल् होता है। जैसे—सुकरः, दुष्करः, ईषत्करः, सुवहः दुर्लभः, दुःशासनः इत्यादि।

सन्नन्त, आशंस् और भिक्ष् धातु से 'उ' होता है। जैसे—लिप्सुः, पिपासुः, आशंसुः, भिक्षुः इत्यादि ।

उपमानवाचक तद्, यद्, एतद्, भवत्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस्, किम्, अन्य और समान शब्दों के आगे दृश् धातु से क्विप् और क्स प्रत्यय होते हैं और नीचे लिखे रूप होते हैं—जैसे, तादृक् तादृशः—उनके ऐसा। त्वादृशः—तुम्हारे ऐसा। सदृक् सदृशः—तुल्य दिखाई पड़ने वाला।

तादृक् तादृशः, यादृक् यादृशः, एतादृक् एतादृशः, भवादृक भवादृशः, युष्मादृक् युष्मादृशः, अस्मादृक् अस्मादृशः, ईदृक् ईदृशः, अमूदृक् अमूदृशः, कीदृक् कीदृशः, अन्यादृक् अन्यादृशः, सदृक् सदृशः।

द्वितीय प्रकरण

तद्धित (Nominal Affixes)

शब्दों के परे जिन प्रत्ययों के लगाने से फिर शब्द बनते हैं उनको तद्धित कहते हैं और जो शब्द बनते हैं वे तद्धितान्त शब्द कहाते हैं। तद्धित प्रत्यय बहुत हैं। उनमें से वे प्रत्यय लिखे जाते हैं जो अधिकतर प्रयुक्त होते हैं।

अपत्य अर्थ में षण्, ष्यण्, षीयण्, षायनण्, षिण्, षिकण् और षेयण् प्रत्यय होते हैं। इनमें से ष और ण उड़ जाते हैं।

षण्—पृथाया अपत्यं पार्थः, शिव—शैवः, पुत्र—पौत्रः, पाण्डु—पाण्डवः, रघु—राघवः इत्यादि।

टिप्पणी—'णित्' तद्धित प्रत्यय होने पर प्रायः आदि स्वर की वृद्धि होती है और तद्धित प्रत्यय के 'स्वरवर्ण' और 'य' परे रहने से शब्द के अ, आ, इ, ई का लोप हो जाता है और उ, ऊ रहने से गुण हो जाता है, जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में स्पष्ट है। पदान्त य् और व् के पूर्व में ऐ और औ का आगम होता है।

ष्यण्—गर्गस्यापत्यं गार्ग्यः; चाणक—चाणक्यः, दिति—दैत्यः, अदिति—आदित्यः, माधव—माधव्यः।

षीयण्—स्वसुरपत्यं—स्वस्रीयः।

षायनण्—बदरस्यापत्यं बादरायणः, नर-नारायणः, दत्त-दात्तायणः, अश्वल—आश्वलायनः।

पिण्—दशरथस्यापत्यं दाशरथिः, सुमित्रा—सौमित्रिः, द्रोण—द्रौणिः, शूर—शौरिः ।

पिकण्—रेवत्या अपत्यं रैवतिकः, अश्वपाली-आश्वपालिकः ।

पेयण्—गङ्गाया अपत्यं गाङ्गेयः, विनता—वैनतेयः, राधा—राधेयः, भगिनी—भागिनेयः ।

ऊपर लिखे हुए प्रत्यय अन्यान्य अर्थों में भी होते हैं। जैसे-

तदधीते तद्वेद—(उसको पढ़ता है वा जानता है) तर्कमधीते वेत्ति वा तार्किकः, ऐतिहासिकः, पौराणिकः, नैयायिकः, वैदिकः (षिकण्), वैयाकरणः (षण्) ।

तेन प्रोक्तम्—(उसने कहा है) ऋषिणा प्रोक्तम् आर्षं, मानवं (षण्) मानवीयं, पाणिनीयं, वाल्मीकीयं (षीयण्) ।

तेन कृतम्—(उसने किया है) कायेन कृतं कायिकं, वाचिकं, मानसिकं, वाचनिकं, साहसिकम् , आह्निकम् (षिकण्) ।

तेन रक्तम्—(उससे रँगा गया है) हरिद्रयां रक्तं हारिद्रं, काषायं, कौसुम्भं, माञ्जिष्ठम् ।

सास्य देवता—(यह उसके देवता हैं) शिवोऽस्य देवता शैवः, वैष्णवः, शाक्तः, पाशुपतः, सूर्य—सौरः (षण्), आग्नेयः (षेयण्), प्राजापत्यः (ष्यण्) ।

तत्र भवः—(वहाँ हुआ है) मथुरायां भवः माथुरः, भौमाः, शारदः, मनसि भवं मानसं (षण्) नागरिकः, वर्षा—वार्षिकः, वासन्तिकः (षिकण्), प्राच्यं, दिव्यं, आद्यं, अन्त्यं, अग्र्यं, ग्राम्यः (ग्रामीणः), दन्त्यम् (ष्यण्) ।

तत्र साधुः—(उसमें अच्छा है) सभायां साधुः सभ्यः, ब्राह्मण्यः (ष्यण्) सामाजिकः, संग्रह—सांग्राहिकः (षिकण्), आतिथेयः (षेयण्) ।

तत्र देयम्—(देना आवश्यक है) मासे देयं मासिकं, वार्षिकं, आब्दिकम् (ष्किण्)। दैनिक, मासिक और वार्षिक शब्द अन्यान्य कई अर्थों में भी बनते हैं।

तदर्हति—(उसके योग्य है) दण्डमर्हति दण्ड्यः, वध्यः, भेद्यः, अर्घ्यः (ष्यण्)।

तस्येदम्—(यह उसका है) शिवस्येदं शैवं, दैवं, भारतं, मानसं, पार्थिवं, गाङ्गं (षण्) जलीयं, युष्मदीयं, त्वदीयं, भवदीयं, अन्यदीयं, परकीयं, स्वीयं, (षीयण्), साम्राज्यं (ष्यण्)

तस्य विकारः—(उसका विकार वा उससे बना) सुवर्णस्य विकारः सौवर्णः, राजतः, पावसः, तैलम् (षण्)।

तदस्य पण्यम्—(उसकी यह बेचने की चीज है) लवणमस्य पण्यं लावणिकः, ताम्बूलिकः, तैलिकः (ष्किण्)।

तदस्य वयः—(यह उसकी उम्र है) द्वे वर्षे अस्य वयः द्विवार्षिकः, द्विवर्षीयः, पंचवर्षः, पञ्चवर्षीयः, पञ्चवार्षिकः ये क्रमशः षण् , ष्किण् और षीयण् प्रत्ययों से बनते हैं। द्विवर्षीणः, पञ्चवर्षीणः भी होता है।

तस्मादनपेतम्—(उससे अलग नहीं है) धर्मादनपेतं धर्म्यं, न्याय्यम् , पथ्यम् (ष्यण) वैधं (षण्), शास्त्रीयं (षीयण्)।

तेन जीवति—(उससे जीता है) वेतनेन जीवति वैतनिकः, जालिकः, नाविकः, व्यावहारिकः (ष्किण्)।

अधिकृत्य कृते ग्रन्थे— भगवन्तमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः भागवतं (षण्), रामायणम् (षायनण्), किरातार्जुनीयम् (षीयण्)।

सोऽस्य निवासः—(वहाँ उसका निवास-स्थान है) मिथिला अस्य निवासः मैथिलः, मागधः, वैदेहः (षण्), राजा अर्थ में भी होता है। मगधस्य राजा मागध इति।

तस्य भावः कर्म वा—(उसका भाव वा कर्म) चौरस्य भावः

चौर्य्यं, आलस्यं, वाणिज्यं, धैर्य्यं, राज्यं, स्थैर्य्यं (ष्यण्), शैशवं, गौरवं, अशौचम् (षण्)।

स्वार्थे- (अपने अर्थ में) वन्धुरेव बान्धवः, रक्ष एव राक्षसः, प्रज्ञ एव प्राज्ञः (षण्), करुणा एव कारुण्यं, सैन्यं, सौख्यं, सामीप्यं (ष्यण्)।

इतरेष्वपि दृश्यन्ते—अन्यान्य अर्थों में भी यथासम्भव ये प्रत्यय होते हैं। जैसे, धर्मं चरति धार्मिकः, वशं गतः वश्यः; पृथिव्या ईश्वरः पार्थिवः, द्वारे नियुक्तः दौवारिकः, रथेन सञ्चरते रथिकः, वयसा तुल्यः वयस्यः, निमित्तेन क्रियते दीयते वा नैमित्तिकमित्यादि।

तस्यभावस्त्वतलौ—भावार्थ में त्व और तल् प्रत्यय होते हैं। जैसे, प्रभोर्भावः प्रभुत्वं प्रभुता, गुरुत्वं गुरुता, लघुत्वं लघुता इत्यादि।

टिप्पणी—समूहार्थ में ग्राम, जन और वन्धु के परे तल् प्रत्यय होता है। जैसे, जनानां समूहः जनता, ग्रामता, बन्धुता।

वा नीलादेरिमनि :—भावार्थ में नील आदि शब्दों के परे विकल्प से इमन् प्रत्यय होता है। जैसे, नीलस्य भावः नीलिमा। ये इस प्रत्यय के विशिष्ट प्रयोग हैं—गुरु गरिमा, लघु—लघिमा, पृथु-प्रथिमा, मृदु-म्रदिमा, दृढ-द्रढिमा, प्रिय—प्रेमा, महत्-महिमा, दीर्घ—द्रघिमा, ह्रस्व—ह्रसिमा। विकल्प से तल् प्रत्यय भी होते हैं। नीलत्वं नीलता, गुरुत्वं गुरुता, प्रियत्वं प्रियता इत्यादि।

औपम्ये वतिच्—सादृश्य बोध होने से वतिच् (वत्) होता है। जैसे, चन्द्र इव मुखं चन्द्रवत् मुखं। पितरमिव पूजयति पितृवत् पूजयति। हिमवत्, ब्राह्मणवत्, मातृवत्। (यह अव्यय होता है।)

तारकादिभ्य इतच्—तारकादि शब्दों के परे संजात—उत्पन्न

इस अर्थ में इतच् (इत) प्रत्यय होता है। जैसे, तारका अस्मिन् संजाता इति तारकितं नभः, फलितः, पण्डितः, पिपासितः, दुःखितः, पुलकितः, अङ्कुरितः, निद्रितः इत्यादि।

अस्त्यर्थे मतुप्—अस्ति (है) अर्थ में शब्दों के परे मतुप् (मत् या वत्) प्रत्यय होता है। जैसे, मतिरस्यास्ति मतिमान्, श्रीमान्, बुद्धिमान्, अंशुमान् इत्यादि।

जिन शब्दों के अन्त में ङ, ञ, ण, न भिन्न स्पर्श वर्ण (क ख से लेकर भ म तक) रहे ऐसे शब्दों के आगे, अकारान्त और आकारान्त शब्दों के परे तथा जिन शब्दों के अन्त्य वर्ण के पहिले अ वा म रहे तो मतुप् के म का व हो जाता है। जैसे—तडित्वान्, विद्युत्वान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्, भास्वान्, लक्ष्मीवान् इत्यादि। अपवाद—यव, वसा, द्राक्षा, गुरुत्, हरित्, मरुत्, ककुद्, ऊर्मि, भूमि और कृमि शब्दों के मतुप् के म का व नहीं होता।

अस्मायामेधास्रजोविनिर्वा—अस्ति अर्थ में अस् भागान्त शब्द माया, मेधा और स्रज् शब्द में विकल्प से विन् होता है। जैसे, यशोऽस्यास्तीति यशस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी इत्यादि। पक्ष में मतुप् होता है। जैसे, यशस्वान्, तेजस्वान् इत्यादि।

इन् वा नैकस्वरादवर्णात्—अस्ति अर्थ में एक से अधिक स्वर विशिष्ट अकारान्त और आकारान्त शब्दों के उत्तर इन् विकल्प से होता है। जैसे, ज्ञानमस्यास्तीति ज्ञानी, धनी, बली, विवेकी, साहसी इत्यादि। पक्षे ज्ञानवान्, धनवान्, बलवान् इत्यादि।

टिप्पणी—अर्थ शब्दान्त, प्रणय, सुख, दुःख, हस्त, कर आदि शब्दों से नित्य इन् होता है। जैसे—विद्यार्थी, प्रणयी, सुखी, दुःखी, हस्ती, करी इत्यादि।

दो में से एक के उत्कर्ष समझे जाने से तरप् और ईयस्

तथा बहुतों में से एक के उत्कर्ष समझे जाने पर तमप् और इष्ठन् प्रत्यय होते हैं। जैसे, अयमनयोः लघुः लघुतरः, लघीयान् इत्यादि। अयमेषामतिशयेन लघुः लघुतमः, लघिष्ठः इत्यादि। (विशेषण में तुलना का प्रकरण देखो)

ईषदूने कल्पदेश्यदेशीयाः—ईषदून (थोड़ा कम) अर्थ बोध होने से शब्द के उत्तर कल्प, देश्य और देशीय प्रत्यय होते हैं। जैसे, पितुः ईषदूनः = पितृकल्पः, पितृदेश्यः, पितृदेशीयः।

विकारावयवव्याप्तिसंसर्गापृथग्भावेषु मयट्—विकार, व्याप्ति, अवयव, संसर्ग, अपृथग्भाव अर्थ समझे जाने से शब्दों के परे मयट् प्रत्यय होता है। जैसे, विकार में—स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयः, मृण्मयः, व्याप्ति—जलेन व्याप्तं जगत् जलमयं, धूममयं; अवयव—अन्नानि अस्य अवयवाः अन्नमयो यज्ञः, काष्ठमयः; अपृथग्भाव (अलग न रहना)—विष्णोः अपृथग्भूतं विष्णुमयं जगत्, घृतमयं, पापमयं, ब्रह्ममयम् इत्यादि।

धाच् संख्याया विधार्थे—विधार्थ (प्रकार) बोध होने से शब्द के उत्तर धाच् प्रत्यय होता है। जैसे, एका विधा एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षड्धा ·· षोढा।

थाल् प्रकारे तृतीयायाः—प्रकार अर्थ में सर्वनाम के परे तृतीया विभक्ति में थाल् प्रत्यय होता है। जैसे, सर्वैः प्रकारैः सर्वथा, येन प्रकारेण यथा, तथा, उभयथा, अन्यथा इत्यादि।

टिप्पणी—कथम् और इत्थम् निपातन से सिद्ध होते हैं।

पञ्चमीसप्तम्योः तसिल् वा—पञ्चमी और सप्तमी विभक्ति के स्थान में तसिल् प्रत्यय होता है। जैसे, गृहात् वा गृहे—गृहतः, तस्मात् वा तस्मिन्—ततः, यतः, अतः, कुतः, इतः, अस्मत्तः, सर्वतः, अग्रतः, पूर्वतः इत्यादि।

सप्तम्यास्त्रल् वा सर्वनाम्नः—युष्मदस्मद् शब्दभिन्न सर्वनाम

और बहु शब्द की सप्तमी विभक्ति में त्रल् होता है। जैसे, सर्वस्मिन्—सर्वत्र, एकत्र, कुत्र, अत्र, यत्र, अमुत्र, बहुत्र, इत्यादि। अन्यत्र पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे, इदम्—इतः, (पञ्चमी) इह (सप्तमी)।

सर्व्वैकान्यकिंयत्तदां काले दा—काल बोध होने से सर्व, एक, अन्य, किम्, यद् और तद् शब्द की सप्तमी विभक्ति में विकल्प से दा प्रत्यय होता है। जैसे, एकदा, सर्वदा (सदा) अन्यदा, किम् आदि के परे 'हि' भी होता है कदा (कर्हि), यदा (यर्हि), तदा (तर्हि, तदानीं)। इदम् का 'इदानीम्' होता है।

किमः चिच्चनौ विभक्त्यन्तात्—अनिश्चय अर्थ बोध होने से विभक्तियुक्त किम् शब्द से परे चित् और चन् प्रत्यय होते हैं। जैसे—कश्चित्, कश्चित्, किञ्चित्, केचन, कस्मैचित्, कुत्रचित्, कुतश्चन, कदाचित् इत्यादि।

भवे कालाव्ययेभ्यः तनप्—उत्पत्ति अर्थ बोध होने से कालवाचक अव्यय से परे तनस् (तन) प्रत्यय होता है। जैसे, अद्यभवम् अद्यतनं, प्रातस्तनं, सायन्तनं, चिरन्तनं, पुरातनं, इदानींतनम् इत्यादि।

टिप्पणी—उत्पन्न अर्थ में त्रल् आदि प्रत्ययान्त शब्दों के परे त्य प्रत्यय होता है। जैसे, कुत्र भवः कुत्रत्यः, कुतस्त्यः, तत्रत्यः, अत्रत्यः।

एद्युस् पूर्वादेरहनि—दिन बोध होने से पूर्व आदि शब्दों के उत्तर एद्युस् होता है। जैसे, पूर्वस्मिन्नहनि पूर्वेद्युः, परेद्युः, अन्येद्युः, अपरेद्युः, उभयेद्युः।

ह्यः सद्योऽद्य श्वः परेद्यवि—दिवस बोध होने से विभक्ति सहित पूर्व शब्द के स्थान में 'ह्यः' समान शब्द के स्थान में 'सद्यः, इदम् के स्थान में 'अद्य' पर के स्थान में 'श्वः' और 'परेद्यवि' आदेश होते हैं।

कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे च्विः—अभूततद्भाव (पहले नहीं था अब हुआ है) अर्थ में भू , अस् और कृ धातु के योग में च्वि प्रत्यय होता है। जैसे, अशुक्लः शुक्लो भवति शुक्लीभवति, शुक्ली स्यात्, अशुक्लं शुक्लं करोतीति शुक्लीकरोति। गङ्गीकरोति, लघूकरोति, विमनीभवति, उच्चक्षूभवति, विरहीकरोति, विचेताःकरोति इत्यादि।

टिप्पणी—अकारान्त और आकारान्त शब्दों के अन्त्य ह्रस्व स्वर का 'ई' होता है, ह्रस्व स्वरान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का दीर्घ होता है और अरुस्, मनस्, चक्षुस्, रहस् और रजस् शब्द के 'स' का लोप होता है।

अज्ञातकुत्सिताल्पह्रस्वानुकम्पासंज्ञासु कन्—अज्ञात, कुत्सित, अल्प, ह्रस्व, अनुकम्पा (दया) अर्थ में स्वार्थ में कन् होता है। जैसे, अज्ञात—कस्यायमश्वः अश्वकः, गर्दभकः। कुत्सित—कुत्सितः, अश्वः—अश्वकः, महिषकः। अल्प-अल्पं तैलं तैलकं, सलिलकम् ह्रस्व—ह्रस्वो वृक्षो वृक्षकः, दण्डकः। अनुकम्पा-अनुकम्पितः, पुत्रः—पुत्रकः, दुर्बलकः आदि।

टिप्पणी—स्त्रीलिङ्ग प्रत्ययों के साथ क प्रत्यय होने से अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे, कालिका, दूतिका, मालविका, यूथिका इत्यादि।

प्रमाणे मात्रच्—परिमाण अर्थ में शब्द के उत्तर मात्रच् प्रत्यय होता है। जैसे, हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रं, तालमात्रं, जानुमात्रम् आदि।

परिणताधीनदेयेषु सातिच्—परिणत (एकदम बदल जाना), अधीन और देय अर्थ में सातिच् प्रत्यय होता है। जैसे, धूलिरूपं करोति—धूलिसात् करोति, राजाधीनं करोति—राजसात् करोति, विप्राय देयं—विप्रसात् इत्यादि।

यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्—परिमाण अर्थ में यत्, तद् और

यतद् शब्द के उत्तर वतुप् प्रत्यय होता है और द का आ हो जाता है। जैसे, यत् परिमाणमस्य यावत्, तावत् और एतावत्।

अभ्यास।

१. नीचे लिखे वाक्यों का तद्धितान्त शब्दों का प्रयोग करके संस्कृतानुवाद करो—

व्याकरण जाननेवाले शुद्ध लिखते हैं। वह मुझे पिता के समान प्यार करते हैं। प्रायः सब धातु सोने से हलके होते हैं। सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण राम के साथ वन गये। विष्णु के भक्त उनकी पूजा करते हैं। फुलवाड़ी में बहुत से फूले हुए फूल हैं। उसकी वर्ष भर की आमदनी क्या है? क्षमा करनेवाले लोग अच्छे होते हैं। दूसरे ही दिन वह मर गया। कल वह चला गया। तू कब यहाँ आया? लड़कपन से ही विद्या पढ़ो।

२. इनके प्रकृति प्रत्यय बताकर अर्थ बताओ—

दण्ड्यः, कदा, विमनोभवति, श्वः, हतः, जालिकः, औपम्यं, आत्मवत्, हारिद्रं, कुतः, प्रथिमा, भास्वान्, ब्राह्मः, तारकितं, पितृकल्पः, तिलमात्रं, नैयायिकः।

३. नीचे लिखे प्रत्ययों को जोड़ कर पाँच २ शब्द बनावो—

मतुप्, विन्, इतच्, मयट्, तसिल्, सात्, इमन्, षण्, षिकण् और ढेयण्।

तीसरा प्रकरण

स्त्रीप्रत्यय (Feminine Affixes)

अदन्तादाप्—अकारान्त शब्दों के आगे स्त्रीलिङ्ग में आप् होता है। जैसे, अचल—अचला, कृपण—कृपणा, सरल—

सरला, प्रथम—प्रथमा, अनुकूल—अनुकूला, पूर्व—पूर्वा, निपुण—निपुणा इत्यादि।

आपिप्रत्ययकात् पूर्वस्यात इत्—अक भागान्त शब्दों के उत्तर 'आ' प्रत्यय होने से ककार के पूर्व आकार का इकार होता है। जैसे, पाचक—पाचिका, साधक—साधिका, गायक—गायिका, बोधक—बोधिका इत्यादि।

टिप्पणी—'अष्टका' प्रभृति शब्दों के अकार का इकार नहीं होता। जैसे—अष्टका, इष्टका, चटका, करका, कन्यका, तारका, उपत्यका, अधित्यका, अलका इत्यादि।

ईप् गौरादिभ्यः—गौर प्रभृति शब्दों के परे स्त्रीलिङ्ग में ई प्रत्यय होता है। ईप् प्रत्यय होने से पूर्व के आकार का लोप हो जाता है। जैसे—गौर-गौरी, किशोरी, कुमारी, तरुणी, सुन्दरी, पितामही, मातामही, नदी, नटी, स्थली, कलसी, तटी, कदली, काली, नागी, मण्डली, आमलकी, कबरी (चोटी), बदरी (बैर), वेतसी (बेंत), अतसी (तीसी) इत्यादि

जातौ जातेरदन्तादीप्—जाति बोध होने से जातिवाचक अकारान्त शब्द के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे, सिंह—सिंही, मृगी, व्याघ्री, भल्लुकी, हरिणी, मानुषी, ब्राह्मणी, गोपी, महिषी, शूकरी, गर्दभी, शृगाली, बिडाली, घोटकी, हँसी, सारसी इत्यादि।

टिप्पणी—अज प्रभृति जातिवाचक शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता। जैसे, अज—अजा (बकरी), कोकिला, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, ज्येष्ठा, पुत्रिका, वैश्या, क्षत्रिया, शूद्रा इत्यादि। महा शब्द के साथ समास होने से ईप् होता है। जैसे, महाशूद्री।

ऋदन्तादीप्—ऋकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है। जैसे, कर्तृ—कर्त्री,दात्री, जनयित्री, शिक्षयित्री इत्यादि।

टिप्पणी—स्वसृ आदि शब्दों में नहीं होता। जैसे, स्वसा, माता, दुहिता, ननान्दा, तिस्रः, चतस्रः।

नान्तादीप्—नकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिंग में ई प्रत्यय होता है। जैसे, मालिन्—मालिनी, मानिनी, कामिनी, गुणिनी, मनोहारिणी, तपस्विनी, अधिकारिणी इत्यादि।

टिप्पणी—स्त्रीलिंग में संख्यावाचक नान्त शब्दों और मन् भागान्त शब्दों के उत्तर ईप् नहीं होता। जैसे—पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश तथा सीमा, पामा, सुदामा, अतिमहिमा इत्यादि।

उदृद्भ्यामीप्—उकारेत् और ऋकारेत् (जिनमें से उकार और ऋकार नहीं रहते) प्रत्ययों (मतुप्, वतुप्, ईयसु, तवतु, शतृ) से बने हुए शब्दों के उत्तर स्त्रीलिंग में ईकार होता है। जैसे, उकारेत्—भवत् भवती, ईयत्—ईयती, श्रीमत्—श्रीमती, बुद्धिमत्—बुद्धिमती, लज्जावत्—लज्जावती, श्रेयस्—श्रेयसी, गरीयस्—गरीयसी इत्यादि। ऋकारेत्—सत्—सती, रुदत्—रुदती, जानत्—जानती, गृह्णत्—गृह्णती इत्यादि।

भ्वादि, दिवादि और चुरादिगणीय धातुओं से तथा णिजन्त से शतृ और स्यतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं उन शब्दों से 'ई' प्रत्यय करने पर 'त' के पूर्व न् लग जाता है। जैसे, गच्छत्—गच्छन्ती, वदत्—वदन्ती, दीव्यत्—दीव्यन्ती, नृत्यत्—नृत्यन्ती, चिन्तयत्—चिन्तयन्ती, भक्षयत्—भक्षयन्ती, दर्शयत्—दर्शयन्ती, कारयत्—कारयन्ती, भविष्यन्ती, भावयिष्यन्ती इत्यादि।

तुदादिगणीय धातुओं से और अदादिगणीय आकारान्त धातुओं से शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं तथा 'स्यतृ' प्रत्यय करके जो शब्द बनते हैं उनके आगे स्त्रीलिंग में 'ई' प्रत्यय करने से विकल्प से त के पूर्व न् लगता है। जैसे, इच्छत्—

इच्छन्ती वा इच्छती, पृच्छत्—पृच्छन्ती वा पृच्छती, स्पृशत्—स्पृशन्ती वा स्पृशती, यात्—यान्ती, भात्—भान्ती, करिष्यत्-करिष्यन्ती, भविष्यत्-भविष्यन्ती इत्यादि। (शतृ प्रत्यय देखो)

टित्-षिद्भ्यामीप्—टकारेत् और षकारेत् प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के परे स्त्रीलिंग में 'ई' होता है। जैसे, टित्—गायन—गायनी (ल्युट्) कर्मकर—कर्मकरी, अर्थकरी, निशाचरी, भयंकरी, (अट्) द्वयी, त्रयी, चतुष्टयी, दयामयी (तयट् आदि) षित्—वार्षिक—वार्षिकी, लौकिक—लौकिकी (षिकण्) मानवी, मैथिली, पार्वती, पौत्री (षण्) कीदृशी, एतादृशी, तादृशी (षङ्) भागनेयी (षीयण्) इत्यादि। षित्कार्य कहीं नहीं भी होता। जैसे—आद्या, सभ्या आदि।

अवयवात् बहुव्रीहौ वा—बहुव्रीहि समास में अवयव वाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिंग में विकल्प से 'ई' होता है। जैसे, चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा; सुकेशी, सुकेशा; कृशांगी, कृशांगा; विम्बोष्ठी, विम्बोष्ठा; मृदुगात्री, मृदुगात्रा; कोकिलकण्ठी, कोकिलकण्ठा; कुन्ददन्ती, कुन्ददन्ता; (दन्त का दत् भी होता है—सुदती, कुन्ददती आदि) चारुकर्णी, चारुकर्णा, दीर्घजङ्घी, दीर्घजङ्घा; सत्पुच्छी, सत्पुच्छा; तुंगनासिकी, तुङ्गनासिका; कृशोदरी, कृशोदरा; चारुशृङ्गी, चारुशृङ्गा इत्यादि।

बहुव्रीही समास में इन सब शब्दों में ई प्रत्यय नहीं होता। (नाम में) शूर्पणखा, गौरमुखा, (क्रोडादि में) सुक्रोड़ा, चारुशिखा, तीक्ष्णखुरा, (संयुक्त वर्ण में) मृगनेत्रा, चारुगुल्फा, (अधिक स्वरवर्ण में) चारुनयना, चन्द्रवदना, लोलरसना, (सह, नञ् और विद्यमान पूर्वक अवयव बहुव्रीही समासोत्पन्न अवयववाचक में) सकेशा, अकेशा, विद्यमानकेशा।

जातेरदन्तात् जायायाम्—ज़ाया (स्त्री) अर्थ में जातिवाचक

अकारान्त शब्दों के आगे 'ई' होता है। जैसे, ब्राह्मणस्य जाया ब्राह्मणी, शूद्री, गोपी इत्यादि। पालक शब्द होने से नहीं होता। जैसे, गोपालिका, पशुपालिका आदि।

इन्द्रादेरानीप्—जाया अर्थ में इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड और ब्रह्मन् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में आनीप् प्रत्यय होता है। जैसे, इन्द्रस्य जाया इन्द्राणी, वरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी और ब्रह्माणी। (ब्रह्मन्—शब्द के न का लोप हो जाता है।

कृदिकारादक्तिनः—कृत् ह्रस्व इकारान्त शब्द के परे विकल्प से 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे, रात्रिः–रात्री, श्रेणिः–श्रेणी, राजिः–राजी, भूमिः–भूमी इत्यादि। क्तिन् प्रत्ययान्त में नहीं होता। जैसे, मतिः, गतिः, स्थितिः आदि।

टिप्पणी—शक्ति और पद्धति में विकल्प से होता है। शक्ती–शक्तिः, पद्धतिः–पद्धती।

गुणवाचकादुदन्ताद्वा—गुणवाचक उदन्त शब्द से परे विकल्प से 'ई' होता है। जैसे, मृद्वी–मृदुः, पट्वी–पटुः, साध्वी–साधुः, गुर्वी–गुरुः आदि।

कुछ ज्ञातव्य स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गवय	गवयी	मातुल	मातुलानी, मातुली
हय	हयी		
मत्स्य	मत्सी	क्षत्रिय (जाति)	क्षत्रिया, क्षत्रियाणी
मनुष्य	मनुषी		
शूद्र (जाति)	शूद्रा		
,, (पत्नी)	शूद्री		(पत्नी) क्षत्रिया

राजन्	राज्ञी	उपाध्याय पत्नी	उपाध्यायिनी उपाध्यायी
युवन्	युवती	„ (अध्यापिका)	उपाध्याया
„	युवतिः		
„	यूनी	आचार्य (पाठिका)	आचार्या
श्वन्	शुनी	„ (पत्नी)	आचार्यानी
मघवन्	मघोनी मघवती	हिमम्	हिमानी
		अरण्यं	अरण्यानी
प्राच् (पूर्व)	प्राची	सखि	सखी
प्रत्यच् (पश्चिम)	प्रतीची	कुरु	कुरूः
अवाच् (दक्खिन)	अवाची	श्वशुर	श्वश्रूः
उदच् (उत्तर)	उदीची	अनडुह्	अनडुही अनड्वाही
जग्मिवस्	जग्मुषी		
तस्थिवस्	तस्थुषी	अर्य (वैश्य)	अर्याणी
विद्वस्	विदुषी	„ (जाति)	अर्या
सूर्य	सूरी	आर्य (पत्नी)	अर्यी
चातुर्य	चातुरी	पतिः	पत्नी

अभ्यास

१. इन शब्दों के स्त्रीलिङ्ग बनाओ—

पाचक, मानुष, मत्स्य, धातु, गुरु, युवन्, जाग्रत, भात्, वनेचर, सुमुख, रजक, मृण्मय, कीदृश्, कृतवत्, राक्षस्।

२. ऐसे स्त्रीलिङ्ग शब्दों को बताओ जिनमें आप् और ईप् दोनों प्रत्यय होते हैं।

चौथा प्रकरण

समास (Compound)

एकपदीभावः समासः—दो वा बहुत पदों के एकपद होने को समास कहते हैं।

एकार्थीभावे समासः—पदों के परस्पर अन्वय वा सम्बन्ध होने से ही समास होता है। जैसे, 'गुरुचरणरतो भव' इस वाक्य में 'गुरोः चरणौ तयोः गुरुचरणयोः रतः' इस प्रकार षष्ठी तत्पुरुष समास हो जाता है, क्योंकि इनका परस्पर सम्बन्ध है। पर 'रामः देवस्य सुन्दरः' इनमें समास होकर 'रामदेवसुन्दरः' ऐसा नहीं होता, क्योंकि परस्पर न तो अन्वय ही है और न कोई सम्बन्ध ही।

टिप्पणी—'श्रुतिदेहविसर्जनः पितुः' आदि वाक्यों में 'पितु' के साथ 'देहः' का सम्बन्ध और आकांक्षा है। इससे 'श्रुतपितृदेहविसर्जनः' होता तो समास होता। किन्तु यहाँ 'पितुः' पद के अलग होने पर भी सापेक्ष और शीघ्र अर्थबोध हो जाने के कारण समास हुआ है।

समास करने पर पूर्वपदों को विभक्तियों का लोप हो जाता है और जो अन्त में पद रहता है उसी में वचन के अनुसार विभक्तियाँ आती हैं। जैसे, 'राजपुत्रः गच्छति' इस वाक्य में 'राजपुत्रः' समस्तपद है। अर्थ हुआ 'राजा का बेटा'। इसका अनुवाद 'राज्ञः पुत्रः' यह भी हो सकता है। अब षष्ठी तत्पुरुष समास करके पूर्वपद 'राज्ञः' की षष्ठी विभक्ति का लोप कर दिया और 'राजपुत्रः' एक पद बना लिया। उसके आगे एकवचन के अनुसार एकवचन की विभक्ति आयी। ऐसे ही राजपुत्रौ गच्छतः, राजपुत्राः गच्छन्ति इत्यादि भी समझो। पूर्वपद के अन्तस्थित न् का लोप हो जाता है। जैसे, राजपुत्रः।

समासः चतुर्विधः—१ अव्ययीभावः, २ तत्पुरुषः, ३ बहुव्रीहिः, ४ द्वन्द्वश्च, ५ तत्पुरुषभेदः कर्मधारयः ६ कर्मधारयभेदो द्विगुः। इस प्रकार ६ समास हुए।

अव्ययीभाव (Indeclinable Compound)

पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः— जिस समास में पूर्व पदार्थ प्रायः प्रधानरूप से प्रतीयमान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

टिप्पणी—किन्तु अव्ययीभाव समास वाले 'शाकप्रति' 'उन्मत्तगंगम्' आदि पद इस लक्षण में नहीं आते। क्योंकि पहले में उत्तर पद और दूसरे में अन्य पद प्रधान है।

सुपाव्ययं समीपादौ—सामीप्य, समृद्धि, अभाव, पश्चात्, योग्यता, वीप्सा, (वारंवार) अनुक्रम, सादृश्य, साकल्य, (संपूर्ण) अनतिक्रम, पर्य्यन्त, अत्यय, यौगपद्य (एक काल में) आदि अर्थों में वर्तमान अव्ययों का सुवन्त पद के साथ अव्ययीभाव समास होता है और जिस अर्थ में यह समास होता है उसी अर्थानुसार अव्यय का पूर्वनिपात होता है। जैसे, कृष्णस्य समीपम्—उपकृष्णम्।

नपुंसकमव्ययीभावे—अव्ययीभाव समास में समस्त पद नपुंसक होता है। जैसे, उपकृष्णम्।

ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य—नपुंसक होने से प्रातिपदिक (शब्द) का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो जाता है। ए ऐ का इ और ओ औ का उ होता है। जैसे, निर्मक्षिकम्, आतरि, आतनु, उपगु आदि।

अव्ययीभावात्सुपो लुक्—अव्ययीभाव समास में सुप् का लुक् होता है। जैसे, यथाशक्ति आदि।

नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः—अकारान्त अव्ययीभाव से परे सुप् का लुक् नहीं होता, किन्तु पञ्चमी को छोड़ कर सब

विभक्ति के स्थान में अम् (म्) हो जाता है। जैसे, उपकृष्णम्। पञ्चमी में—उपकृष्णात् गतो देवदत्तः—कृष्ण के पास से देवदत्त गया।

तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्— अव्ययीभाव समास में अकारान्त शब्द के परस्थित तृतीया और सप्तमी में विकल्प से (म्) होता है। जैसे, उपकृष्णं उपकृष्णेन वा कुरु, उपकृष्णं उपकृष्णे वा वसति।

सहस्य सोऽकाले—अव्ययीभाव समास में सह शब्द के सह का स हो जाता है। जैसे, सहरि, सचक्रं, सतृणं, सक्षत्रं, साग्नि। कालबोध होने से नहीं होता। जैसे सहपूर्वाह्णम्।

सामीप्यादि के उदाहरण

सामीप्ये— कूलस्य समीपं = उपकूलं, उपकृष्णम्, उपगङ्गम्। समृद्ध्यर्थे—भिक्षाणां समृद्धिः = सुभिक्षम्। अभावार्थे—विघ्नस्याभावः = निर्विघ्नं, निर्मक्षिकं, दुर्भिक्षम्। अत्यये (नाशे)–हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम्। असम्प्रति (अनुचित)—निद्रा संप्रति न युज्यते इति = अतिनिद्रम्। पश्चादर्थे—रथस्य पश्चात् = अनुरथम्, अनुविष्णु। योग्यतार्थे— रूपस्य योग्यम् = अनुरूपम्। वीप्सार्थे— अर्थंअर्थं प्रति = प्रत्यर्थं, प्रतिक्षणं, प्रतिगृहम्। अनतिक्रमार्थे—शक्तिमनतिक्रम्य = यथाशक्ति, यथाविधि। अनुक्रमार्थे—ज्येष्ठमनु ज्येष्ठमानुपूर्व्येण वा = अनुज्येष्ठम्। सादृश्ये— पद्यस्य सदृशं = सपद्यम्, हरेः सादृश्यं = सहरि। यौगपद्यार्थे—(एक-साथ) चक्रेण युगपत् = सचक्रम्। साकल्ये— तृणमपि अपरित्यज्य = सतृणम्। पर्यन्त— समुद्रपर्य्यन्तम् = आसमुद्रम्। अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते = साग्नि। सम्पत्ति— ऋद्धेराधिक्यं = समृद्धिः, क्षत्राणां संपत्तिः = सक्षत्रम्। विभक्त्यर्थे—हरौ इति = अधिहरि, गृहे = अधिगृहम्। कारकार्थे—कृष्णमधिकृत्य = अधिकृष्णम्।

आङ्मर्यादाभिविध्योः—मर्यादा (सीमा) अभिविधि (व्याप्ति) बोध होने से सुबन्त पद का 'आ' अव्यय के साथ विकल्प से समास होता है। जैसे, आवनम् आवनात् वा वृष्टो देवः (वनपर्यन्त वनमभिव्याप्य) इत्यर्थः, आमुक्ति आमुक्तेः वा संसारः (मुक्तिपर्यन्तसंसारबन्धनमस्तीत्यर्थः)।

लक्षणेनाभिप्रती आभिमुख्ये—आभिमुख्य बोध होने से लक्षण बोधक (जिसके अभिमुख जाता हो तद्वाचक) सुबन्त पद के साथ अभि और प्रति अव्ययों का विकल्प से समास होता है। जैसे, अग्निम् अभि अभ्यग्नि, अग्निं प्रति प्रत्यग्नि (शलभाः पतन्ति)।

पारे मध्ये षष्ठ्या वा—षष्ठ्यन्त पद के साथ पार और मध्य शब्द का विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है। जैसे, समुद्रस्य पारं पारेसमुद्रम्, गङ्गाया मध्यं मध्येगङ्गम्। एकार निपातन से होता है। षष्ठी तत्पुरुष में गङ्गामध्यम्, समुद्रपारम् यही होगा।

प्रतिपरिसमनुभ्योऽक्ष्णः—प्रति, परि, सम और अनु के परे अक्षि शब्द रहने से वह अकारान्त हो जाता है। जैसे, अक्ष्णोः प्रति = प्रत्यक्षम, अक्ष्णोः परं = परोक्षम्, अक्ष्णोः समीपं = समक्षम्, अक्ष्णोः पश्चात् = अन्वक्षम।

अनश्च—अव्ययीभाव समास में अन् भागान्त शब्द के अन् के स्थान में 'अ' होता है। जैसे, आत्मानमकृधित्य वा आत्मनि = अध्यात्मम्, प्रत्यध्वम्, उपराजम्।

अतिरिक्त सविग्रह समस्त पद।

ग्रामात् बहिः वा बहिर्ग्रामम्, वनात् प्राक् वा प्राग्वनम्, उपशरदम, प्रतिदशम्, अनुदशम्, उपचर्मम्, उपगिरम् वा उपगिरि, उपनदम् वा उपनदि, उरसि = प्रत्युरसम्, गोः

समीपे = उपगु, तिष्ठन्ति गावो यस्मिन् काले = तिष्ठद्गु, रजः अपि अपरित्यज्य = सरजसम्, शुनः समीपम् = उपशुनम्, गोः पश्चात् = अनुगवम्, गङ्गायाः अनु = अनुगङ्गम्, यावन्तः श्लोकाः तावन्तः अच्युतप्रणामाः = यावच्छ्लोकम्।

अभ्यास

इन विग्रहवाक्यों के योग में जो समस्त पद बनते हैं उन्हें लिखो।

भक्तिकाणामभावः। आबालात्। चर्म्मणः समीपम्। यमुनायाः मध्यम्। यावन्ति कार्याणि। हरिमधिकृत्य। देवतामनतिक्रम्य। भवस्य अत्ययः। पीडानामभावः। पण्डितानां पश्चात्। वृक्षं वृक्षं प्रति। मक्षिकामपरित्यज्य।

तत्पुरुषसमास (Determinative Compound)

उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः

जिस समास में उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो उसे तत्पुरुष कहते हैं। इसमें द्वितीयादि विभक्त्यन्त पद पूर्व में आते हैं। जैसे, राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः।

तत्पुरुष समास में पूर्व पद अर्थानुसार द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी इनमें से किसी एक विभक्ति का रहता है और उत्तर (पर) पद प्रथमान्त रहता है; इस प्रकार द्वितीयादि क्रम से तत्पुरुष समास छ प्रकार का हुआ। उदाहरण क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

टिप्पणी—तत्पुरुष समास में पर पद का ही लिङ्ग प्रधान होता है। (परवल्लिंग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः)

१. द्वितीया तत्पुरुष—पूर्वपद द्वितीयान्त हो तो द्वितीया

तत्पुरुष होता है। जैसे, दुःखं श्रितः = दुःखश्रितः, विस्मयम् आपन्नः = विस्मयापन्नः, बाधामतीतः = बाधातीतः, अन्नं बुभुक्षुः = अन्नबुभुक्षुः, वेदं विद्वान् = वेदविद्वान्, ग्रामं गमी = ग्रामगमी, गृहं गतः = गृहगतः, शिवमाश्रितः = शिवाश्रितः, शरणं प्राप्तः = शरणप्राप्तः, (द्वितीयाश्रितादिभिः)

मुहूर्त्तं सुखं = मुहूर्तसुखं, मासं भोग्यः = मासभोग्यः, मुहूर्त्तं मासं व्याप्येत्यर्थः (अत्यन्तसंयोगे द्वितीया)

मालामतिक्रान्तः = अतिमालः, वेलामतिक्रान्तः = उद्वेलः, (अत्यादयः क्रान्ताद्यौ द्वितीयया)

२. तृतीया तत्पुरुष— पूर्वपद तृतीयान्त होने से तृतीया तत्पुरुष होता है। जैसे, सुखेन युक्तः = सुखयुक्तः खड्गेन हतः = खड्गहतः, पुत्रेण देयं = पुत्रदेयं, अग्निना दग्धः = अग्निदग्धः, (कृता कर्तृकरणयोः) श्रमेण रहितः = श्रमरहितः, विद्यया हीनः = विद्याहीनः, मदेन शून्यः = मदशून्यः, अङ्गेन विकलः (ऊनार्थैश्च), पित्रा समः = पितृसमः, मासेन पूर्वः = मासपूर्वः, धान्येन अर्थः = धान्यार्थः (तृतीया पूर्वादिभिः)

टिप्पणी—अक्ष्णा काणः आदि में समास नहीं होता।

३. चतुर्थी तत्पुरुष— पूर्वपद में चतुर्थी विभक्ति होने से चतुर्थी तत्पुरुष होता है। जैसे, ज्ञानाय अध्ययनम् = ज्ञानाध्ययनम्, धनाय लोभः = धनलोभः, कुण्डलाय हिरण्यम् = कुण्डलहिरण्यम्, यूपाय दारु = यूपदारु, भूताय बलिः = भूतबलिः (प्राणियों के निमित्त उपहार), गवे हितम् = गोहितम्, भ्रात्रे सुखम् = भ्रातृसुखम्।

४. पञ्चमी तत्पुरुष—पूर्वपद पञ्चम्यन्त होने से पञ्चमी तत्पुरुष होता है। जैसे, चौरात् भयं = चौरभयम्, वृक्षात् पतितः = वृक्षपतितः, व्याघ्रात् भीतः = व्याघ्रभीतः, गृहात् निर्गतः = गृह-

निर्गतः, रोगात् मुक्तः = रोगमुक्तः, विदेशात् आगतः = विदेशागतः इत्यादि ।

५. षष्ठी तत्पुरुष— पूर्वपद षष्ठ्यन्त होने से षष्ठी तत्पुरुष होता है। जैसे, राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः, सुवर्णस्य कङ्कणम् = सुवर्णकङ्कणम्, तस्य पुत्रः = तत्पुत्रः, मम हस्तौ = मद्धस्तौ, देवस्य पूजा = देवपूजा, सुखस्य भोगः = सुखभोगः, वृक्षाणां शाखा = वृक्षशाखा इत्यादि ।

सभाराजाऽमनुष्यपूर्वा— षष्ठी तत्पुरुष समास में राज पर्याय और रक्षः पिशाचादि पूर्वक सभा शब्द अकारान्त नपुंसक होता है। जैसे, प्रभोः सभा = प्रभुसभम्, ईश्वरस्य सभा = ईश्वरसभम्, रक्षसां सभा = रक्षःसभम्, राजसभा, चन्द्रगुप्तसभा, देवसभा आदि में नहीं हुआ ।

विभाषा सेनासुराच्छायाशालानिशानाम्— तत्पुरुष में सेना, सुरा, छाया, शाला और निशा शब्द विकल्प से अकारान्त नपुंसक होते हैं। जैसे, ब्राह्मणसेनं वा ब्राह्मणसेना, यवसुरं वा यव-सुरा, वटच्छायम् वा वटच्छाया, गोशालं वा गोशाला, श्वनिशं वा श्वनिशा ।

टिप्पणी—यदि पूर्व पदार्थ का बाहुल्य हो तो छाया शब्द नित्य अकारान्त होता है। जैसे, वृक्षाणां छाया = वृक्षच्छायम् ।

कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु

अण्डादि शब्दों के परे रहने से कुक्कुटी आदि शब्द पुंलिङ्ग होते हैं। जैसे, कुक्कुट्या अण्डं = कुक्कुटाण्डं, मृग्या क्षीरम् = मृगक्षीरम्, काक्याः शावकः = काकशावकः, हंस्याः पदं = हंसपदम् ।

राजाहःसखिभ्यष्टच्— तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु समास में राजन्, अहन् और सखि शब्द के उत्तर टच् (अ) होता है।

जैसे, कलिङ्गानां राजा = कलिङ्गराजः, कृष्णस्य सखा = कृष्ण-सखः (तत्पुरुष), महान् राजा = महाराजः, प्रियः सखा = प्रियसखः, परमम् अहः = परमाहः (कर्मधारय), द्व्यहः (द्विगु)

टिप्पणी—पूजार्थ सु और अति तथा नञ् पूर्व में रहने से टच् नहीं होता। जैसे, सुराजा, अतिराजा, अराजा, असखा इत्यादि।

पथः समासे टच्—समास में समस्तपदस्थित पथि शब्द से टच् अर्थात् पथि का पथ हो जाता है। जैसे, राज्ञः पन्था = राजपथः। सख्युः पन्था = सखिपथः।

टिप्पणी—संख्या और अव्यय के आगे पथ होने से नपुंसक होता है। जैसे, द्विपथं, त्रिपथं, विपथं, कापथम्, उत्पथम्।

नीचे लिखी अवस्थाओं में षष्ठी तत्पुरुष समास नहीं होता—

पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतव्यसमानाधिकरणेन—पूरणार्थ में, गुण में, सुहितार्थ(तृप्त्यर्थ) में, सत् (शतृ और शानच्) के योग में, कृदव्यय (कृदन्त से बने हुए अव्यय) के योग में, तव्य के योग में और समानाधिकरण (दोनों में एक प्रकार की विभक्ति होने) में षष्ठी समास नहीं होता। जैसे,

(क) पूरणार्थ में—छात्राणां दशमः (न पूरणार्थैः)।

(ख) गुण में—आकाशस्य नीलिमा, द्राक्षाया माधुर्यम्, काकस्य कार्ष्ण्यम् (न गुणवाचकैः)।

टिप्पणी—कहीं कहीं होता है। जैसे, 'भारवेरर्थगौरवम्'

(ग) तृप्त्यर्थ—फलानां तृप्तः (न तृप्त्यर्थैः)।

टिप्पणी—तृतीया में होगा। जैसे, फलैः तृप्तः = फलतृप्तः।

(घ) सत्योग में—द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा किङ्कर इत्यर्थः।

(ङ) अव्यययोग में—ब्राह्मणस्य कृत्वा।

(च) तव्ययोग में—ब्राह्मणस्य कर्तव्यम्।

(छ) एक विभक्ति में—तक्षकस्य सर्पस्य।

न निर्द्धारणे—निर्धारण में षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता। जैसे, नृणां श्रेष्ठः।

टिप्पणी—सप्तमी में होता है। जैसे, नृपु श्रेष्ठः—नृश्रेष्ठः।

क्तस्य च वर्तमाने—वर्तमान काल में जो क्त प्रत्यय होता है उसके योग में समास नहीं होता। जैसे, सतां मतः। राज्ञां पूजितः।

टिप्पणी—तृतीया में होता है। जैसे, सद्भिर्मतः—सम्मतः।

तृजकाभ्यां कर्तरि—कर्तृवाचक तृच् और अक् प्रत्ययान्त से समास नहीं होता। जैसे, जगतः कर्ता, अपां स्रष्टा, अन्नस्य पाचकः, ओदनस्य भोजकः।

टिप्पणी—(क) जगन्ति करोति यः स जगत्कर्ता, अन्नं पचति यः स अन्नपाचकः, आदि उपपदसमास होता है।

(ख) याजक, परिचारक, अध्यापक, भर्तृ, प्रयोजक, वाचक, स्नापक, उत्साहक आदि शब्दों के परे रहने से होता है। जैसे, देवपूजकः, भुवनभर्ता, राजपरिचारकः, वेदाध्यापकः, हविर्होता आदि (याजकादिभ्यश्च)

६. सप्तमी तत्पुरुष—पूर्वपद में सप्तमी विभक्ति होने से सप्तमी तत्पुरुष होता है। जैसे, रणे निपुणः = रणनिपुणः, कार्ये कुशलः = कार्यकुशलः, जले मग्नः = जलमग्नः, आतपे शुष्कः = आतपशुष्कः (सप्तमी शौण्डादिभिः)

ऋणबोध होने से कृत्य प्रत्यय से बने हुए पद के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है। जैसे, मासे देयम् = मासदेयम्, वर्षे परिशोध्यम् = वर्षपरिशोध्यम् (कृत्यैर्ऋणे)

क्त प्रत्यय निष्पन्न शब्द के साथ दिन और रात्रि के अवयव बोधक सप्तम्यन्त पद का समास होता है। जैसे, पूर्वाह्णे कृतम् = पूर्वाह्णकृतम्, अपररात्रे कृतम् = अपररात्रकृतम्। (क्तेनाहोरात्रावयवाः)

टिप्पणी—राजदन्त आदि के राज आदि पद का पूर्वनिपात होता है। जैसे, दन्तानां राजा = राजदन्तः, वनस्य अग्रे = अग्रेवनम्।

अतिरिक्त सविग्रह समस्त पद

निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः = निष्कौशाम्बिः, उत्थितः निद्रायाः उन्निद्रः, गवाम् अक्षि इव = गवाक्षः, पुरुषस्यायुः = पुरुषायुषम्, बृहतां पतिः = बृहस्पतिः, वनस्य पतिः = वनस्पतिः, काल्याः दासः = कालिदासः, देव्याः दासः = देविदासः, विश्वस्य मित्रम् = विश्वामित्रः, निश्चितं श्रेयः = निःश्रेयसम्, शवानां शयनम् = श्मशानम्, मुखम् अभिगतः = अभिमुखः, शुनः दन्तः = श्वदन्तः, राज्ञः गौः = राजगवः, शतात् परे = परः शताः, सहस्रात् परे = परः सहस्राः।

अभ्यास

१. इन विग्रहवाक्य के योग में जो रूप हों उन्हें लिखो—

गृहात् निर्गतः, वाचि पटुः, तव आश्रितः, पादाभ्यां ताडितः, कविषु श्रेष्ठः, गवे हितम्, शाखायाम् आसीनः, मशकाय धूमः, जलं पिपासुः, पुस्तकस्य प्रबन्धस्य पाठः, प्रस्तरस्य खण्डे उपविष्टः, पाटलिपुत्रात् आगतः, राज्ञां सभा।

कर्मधारय (Appositional Compound)

विशेषणं विशेष्येण कर्मधारयः—विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है उसे कर्मधारय कहते हैं। इसमें विशेषण पूर्व में रहता है। जैसे, नीलमुत्पलं = नीलोत्पलं, मधुरं वचनं = मधुरवचनम्, सुन्दरः पुरुषः = सुन्दरपुरुषः, भूषितः बालकः = भूषितबालकः, प्रियः सखाः = प्रियसखा इत्यादि।

पुंवत् पूर्वं भापितपुंस्कं कर्मधारये—कर्मधारय समास में भाषित-पुंस्क (अर्थात् जो शब्द पुंलिङ्ग से स्त्रीलिंग बना हो) स्त्रीलिंग पूर्व पद में हो तो पुंलिङ्ग हो जाता है। जैसे, मधुरा प्रकृतिः = मधुरप्रकृतिः, सुन्दरी नारी = सुन्दरनारी, पञ्चमी कन्या = पञ्चमकन्या, पाठिका स्त्री = पाठकस्त्री, सती प्रवृत्तिः = सत्प्रवृत्तिः, जीर्णा नौका = जीर्णनौका इत्यादि।

टिप्पणी—किन्तु 'ऊप्' प्रत्ययान्त पुंलिंग नहीं होता। जैसे, वामोरूः भार्या = वामोरूभार्या आदि।

महतो महा विशेष्ये

विशेष्य रहने पर कर्मधारय बहुव्रीहि समास में महत् शब्द का महा आदेश हो जाता है। जैसे, महान् देवः = महादेवः, महती नदी = महानदी, महत् फलं = महाफलम् आदि। बहुव्रीहि में—महत् यशो यस्य स = महायशाः, महान् आशयो यस्य स = महाशयः इत्यादि।

किमः क्षेपे—किम् शब्द के साथ निन्दा अर्थ में कर्मधारय होता है। जैसे, किंसखा, किंभृत्यः, किंप्रभुः, निन्दित इत्यर्थः।

विशेपणं विशेपणेन—विशेषण का भी विशेषण के साथ समास होता है। जैसे, नीलश्चासौ लोहितः = नीललोहितः, पीतश्चासौ लोहितश्च = पीतलोहितः (वर्णवाचक शब्द में) पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः = सुप्तोत्थितः, पीतप्रतिबद्धः, यातायातः, दत्तापहृतम् (पूर्वान्तर काल बोध होने से) कृतञ्च तत् अकृतञ्च = कृताकृतम् , पीतश्च अपीतश्च = पीतापीतम् (नञ् सहित और नञ रहित क्त प्रत्ययान्त के साथ)। इसके अतिरिक्त भी होता है। जैसे, वकः परमधार्मिक आदि।

वक्तव्य—कर्मधारय समास के नीचे तीन भेद होते हैं—

१. रूपक कर्मधारय—एक पदार्थ को दूसरे एक पदार्थ से अभिन्न मान कर जो समास होता है उसे रूपक कर्मधारय कहते हैं।

इस समास के विग्रह करने में 'एव' का प्रयोग अवश्य होता है। जैसे, दुःखमेव समुद्रः = दुःखसमुद्रः, रोदनमेव बलं = रोदनबलम्, कमलमेव मुखम् = कमलमुखम्। इन उदाहरणों में 'दुःखं', 'रोदनं', 'कमलं', इन पदार्थों को 'समुद्रः', 'बलम्', 'मुखम्' मान लिया है। अर्थात् पूर्वोक्त पदार्थों को उपरोक्त पदार्थों से अभिन्न कल्पना कर ली है।

२. उपमान कर्मधारय—उपमान (जिससे उपमा दी जाय वह) और उपमेय (जिसको उपमा दी जाय वह) के सामान्य (साधारण धर्म) बोधक पद के साथ उपमानवाचक पद का जो समास होता है उसे उपमान कर्मधारय कहते हैं। (उपमानानि सामान्यवचनैः)। जैसे, घन इव श्यामः = घनश्यामः (श्रीकृष्ण), नवनीतमिव कोमलं = नवनीतकोमलम् (चरण आदि), शङ्ख इव पाण्डुरः = शङ्खपाण्डुरः (गेह आदि), मृगाः इव चपला = मृगचपला (बालिका आदि), अनल इव उज्ज्वलः = अनलोज्ज्वलः (पीताम्बर आदि), अर्णव इव गभीरः = अर्णवगभीरः (सज्जन), इत्यादि। इन उदाहरणों में घन आदि उपमान, श्रीकृष्ण आदि उपमेय (क्योंकि घनश्याम आदि से श्रीकृष्ण आदि का बोध होता है) और श्यामता आदि साधारण धर्म है। क्योंकि यह धर्म उपमान और उपमेय दोनों में है। इसलिये उपमानों और साधारण धर्मबोधक पदों के साथ समास हुआ।

३. उपमित कर्मधारय—सामान्यधर्मबोधक पदों के प्रयोग न होने पर व्याघ्र प्रभृति उपमानवाचक पदों के साथ उपमेय-

वाचक पदों का जो समास होता है उसका नाम है उपमित कर्मधारय। (उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे) जैसे, (१) उपमानवाचक पद के परे होने पर—पुरुषः व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः, नरशार्दूलः, नृसिंहः, वदनसुधाकरः, करकिसलयम्, अधरपल्लवः इत्यादि। (२) पूर्व में उपमानवाचक पद होने पर चन्द्रसदृशं मुखं = चन्द्रमुखं, कमलाननं, पद्मपलाशलोचनं, कमलचरणम् इत्यादि। पूर्व पर का कोई नियम नहीं है।

विशेष—विद्यार्थियों को उपमित कर्मधारय और रूपक कर्मधारय एक प्रकार का मालूम होता होगा, पर ऐसा नहीं है। उनको समझना चाहिये कि उपमित समास में एक वस्तु से दूसरी वस्तु की तुलना की जाती है और रूपक में दोनों को एक मान लेते हैं। जैसे, 'मुखचन्द्रः सिन्दूरविन्दुना शोभते'—सिन्दूर की विंदी से मुखचन्द्र शोभता है। इस वाक्य में मुख ही चन्द्र हो सकता है, चन्द्र मुख नहीं। क्योंकि चन्द्र में सिन्दूरविन्दु का होना सम्भव नहीं। इससे मुखं चन्द्र इव यह उपमित ही समास हो सकता है, रूपक नहीं। और मुखचन्द्रेण दूरीकृतो गह्वरान्धकारः—मुखचन्द्र से गुफा का अन्धकार दूर हो गया। इसमें चन्द्र ही मुख हो सकता है, मुख चन्द्र नहीं। क्योंकि मुख से अन्धकार का दूर होना असम्भव सा है। इससे यहाँ मुखमेव चन्द्रः रूपक ही हो सकता है, उपमित नहीं। संदेहस्थल में विचार करके यह देखना होगा कि क्रिया का लक्ष्य उपमान है या उपमेय। यदि उपमेय का लक्ष्य हो तो उपमित और उपमान का लक्ष्य हो तो रूपक होगा। कहीं कहीं क्रिया के लक्ष्य दोनों हो सकते हैं। जैसे, 'मुखचन्द्रं पश्य' (इसमें पश्य क्रिया दोनों में सम्भव है। इससे दोनों समास हो सकते हैं।) रूपक में 'एवं' और उपमान में 'इव' विग्रहवाक्य में आता है।

व्याघ्र, पुङ्गव, सिंह, शार्दूल, कुञ्जर, वृष, वृक, चन्द्र, कमल, किसलय, पल्लव, वराह, ऋषभ, व्याघ्रादि हैं।

कर्मधारय समास में परिवर्तन

सर्वंपुण्यसंख्याव्ययेभ्यो रात्रेरन्—कर्मधारय, तत्पुरुष और द्विगु समास में सर्व, पुण्य, संख्या और अव्यय से परे रात्रि शब्द के इकार का आकार होता है। जैसे, सर्वा रात्रिः—सर्वरात्रः, पुण्या रात्रिः—पुण्यरात्रः। (कर्मधारय में) अतिक्रान्तो रात्रिम् = अतिरात्रः (अव्यये तत्पुरुषे)। ऐसे ही द्विरात्रम्, त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रमित्यादि होते हैं।

रात्राह्नाहाः पुंसि—समासान्त, रात्र, अह्न और अहः शब्द पुंलिङ्ग होता है। जैसे, सर्वरात्रः, द्व्यह्नः, द्व्यहः इत्यादि।

टिप्पणी—एक भिन्न संख्यापूर्वक रात्रिशब्द और पुण्य सुदिन शब्द पूर्वक अहं शब्द नपुसंक होता है। जैसे, द्विरात्रम्, पुण्याहम्, सुदिनाहम्।

अह्नोऽह्न एतेभ्यः—सर्व, पुण्य, संख्यावाचक और अव्यय शब्दों के परे अहन् शब्द का अह्न होता है। जैसे, सर्वमहः = सर्वाह्नः, द्वयोरह्नोः भवः = द्व्यह्नः इत्यादि।

टिप्पणी—पुण्य और एक शब्द के परे अह्न नहीं होता। जैसे, पुण्याहम्, एकाहः।

न संख्यायाः समाहारे—समाहार होने से संख्यावाचक के परे अहन् शब्द का अह्न नहीं होता। जैसे, द्वयोरह्नोः समाहारः द्व्यहः त्र्यहः, सप्ताहः, दशाहः इत्यादि।

अतिरिक्त सविग्रह समस्तपद

वृद्धः उक्षाः = वृद्धोक्षः, महान् उक्षा = महोक्षः, जातः उक्षा = जातोक्षः, निश्चितं श्रेयः = निःश्रेयसम्, हरिः चन्द्र इव = हरिश्चद्रः, अन्धं तमः = अन्धतमसम्।

अभ्यास

२. नीचे लिखे विग्रहवाक्यों से जो समासान्त पद हों उन्हें लिखो–
महीयसी कीर्तिः, अशितश्च अनशितश्च, दिग्वासाः हरः, गच्छन्ती बालिका, महान् राजा, मृद्वी लता, मुखं पद्ममिव, चरणं कमलमिव, तपः एव धनम्, देह एव पिञ्जरम्, श्रीमान् नृपतिः; निकटवर्तिनी नदी, इन्द्रस्य सखा, राजा शार्दूल इव।

द्विगु समास (Numeral Compound)

संख्यापूर्वो द्विगुः—संख्या पूर्व में रहने से जो कर्मधारय समास होता है उसे द्विगु कहते हैं। समास करने पर संख्या पूर्व में ही रहती है।

द्विगु समास तीन प्रकार का होता है—१ समाहार, २ तद्धितार्थ और ३ उत्तरपद।

समान विभक्तियुक्त पद के साथ संख्या का जो समास होता है वह समाहार द्विगु है। समाहार द्विगु से जो पद बनता है वह नपुंसक और एकवचनान्त होता है। जैसे, पञ्चानां गवां समाहारः = पञ्चगवम्, पञ्चानां पात्राणां समाहारः = पञ्चपात्रम् इत्यादि।

अदन्त उत्तरपद वाले समाहार द्विगु में स्त्रीलिङ्ग होता है और अन्त में ईप् होता है। जैसे, त्रयाणां लोकानां समाहारः = त्रिलोकी, सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती, षट्पदी, दशशती, त्रिवेदी इत्यादि।

टिप्पणी—किन्तु भुवनादि शब्दान्त द्विगु स्त्रीलिंग नहीं होता। जैसे, त्रयाणां भुवनानां समाहारः = त्रिभुवनं, पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, चतुर्भङ्गम् इत्यादि।

जब द्विगु समास तद्धितार्थ में युक्त होता है तब वह तद्धितार्थ द्विगु होता है। जैसे, पञ्चभिः गोभिः क्रीतः = पञ्चगुः, पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः = पञ्चकपालः।

जहाँ द्विगु समास में कोई उत्तर पद वर्तमान रहे और तब समास हो तो वह उत्तरपद द्विगु कहलाता है। जैसे, पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य—पञ्चहस्तप्रमाणः, द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः = द्विमासजातः, पञ्च नावः प्रियाः यस्य = पञ्चनावप्रियः आदि।

अभ्यास

१. इनका विग्रह करो और बताओ कि ये किस भेद में हैं—

त्रैमातुरः, चतुर्वेदी, त्रिशब्दानुशासनः, चतुर्दिगीशान्, पञ्चगवधनः, दशसहस्री, चतुष्पदी।

बहुव्रीहि (Relative Compound)

अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः—जिस समास में अन्य पद के अर्थ प्रधानतः प्रतीयमान हों अर्थात् जिस २ पद में समास हो, उनमें से किसी का स्वतन्त्र अर्थ बोध न होकर अन्य व्यक्ति वा वस्तु का बोध हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

बहुव्रीहि समास के चार भेद हैं—१ समानाधिकरण, २ तुल्ययोग, ३ व्यधिकरण और ४ व्यतिहार।

१. समानाधिकरण बहुव्रीहि

समस्यमान दोनों पदों में समान विभक्ति होने से समानाधिकरण बहुव्रीहि होता है।

समास करने के समय द्वितीयादि विभक्त्यन्त 'यद्' शब्द का प्रयोग करना पड़ता है और जो पद बनते हैं वे विशेषण

होते हैं। जैसे, आरूढ़ः वानरः यं स आरूढवानरः (वृक्षः) पराजिताः शत्रवो येन स पराजितशत्रुः (राजा), दत्तं धनं यस्मै स दत्तधनः (दरिद्रः), निर्गतं भयं यस्मात् स निर्भयः (पुरुषः) महान् आशयो यस्य स महाशयः (सज्जनः), विमलाः आपो यस्मिन् तत् विमलापं (सरः) इत्यादि।

समासान्त पद के विशेषण होने से विशेष्य ही के लिङ्ग, वचन और विभक्ति होती है। जैसे, निर्मलं जलं यस्याः सा निर्मलजला (नदी)। इसमें जल शब्द नपुंसक होने पर भी नदी के विशेषण होने के कारण स्त्रीलिङ्ग हो गया। और क्रिया विशेषण होने से द्वितीया एकवचन होता है। जैसे, स 'निर्भयं' वदति।

स्त्रियाः पुंवद्भापितपुंस्कायाः स्त्रियाम्—स्त्रीलिङ्ग शब्द के परे रहने से भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द का पुंवद्भाव होता है। जैसे, भग्ना शाखा यस्य स भग्नशाखः, स्थिरा मतिः यस्य स स्थिरमतिः, सुरूपा भार्या यस्य स सुरूपभार्यः इत्यादि।

टिप्पणी—नीचे लिखे स्थानों में पुंवद्भाव नहीं होता। जैसे,

(क) संज्ञा में—गङ्गाभार्यः, दत्ताभार्यः।

(ख) पूरणवाचक में—पञ्चमीभार्यः, द्वितीयाभार्यः।

(ग) जातिवाचक में—ब्राह्मणीभार्यः, क्षत्रियाभार्यः।

(घ) स्वाङ्गवाचक में—सुकेशीभार्यः, सुदतीभार्यः।

(ङ) ऊङ् प्रत्ययान्त में—वामोरूभार्यः।

(च) कोपध (जिसके अन्तिम स्वर के पूर्व क हो) में—रसिकाभार्यः, पाचिकाभार्यः इत्यादि।

(छ) प्रियादि के योग में—कल्याणीप्रियः, सुलोचनाकान्तः आदि। तरुणी, प्रिया, मनोज्ञा, भक्ति, स्वसृ, कान्ता, दुहिता, वामा, अबला, सुभगा, दुर्भगा, तनया, चपला आदि प्रियादि हैं।

उरः प्रभृतिभ्यः कप्

उरः आदि शब्दों के परे कप् होता है। जैसे, व्यूढं उरः, यस्य स व्यूढोरस्कः (विशालवक्षस्थलः), भाषितः पुमान् येन स भाषितपुंस्कः, निर् (नास्ति) अर्थो यस्य तत् निरर्थकम्, अनर्थकम् आदि।

टिप्पणी—उरस्, उपानह्, पुमस्, पयस्, दधि, मधु, शालि, सर्पिः, अनडुह्, निर् और नञ् पूर्वक अर्थ, ये ही उरस् आदि शब्द हैं।

नद्यृतश्च—ऋकारान्त और नदी संज्ञक (ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग) शब्द के परे क प्रत्यय होता है। जैसे, वृद्धः पिता यस्य स वृद्धपितृकः, मृता पत्नी यस्य स मृतपत्नीकः, स्थूला वधूः यस्य स स्थूलवधूकः आदि।

इनः स्त्रियाम्—इन भागान्त शब्दों के परे क प्रत्यय होता है। जैसे, वहवः धनिनः यस्यां सा वहुधनिका (नगरी), वहवोऽस्यां वाग्मिनः इति बहुवाग्मिका (सभा) आदि।

शेषाद्विभाषा—पूर्वोक्त से भिन्न शब्दों के उत्तर विकल्प से कप् होता है। जैसे, लब्धं यशो येन स लब्धयशाः, लब्धयशस्कः। अर्जितधनकः, अर्जितधनः इत्यादि।

टिप्पणी—इयस् प्रत्ययान्त शब्द के परे प्रशंसा बोध होने में भ्रातृ शब्द के परे और स्वांगबोध होने से नाड़ी और तन्त्री शब्द के परे 'क' नहीं होता। जैसे, बहवः श्रेयांसः यस्य स बहुश्रेयान्, शोभना भ्राता यस्य स सुभ्राता, बह्वयः नाड्यः यस्य स बहुनाडिः (कायः) बहुतन्त्री (ग्रीवा)।

२. तुल्ययोग बहुव्रीहि।

तृतीयान्त पद के साथ सह शब्द का जो समास होता है वह तुल्ययोग वहुव्रीहि कहलाता है जिसमें विकल्प से सह का 'स' आदेश होता है। जैसे, बान्धवैः सहितः सबान्धवः,

अनुजेन सहितः सानुजः सहानुजो वा, विनयेन सह वर्तमानं सविनयम्, आदि। (सहस्य सो वा)।

गोत्र आदि शब्दों के परे रहने से समान के स्थान में स होता है। जैसे, समानं गोत्रं यस्य स सगोत्रः, सरूपः, सपक्षः, सबन्धुः आदि। (सः समानस्य गोत्रादौ)।

टिप्पणी—धर्म, उदर्य और जातीय शब्द परे रहने से विकल्प से समान का 'स' होता है। जैसे, सधर्मा or समानधर्मा आदि।

गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः—बहुव्रीहि समास में उत्, पूति, सु और सुरभि शब्द के परे गन्ध के आकार का इकार होता है। जैसे, उद्गतो गन्धो यस्य स उद्गन्धिः, पूतिः गन्धो यस्य स पूतिगन्धिः, सुरभिर्गन्धो यस्य स सुरभिगन्धिः, सुगन्धिः।

टिप्पणी—द्रव्यान्तर के गन्ध होने से इकार नहीं होता। जैसे, सुगन्धः वायुः (यहाँ वायु में कोई गन्ध नहीं है, फूलों की सुगन्धि से उसमें सुगन्ध है) गन्ध का यदि लेश (थोड़ा) अर्थ होता है तब इकार होता है। जैसे, घृतस्य गन्धः (लेशः) यस्मिन् तत् घृतगन्धि (भोजनम्) दधिगन्धि, इत्यादि। उपमान में विकल्प से होता है। जैसे, पद्मस्य गन्ध इव गन्धो यस्य स पद्मगन्धः, पद्मगन्धिः आदि।

अस् नञ् दुः सुभ्यः प्रजायाः। मन्दाल्पाभ्याञ्च मेधायाः—बहुव्रीहि समास में नञ्, सु, दुर्, मन्द और अल्प शब्दों के परे मेधस् शब्द से और नञ्, उर् और सु, इनके परे प्रजा शब्द से अस् प्रत्यय होता है। जैसे, नास्ति मेधा यस्य स अमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः, मन्दमेधाः, अल्पमेधाः, तथा नास्ति प्रजा यस्य स अप्रजाः, दुष्प्रजाः, सुप्रजाः।

धर्मादन् केवलात्— बहुव्रीहि समास में धर्मशब्द से अन् होता है। जैसे, सुष्ठु धर्मो यस्य स सुधर्मा, विदितधर्मा, किसी शब्द के साथ होने से नहीं होता। जैसे, कृतकुलधर्मः।

बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्—बहुव्रीहि समास में अपने अङ्ग के बोधक अक्षि और सक्थि शब्द से परे षच् (अ) होता है। जैसे, विशाले अक्षिणी अस्मिन् इति विशालाक्षम् (वदनम्)। दीर्घे सक्थिनी यस्य स दीर्घसक्थः।

जानिर्जायायाः—बहुव्रीहि समास में पर पद स्थित जाया शब्द को जानि आदेश होता है। जैसे, युवती जाया यस्य स युवजानिः, प्रियजानिः, सुन्दरजानिः आदि।

संख्यासुपूर्वस्य च पादस्य पादुपमानादहस्त्यादेः—बहुव्रीहि समास में सु और संख्यावाचक तथा उपमावाचक शब्द के परे पाद् का पद् होता है। जैसे, सुष्ठु पादौ यस्य स सुपात्, त्रिपात्, आदि। व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य स व्याघ्रपात् आदि। हस्ति, अश्व, कपोत, जाल, गण्ड आदि के परे नहीं होता। जैसे, हस्तिपादः आदि।

स्त्रियाँ कुम्भादेः पद्—बहुव्रीहि समास में स्त्रीलिङ्ग में एक, द्वि, त्रि, शत, कुम्भ, जाल, आर्द्र, कृष्ण, विष्णु आदि शब्द के परे पाद् शब्द का पद् होता है। जैसे एकपदी, आर्द्रपदी, विष्णुपदी, शतपदी आदि।

धनुश्च वा संज्ञायाम्—बहुव्रीहि समास में धनुः शब्द के स्थान में धन्वन् होता है। जैसे, चक्रमिव धनुर्यस्य स चक्रधन्वा, अधिज्यं धनुः यस्य स अधिज्यधन्वा आदि। नाम बोध होने से विकल्प होता है। जैसे, पुष्पं धनुः यस्य स पुष्पधन्वा पुष्पधनुः (कामः)।

पूर्वनिपात और परनिपात

बहुव्रीहि समास में विशेषण पूर्व में रहता है। जैसे, महत् बलं यस्य सः महाबलः, स्थूलशरीरः आदि।

क्त प्रत्ययान्त पद पूर्व में ही रहता है। जैसे, भग्नः मनोरथो यस्य स भग्नमनोरथः, धृतदेहः, कृतकर्मा आदि।

आहिताग्नि आदि में विकल्प से पूर्व और परनिपात होता है। जैसे, आहितः अग्निः येन स आहिताग्निः वा अग्न्याहितः, जातसुखः वा सुखजातः आदि।

प्रहरणवाचक पदों के साथ समास होने पर सप्तम्यन्त पद पर में रहता है। जैसे, दण्डः पाणौ यस्य स दण्डपाणिः।

३. व्यधिकरण बहुव्रीहि।

जिसमें भिन्न विभक्ति का पद हो वह व्यधिकरण बहुव्रीहि है। जैसे, कुशाः हस्ते यस्य श कुशहस्तः, पापे मतिः यस्य स पापमतिः, धनुः पाणौ यस्य स धनुष्पाणिः, कुम्भात् जन्म यस्य सकुम्भजन्मा आदि।

बहुव्रीहि समास में संज्ञा बोध होने से नाभि शब्द अकारान्त हो जाता है। जैसे, पद्मं नाभौ यस्य स पद्मनाभः, ऊर्णनाभः आदि।

४. व्यतिहार बहुव्रीहि

परस्पर युद्ध बोध होने से व्यतिहार (समानरूप) तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पद में जो समास होता है उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। पूर्वपद के अन्त्य स्वर को दीर्घ और परपद के 'इ' हो जाता है। जैसे, केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं केशाकेशि, दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्येदं युद्धं प्रवृत्तं दण्डादण्डि, मुष्टीमुष्टि, बाहूबाहवि आदि।

अतिरिक्त सविग्रह समस्त पद

शोभनं हृदयं यस्य असौ = सुहृत् (मित्र), दुष्टं हृदयम् अस्य असौ = दुर्हृत् (शत्रु), शोभनं प्रातरस्य = सुप्रातः, शोभनं

दिवा अस्य = सुदिवः, यातुं कामो यस्य स = यातुकामः, स्थातुं मनो यस्य स = स्थातुमनः, दशानां समीपे ये = उपदशाः, विंशतेः आसन्नाः = आसन्नविंशाः, त्रिंशतः अदूरे = अदूरत्रिंशाः, चत्वारिंशतः अधिकाः = अधिकचत्वारिंशाः, द्वौ वा त्रयो वा = द्वित्राः, त्रयो वा चत्वारो वा = त्रिचतुराः, पञ्च वा षट् वा = पञ्चषाः, चत्वारः अस्राः अस्य = चतुरस्रम् (चौकी), द्वयोर्दिशोः आपो यस्य तत् = द्वीपम्, अन्तर्गताः आपः यस्य तत् = अन्तरीपम्, समानः पतिर्यस्याः सा = सपत्नी, शुनः पदानि इव पदानि यस्य सः = श्वापदः (घातक पशु) क्षीरमुदकं यस्य सः = क्षीरोदः, दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं या दिक् सा = दक्षिणपूर्वा, पूर्वोत्तरा, दक्षिणपश्चिमा, उत्तरपश्चिमा, उदके वासः यस्य स = उदवासः, अपगतः शोको यस्मात् स = अपशोकः, अनुगतः अर्थः यस्य स = अन्वर्थः, अविद्यमानः पुत्रो यस्य स = अपुत्रः, उन्नमितं मुखं येन स = उन्मुखः, अधः कृतं मुखं येन स = अधोमुखः, यथाभूतो अर्थो यस्य स = यथार्थः- नास्ति अन्तो यस्य स = अनन्तः, उत्कण्ठितं मनो यस्य स = उन्मनः, नष्टं धनं यस्य स = निर्धनः, विचलितं मनो यस्य स = विमनः, उन्नतः नासिका यस्य स = उन्नसः, सुष्टु दन्ताः अस्याः सा = सुदती।

अभ्यास

१. नीचे लिखे विग्रहवाक्यों से क्या पद बनेंगे—

दशरथः नाम यस्य कृता विद्या येन, अविद्यमानः क्रोधो यस्य, महत् तेजो यस्य, समानः धर्मो येषां, समानः पक्षो यस्य, शोभनः राजा यस्मिन्, जानकी जाया यस्य, मधुराः वाचो यस्य, जातं सुखं यस्य, सजला नदी यस्मिन् देशे, अश्वस्य

पादौ इव पादौ यस्य, वहवः दण्डिनो यस्यां, प्रियो भ्राता यस्य, पाणौ दण्डो यस्य।

द्वन्द्व समास (Capulative Compound)

चार्थे द्वन्द्वः— च (और) के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का जो समास होता है इसे द्वन्द्व समास कहते हैं। विग्रह करने के समय प्रत्येक शब्द के साथ च का प्रयोग होता है और समास होने पर उसका लोप होता है। जैसे, रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ, शशश्च कुशश्च पलाशश्च = शशकुशपलाशाः आदि।

परवल्लिगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः—द्वन्द्व और तत्पुरुष समास में पर पद का ही लिङ्ग होता है। जैसे, वृक्षश्च लता च = वृक्षलते आदि।

द्वन्द्व समास तीन प्रकार के हैं—१ इतरेतर, २ समाहार और ३ एकशेष।

टिप्पणी—कितने वैयाकरण एकशेष को इसलिये समास नहीं मानते कि उसमें सब समस्यमान शब्द नहीं रहते।

१. इतरेतर द्वन्द्व

जिस समास में प्रत्येक पद के वचनानुसार समस्तपद के वचन निर्णीत हों और अन्तिम पद का लिङ्ग हो वह इतरेतर द्वन्द्व है। जैसे; दिनञ्च यामिनी च = दिनयामिन्यौ, कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च = कन्दमूलफलानि आदि।

विद्यासम्वन्ध और गोत्रसम्वन्ध होने से पुत्र और ऋकारान्त शब्द के परे पूर्ववर्ती ऋकारान्त शब्द के ऋ का आ होता है। जैसे, विद्यासम्वन्धे—होता च पोता च होतापोतारौ। गोत्रसम्वन्धे—माता च पिता च = मातापितरौ, याता च ननान्दा च = याताननान्दारौ। पुत्र शब्द परे—पिता च पुत्रश्च = पितापुत्रौ, मातापुत्रौ। अन्यत्र—जामाता च पुत्रश्च = जमातृपुत्रौ। दाता च भोक्ता च = दातृभोक्तारौ इत्यादि।

देवता वाचक पद में द्वन्द्व समास होने से पूर्व पद के अन्त में आ होता है। जैसे, इन्द्रश्च वरुणश्च = इन्द्रावरुणौ, सूर्यश्च चन्द्रमाश्च = सूर्याचन्द्रमसौ, अग्निश्च विष्णुश्च = अग्नाविष्णू, अग्नामरुतौ, मित्रावरुणौ, इन्द्रासोमौ आदि।

टिप्पणी—(क) ब्रह्मप्रजापति आदि शब्दों में आ नहीं होता। जैसे, ब्रह्मा च प्रजापतिश्च = ब्रह्मप्रजापती, अग्निवायू, वाय्वग्नी इत्यादि। और (ख) सोम तथा वरुण शब्द के परे अग्नि शब्द का इ 'ई' हो जाता है। जैसे, अग्निश्च सोमश्च = अग्नीषोमौ, अग्नीवरुणौ।

पूर्वनिपात और परनिपात

नीचे लिखी अवस्थाओं में द्वन्द्व समास में पूर्व और पर-निपात होते हैं। जैसे,

(क) अल्प स्वर वाले पद पहले रहते हैं। जैसे—गोमहिषौ, भ्रातृभगिन्यौ, तालतमालौ आदि।

(ख) यदि दोनों में स्वर समास हों तो स्वरादि शब्द पूर्व में होता है। जैसे—अश्वगजौ, इन्द्रवह्नी, उष्ट्रखरौ आदि।

(ग) स्वर समान होने से इकारान्त और उकारान्त पद पहले आते हैं। जैसे—हरिहरौ, शम्भुकृष्णौ आदि।

(घ) गौरवसूचक पद पूर्व में रहता है। जैसे—मातापितरौ, गुरुशिष्यौ आदि।

(ङ) लघु स्वर वाले पद पहले आते हैं। जैसे—स्वर्णताम्रौ, कुसुमपत्रे, विपिनगेहौ आदि।

(च) उत्कृष्ट वर्णवाचक तथा ज्येष्ठभ्रातृवाचक पद पूर्व में रहते हैं। जैसे—ब्राह्मणक्षत्रियौ, क्षत्रियवैश्यौ आदि। और युधिष्ठिरार्जुनौ, बलदेवकृष्णौ आदि।

(छ) कितने धर्मार्थ प्रभृति शब्द हैं जो विकल्प से होते

हैं। जैसे—धर्मार्थौ अर्थधर्म्मौ, शब्दार्थौ अर्थशब्दौ, वरवध्वौ वधूवरौ, गुणवृद्धी वृद्धिगुणौ, आद्यन्तौ अन्त्यादी, लघुदीर्घौ दीर्घलघू आदि।

२. समाहार द्वन्द्व

जिस समास में दो वा बहुत पदों का समाहार (एक जगह ठहरना) बोध हो वा प्रत्येक पद का अर्थ समष्टिभाव (सम्मिलित रूप) से प्रकाशित हो वहाँ समाहार द्वन्द्व होता है। समाहार द्वन्द्व में समस्त पद एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे, हस्तौ च पादौ च =हस्तपादम् इत्यादि।

द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्— प्राणी के अंग, तूर्य (वाद्य) के अंग और सेना के अंगवाचक शब्दों में समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे, प्राणी के अंग—पाणी च पादौ च तेषां समाहारः=पाणिपादम्, करचरणम्, शिरोग्रीवम् आदि। तूर्य के अंग—भेरी च पटहश्च अनयोः समाहारः=भेरीपटहम्, शङ्खदुन्दुभि इत्यादि। सेनांग—हस्तिनश्च अश्वाश्च एतेषां समाहारः=हस्त्यश्वम्। धनुःशरम् इत्यादि।

टिप्पणी—सेना में बहुवचन होने ही से समाहार द्वन्द्व समास होता है अन्यथा नहीं। जैसे, रथिकश्च अश्वारोहश्च एतयोः समाहारः= रथिकाश्वारोहौ। (फल-सेना-वनस्पति-मृग-शकुनि-क्षुद्रजन्तु-धान्य-तृणानां बहुवचन एव)

विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः— लिंगभेद होने से नदीवाचक, देशवाचक और नगरवाचक शब्दों में समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे, नदीवाचक—गंगा च शोणश्च =गंगाशोणम्, यमुनाब्रह्मपुत्रम्, ब्रह्मपुत्रचन्द्रभागम् आदि। देशवाचक—कुरुश्च कुरुक्षेत्रञ्च =कुरुकुरुक्षेत्रम्, कुरुजांगलम् आदि। नगरवाचक—मथुरा च पाटलिपुत्रश्च =मथुरापाटलिपुत्रम्, काशीप्रयागम्

आदि। समानलिंग होने और ग्रामवाचक होने से नहीं होता। जैसे, गंगायमुने, मत्स्यविदेहौ और जाम्बवशालूकिन्यौ।

येषां च विरोधः शाश्वतिकः— जिनमें परस्पर नित्य विरोध होता हो उनमें समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे, अहयश्च नकुलाश्च = अहिनकुलम्, गोव्याघ्रम्, काकोलूकम्, मार्जारमूषिकम् इत्यादि। स्वाभाविक विरोध न होने से नहीं होता। जैसे, देवाश्च असुराश्च = देवासुराः। इसमें स्वाभाविक विरोध नहीं है।

विभाषा वृक्ष-मृग-तृण-धान्य-व्यञ्जनपशुशकुन्यश्ववडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्—वृक्षवाचक, मृगवाचक, तृणवाचक, धान्यवाचक, व्यञ्जनवाचक, पशुवाचक और पक्षिवाचक पदों तथा अश्व-वडव, पूर्वापर और अधरोत्तर इनमें विकल्प से समाहार द्वन्द्व होता है। क्रमशः उदाहरण—प्लक्षाश्च न्यग्रोधाश्च—प्लक्षन्यग्रोधम् (पाकड़ और बड़), रुरुपृषतम् (दो मृगविशेष), कुशकाशम्, व्रीहियवम्, दधिघृतम्, गोमहिषम्, हंससारसम्, अश्ववडवम्, पूर्वञ्च अपरञ्च = पूर्वापरम्, अधरञ्च उत्तरञ्च = अधरोत्तरम्। एक पक्ष में प्लक्षन्यग्रोधाः, पूर्वापरे आदि भी होते हैं।

टिप्पणी—क्षुद्रजन्तुवाचक और फलवाचक में नित्य ही होता है। जैसे, दंशाश्च मशकाश्च = दंशमशकम्, बदराणि आमलकानि च बदरामलकम् आदि।

विरुद्धानामविशेषणानाञ्च— विरुद्धार्थ अद्रव्य वाचक पदों का विकल्प से समाहार द्वन्द्व होता है, विशेषण में नहीं। जैसे, धर्मश्च अधर्मश्च धर्माधर्मं or धर्माधर्मौ, शीतञ्च उष्णं च = शीतोष्णम् or शीतोष्णे, आलोकान्धकारम् or आलोकान्धकारौ आदि।

गवाश्वप्रभृतीनाञ्च—गवाश्वप्रभृति में नित्य समाहार होता है। जैसे, गावश्च अश्वाश्च=गवाश्वम्, पुत्रपौत्रम्, दासी-दासम्, मूत्रपुरीषम्, तृणोपलम्, श्वचाण्डालम्, मांसशोणि-तम् आदि।

शूद्रवाचक पदों के साथ समाहार द्वन्द्व होता है। जैसे, गोपाश्च नापिताश्च=गोपनापितम्। अस्पृश्य शूद्रों में नहीं होता। जैसे, चाण्डालमृतपाः आदि।

समाहार द्वन्द्व समास में चवर्गान्त, दकारान्त, षकारान्त और हकारान्त शब्दों के आगे अत् (अ) होता है। जैसे, वाक्त्वचम्, त्वक्स्रजम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्विषम्, छत्रोपान-हम् आदि।

अतिरिक्त सविग्रह समस्त पद

द्यौश्च पृथिवी च=द्यावापृथिव्यौ, दिवस्पृथिव्यौ, द्यौश्च भूमिश्च=द्यावाभूमी, माता च पिता च=मातरपितरौ, कुशश्च लवश्च=कुशीलवौ, स्त्री च पुमान् च=स्त्रीपुंसौ, जाया च पतिश्च=जायापती या दम्पती वा जम्पती (पतिपत्नी), वाक् च मनश्च=वाङ्मनसं, ऋक् च साम च=ऋक्सामे, नक्तं च दिवा च=नक्तन्दिवम् (रात दिन), रात्रौ च दिवा च=रा-त्रिन्दिवम्, अक्षिणी च भ्रुवौ च=अक्षिभ्रुवम्, अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रः, अहश्च दिवा च=अहर्दिवम्, दाराश्च गावश्च=दारगवम्, ऋक् च यजुश्च=ऋग्यजुषम्, धेनुश्च अनड्वांश्च =धेन्वनडुहौ, अहश्च निशा च=अहर्निशम्।

३. एकशेष द्वन्द्व

स्वरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ—एक विभक्ति होने से समास करने पर समानाकार के दो वा बहुत पदों में से एक ही रह जाता है। ऐसे समास को एकशेष द्वन्द्व कहते हैं। जैसे, वृक्षश्च

वृक्षश्च = वृक्षौ, स च स च = तौ, देवश्च देवश्च देवश्च = देवाः, फलञ्च फलञ्च = फले, लता च लता च लता च = लताः आदि।

पुमान् स्त्रिया—स्त्रीवाचक पद के साथ समास होने से पुरुष-वाचक पद रह जाता है। जैसे, ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च = ब्राह्मणौ, हंसी च हंसश्च = हंसौ, युवती च युवा च = युवानौ आदि। समान शब्द न होने से नहीं होता। जैसे, हंसश्च सारसी च = हंससारस्यौ, इसमें हंस सारस भिन्न पद हैं; इससे एकशेष नहीं हुआ।

टिप्पणी—व्यक्तिवाचक में नहीं होता। जैसे, इन्द्रश्च इन्द्राणी च = इन्द्रेन्द्राण्यौ आदि।

भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्—स्वसृ शब्द के साथ भ्रातृ शब्द के और दुहितृ शब्द के साथ पुत्र शब्द के समास होने से भ्रातृ और पुत्र शब्द रह जाते हैं। जैसे, भ्राता च स्वसा (बहन) च = भ्रातरौ, पुत्रश्च दुहिता च = पुत्रौ।

पिता मात्रा। श्वशुरः श्वश्र्वा—मातृ शब्द के साथ पितृ शब्द का और श्वश्रू शब्द के साथ श्वशुर शब्द का समास होने से पिता और श्वशुर शब्द रह जाते हैं। जैसे, माता च पिता च = पितरौ or मातापितरौ, श्वश्रूश्च श्वशुरश्च = श्वशुरौ।

नपुंसकलिङ्ग के साथ पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्गके साथ समास हो तो नपुंसकलिङ्ग ही रहता है और एकवचन होता है। जैसे, शुक्लश्च शुक्ला च शुक्लञ्च = शुक्लानि शुक्लं वा। नपुंसक ही होने से एकवचन नहीं होता। जैसे, मधुरं च मधुरं च मधुरं च = मधुराणि।

अन्यान्य शब्दों के साथ त्यदादि के समास होने पर त्यदादि ही शेष रहता है। जैसे, स च रामश्च = तौ आदि।

अभ्यास

१. नीचे लिखे विग्रहवाक्यों में कैसे रूप होंगे ? लिखो—

सिन्धुश्च गंगा च, हस्तिनश्च अश्वाश्च रथाश्च, नखश्च दन्तश्च केशश्च, स च त्वं च अहं च, मक्षिकाश्च भ्रमराश्च, काकाश्च उलूकाश्च, देवश्च देवी च, ब्रह्मा च विष्णुश्च महेशश्च, दधि च घृतं च, रथिकश्च अश्वारोहश्च, भिल्लाश्च धीवराश्च, सिंहलश्च मगधश्च, देवाश्च दानवाश्च ।

अन्यान्य समास (Other Compounds)

१. सुप्सुपा समास

सुबन्त पद के साथ जो सुबन्त पद का समास होता है वह सुप्सुपा समास है। जैसे, पूर्वं भूतो = भूतपूर्वः, आपादं मस्तकम् = आपादमस्तकम्, नितान्तं क्षामः = नितान्तक्षामः, परमं पूज्यः = परमपूज्यः इत्यादि ।

२. नित्य समास

अर्थ शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त पद का नित्य समास होता है। समास वाक्य में अर्थ शब्द का उल्लेख न करके इदम् शब्द का उल्लेख करते हैं। जैसे, देवाय इदम् = देवार्थम्, दानाय इदम् दानार्थम्, धनार्थम्, भिक्षार्थम् इत्यादि ।

३. एकदेशी समास

षष्ठी विभक्तियुक्त पूर्व, अपर, अधर और उत्तर शब्द के साथ जो समास होता है वह एकदेशी समास है। जैसे, पूर्वं कायस्य = पूर्वकायः, अपरकायः आदि ।

एकदेशी समास में अहन् शब्द के 'अह्न' और रात्रि शब्द के 'रात्र' ही जाता है। जैसे, पूर्वं अह्नः = पूर्वाह्नः, मध्यम् अह्नः = मध्याह्नः, पूर्वं रात्रेः = पूर्वरात्रः, अपरं रात्रेः = अपररात्रः इत्यादि।

४. नञ् समास

सुबन्त पद के साथ नञ् अव्यय का जो समास होता है वह नञ् समास है। व्यञ्जन परे रहने से 'नञ्' का 'अ' हो जाता है और स्वर परे रहने से 'अन्' हो जाता है। जैसे, न प्रियः = अप्रियः, न सुखम् = असुखम्, न दर्शनम् = अदर्शनम्, न उष्णम् = अनुष्णम्, न उपकारः = अनुपकारः, न अश्वः = अनश्वः इत्यादि।

५. मयूरव्यंसकादि समास

समास में मयूरव्यंसकादि कितने पद निपातन से सिद्ध होते हैं। जैसे, मयूरो व्यंसकः = मयूरव्यंसकः (धूर्त मयूर), उदक् च अवाक् च = उच्चावचम् (ऊँचा नीचा, भला बुरा) नास्ति कुतो भयं यस्य स = अकुतोभयः (निडर), नास्ति किञ्चन यस्य स = अकिञ्चनः, अहं पूर्वम् अहं पूर्वम् इति यस्यां क्रियायां सा = अहंपूर्विका (परस्पर स्पर्द्धा सहित कार्य करना)। अन्यो देशः = देशान्तरम्, अन्यः अर्थः = अर्थान्तरम् आदि (इन अन्तिम दोनों उदाहरणों को कोई कोई नित्य समास में भी ले जाते हैं।)

६. प्रादि समास

सुबन्त पद के साथ प्रादि उपसर्गयुक्त कृदन्तपद का तथा 'कु' अव्यय का जो समास होता है वह प्रादि है। जैसे, उत्क्रान्तो वेलाम् = उद्वेलः, परिग्लानो अध्ययनाय = पर्यध्ययनः, अपगतो ग्रामात् = अपग्रामः, उत्थितो निद्रायाः = उन्निद्रः, कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः।

तत्पुरुष समास में 'कु' का 'कत्' होता है। जैसे, कुत्सितम् अन्नम् = कदन्नम्, कुत्सितः आचारः = कदाचारः आदि। ईषत् अर्थ में 'कु' का 'का' हो जाता है। जैसे, ईषत् मधुरम् =

कामधुरम्, ईषत् लवणम् = कालवणम्। पथिन् और अक्षि शब्द परे 'कु' का 'का' हो जाता है। जैसे, कुत्सितः पन्थाः = कापथः, कुत्सिते अक्षिणी यस्य = काक्षः। पुरुष शब्द परे रहने से विकल्प से होता है। जैसे, कुत्सितः पुरुषः = कुपुरुषः, कापुरुषो वा।

उष्ण शब्द परे रहने से 'कु' के 'का', 'कत्' और 'कव' आदेश होते हैं। जैसे, कुत्सितमुष्णं = कोष्णम्, कदुष्णम्, कवोष्णम् वा।

७. उपपद समास

धातुओं के सहित उपपद (जिन सुबन्त पदों के परवर्ती धातुओं से कृत् प्रत्यय होते हैं वे पद) का जो समास होता है उसे उपपद समास कहते हैं। जैसे, कुम्भं करोति इति = कुम्भकारः, तमः अपहन्ति = तमोपहः। इन दोनों पदों में 'कुम्भम्' और 'तमः' उपपद के साथ कृ और हन् धातु के समास करने पर 'कुम्भकृ' और 'तमः अपहन्' इस प्रकार होने के बाद 'अण्' और 'अ' प्रत्यय करके उक्त रूप बने हुए हैं। इसी प्रकार आत्मम्भरिः, धनापहारी, दुःखभाक्, अग्रशयः, शिलाशयः, जलजम्, भुजङ्गम्, विहगः आदि पद बनते हैं।

८. मध्यमपदलोपी समास

मध्यमपदलोपी समास कर्मधारय और बहुव्रीहि में होता है। जैसे, कर्मधारय में—शाकप्रधानः पार्थिवः = शाकपार्थिवः, सिंहचिन्हितम् आसनम् = सिंहासनम्, देवपूजको ब्राह्मणः = देवब्राह्मणः, पञ्चाधिका दश = पञ्चदश, विन्ध्यनामा गिरिः = विन्ध्यगिरिः, छायाप्रधानः तरुः = छायातरुः आदि कोई कोई मध्यमपदलोपी कर्मधारय को शाकपार्थिवादि समास भी कहते

हैं। बहुव्रीहि में—चन्द्र इव आननं यस्याः सा = चन्द्रानना, अभुक्तानि पर्णानि यया सा—अपर्णा (पार्वती), कण्ठे स्थितः कालो यस्य स = कण्ठेकालः, शास्त्रज्ञानमेव धनं यस्य स = शास्त्र-ज्ञानधनः, चन्द्रसहिता चूडा यस्य स = चन्द्रचूडः, विगतः अर्थो यस्मात् स = व्यर्थः, अनुगतःअर्थो यस्मिन् स = अन्वर्थः इत्यादि।

६. अलुक् समास

समास करने पर जहाँ कहीं पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता वहाँ अलुक् समास होता है। कहाँ लोप होता और कहाँ लोप नहीं होता, यह शिष्ट प्रयोगों से समझना चाहिये। नीचे लिखे स्थानों में विभक्तियाँ लुप्त नहीं होतीं—

(क) तृतीया तत्पुरुष में—पुंसानुजः, सहसाकृतम्, ओजसा-कृतम्, मनसाकृतम्, अम्भसाकृतम्, तमसाकृतम्, मनसा-दत्ता, आदिसादेवी, आत्मनापञ्चमः, आत्मनादशमः, हस्तिना-पुरम् आदि।

(ख) चतुर्थी तत्पुरुष में—आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्।

(ग) पंचमी तत्पुरुष में—स्तोकान्मुक्तः, कृच्छ्रान्निष्क्रान्तः, अल्पान्मुक्तः, अन्तिकादागतः, समीपादागतः, दूरादागतः।

(घ) षष्ठी तत्पुरुष में—भ्रातुष्पुत्रः, दासस्य तनयः, वाचो-युक्तिः, पश्यतोहारः, देवानाम्प्रियः, शुनःपुच्छः, शुनःशेफः, शुनोलाङ्गूलम्, दास्याः पुत्रः, दिवोदासः, होतुःपुत्रः, होतुरन्ते-वासी, पितुःपुत्रः, पितुरन्तेवासी, वाचस्पतिः, चौरस्य कुलम्, विशाम्पतिः।

(ङ) सप्तमी तत्पुरुष में—युधिष्ठिरः, त्वचिसारः, गेहेशूरः, अन्तेवासी, पङ्केरुहम्, शरदिजः, प्रावृषिजः, दिविषदाम्, कर्णे-जपः, दिविजः, हृदिस्पृक्, दिविस्पृक्, कण्ठेकालः, उरसिलोमा।

किसी किसी स्थान में विकल्प से लोप होता है। जहाँ लोप नहीं होता वहाँ अलुक् और जहाँ लोप होता है वहाँ अन्यान्य समास होते हैं। जैसे, पितुः स्वसा पितृष्वसा; दुहितुः पतिः दुहितृपतिः; दास्याः पुत्रः दासीपुत्रः; सरसिजम् सरोजम्; मनसिजः मनोजः; वनेचरः वनचरः; खेचरः खचरः; अग्रेसरः अग्रसरः आदि।

मिश्रित अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों के उन पदों को जिनमें समास सम्भव हो, समस्त पद बना कर संस्कृत अनुवाद करो—

मुझे सूखा कपड़ा कहाँ मिलेगा? कृपण का धन तीन प्रकार से नष्ट हो जाता है। मेरे पिता हर रोज स्कूल जाने को कहते हैं। संसार में दिखलाई पड़ने वाले पदार्थ ईश्वर के बनाये हैं। बहुत कम लोग संसार के सच्चे मार्ग पर चलते हैं। शरण में आये हुए को मारना न चाहिये। ओस से भींगी हुई घास पर मत चलो। जो तुम्हारे घर से आदमी आया है उसको खिलावो। मेरे लिये वह काम कर दो। तुम्हारे ऐसा तीनों लोक में कोई आदमी नहीं है। मरे हुए सिंह की हड्डियाँ दिखलायी पड़ीं। क्षण २ जीवन का काल घटता जाता है। माता पिता धर्मात्मा हैं। मेरे प्यारे मित्र आ गये। हिमालय तक उनका राज्य फैला है। तुम्हारी स्त्री के दाँत सुन्दर हैं। संसार के माता पिता पार्वती और परमेश्वर हैं। मित्रों के साथ मैं नौकरों के आगे २ चला।

२. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करोः—

विजयति महद्राजाः। प्रियसखा गच्छति। ईश्वरः त्रिभुवनानां पालकः। राजपथि बहवो जना दृश्यन्ते। देवासुरमयु-

ध्यत। अल्पमेधायाः विद्यार्थिनः शास्त्रप्रवेशो न भवति। महिषः चतुष्पादः अस्ति। सुराजस्य राज्ये प्रजाः सुखिनो वसन्ति। सूर्यचन्द्रमसौ जगतः प्रकाशकौ। बहोः कालात् प्रियसखा दृष्टः। द्वितीयां कन्या सुन्दरी। छात्रदशमः बुद्धिमान्। अस्मिन् शुभाहनि दानं देहि। क्रूराणामेषां सभा सत्यं पिशाचसभा अस्ति। महाराज्ञे सर्वं निवेदय। हितान्न यः संशृणुते स कुप्रभुः। अहोरात्रि पुण्यकर्म कुरु। पुत्रः पितामातरौ सेवते। हस्तपदौ प्रक्षाल्य भोजनं कुरु। प्रसन्नचेतोऽद्य लक्ष्यते भवान्। स मे समानगोत्रः। सुपथे देशे गमनं सहजम्। काककोकिलौ कृष्णौ। मृत मातरं बालकं पश्य। गृहीतमुनिधर्माणं तं पश्य।

३. नीचे लिखे सविग्रह समास बतावो—

रमाजानिः। अनुगृहम्। तिष्ठद्गु। सितासितः। त्रिपदी। पयः पानम्। ग्रामान्तरम्। शिरोधार्य्यम्। अमोघः। कृतविद्यः। चतुष्पथम्। गृहस्थः। उन्नतग्रीवः। देवब्राह्मणः। शूलपाणिः। चतुर्भुजः। प्रतिमासम्। सस्त्रीकः। भ्रातरौ। स्थूलनासिकः। द्विजार्थम्। राजमार्गः। चतुःसमुद्रवसना। त्रिलोकीनाथेन। समानधर्माणः। पुष्पधन्वा। मुखपद्मम्। श्वयुवमघवानः। अश्वमहिषम्। मेघच्युतः। जलपिपासुः। विन्ध्यारण्यवसतिः। कविश्रेष्ठः। दिविजः। गच्छद्‌बालिका। दिग्वसना।

पाँचवाँ प्रकरण

सन्धि (Combination of Letters)

दो अक्षरों की, "स्वर हो अथवा व्यञ्जन" मिलावट को सन्धि कहते हैं। सन्धि में कहीं २ दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है और कहीं २ एक ही में, कहीं २ दोनों के बदले एक तीसरा ही अक्षर हो जाता है।

सन्धि तीन प्रकार की होती है—स्वर-सन्धिः, व्यञ्जन-संधि और विसर्ग-सन्धि।

स्वर-सन्धि

स्वर के साथ जो स्वर का विकार होता है, उसे स्वर-सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि के पाँच भाग होते हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण और अयादि-चतुष्टय।

दीर्घ

जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद क्रम से ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ हों तो दोनों मिलकर उसी क्रम से दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते है। जैसे, सुर + अरिः = सुरारिः, पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः, श्री + ईशः = श्रीशः, गिरि + ईशः = गिरीशः, विधु + उदयः = विधूदयः, मातृ + ऋद्धिः = मातृद्धिः इत्यादि।

गुण

ह्रस्व या दीर्घ अकार के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ रहे तो ह्रस्व या दीर्घ अ + इ मिल कर ए, ह्रस्व या दीर्घ अ + उ मिल कर ओ और ह्रस्व या दीर्घ अ + ऋ मिलकर अर् गुण

हो जाता है। जैसे, देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः, रमा + ईशः = रमेशः, गंगा + उदकम् = गंगोदकम्, चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः, गंगा + ऊर्म्मिः = गंगोर्म्मिः, हित + उपदेशः = हितोपदेशः, वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः, महा + ऋषिः = महर्षिः इत्यादि।

वृद्धि

यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार से परे ए वा ऐ, ओ वा औ रहे तो अ + ए वा ऐ मिलकर ऐ और अ + ओ वा औ मिलकर औ वृद्धि हो जाती है। जैसे, एक + एकम् = एकैकम्, परम + ऐश्वर्यम् = परमैश्वर्यम्, तथा + एव = तथैव, महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम्, शुद्ध + ओदनः = शुद्धौदनः, गंगा + ओघः = गंगौघः, महा + औषधिः = महौषधिः इत्यादि।

यण (य्, व्, र्, ल्)

ह्रस्व वा दीर्घ इकार, उकार, ऋकार और ऌकार से भिन्न किसी स्वर के परे रहने पर इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान में क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाते हैं। जैसे, यदि + अपि = यद्यपि, प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः, प्रति + एकम् = प्रत्येकम्, पार्वती + आराधनम् = पार्वत्याराधनम्, अनु + अयः = अन्वयः, बहु + ऐश्वर्यम् = बह्वैश्वर्यम्, पितृ + अर्थः = पित्रर्थः, मातृ + आनन्दः = मात्रानन्दः, ऌ + आकृतिः = लाकृतिः इत्यादि।

अयादिचतुष्टय

अकारादि स्वर परे रहने पर ए, ऐ, ओ, औ का क्रम से अय्, आय्, अव्, आव् होता है। जैसे, ने + अनम् = नयनम्, नै + अकः = नायकः, पो + अनः = पवनः पौ + अकः = पावकः।

यकारादि प्रत्यय परे रहने पर ओ का अव् और औ का

आव् होता है। जैसे, गो + यम् = गव्यम्। नौ + यम् = नाव्यम् इत्यादि।

पदान्त एकार अथवा ओकार के परे यदि अकार रहे तो उस अकार का लोप हो जाता है और उसका चिन्ह रह जाता है। उस चिन्ह को अर्द्ध अकार (ऽ) कहते हैं। जैसे, हरे + अव = हरेऽव, प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण।

अकार भिन्न स्वर परे रहने पर शब्द के अन्तस्थित एकार और ओकार का विकल्प से अ, अय् और अ, अव् क्रम से होता है। जैसे, हरे + आगच्छ = हरआगच्छ, हरयागच्छ। हरे + ईह = हरईह, हरयिह। प्रभो + आगच्छ = प्रभआगच्छ, प्रभवागच्छ। विष्णो + इह = विष्णइह, विष्णविह इत्यादि। अ होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

स्वरवर्ण परे रहने पर शब्द के अन्तस्थित ऐकार और औकार का विकल्प से आ, आय् और आ, आव् क्रम से होता है। जैसे, श्रियै + अर्थः = श्रियाअर्थः, श्रियायर्थः। रवौ + उदिते = रवाउदिते, रवावुदिते इत्यादि। आ होने पर फिर सन्धि नहीं होती।

द्विवचनान्त दीर्घ ईदन्त, ऊदन्त और एदन्त पदों की सन्धि नहीं होती। जैसे, हरी + इमौ = हरी इमौ, गिरी + एतौ = गिरी एतौ, गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू इत्यादि।

अदस् शब्द के मकार से परे दीर्घ ईकार और दीर्घ ऊकार के साथ सन्धि नहीं होती। जैसे, अमी + ईशाः = अमी ईशाः, अमू + आसाते = अमू आसाते इत्यादि।

इति स्वरसन्धिः

व्यञ्जन-सन्धि

स्वर अथवा व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का जो संयोग होता है, उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

यदि त् और द् के आगे च् वा छ् हों तो उनके स्थान में च्; ज् वा झ् हों तो ज्; ट् वा ठ् हों तो ट्; ड् वा ढ् हों तो ड्; आदेश होते हैं। जैसे, उत्+चारणम्=उच्चारणम्। उत्+छिन्नः=उच्छिन्नः। उत्+ज्वलः=उज्ज्वलः। विपद्+जालः=विपज्जालः। महत्+झञ्झनम्=महज्झञ्झनम्। तत्+टीका=तट्टीका। सत्+ठकारः=सट्ठकारः। उत्=डयनम्=उड्डयनम्। एतत्+ढक्का=एतड्ढक्का इत्यादि।

यदि न् से परे ज् वा झ् हो तो न् का ञ् और ड् वा ढ् परे हो तो न् का ण् होता है। जैसे, भवान्+जीवतु=भवाञ्जीवतु, गच्छन्+झटिति=गच्छञ्झटिति। महान्+डामरः=महाण्डामरः, चक्रिन्+ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे इत्यादि।

यदि पद के अन्त में त् वा द् से परे तालव्य श हो तो त्, द् के स्थान में च और श के स्थान में छ होता है। जैसे, उत्+शिष्टः=उच्छिष्टः। तद्+शरीरम्=तच्छरीरम्।

सानुनासिक वर्णों को छोड़ कर वर्ग के किसी वर्ण से परे हकार हो तो उस वर्ण के स्थान में तृतीय वर्ण अर्थात् ग्, ज्, ड्, द्, ब् और ह् के स्थान में उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण घ, झ, ढ, ध, भ क्रमशः होते हैं। जैसे, वाक्+हरिः=वाग्घरिः। अच्+ह्स्वः=अज्झ्स्वः। षट्+हलानि=षड्ढलानि। तत्+हितः=तद्धितः। अप्+हरणम्=अब्भरणमित्यादि।

यदि स्वरवर्ण वा वर्ग के तृतीय चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व आगे रहें तो पद के अन्तस्थित क्, च्, ट्, प् के स्थान

में क्रमशः ग्, ज्, ड्, ब् हो जाते हैं। जैसे, दिक्+अम्बरः=दिगम्बरः, दिक्+गजः=दिग्गजः, वाक्+जालः=वाग्जालः, वाक्+दानम्=वाग्दानम्, दिक्+भागः=दिग्भागः, वाक्+रोधः=वाग्रोधः, धिक्+याचना=धिग्याचना, अच्+अन्तः=अजन्तः, षट्+दर्शनम्=षड्दर्शनम्, षट्+रिपुः=षड्रिपुः, अप्+जम्=अब्जम् इत्यादि।

यदि स्वरवर्ण अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व पर में हों तो पदान्त त् के स्थान में द् होता है। जैसे, जगत्+ईशः=जगदीशः, सत्+आचारः=सदाचारः, उत्+गमनम्=उद्गमनम्, तत्+धनम्=तद्धनम्, जगत्+बन्धुः=जगद्-बन्धुः, सत्+वंशः=सद्वंशः, उत्+योगः=उद्योगः इत्यादि।

यदि पदान्त म के परे स्पर्श ('क' से 'म' तक) वर्ण हों तो म् का अनुस्वार अथवा जिस वर्ग का वर्ण आगे हो उसी का पञ्चम वर्ण हो जाता है और यदि अन्तस्थ (य र ल व), ऊष्म (श ष स ह) परे हों तो म् का केवल अनुस्वार ही होता है। जैसे, सम्+कल्पः=संकल्पः, सङ्कल्पः। मृत्युं+जयः=मृत्युंजयः, मृत्युञ्जयः। सम्+धिः=संधिः, सन्धिः। सं+गमः=संगमः, सङ्गमः। सम्+योगः=संयोगः। सम्+वत्=संवत्। यम्+लोकम्=यंलोकम्। कष्टम्+सहते=कष्टं सहते। मधुरम्+हसति=मधुरं हसति इत्यादि। स्वर परे रहने से म् स्वर में मिल जाता है। जैसे, सम्+आचारः=समाचारः।

यदि त्, द् और न् के आगे ल रहे तो उनके स्थान में ल् होता है और न् के स्थान में अनुस्वार भी होता है। जैसे, उत्+लेखः=उल्लेखः। तद्+लयः=तल्लयः। महान्+लाभः=महाँल्लाभः इत्यादि।

पदान्त में वर्गों के प्रथम वर्ण के आगे यदि न् वा म् परे

हो तो प्रथम वर्ण के स्थान में पञ्चम अथवा तृतीय वर्ण होता है। जैसे, वाक्+मयम्=वाङ्मयम्, वाग्मयम्। जगत्+नाथः=जगन्नाथः, जगद्नाथः। दिक्+नागः=दिङ्नागः, दिग्नागः। उत्+मत्तः=उन्मत्तः, उद्मत्तः इत्यादि।

पद के अन्त में न आवे और उसके परे च, छ, ट, ठ, त वा थ आवे तो न की जगह अनुस्वार और च, छ, ट, ठ, त, थ की जगह क्रमशः श्च, श्छ, ष्ट, ष्ठ, स्त वा स्थ होता है। जैसे, कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्, महान्+छेदः=महांश्छेदः, चलन्+टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः, महान्+ठक्कुरः=महांठक्कुरः, पतन्+तरुः+पतंस्तरुः, क्षिपन्+थुत्कारः=क्षिपंस्थुत्कारः इत्यादि।

जब पद के अन्त में त् वा न् के परे श आवे तो त् और न् की जगह क्रम से च् और ञ् और श की जगह छ होता है। जैसे, तत्+श्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा, धावन्+शशः=धावञ्छशः, इत्यादि। इनके विकल्प से और भी रूप होते हैं। जैसे, तत्+श्रुत्वा=तच्श्रुत्वा। धावञ्+शशः=धावञ्छशः आदि।

यदि दन्त्य स् परे हो तो पद के मध्यस्थित म् के स्थान में अनुस्वार और त् परे हो तो म् के स्थान में न होता है। जैसे, रम्+स्यते=रंस्यते, निनम्+सति=निनंसति, क्षम्+तव्यम्=क्षन्तव्यम्, शाम्+तः=शान्तः इत्यादि।

पद के मध्यस्थित न के स्थान में जिस वर्ग का अक्षर परे हो उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। जैसे, आशन्+कते=आशङ्कते, वन्+चयति=वञ्चयति, उत्कन्+ठते=उत्कण्ठते, कम्+पते=कम्पते, आलन्+बते=आलम्बते इत्यादि।

ह्रस्व स्वर के परे छ रहे तो छ के साथ च् मिल जाता है, पर दीर्घ स्वर के परे विकल्प से होता है। जैसे, वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया, लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया इत्यादि।

यदि च् अथवा ज् के परे दन्त्य न् हो तो न् के स्थान में ञ होता है। जैसे, याच् + ना = याञ्चा इत्यादि।

यदि मूर्द्धन्य ष् के आगे त, थ रहें तो क्रमशः ट, ठ होते हैं। जैसे, आकृष् + तः = आकृष्टः, षष् + थः = षष्ठः इत्यादि।

विसर्गसन्धिः

स्वर और व्यञ्जन के साथ मिलने पर विसर्ग का जो विकार होता है उसे विसर्गसन्धि कहते हैं।

यदि विसर्ग के आगे च अथवा छ हो तो विसर्ग का तालव्य श्, यदि उसके आगे त वा द हो तो दन्त्य स् और यदि ट वा ठ हो तो मूर्द्धन्य ष् होता है। जैसे, निः + चयः = निश्चयः, नि + चिन्तः = निश्चिन्तः, निः + छलः = निश्छलः, धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः, दुः + तरः = दुस्तरः, निः + सारः = निस्सारः इत्यादि।

यदि विसर्ग से परे स, श वा ष हो तो विकल्प से विसर्ग का क्रमशः स्, श् वा ष् होता है। जैसे, प्रथमः + सर्गः = प्रथमस्सर्गः, मत्तः + षट्पदः = मत्तष्षट्पदः, अग्नेः + शिखा = अग्नेश्शिखा आदि।

यदि वर्ग का तीसरा, चौथा वा पाँचवाँ अथवा य, र, ल, व, ह आगे हो और पूर्व में अकार हो तो विसर्ग के सहित अकार के स्थान में ओ हो जाता है। जैसे, मनः + हरम् = मनोहरम्, मनः + रथः = मनोरथः, तेजः + मयः = तेजोमयः, सरः + जम् = सरोजम्, पयः + दः = पयोदः, मनः + योगः = मनोयोगः, मनः + भावः = मनोभावः इत्यादि।

यदि अकार पूर्वक विसर्ग के परे अकार हो तो तीनों मिल कर ओकार हो जाता है और यदि पर में कोई दूसरा स्वर

हो तो विसर्ग का लोप होता है। जैसे, मनः + अवधानम् = मनोऽवधानम्, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी, तेजः + आभासः = तेज आभासः, यशः + इच्छा = यश इच्छा इत्यादि।

यदि विसर्ग के पूर्व अ, आ छोड़ कर कोई दूसरा स्वर और आगे स्वर वर्ण वा वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है। जैसे, निः + धनः = निर्धनः, बहिः + देशः = बहिर्देशः, दुः + नीतिः = दुर्नीतिः, बहिः + योगः = बहिर्योगः, निः + आधारः = निराधारः, निः + उद्देशः = निरुद्देशः इत्यादि।

यदि अकार-परस्थित र जात विसर्ग हो तो विसर्ग का र् होता है। जैसे, पुनः + अपि = पुनरपि, प्रातः + एव = प्रातरेव, स्वः + गतः = स्वर्गतः, भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ, मातः + देहि = मातर्देहि इत्यादि। यदि र के परे र हो तो पूर्व र का लोप हो जाता है और उसके पूर्व के स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे, पुनर् + रचना = पुनारचना, निर् + रोगः = नीरोगः, निर् + रसः = नीरसः इत्यादि।

यदि अकार-भिन्न स्वरवर्ण परे रहे तो अकार परस्थित विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे, नरः + इव = नर इव, चन्द्रः + उदेति = चन्द्र उदेति, देवः + ऋषिः = देव ऋषिः, कः + एषः = क एषः, कुतः + एषः = कुत एषः, रक्तः + ओष्ठः = रक्त ओष्ठः इत्यादि।

यदि स्वरवर्ण, वर्ग के ३य, ४र्थ या ५म वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह परे हो तो आकार के परे विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे, अश्वाः + अमी = अश्वा अमी, नराः + लभन्ते = नरा लभन्ते, बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति इत्यादि।

यदि विसर्ग के परे क, ख वा प, फ हो और उसके पहले

इ, उ रहे तो विसर्ग का मूर्द्धन्य ष् हो जाता है। जैसे, निः + कारणम् = निष्कारणम्, निः + पापः = निष्पापः, निः + फलम् = निष्फलम्, दुः + करः = दुष्करः इत्यादि।

कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः और तिरः शब्द के विसर्ग के स्थान में दन्त्य स होता है। जैसे, नमः + कारः = नमस्कारः, तिरः + कारः = तिरस्कारः, पुरः + कारः = पुरस्कारः इत्यादि।

क, ख, प वा फ परे रहने से हविः, सर्पिः, आयुः, बर्हिः, अर्चिः, धनुः, चक्षुः, वपुः आदि के विसर्ग के स्थान में विकल्प से मूर्द्धन्य ष् होता है। जैसे, हविः + पतति = हविष्पतति, हविः पतति, आयुः + करोति = आयुष्करोति, आयुः करोति आदि। समास में नित्य ष् होता है। जैसे, आयुः + कामः = आयुष्कामः।

कर, कार, कान्त, काम, कुम्भ और पात्र परे रहने से अकार के परस्थित विसर्ग के स्थान में स् होता है। जैसे, श्रेयः + करः = श्रेयस्करः, मनः + काम = मनस्कामः, पुरः + कारः = पुरस्कारः, पयः + पात्रम् = पयस्पात्रम् इत्यादि।

तमः—काण्डम्, मेदः—पिण्डः, भाः—करः, अहः—करः, वाचः—पतिः, दिवः—पतिः, अयः—कीलः इत्यादि के विसर्ग के स्थान में स् होता है। जैसे, तमस्काण्डम्, मेदस्पिण्डः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः, दिवस्पतिः, अयस्कीलः इत्यादि।

अकारभिन्न स्वरवर्ण अथवा कोई व्यञ्जनवर्ण परे रहे तो सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे, सः + उवाच = स उवाच, सः + चलति = स चलति, एषः + सहते = एष सहते आदि।

परिशिष्ट (क)

णत्व विधान (Change of न into ण)

ऋ, ॠ, र और मूर्द्धन्य ष् इन चार वर्णों के परे दन्त्य न का ण होता है। जैसे, नृणाम्, नॄणाम्, चतसृणाम्, भ्रातॄणाम् चतुर्णाम्, विस्तीर्णम्, दोष्णाम्, पुष्णाति आदि।

यदि स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य, व, ह और अनुस्वार से व्यवधान हो अर्थात् ये सब बीच में भी पड़ जाँय तो भी न का ण होता है। जैसे—कराणाम्, करिणा, गुरुणा, मृगेण, मूर्खेण, दर्पेण, रयेण, गर्वेण, ग्रहाणाम् इत्यादि।

टिप्पणी—इनके अतिरिक्त अक्षरों के व्यवधान रहने पर ण नहीं होता। जैसे—अर्चना, किरीटेन, अर्थेन, स्पर्शेन, रसेन, दृढानाम्, अर्जनम् इत्यादि।

पद के अन्तस्थित दंत्य न् का मूर्द्धन्य ण् नहीं होता। जैसे—रामान्, हरीन्, गुरून्, मृगान्, वृक्षान्, भ्रातॄन् इत्यादि।

टिप्पणी—न-भिन्न तवर्ग, प और भ संयुक्त न का ण नहीं होता। जैसे—कृन्तति, ग्रन्थनम्, वृन्दः, रन्धनम्, तृप्नोति, क्षुभ्नाति इत्यादि।

यदि एक पद में ऋ, ॠ, र् और ष् हो और दूसरे पद में न् हो तो ण् नहीं होता। जैसे, नृयानम्, अन्तर्नगरम्, रघुनन्दनः, त्रिनेत्रः, वृषवाहनः, वारिनिधिः आदि।

यदि अन्य पदस्थित न विभक्ति के स्थान में हो वा विभक्ति सहित हो वा स्त्रीलिंग के ई प्रत्ययान्त में हो तो विकल्प से ण होता है। जैसे, विभक्तिस्थान में—प्रभावेण, प्रभावेन, अन्तर्भावेण, अन्तर्भावेन आदि। विभक्तियुक्त में—पुरयायिणाम्, पुरयायिनाम्, विषपायिणा, विषपायिना आदि। ई प्रत्ययान्त में—विषपायिणी, विषपायिनी आदि।

टिप्पणी—पक्व, युवन् तथा अहन् और भगिनी, कामिनी, भामिनी, यूनी आदि शब्दों के न का ण नहीं होता। जैसे—गुरुपक्केन, चारुयूना, दीर्घाह्ना, भितृभगिनी, परकामिनी, गुरुभामिनी, घोरयामिनी, चारुयूनी आदि।

यदि परपद एक स्वर विशिष्ट अथवा कवर्गयुक्त हो तो न का नित्य ण होता है। प्रभुणा, प्रभूणां, वृत्रहणः, कवर्ग—श्रीकामेण, दुर्गमेण, परिपाकेण आदि।

औषधि (पका हुआ शस्य) वाचक और वृक्ष वाचक शब्दों के परे वन शब्द के न का विकल्प से ण होता है। जैसे—माषवनं, माषवणम्। वृक्षवाचक—बदरीवनं, बदरीवणं, जम्बीर-वनं, जम्बीरवणमित्यादि।

टिप्पणी—दो या तीन स्वर वाले शब्द के परे होने से ण नहीं होता। जैसे—सहकारवनम्, कुरुबकवनम् इत्यादि।

प्र, पूर्व, पर, अपर आदि शब्दों के परे अह्न के न का ण होता है। जैसे—प्राह्णः, पूर्वाह्णः, पराह्णः, अपराह्णः।

पर, पार, उत्तर, चान्द्र और नारा शब्द के परे अयन के न का ण होता है। जैसे, परायणं, पारायणं, उत्तरायणं, चान्द्रायणं, नारायणः।

अग्र और ग्राम शब्द के परे नी का ण होता है। जैसे—अग्रणीः, ग्रामणीः।

दूसरे पद में रहने वाले 'र् ष्' के परे पान शब्द के न का विकल्प से ण होता है। जैसे—क्षीरपानम्, क्षीरपाणम्; विष-पाणम्, विषपानम् इत्यादि।

टिप्पणी—पूर्व पद के अन्त में मूर्द्धन्य ष् होने से उत्तर पद के न का ण नहीं होता। जैसे—निष्पानम्, दुष्पानम्, हविष्पानम्, आयुष्कामेन, सर्पिष्पायिना आदि।

* प्र, परा, परि, निर् और अन्तर् शब्द के परे नम्, नद्,

नश्, नह्, नी, नु, नुद्, अन् और हन् धातु में न् का ण हो जाता है। जैसे—प्रणमति, परिणमति, पराहणनम्, प्राणिति, निर्णीयते, अन्तर्हणनम्, परिणौति, प्रणुदति इत्यादि।

टिप्पणी - नश् धातु के श् को मूर्द्धन्य होने से और हन् धातु के ह के स्थान में घ होने से न् का ण नहीं होता। जैसे—प्रनष्टः, अन्तर्नष्टः, प्रघ्नन्ति। हन् के नम् अथवा व से संयुक्त हो तो विकल्प से होता है। जैसे—प्रहण्मि, प्रहन्मि, प्रहण्वः, प्रहण्मः इत्यादि।

लोट् की आनि विभक्ति के न का ण होता है। जैसे, प्रभवाणि, परिभवाणि इत्यादि।

गद्, नद्, पत्, पद्, दा, धा, हन्, दाण्, दो, सो, दे, धे, मा, या, द्रा, सा, वप्, वह्, शम्, चि, दिह्, धातु के पूर्व नि उपसर्ग के न का ण होता है। जैसे—प्रणिगदति, प्रणिपतति, प्रणिधानम्, प्रयाणं, प्रणिहन्ति आदि।

वाणी तूणीरवेणी फणिमणि लवणं कोणकल्याणबाणाः।
गोणी घोणी कणाणुर्घुणविपणिपणं स्थाणुपुण्यं विषण्णम्॥
माणिक्यं शोणशाणौ गुणगणगणिका वेणुसिंहाणवीणा।
निर्वाणो निक्वणोणकणकिणवणिजः कङ्कणं पाणितूणौ॥
पिण्याकमपिचाणक्यमित्याद्याः स्युः स्वभावतः।

परिशिष्ट (ख)

षत्व विधान (Change of स् into ष्)

अ, आ भिन्न स्वर, क या र् के परे आदेश और प्रत्यय के स् का ष् होता है। जैसे—मुनिषु, वधूषु, भ्रातृषु, देवेषु, अनैषीत्, दिक्षु, चतुर्षु इत्यादि।

टिप्पणी – सात् प्रत्यय के स का ष नहीं होता। जैसे—अग्निसात्, वायुसात्, आत्मसात् इत्यादि।

अनुस्वार, विसर्ग, श्, ष्, स् का व्यवधान होने अर्थात् इनके बीच में रहने पर भी स् का ष् होता है। जैसे—हवींषि, धनूंषि, आशीःषु, आयुःषु, चक्षुःषु आदि। पुंसु में नहीं होता।

इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग के परे सिध्, स्तु, स्था, सिच्, सद्, स्वन्ज आदि धातुओं के स् का ष् होता है। जैसे—प्रतिषेधति, अभिष्टौति, प्रतिष्ठितः, निषिञ्चति, विषीदति, परिष्वजते आदि। अव्यवधान में भी होता है। जैसे—न्यषिंचत्, अन्वषजत, व्यषीदत् आदि।

सिध्, सू, स्तू, स्निह्, स्वप्, सिच्, सेव्, सो, स्था आदि षोपदेश धातु के द्वित्व करने पर धातु के द्वितीय भाग का स्, इ, उ, ए और ओ के परे हो तो ष् हो जाता है। जैसे—सिषेध, सुषुवे, सिषेवे, तुष्टाव, सिष्णेह, सुष्वाप, सिषेच, सिषेव, सोषूयते, तुष्टाव। यङ् प्रत्यय करने पर सिच् धातु का स् मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे, सेसिच्यते।

धातु के परे सन् प्रत्यय का ष् हो तो उस धातु का स् मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—सिसिक्षति, सिसेविषते इत्यादि। यदि सन् का स् दन्त्य ही रहे तो सु धातु को छोड़ शेष धातु के स् का ष् होता है। जैसे—तिष्ठासति, सुषुप्सति, स्तु–तुष्टूषति आदि।

टिप्पणी—ण्यन्त धातुओं में केवल स्विद्, स्वद् और सह् धातुओं को छोड़ अन्य धातुओं में स् का ष् होता है। जैसे—सिषेचयिषति, सिषेधयिषति, स्विद्—सिस्वेदयिषति, स्वद्–सिस्वादयिषति, सद्–सिसादयिषति आदि।

परि, नि, वि पूर्वक सेव्, सिव् और सह् धातु के स् का ष् होता है। जैसे—परिषेवते, परिषीव्यति, परिषहते। (सह का सोढ़ होने से ष नहीं होता) जैसे, परिसोढा।

टिप्पणी—ण्यन्त करने पर सिव् और सह् के स् का ष् नहीं होता। जैसे—पर्य्यसीसिवत्, पर्य्यसीसहत्।

समास होने पर मातृ और पितृ शब्दों के परे स्वसृ के प्रथम स् का ष् हो जाता है। जैसे—मातृष्वसा, पितृष्वसा। विभक्ति रहने से विकल्प से होता है। जैसे—मातुःष्वसा, मातुस्वसा।

इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के परे स्था और स्तम्भ् धातुओं का त के व्यवधान होने पर भी ष् होता है। जैसे—अनुतष्ठौ, अधितष्ठौ, अनुतष्टम्भ। किन्तु प्रतिस्तब्ध, निस्तब्ध तथा लुङ् (ण्यन्त) में भी नहीं होता। जैसे, पर्य्यतस्तम्भत्।

इन शब्दों के स् मूर्द्धन्य होते हैं। जैसे—युधिष्ठिरः, भूमिष्ठः, दिविष्ठः, सुषेणः, हरिषेणः, मधुषेणः (नाम होने से), सुषमः, विषमः, दुःषमः, अङ्गुलिषङ्गः, तुराषाट्, तुराषाड् (साट् साड् होने से), परिष्करोति (परि+स्कृ होने से), विष्कम्भक (वि+स्कम्भ होने से), सुषुप्तः, निषुप्तः, दुषुप्तः, विषुप्तः (स्वप् का सुप् होने से), अङ्गुष्ठः, गोष्ठः, अम्बष्ठः इत्यादि।

ये स्वाभाविक मूर्द्धन्य हैं—

मञ्जूषेर्ष्या प्रदोषो वृषवृषभमृषाषाढराष्ट्रोष्ट्र कष्टं
ग्रीष्मोष्मश्लेष्मभीष्मा विषयविषविषाणानि कुष्माण्डषण्डौ॥
कल्माषं माषमेषामिषमिषमहिषामेषपाषाणयोषित्
शीर्षामर्षास्तुषारोषरकरुषपुरीषाम्बरीषा करीषम्॥
पीयूषं त्रिपुषा हृषीकचषका वीषत् पृषत् किल्बिषं
प्रत्यूषेषु कषाकषायकलुषं यूषं भिषक्सर्षपौ॥
पुष्पं पुष्कर वाष्पशष्पशुषिरं दुष्खं तुरुष्कौषधे
मुष्कं गोष्पदपौरुषे परुषमित्येते तथा चापरे॥

इषु, ईषत्, उत्कर्ष, कोष, द्वेष, दोष, मूषक, वर्ष, पोष, षोडश, षट्, हर्ष इत्यादि।

परिशिष्ट (ग)

एकपदरचना (Substitution of Single words)

अनेक पदों के स्थान पर सन्नन्त, कृदन्त, तद्धित, समास आदि की सहायता से एकपद की रचना होती है। नीचे लिखे नियमों पर ध्यान देकर एक पद बनाना उचित है।

(क) एकपदरचना के समय अर्थ के ऊपर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। जिस अर्थ में जो प्रत्यय होता है वही प्रत्यय नियमानुसार प्रयुक्त करना चाहिये। जैसे, 'पठितुमिच्छति' इस पदद्वय के स्थान पर 'पिपठिषति' इस एक पद को रखते हैं। इसमें देखते हैं कि 'इच्छति' वर्तमानकाल, प्रथमपुरुष, एकवचन की क्रिया है तो उसके स्थान पर 'पठ्' धातु से इच्छार्थ में 'सन्' प्रत्यय करके इच्छति के समानार्थक ही क्रिया रखते हैं। (सन्नन्त का प्रकरण देखो)

टिप्पणी—'कर्तुमिच्छुः' 'भोक्तुमिच्छा' ऐसा प्रयोग होने से 'सन्' प्रत्ययान्त धातु से 'उ' और 'अ' प्रत्यय करके 'चिकीर्षुः' और 'बुभुक्षा' ऐसा प्रयोग बनाना चाहिये।

(ख) 'पुनः पुनः करोति'—वारंबार करने के अर्थ में 'पौनःपुन्य' अर्थ में 'यङ्' प्रत्यय करके एक पद बनाते हैं। जैसे, 'पुनः पुनः पठति' पापठ्यते। (यङन्त प्रकरण देखो)

(ग) जहाँ आत्मसंक्रान्त इच्छा बोध हो वहाँ नामधातु से 'काम्य' और 'क्यच्' प्रत्यय करके एक पद बनाते हैं। जैसे, 'आत्मनः पुत्रमिच्छति' = पुत्रकाम्यति वा पुत्रीयति। आत्मनः धनमिच्छति = धनकाम्यति वा धनीयति। (नामधातु का प्रकरण देखो)

(घ) अस्त्यर्थक प्रत्ययों से भी एक पद बनता है। ऐसे प्रत्यय बहुत हैं। जैसे, "धनमस्यास्ति' = धनवान्। 'गुणमस्यास्ति' इति = गुणी। 'यशः अस्य अस्ति' = यशस्वी। 'बुद्धिः अस्ति यस्य तस्य' = बुद्धिमतः। 'विद्या अस्ति यस्याः सा' = विद्यावती। 'मांस-मस्ति यस्य सः' = मांसलः। 'फेनः अस्ति यस्मिन् सः' = फेनिलः।

टिप्पणी—अस्त्यर्थक प्रत्ययान्त विशेषण होते हैं। इससे जिस कारक विभक्ति का विशेष्य पद कहेंगे उसी कारक विभक्ति का यह विशेषण होगा जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में स्पष्ट है।

(ङ) और भी कितने ऐसे प्रत्यय हैं जिनसे एक शब्द बनता है। जैसे, 'दशरथस्य अपत्यं पुमान्' = दाशरथिः। 'कश्यपगोत्रे उत्पन्नः' = काश्यपः। 'शिवस्यायं भक्तः' = शैवः। 'धर्मं जानाति' = धार्मिकः आदि। (तद्धित का प्रकरण देखो)

(च) 'करणार्थम्' 'पानार्थम्' इत्यादि स्थलों में निमित्तार्थक 'तुम्' प्रत्यय करके एक पद बनता है। जैसे—कर्तुम्, पातुम्।

(छ) 'कर्तुमुचितम्' दातुं योग्यम्' इत्यादि स्थानों में कृत्य प्रत्यय करके एक पद बनाते हैं। जैसे—कर्तव्यम्, करणीयम्, कार्यम्, देयम्, दातव्यम्।

(ज) 'आगमनात् अनन्तरम्' 'भोजनं कृत्वा' आदि स्थलों में 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्यय करके एक पद बनाते हैं। जैसे—आगत्य, भुक्त्वा।

(झ) कर्तृवाचक 'तृच्' 'अक' प्रत्ययों से कर्तृवाच्य में एक पद बनता है। जैसे, 'करोति यः सः' = कर्ता वा कारकः। 'पठति यः सः' = पाठकः पठिता वा (कृदन्त प्रकरण देखो)

(ञ) समास से भी अनेक प्रकार से एक पद बनाये जाते हैं। जैसे, 'तृणमपि अपरित्यज्य' = सतृणम्। 'तिष्ठंति गावो यस्मिन् काले' = तिष्ठद्गु। 'यावत् परितोषो न भवति तावत्'—

आपरितोषात् (अव्ययीभाव)। 'कुत्सितः पुरुषः' = कुपुरुषः, 'ग्रामं गन्तुं शीलमस्य = ग्रामगमी, (तत्पुरुष) 'घनसदृशःश्यामः' = घनश्यामः (कर्मधारय), 'जलंददाति' = जलदः। 'दुःखं भजत इति' = दुःखभाक्। 'आत्मानं पण्डितं मन्यत इति' = पण्डितमानी। 'कुम्भं करोति यः स' = कुम्भकारः। 'विहायसा गच्छति' = विहगः (उपपद समास) 'हस्तेन हस्तेन युद्धं प्रवृत्तम्' = हस्ताहस्ती, 'नास्ति पन्था यस्मिन् स' = अपथः (बहुव्रीहिः), 'त्रयाणां भुवनानां समाहारः' = त्रिभुवनम्। 'माता च पिता च' = पितरौ। (समास का प्रकरण देखो)

(ट) कितने अव्ययों से भी एक पद बनता है। जैसे, 'एतस्मिन् काले' = अद्य, 'सर्वस्मिन् स्थाने' = सर्वत्र, 'कस्मिन् काले' = कदा, 'अन्येन प्रकारेण' = अन्यथा, 'केन प्रकारेण' = कथम्। 'द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्' = द्विधा, 'तस्मादनन्तरम्' = ततः।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यखंडों के स्थानों में एक २ शब्द लिखो—

पुनः पुनः गच्छति, उदकमिच्छति, लब्धुमिच्छुः, जेतुमिच्छा, घ्रातुमिच्छामि, कलहं करोति, आत्मनः यश इच्छति, जेतुमुचितम्, उपभोगादनन्तरम्, यजनं कर्तुम्, वक्तुमुचितम्, नृत्यति या सा, अध्ययनात् परम्, धनं ददाति यः सः, आतपात् त्रायते यत् तत्, आत्मानं कृतार्थं मन्यत इति, रात्रौ चरति यः स, प्रणामार्थम्, ग्रहीतुं योग्यम्, द्रोणस्य अपत्यम्, जनानां समूहः, पतञ्जलिना प्रोक्तम्, इतिहासमधीते, तारकाः सञ्जाता अस्मिन् तत्, अयमनयोरेषां वा अतिशतेन अल्पः, दुहितुः अपत्यं, राममधिकृत्य कृतम्, ममइदम्, षोडश वर्षाणि वयो यस्य स, विधिमनतिक्रम्य, महान्तौ भुजौ यस्य स, द्वयोरह्नोः

समाहारः, निद्रा संप्रति न युज्यत इति, विशाले अक्षिणी यस्याः सा, न विद्यते अर्थो यस्मिन् तत्, समानं गोत्रं यस्य स; मृतः भर्ता यस्याः सा।

परिशिष्ट (घ)

अशुद्धि-संशोधन (Correction)

वाक्यरचना वा अनुवाद करने के समय व्याकरणसम्बन्धी नियमों में व्यतिक्रम होने से भूल हो जाने की सम्भावना रहती है। जिन विषयों में अधिकांश भूल हो जाया करती है उनका नीचे कुछ दिग्दर्शन कराया जाता है।

१—शब्दप्रयोग करने के समय लिङ्ग, वचन और कारक सम्बन्धी भूलें हो जाती हैं। जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध
(१) स मम मित्रः अस्ति	स मम मित्रं अस्ति।
(२) त्वं मम स्नेहपात्रः	त्वं मम स्नेहपात्रम्।
(१) स प्राणं तत्याज	स प्राणान् तत्याज।
(२) ते मम दाराः भवन्ति	सा मम दाराः भवति।
(१) रामः श्यामस्य सह गृहं गतः	रामः श्यामेन सह गृहं गतः।
(२) भोजनं देहि मां मित्र	भोजनं देहि मे मित्र।

मित्रम्, पात्रम् सदा नपुंसक हैं। प्राणान्, दाराः, सदा बहुवचन हैं। सहयोगे तृतीया। अपादाने चतुर्थी होती है।

२—शब्दरूप लिखने में प्रायः भूलें हो जाया करती हैं। शब्दों के आकार पर ध्यान देकर रूप बनाना चाहिये।

(क) तस्य लक्ष्मी अस्ति	तस्य लक्ष्मीः अस्ति।

	अशुद्ध	शुद्ध
(ख)	केन पथेन गच्छति	केन पथा गच्छति ।
(ग)	भगवानस्य महिमां पश्य	भगवतः महिमानं पश्य ।
(घ)	सुहृदस्य विश्वासं कुरु	सुहृदः विश्वासं कुरु ।
(ङ)	वंधुस्य सहायो भव	बन्धोः सहायो भव ।
(च)	युवा नरं कथय	युवानं नरं कथय ।
(छ)	बालः चन्द्रमां पश्यति	बालः चन्द्रमसं पश्यति ।
(ज)	जन्मे जन्मे भक्तिर्भवेत्	जन्मनि जन्मनि भक्तिर्भवेत् ।
(झ)	मने सन्देहः अस्ति	मनसि सन्देहः अस्ति ।
(ञ)	नरपत्युः आज्ञा अस्ति	नरपतेः आज्ञा अस्ति ।
(ट)	महाराज्ञः भ्रातायाः पुत्रः	महाराजस्य भ्रातुष्पुत्रः ।
(ठ)	जलपथा ग्रामं गच्छ	जलपथेन ग्रामं गच्छ ।
(ड)	न कोऽपि राजसखा अस्ति	न कोऽपि राजसखः अस्ति ।

लक्ष्मीः शब्द की प्रथमा विभक्ति में विसर्ग होता है। पथिन्, भगवत्, सुहृद् शब्द है। 'स्य' होने ही से षष्ठी नहीं होती। युवन्, चन्द्रमस्, जन्मन्, मनस् शब्द हैं। समास में पति शब्द हरि के ऐसा होता है। राजन्, पथिन् और सखि शब्द समास में अकारान्त हो जाते हैं। भ्राता स्त्रीलिङ्ग नहीं ऋकारान्त पुंलिङ्ग है।

३—सन्धि करने में भी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। इनको भी ध्यान में रक्खो।

	अशुद्ध	शुद्ध
(क)	शुकदेवोवाच	शुकदेव उवाच ।
(ख)	अम्यश्वा धावन्ति	अमी अश्वा धावन्ति ।
(ग)	मुनीमौ गच्छतः	मुनी इमौ गच्छतः ।
(घ)	हेरामागच्छ	हे राम आगच्छ ।
(ङ)	तं अहं अपश्यं	तमहमपश्यम् ।
(च)	तान्नाह्वय	तान् आह्वय

अशुद्ध	शुद्ध
(छ) सो राजा आयाति	स राजा आयाति।
(ज) प्रियंवदा सखी	प्रियम्वदा सखी।
(झ) स दण्डं अप्रहरत्	स दण्डं प्राहरत्।
(ञ) पितृ आदेशात् कृतम्	पितुरादेशात् कृतम्।
(ट) शृगालो पञ्चत्वं गतः	शृगालः पञ्चत्वं गतः।
(ठ) रामो सुखेन शेते	रामः सुखेन शेते।

(क) सन्धि करने पर फिर सन्धि नहीं होती। (ख) ईकारान्त तौर एकारान्त द्विवचन में सन्धि नहीं होती। अदस् शब्द के मकार युक्त ई, ऊ और एकार में सन्धि नहीं होती। (घ) प्लुत स्वर-सम्बोधन है, इससे दीर्घ नहीं हुआ। (ङ) स्वर पर रहने और पदान्त में रहने से 'म' का अनुस्वार नहीं होता। (च) दीर्घ स्वर के परे न रहने पर द्वित्व नहीं होता। (छ) आकार भिन्न स्वर वा व्यञ्जन परे रहने से विसर्ग का लोप होता है। (ज, झ, ञ) एक पद में धातूपसर्ग में और समास में सन्धि जरूर होती है। (ट, ठ) क, ख, प, फ, स, श, आदि परे रहने से विसर्ग का ओ नहीं होता।

४—सर्वनाम के प्रयोग करने में देखना होगा कि जिनके स्थान में वे प्रयुक्त होते हैं, उन्हींके लिङ्ग, वचन और कारक में वे भी हों। इनकी रूपरचना पर भी ध्यान देना होगा। इन्हीं बातों में भूलें होती हैं।

(क) तं स्त्रीं ददर्श	तां स्त्रीं ददर्श।
(ख) ताः नराः गच्छन्ति	ते नराः गच्छन्ति।
(ग) इमं फलं पश्य	इदं फलं पश्य।
(घ) सर्वाणां प्रियो भव	सर्वेषां प्रियो भव।
(ङ) अन्यं किञ्चत् कथय	अन्यत् किञ्चित् कथय।

(क,ख,ग) स्त्रीलिंग, पुंलिंग और नपुंसक विशेष्य होने के कारण उन्हीं के लिंग वचन होंगे। (घ) सर्वनाम के रूप भिन्न होते हैं। (ङ) नपुंसक में अन्यत् ही होता है।

५—विशेषण में विशेष्य के ही लिंग, वचन और कारक हों इनका ध्यान रखना होगा। रूपरचना का भी ध्यान रहे। इनमें ही भूलें होती हैं।

(क) चत्वारः सुन्दरः वालिका यान्ति—चतस्रः सुन्दर्यः वालिकाः यान्ति।
(ख) इमं पुस्तकं वर्तते — इदं पुस्तकं वर्तते।
(ग) ते पिता गतः — तव पिता गतः।
(घ) क्रीडति सुन्दरी रमणीगणः—क्रीड़ति सुन्दरो रमणीगणः।

(क) बालिका स्त्रीलिंग बहुवचन है, इससे चत्वारः और सुन्दरः, ये दोनों भी स्त्रीलिंग बहुवचन हुए हैं। (ख) पुस्तक प्रथम कारक एकवचन नपुंसक है इससे इमं भी प्रथम कारक एकवचन हुआ। (ग) युष्मद् अस्मद् शब्द के पदादि में आदेश नहीं होता है। (घ) गणः के अनुसार पुल्लिग होगा।

६—अव्ययों को भी शब्द ही के समान कभी २ रूप लेने में भूल हो जाती है। इससे अव्ययों का ख्याल रहना चाहिये। जैसे—

(क) मिथ्यां मा वद — मिथ्या मा वद
(ख) प्रतिदिनस्य प्रातरि खादति — प्रतिदिनं प्रातः खादति
(ग) तु स न यास्यति — स तु न यास्यति
(घ) रामः च श्यामः गच्छतः — रामः श्यामः च गच्छतः

(क) अव्यय में विभक्ति नहीं होती। (ख) अकारान्त अव्ययों में पञ्चमी, तृतीया और सप्तमी के सिवा सर्वत्र अम् होता है। प्रातः अव्यय है। (ग) चेत्, च, वा, तु, हि आदि

अव्यय वाक्यारम्भ में नहीं आते। (घ) प्रत्येक शब्द के साथ च होगा या सबके अन्त में।

७—क्रिया में काल, पुरुष, धातुरूपरचना, वाच्य तथा वाच्यानुसार शब्दों की कारक विभक्ति तथा क्रिया की भिन्न भिन्न रूपरचना पर ध्यान देना होता है। आत्मनेपदी और परस्मैपदी का भी ध्यान सदा रहना चाहिये। इन्हीं विषयों में क्रिया की गलतियाँ होती हैं।

(क) स माम् अपश्यत् स्म	स मां पश्यति स्म
(ख) त्वं चन्द्रं दृश्यति	त्वं चन्द्रं पश्यसि
(ग) अहं जलं पामि	अहं जलं पिबामि
(घ) मुनिः प्रीतः प्रतस्थाः	मुनिः प्रीतः प्रतस्थे
(ङ) तैः गम्यन्ते	तैः गम्यते
(च) तेन नदीतीरे वस्यते	तेन नदीतीरे उष्यते
(छ) राजा प्रजाः पाल्यते	राजा प्रजाः पाल्यन्ते
(ज) स हरिणं विध्यति	तेन हरिणः विध्यते
(झ) रामः भृत्यं भारं नाययति	रामः भृत्येन भारं नाययति
(ञ) मया वाचं श्रोतुमिष्यते	मया वाक् श्रोतुमिष्यते

(क) 'स्म' के योग में लट् होता है (ख) 'त्वं' के अनुसार मध्यम पुरुष और दृश् के पश्य हो जाता है। (ग) पानार्थक का पिबामि और रक्षार्थक पा धातु का पामि होता है। (घ) प्र उपसर्ग स्था आत्मनेपदी होता है। (ङ) भाववाच्य में सदा एकवचन क्रिया होती है। (च) वस् धातु का भाववाच्य में 'उष्' हो जाता है। (छ) कर्ता में तृतीया और कर्म के अनुसार कर्मवाच्य में क्रिया होती है। (ज) कर्तृवाच्य में भी दिवादि धातुओं में 'य' लगता है। कर्मवाच्य में परस्मैपदी आत्मनेपदी हो जाता है। (झ) नी धातु के प्रयोज्य में

तृतीया होती है। (ञ) तुमन्त और समापिका क्रिया का एक ही कर्म हो तो कर्मवाच्य में उससे प्रथमा होती है।

८—कृदन्तीय प्रत्ययों के साथ कारकों के प्रयोग में प्रायः विद्यार्थी भूल करते हैं। इन पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(क) अहं तं वक्तुमश्रौषम्	अहं तं ब्रुवन्तमश्रौषम्
(ख) अहं तं जिज्ञासितः	मया स जिज्ञासितः
(ग) स पाठः पठित्वा भुंक्ते	स पाठं पठित्वा भुंक्ते
(घ) तेन वचनानि श्रोतव्यम्	तेन वचनानि श्रोतव्यानि
(ङ) सा पुस्तकं पठितवान्	सा पुस्तकं पठितवती
(च) स पुस्तकं पठितः	तेन पुस्तकं पठितम्
(छ) स आगत्य अहं गच्छामि	तस्मिन्नागते गच्छामि
(ज) अहं गृहम् आगत्वा खादामि	गृहमागत्य खादामि
(झ) भिक्षां ददन् बालकः हसति	भिक्षां ददत् बालकः हसति
(ञ) त्वामगृह्य न यामि	त्वाम् अगृहीत्वा न यामि
(ट) स गुरुं सेवन् पठति	स गुरुं सेवमानः पठति
(ठ) अन्नपाचकः भुंक्ते	अन्नस्य पाचकः भुंक्ते
(ड) स अन्नं दानं करोति	स अन्नस्य दानं करोति

(क) एक कर्ता होने से तुमुन् होता है। दो क्रिया एक समय होने से शतृ शानच् होता है। (ख) कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है। (ग) क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुम् के कर्म में द्वितीया होती है। (घ) कर्मवाच्य के कृदन्तीय प्रत्ययों में कर्मानुसार लिङ्ग वचन होते हैं। (ङ) कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा और उसके लिङ्ग वचन के अनुसार कृदन्तीय क्रिया होती है। (च) कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है। (छ) एक कर्ता नहीं होने से क्त्वा नहीं होता। ऐसे स्थानों में भावे सप्तमी होती है।

(ज) उपसर्ग होने से क्त्वा का ल्यप् होता है। (झ) जुहोत्यादिगणीय धातु तथा जाग्रत आदि में नुम् नहीं होता। (ञ) नञ् तत्पुरुष में ल्यप् नहीं होता। (ट) आत्मनेपदी से शानच् और परस्मैपदी से शतृ होता है। (ठ) तृच्, अक् प्रत्ययान्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता। (ड) दानम् आदि के योग में षष्ठी होगी और ऐसे स्थानों में प्रायः समास न होगा।

९—विद्यार्थी लिखने में भी व्याकरण के नियमों पर ध्यान न देकर विशेषतः वर्णाशुद्धि कर बैठते हैं। उनको लिखने में सावधान रहना चाहिये। ऐसे शब्दों में भूलें होती हैं—

(क) बुद्धिवान् धनमन्तं निन्दति	बुद्धिवान् धनवंतं निन्दति
(ख) पितॄण् तर्पय	पितॄन् तर्पय
(ग) धनुःसु बाणान् योजय	धनुःषु बाणान् योजय
(घ) सशी गगने सोभते	शशी गगने शोभते
(ङ) हस्तिः पलायते	हस्ती पलायते
(च) फलं गृहीतुमिच्छति	फलं ग्रहीतुमिच्छति

(क) वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्णान्त तथा मकार, अकार वा आकार अन्त में वा उपधा में रहे तो म का व हो जाता है, अन्यत्र नहीं। (ख) पदान्त न का ण नहीं होता। (ग) विसर्ग व्यवधान में भी स् का ष् होता है। (घ) तालव्य श है। (ङ) इन् प्रत्ययान्त शब्द हैं। (च) ग्रह हो जाता है।

१०—स्त्रीप्रत्यय तथा समास में भी बहुत भूलें होती हैं। स्त्रीलिङ्ग में जहाँ 'आ' होना चाहिये वहाँ 'ई' और जहाँ 'ई' होना चाहिये वहाँ 'नी' और 'नी' की जगह पर 'ई' कर देते हैं। वैसे ही समास करने पर शब्दों में जो उलटफेर होते हैं उन पर ध्यान नहीं देते। उनसे सावधान रहना चाहिये।

(क) चन्द्रवदनीं रमणीं पश्य	चन्द्रवदनां रमणीं पश्य।
(ख) अश्वी गच्छति	अश्वा गच्छति।
(ग) रुदन्ती बाला मया दृष्टा	रुदती बाला मया दृष्टा।
(घ) बालिका नृत्यती आगता	बालिका नृत्यन्ती आगता।
(ङ) महद्राजा आगतः	महाराजः आगतः।

(क) दो से अधिक स्वर होने पर 'ई' नहीं होता। (ख) अश्वा अकारान्त होता है। (ग) रुद् धातु से नुम् नहीं होता। (घ) नृत् धातु से नुम् होता है। (ङ) समास में महत् शब्द का 'महा' और राजन्, सखि, अहन् आदि अकारान्त हो जाते हैं।

ऊपर साधारणतः मुख्य मुख्य विषयों की अशुद्धियों के सम्बन्ध में दिग्दर्शन करा दिया गया है। जो बातें इस पुस्तक में बतलायी गयी हैं उन पर ध्यान रखने ही से ये भूलें नहीं हो सकती हैं। वाक्यरचना तथा परीक्षा-पत्रों में अशुद्धि-संशोधन प्रधान स्थान रखता है। यह व्याकरणज्ञान तथा रचना-शिक्षा का एक अङ्ग है। इससे अशुद्धिज्ञान तथा उसका संशोधन छात्रों का एक प्रधान ज्ञातव्य विषय है। कुछ अभ्यासार्थ अशुद्धियाँ लिख दी जाती हैं।

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों को सकारण शुद्ध करो—

विंशतयः पुरुषा वर्तन्ते। मां दधि न रोचति। मधुरो हि आसां दर्शनः। वर्षायां सरित् वेगवत् भवति। विद्वानस्य आदरः विधेयम्। रजकाय वस्त्रानि देहि। एतादृशी शम्भुस्य महिमा। शिक्षकात् विद्यां आददाति छात्रः। राजा प्रबलेभ्यः शत्रुभ्यः परिक्रुध्यति। मे भ्राता एकं स्वादुं फलं लब्धम्। गुरुः पितुः इव माननीयः। अप्सराणां कुले समुद्भूतां कन्या-

त्वं मम देहि। ईश्वरसभां प्रविष्टा देवा ऊचुः। राजा पृथ्वी बुभोज। चतस्रः ब्राह्मणाः एकत्रं कर्म्म करोति। अद्य वयं यूयं च नगरं गमिष्येथे। सा तपस्वी मे कृपापात्रा जाता। अहं त्वामेतत् कर्तुमिच्छामि। अहं तव शता रूपका धारयामि। रजनीगते व्याधः धनुमादाय चलितः। अहं त्वां गृहं गन्तुमद्रश्यम्। वरं देशमपि त्यक्तुम्। पूर्णो चन्द्रो पूर्वस्मिन् दिशि उदितः। पितो रक्ष माम्। पक्षि निरीक्षन्तं मामवलोकयित्वा स हसनुवाच। मे वचनं न विश्वसिही। अस्य पुस्तकस्य मम प्रयोजनं नास्ति। एतेषु लतासु पुष्पा जायन्ति। विदुषीं स्त्रीलोकं क गन्तव्योऽमिति पृच्छति। मे मित्रः अश्वेन सञ्चरते। एतादृशी समृद्धिं लभन् कथं न कमपि सन्तं कार्यं करोषि। अहं शत्रुं हत्वा स प्रत्यागतम्। भवान् दूरं पथं मा याहि। अत्र भावान् न दोषास्पदः। नगरं अधिवसन् स्वास्थ्यं न ललाभ। रोगिः दिवायां निद्रा याति। सम्पदे विपदे भगवन्तं न विस्मर्तव्यम्। सो हि मे मित्रः। मिथ्यावादिने कस्यामपि विश्वासेन जायते। बुद्धिमतस्य वाचः सुमिष्टं भवति। मामेकं पुस्तकं प्रतिश्रुत्वा न ददौ।

परिशिष्ट (ङ)

संस्कृत अनुवादार्थ हिन्दी गद्यमाला*

१. बचपन में ध्यान देकर विद्या सीखो। विद्या सीखने से सब तुम्हें प्यार करेंगे (लङ्, स्निह) जो विद्या पढ़ने में आलसी होता है उसे कोई प्यार नहीं करता। तुम विद्या पढ़ने में कभी असावधान न होना।

२. सदा माता पिता का कहना मानो (आज्ञा+पाल)। वे जब जैसा कहें तब वैसा ही करो। उनकी इच्छा के विरुद्ध कभी कुछ न करो। माता पिता की बात न मानने से वे तुम्हें प्यार न करेंगे।

३. कभी किसी के साथ मत झगड़ो (वि+वद्)। किसी से झगड़ना बहुत खराब काम है। जो हमेशा सब से झगड़ता रहता है उससे किसी से प्रेम नहीं रहता। सब उसके शत्रु हो जाते हैं।

४. दूसरों की जीज मत छुओ। बिना कहे किसी की चीज ले लेने को चोरी करना कहते हैं। चोरी करना पाप है। जो चोरी करता है उसे सब लोग चोर कह कर घृणा करते (निन्द्) हैं। चोर का कभी कोई विश्वास नहीं करता।

५. संसार में माता पिता से बढ़ कर और कोई नहीं है। उन्होंने कितने यत्न से और कितना दुःख सह कर तुम्हारा पालन-पोषण किया है। यदि वे इतना यत्न नहीं करते (यति)

---

* शिक्षक अनुवाद कराने के पूर्व अज्ञात शब्द और धातु को यथावश्यक बता देंगे जिस प्रकार के दस गद्यांशों में यथास्थान संकेत कर दिया गया है।

और इतना दुःख नहीं सहते तो तुम लोग जीवित नहीं रह सकते थे।

६. गोपाल बड़ा दुष्ट लड़का है। वह किसी की बात नहीं सुनता। वह लिखने पढ़ने में बहुत असावधान है। कभी लिखने पढ़ने में जी नहीं लगाता। सारा दिन खेला करता है। वह घर में सब को छेड़ा करता है (दुःखाय)।

७. गोपाल को कोई प्यार नहीं करता। वह सबके साथ लड़ा करता है। इसलिये कोई लड़का उसके साथ खेलना नहीं चाहता। शिक्षक महाशय उसे रोज़ बहुत डांटते हैं (तर्ज्) वह एक दिन भी अपना पाठ नहीं सुना सकता।

८. एक हंसिनी अपने बच्चे के साथ किसी खेत में रहा करती थी। उस खेत का अनाज पक जाने पर हंसिनी ने सोचा कि अब किसान लोग अनाज काटना शुरू करेंगे। इसलिये, प्रति दिन भोजन ढूँढ़ने के लिये (अनु + इष्) बाहर जाते समय वह अपने बच्चों से कह जाती थी कि मेरे लौट आने के पहले जो कुछ तुम लोग सुनो, वह सब मेरे लौटते ही मुझसे कह देना।

९. एक किसान को तीन लड़के थे। जब वह मरने योग्य हुआ तो उसने अपने लड़कों को अपने पास बुलाया (आ + ह्वे) वह बहुत निर्बल हो गया था, इसलिये अधिक बोल न सका। उसके मुँह से खेत का शब्द निकलने पाया था कि वह मर गया।

१०. लड़कों ने सोचा कि उस खेत में कुछ ख़जाना (निधि) था। उसके तीनों लड़कों ने उस खेत को तमाम कोड़ डाला पर ख़जाना का पता (अनु + सम् + धा) न लगा। उस साल उस खेत में बहुत अन्न पैदा हुआ। लड़कों ने अपने पिता का

अभिप्राय समझ लिया और वे सुख से अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

११. किसी आदमी को कई एक लड़के थे। वे सर्वदा झगड़ा करते रहते थे। उसने उनको बहुत उपदेश किये पर सफल नहीं हुआ। एक दिन उसने उनको बुलाया और एक बोझा लकड़ी लाने को कहा। उसने उस बोझे को मजबूती से बाँधा और उनको एक एक करके तोड़ने को कहा।

१२. सबों ने बेकार यत्न किया। इसके पीछे उसने उस बोझे को खोल दिया और एक २ लकड़ी तोड़ने को कहा। सबों ने तोड़ डाला। उस दिन से लड़के बूढ़े पिता के इस कार्य से मेल से रहने का प्रत्यक्ष फल देख सबके सब आपस में मिल कर रहने लगे।

१३. किसी गाँव में बीच सड़क पर एक पत्थर पड़ा था। लोगों को अँधेरी रात में उससे ठोकर लग जाती थी; बहुत लोग घोड़े से गिर जाते थे पर किसी ने उस पत्थर को हटाने का यत्न नहीं किया। एक दिन एक गाड़ी उलट गई और कई आदमियों को चोट आई। दूसरे दिन एक अमीर आदमी घोड़े से गिर गया।

१४. कुछ दिनों के बाद एक गरीब किसान उसी सड़क पर जा रहा था, उसने उस पत्थर को देखा और सड़क के एक किनारे में उसको रख दिया। उठाते समय उसको उसके नीचे एक थैला सोने का मिला। वह आनन्दित होकर अपने घर चला गया।

१५. किसी सोनार की माता ने अपने लड़के को स्वच्छ चाँदी की चूड़ी बनाने को थोड़ी चाँदी दी। लड़के ने कहा, माता, तू मेरी माता है। तुम्हारी चूड़ी में दूसरी धातु कभी

नहीं मिलाऊँगा। उसने आग जलाकर चूड़ी तैयार की पर उसने स्वच्छ चाँदी की चूड़ी नहीं बनाई।

१६. प्राचीन समय में हस्तिनापुर दिल्ली नगर के निकट था। वहाँ का राजा दुर्योधन था। वह अपने चचेरे भाइयों से शत्रुता रखता था। इसलिये उसके सब चचेरे भाई अपनी माता को साथ लेकर भाग गये। वे लोग भेष बदल कर एक ब्राह्मण के घर में रहने लगे।

१७. उस स्थान के निकट एक जंगल था। वहाँ एक जंगली जानवर था, जो प्रतिदिन उस गाँव के एक मनुष्य को खा जाया करता था। जब यह समाचार उन भाइयों को मिला तब वे लोग उसको मार डालने के लिये तत्पर हुए। वह जानवर मारा गया। उस दिन से सब लोग शान्तिपूर्वक रहने लगे।

१८. एक भिक्षुक किसी धनी आदमी के यहाँ गया और बोला "हम दोनों एक ही माता-पिता के पुत्र हैं। इस हेतु हम दोनों भाई हैं। तुम बहुत धनी हो। तुमको बहुतेरे मकान, नौकर और घोड़े हैं। पर मैं बहुत गरीब हूँ। इसलिये तुमको उचित है कि अपने धन का उचित हिस्सा मुझको दे दो।"

१९. उस अमीर आदमी ने उसको एक पैसा दिया। उसे भिक्षुक ने कहा "ऐ भाई यह क्या? आप मुझे उचित हिस्सा क्यों नहीं देते?" उसने उत्तर दिया, "चुप रहो। यदि संसार के और भाई सुन पावेंगे और तुम्हारे ही ऐसे माँगने आवेंगे तो तुमको एक पैसा भी हिस्से में न मिलेगा।" वह भिक्षुक पैसा लेकर चला गया।

२०. भरत जी के फिर जाने के बाद रामचन्द्र जी लक्ष्मण जी और सीता जी को साथ लेकर दक्खिन की ओर चल पड़े। घूमते फिरते १३ वर्ष के बाद गोदावरी नदी पर पहुँचे। वहाँ

पर पहुँच कर पञ्चवटी में ठहर गये। यह जगह उस समय लंका के राजा रावण के अधिकार में थी।

२१. एक दिन रामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी अपनी कुटी में नहीं थे। सीता जी अकेली बैठी हुई थीं। उसी समय रावण एक साधु का भेष बनाकर उनके पास पहुँचा और उनसे भिक्षा माँगी। जब सीता जी उसको भिक्षा देने लगीं तब रावण ने उनको पकड़ लिया और ले भागा।

२२. ईश्वर के सब महादान में एक महादान स्वास्थ्य है। बिना स्वास्थ्य के धन, विद्या और शक्ति का कोई मोल नहीं है। बिना स्वास्थ्य के आनन्द भी प्राप्त नहीं होता। अच्छे स्वास्थ्य के लिये अच्छा भोजन, अच्छा पानी, अच्छी वायु, व्यायाम और सफाई की आवश्यकता है।

२३. भैरव नाम का शिकारी कल्याण कटक में रहता था। एक दिन वह भूखा था। इसलिये अपना धनुष लेकर विन्ध्य-वन में चला गया और एक हरिण को मारा। उस हरिण को लेकर जब घर जाने लगा; तब उसने एक सूअर को अपनी ओर आते देखा इसलिये उसने हरिण को पृथ्वी पर रख दिया और सूअर पर एक तीर चलाया।

२४. वृन्दावन में एक पाठशाला थी। उसमें एक गुरुजी बहुत से लड़कों को पढ़ाया करते थे। उसके पास ही एक बहुत बड़ा बड़ का पेड़ था। उस पर बहुत बन्दर रहते थे। वे लड़कों को पढ़ते समय टकटकी लगा कर देखा करते थे।

२५. काशी कितना पुराना शहर है सो अनुमान से बाहर है। बुद्धदेव जब गया से काशी आये थे तब वर्त्तमान शहर से ३ मील उत्तर सारनाथ में बहुत दिनों तक रहे थे और अपने मत का उपदेश लोगों को दिया करते थे।

२६. उमाशंकर और रामशंकर सहोदर भाई थे। उन्होंने एक ही माता के गर्भ से जन्म ग्रहण किया था। किन्तु इससे क्या? उन लोगों के स्वभाव में बहुत अन्तर था। उमाशंकर निःसन्तान थे। उनकी स्त्री रामकली ने अपने एक भाई के लड़के महादेव को पाला था।

२७. किसी ने कुत्ते से पूछा तू राह में क्यों पड़ा रहता है? बोला कि, भला और बुरा पहिचानने के लिये। उसने कहा तू कैसे जानता है? बोला, जो भला है मुझसे कुछ नहीं कहता और जो बुरा है सो ठोकर मारता है।

२८. दो मनुष्य परस्पर सम्मति करके जीविका के लिये किसी देश को चले जाते थे। राह में उनको एक तोड़ा हजार अशर्फियों का मिला। दोनों बहुत प्रसन्न होकर अपने घर को लौट आये और थोड़े दिन में सबका सब उड़ा दिया।

२९. एक मनुष्य बड़ा भक्त और संयमी था और उसका बेटा उतना ही दुष्ट और कुचाली था। एक मनुष्य ने उसके बेटे को देख कर किसी से पूछा कि यह किसका बेटा है, जो इतना दुष्ट है। उसने कहा कि फलाने का।

३०. एक आदमी नदी में डूबता था। बहुत से आदमियों को किनारे पर देखकर चिल्लाने लगा कि, अरे मित्रो, मुझे निकालो, नहीं तो जग डूबता है। लोगों ने उसे नदी से निकाल कर पूछा कि संसार कैसे डूबता है! उसने जवाब दिया कि तुम बड़े मूर्ख हो, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी है कि "आप डूबा तो जग डूबा।"

३१. एक राजा ने अपना लड़का किसी पण्डित को सौंप दिया कि इसे ज्योतिष पढ़ाइये। जब यह उसमें प्रवीण हो जाय तब मेरे पास लाइये। पण्डित ने बड़े परिश्रम और साव-

ध्यानी से जितने भाग उसके थे, अच्छी तरह पढ़ाये। जब देखा कि लड़का विद्वान् हो चुका, तब राजा से विनती की कि आपका आज्ञाकारी बेटा ज्योतिष में योग्य हो गया।

३२. एक मनुष्य और उसका नौकर दोनों एक घर में सोते थे। स्वामी ने पूछा रामचन्द्र, देख तो पानी बरसता है या बन्द हो गया? उसने कहा बरसता है। लाला ने फिर पूछा कि तुझे कैसे मालूम हुआ? तू तो पड़ा सो रहा है। कहा, बिल्ली आई थी मैंने उसको भींगा हुआ देखा।

३३. किसी ने कुबड़े से पूछा, कहो तुम क्या चाहते हो, तुम्हारी पीठ सब की सी हो जाय या सब की तुम्हारी सी? उसने उत्तर दिया कि मैं चाहता हूँ कि लोगों कि पीठ मेरी सी हो जाय कि जिन आँखों से वे मुझे देखते हैं, उन्हीं आँखों से मैं उन्हें देखूँ।

३४. एक राजा ने किसी बुद्धिमान को बुलाकर कहा कि मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस शहर का न्यायाधीश बनाऊँ। बुद्धिमान ने उत्तर दिया कि मैं इस काम के योग्य नहीं हूँ। राजा ने पूछा क्यों? उसने उत्तर दिया कि, जो मैंने कहा वह यदि सच है तो मुझे क्षमा कीजिये और यदि झूठ है तो झूठे को न्यायाधीश का पद देना ठीक नहीं।

३५. एक कुत्ते की यह बान थी कि प्रतिदिन सवेरे अपने मुँह में एक पैसा दबाकर रोटी वाले की दुकान पर जाता, पैसा दुकान पर रख देता और एक रोटी अपने खाने के लिये मोल ले आता। एक दिन रोटी वाले के नौकर ने हँसी में गरम रोटी जो उस समय चूल्हे से निकली थी, कुत्ते को दे दी। मुँह में रोटी लेते ही कुत्ते ने छोड़ दी और पैसा उठा कर चल दिया।

३६. नीरोगता बड़ी दुर्लभ वस्तु है। नीरोगता के विना जीवन का सुख नहीं, वरन् सदा वीमार रहने वाला आदमी जीते ही मरे के तुल्य है। इस लिये नीरोगता रखना वहुत आवश्यक है। प्रातः सायंकाल खुले मैदान में हवा खाना उसके लिये वहुत लाभकारी है।

३७. मूर्खों का एक झुण्ड रत्नों की खोज में समुद्र के किनारे गया। इन लोगों को सच्चे झूठे की पहिचान न थी। इसलिये वे रत्नों के वदले पत्थरों को इकट्ठा करने लगे और अपने मन में समझे कि ये वहुत चमकीले और भारी हैं, अवश्य ये ही रत्न होंगे। सच्चे रत्नों को जो हलके थे, इन लोगों ने पत्थर समझ छोड़ दिया।

३८. कोई ऐसा देश नहीं है, जहाँ कवियों ने गुलाव की प्रशंसा न लिखी हो और यह भी है कि सुन्दरता और सुगन्धि में उससे बढ़ कर कोई फूल नहीं है। हिन्दुस्तान के लोग वहुधा सुगन्धि के लिये गुलाव अधिक बोते हैं। इसका अत्तर जगत भर में प्रसिद्ध है।

३९. विद्यार्थी केवल आशा ही के सहारे कटु जीवन व्यतीत करता है। परीक्षा समीप है, जहाँ देखो वहाँ कितावों ही का ढेर दिखाई पड़ता है मानो कितावों का कीड़ा वना हुआ है। उसको कुछ सुधि भी नहीं कि जगत में क्या हो रहा है, उसको अपने शरीर की सुधि नहीं है।

४०. एक साधु ने एक सूम से कुछ माँगा। सूम ने कहा, यदि एक वात तू मेरी मान ले तो जो कुछ कहेगा, सो करूँगा। साधु ने पूछा यह क्या वात है। उसने कहा मुझ से कभी कुछ मत माँग, उसको छोड़कर जो कुछ तू कहेगा सो मानूँगा।

४१. कल दिन को मैंने तुमको घोड़े पर चढ़े हुए देखा।

तुम कहाँ से आते थे और कहाँ जाते थे? मैं पाठशाला से पढ़कर जाता था।

उसने कई बार प्रण किया कि मैं प्रतिदिन पाठशाला जाऊँगा, परन्तु अब तक वह गैरहाजिर रहता है।

यदि वह वर्ष भर बराबर परिश्रम करता तो अवश्य परीक्षा में सफल होता।

अपने घर जाकर उसने पढ़ना आरम्भ किया और अपने भाइयों से कहा कि तुम लोग भी मन लगाकर पढ़ो।

४२. जो लोग पशुओं पर दया नहीं करते कुछ आश्चर्य नहीं कि वे कभी अपने वर्ग पर भी निर्दयी हो जावें और धीरे २ कुछ दिनों में बहुत बुरे काम करने लगें। उन गूँगे पशुओं पर निर्दयता करने के समय इतना सोचना चाहिये कि जो हमारा स्वामी है, यदि वह इसी प्रकार हम पर भी अन्याय करे, तो हमको कितना कष्ट भुगतना पड़ेगा।

४३. सज्जन पुरुष की भलाइयाँ विपत्ति ही में प्रकट होती हैं। जैसे, अगर अपनी सुगन्धि जलने पर ही देता है।

विपत्ति में मनुष्य को अपनी भलाइयों के प्रगट करने का अवसर मिलता है और सुख में बहुधा उसकी बुराइयाँ देख पड़ती हैं।

विपत्ति में कोई किसी का साथ नहीं देता, देखो अँधेरे में परछाइँ मनुष्य का साथ छोड़ देती है।

विपत्ति वह अँधेरा है जिसमें मनुष्य को कोई नहीं देखता; परन्तु वह सबको पहिचान जाता है।

४४. अब तक मैंने ऐसा वाक्य, जैसा यह है, नहीं पढ़ा।

इस आसपास में कोई घर ऐसा ऊँचा नहीं है, जैसा दुर्गा महाजन का है।

वह मुझसे डेढ़ इञ्च बड़ा है।

यह पुस्तक मेरी सब पुस्तकों में सबसे अधिक मोल की है।

तुम्हारी भाषान्तर की पुस्तक में ऐसे कठिन वाक्य नहीं हैं, जैसे कि ये हैं।

४५. अपने विवाह से पहले मेरा भाई मथुरा में रहता था।

मोहन, तुमने इस छोटे लड़के को कै बार मारा?

महाशय, मैंने इसे तीन बार से अधिक नहीं मारा।

इस पदाभिलाषा की, विद्या की योग्यता तुम्हारी योग्यता से कहीं अधिक है।

वह स्कूल भर के लड़कों से अधिक मोटा और बलवान है।

४६. एक दिन सूर्य और पवन में यह विवाद होने लगा कि दोनों में कौन अधिक सामर्थ्यवान है। बहुत वादविवाद के अनन्तर उन्होंने अपनी अपनी शक्ति की परीक्षा एक पथिक पर करने का निश्चय किया। पवन ने प्रथम अपनी शक्ति का परिचय देना आरम्भ किया। वड़े जोर से आँधी उठी और मुसलाधार पानी बरसने लगा परन्तु वह पथिक अपने कपड़ों को उतारने के बदले और यत्न से उन्हें लपेटने लगा।

४७. एक जंगली कौवे ने किसी जगह मोर के कुछ परों को पड़े हुए देखा। उसने विचारा कि यदि मैं इनको अपने पंख पर लगा लूँ तो मैं भी मोर की भाँति बन जाऊँ। ऐसा विचार कर उसने मोर के परों को लगा लिया और कौवों के पास जाकर कहा "तुम लोग वड़े नीच और कुरूप हो। अब मैं तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहता हूँ।"

४८. एक दिन वर्षा ऋतु में एक मधुमक्खी अपने छत्ते में बैठी थी। भूख से व्याकुल होकर एक भौंरे ने उस मधुमक्खी के निकट आकर कुछ मधु खाने को माँगा। मधुमक्खी ने उसे

बैठा कर पूछा, "तुमने वसन्त ऋतु में क्या किया था जो आज दूसरे से मधु माँगते चलते हो। यदि उस समय कुछ संचित कर रखते तो ऐसा कष्ट सहना नहीं पड़ता।"

४९. किसी समय दो मित्र एक जंगल से जा रहे थे। दैव-योग से उन्हें एक भालू मिला। उनमें से एक बहुत डर गया। वह अपने मित्र को छोड़ कर पास के एक वृक्ष पर चढ़ गया। मित्र की क्या दशा होगी, इसका उसने तनिक भी विचार न किया। बचने का कोई उपाय न देख कर और भालू से अकेले लड़ना असम्भव समझ दूसरा ज़मीन पर लेट गया।

५०. किसी कछुए की धीमी चाल पर एक खरहे ने ठट्ठा की। कछुआ बोला, "मैं जानता हूँ, आप बड़े तेज दौड़ने वाले हैं। पर तो भी मैं आपको दौड़ में हरा सकता हूँ। आप दौड़ के लिये एक दिन नियत करें और देखें हम लोगों में से कौन जीतता है।" खरगोश ने कहा, "दूसरे दिन की आवश्यकता नहीं है; हम लोग आज ही दौड़ दौड़ें।"

५१. प्राचीन भारत की सती-रमणियों में दमयन्ती भी है। यह विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या थी। एक बार जब यह अपने पिता की वाटिका में टहल रही थी तब एक हंस इसके पास आया। यह हंस निषध देश के राजा वीरसेन के बड़े लड़के नल के रूप-गुण की प्रशंसा करने लगा।

५२. अन्त में कहा—"यदि तुम्हारे योग्य कोई पति संसार में है तो वह नल ही है। देवता लोग भी किसी बात में उनकी बराबरी नहीं कर सकते हैं। नल तुम्हें अपनी पत्नी बनाने के लिये इच्छुक हैं। क्योंकि मैं तुम्हारे रूप-गुण की प्रशंसा उनसे कर आया हूँ। ऐसी दशा में तू मेरी बात मान ले और नल को अपना पति बना।"

५३. एक दिन जब पाँचों पाण्डव वन में घूम रहे थे, युधिष्ठिर को प्यास लगी। उन्होंने समीप के किसी सरोवर से पानी लाने के लिये सहदेव को भेजा। सरोवर के निकट पहुँच कर सहदेव ज्योंही बर्तन को पानी से भरने लगे त्योंही एक यक्ष बोला—"आप बिना हमारे प्रश्नों का उत्तर दिये पानी न छुएँ।"

५४. यज्ञ पूरा होने पर ईश्वर की कृपा से महाराज दशरथ की तीनों स्त्रियों को गर्भ रहा। समय पाकर सबसे पहिले कौशल्या रानी को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम राम रक्खा गया। फिर कैकेयी को लड़का हुआ उसका नाम भरत हुआ। इसके बाद सुमित्रा को दो लड़के उत्पन्न हुए जिनमें एक का नाम लक्ष्मण और दूसरे का शत्रुघ्न रखा गया। चारो लड़कों की सुन्दरता असाधारण थी।

५५. विश्वामित्र नामक एक बड़े ज्ञानी मुनि आधुनिक बक्सर के समीप जङ्गल में रहा करते थे। एक दिन जब राजा दशरथ अपनी सभा में बैठे थे विश्वामित्र वहाँ पहुँचे। राजा उन्हें देख कर अपने आसन से उठ खड़े हुये; मुनि को प्रणाम किया और उनका यथोचित रूप से सत्कार किया। उनको अच्छी तरह खिला पिला कर और एक अच्छे आसन पर बिठला कर राजा ने हाथ जोड़ कर उनसे पूछा, "महाराज, आप यहाँ अपने पधारने का कारण मुझसे कृपा कर कहिये।"

५६. तीन हजार वर्ष के लगभग की बात है कि रेशम का व्यवहार सबसे पहले चीन देश में हुआ। वहाँ के केवल राजा लोग उसके कपड़े पहनते थे। किन्तु समय पाकर वहाँ इतना रेशम होने लगा कि चीन वालों ने उसे संसार के और और देशों में भेजना आरम्भ किया। दूसरे देश के निवासियों ने रेशम का बहुत आदर किया और उसकी माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती गई।

५७. एक दिन बाबू रामदीन सिंह किसी दूकान में किताब खरीदने गये। किताब बेचने वाले ने उचित से बहुत अधिक दाम माँगा। उन्होंने उतना ही दाम देकर पुस्तकें मोल ले लीं जितना दूकानदार ने माँगा था। इस पर एक आदमी ने कहा, "आपने व्यर्थ इतना अधिक दाम दे दिया।" उन्होंने उत्तर दिया, "दूकानदार से दाम कम करने में मेरा जितना समय लगता उतने में मैं दस पेज पढ़ गया।"

५८. एक समय किसी स्त्री ने अपने लड़के को जो विदेश जा रहा था ४०) रुपये देकर यह कहा, "हे पुत्र, प्राण जाय तो जाय पर झूठ न बोलना। विदेश में सत्य ही तुम्हारी सहायता करेगा।" ऐसा उपदेश दे माता ने पुत्र का मुख चुम्बन कर उसको बिदा किया। राह में डाकुओं ने उसे आ घेरा और पूछा कि तुम्हारे पास क्या है। उसने पूछते ही कह दिया कि मेरे पास ४०) रुपये हैं।

५९. प्राचीन भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य्य नामक एक विख्यात और शक्तिशाली राजा पटने में राज्य करता था। इसने अपने राज्य की सीमा सिन्धु नदी तक पहुँचायी थी। यह जैसा स्वयं बुद्धिमान था वैसा ही बुद्धिमान चाणक्य नामक मंत्री भी इसने पाया था। कुटिल नीति में चाणक्य से कम ही लोग बढ़ सकते हैं। चन्द्रगुप्त की बुद्धिमत्ता प्रसिद्ध है।

६०. भोजन और पान के विषय में कुछ कहना अवश्य है। भोजन पुष्टिकारक और बलवर्द्धक होना चाहिये। सदा साधारण भोजन सबसे उत्तम है। रुधिर और माँस को पुष्ट करने वाला आँटा दाल से बढ़ कर और कुछ भी नहीं है। और पान में शुद्ध जल से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है।

परिशिष्ट (च)

मैट्रिकुलेशन परीक्षा

COMPULSORY (1923)

2. Expound and name the samasas contained in any two of the words (रुदितानुसृतिक्रियया, स्वस्वशास्त्रसिद्धान्तदार्ढ्यं, मत्सकलवैभवत्यागे) ।
5. Derive उत्स्मयित्वा, उपहितं, प्रश्रितम्, क्षयः ।
6. Conjugate the roots of रुदिति, प्राप्य and वत्स्यामि in लिट् or लङ् third person singular.
7. (a) Form short sentences in Sanskrit to illustrate the use of अथ, अहो, नूनम् ।
   (b) Join in सन्धि any four of the following:-
   (1) चत्वारः + इमे, (2) तत् + श्रुत्वा, (3) वानरः + आहूतः, (4) चौरैः + अत्र, (5) प्रभृति + एकत्र ।
   (c) Correct the errors in the following:—
   (1) विजयतु राजन्, (2) हवींसि आहर, (3) नगरे अधिवसति, (4) शत्रुं पराजयति राजा ।
8. Translate any five into Sanskrit:—

(1) नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य श्रेष्ठ धर्म है। (2) किसी वन में एक चार दाँत वाला हाथी रहता था। (3) पूर्व पुरुषों से आये हुए घर को छोड़ना आसान (सुसाध्य) नहीं है। (4) अब वर्षा बन्द हो गयी है हम लोग टहलने चलें। (5) राजा अपने ही राज्य में पूजा जाता है पर विद्वान् सब जगह पूजे जाते हैं। (6) क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी अनुपस्थिति (गैरहाजिरी) में तुम्हारे बाप को क्या हुआ है ?

ADDITIONAL (1923)

3. Conjugate the roots of प्रस्तुवन्ति, उपविष्टः and कुर्याम् in लिट् or लङ् third person.

5. Join in सन्धि any three of the following:—
(a) धिक्+इमाम्, (b) क्वचित्+उपविष्टः, (c) यदि+एनम्, (d) हरिः+रक्षति।

6. Derive the words गाम्भीर्य्यं, स्थैर्य्यं।

8. Decline:—सखि (Masculine) in तृतीया विभक्ति; महत् (Masculine) in प्रथमा विभक्ति; अदस् (Neuter) in षष्ठी विभक्ति।

9. (1) Form two Sanskrit sentences, using in each, any one of the following:—
(a) दैववशात् (b) पदानि (c) वैरम् (d) श्रुत्वा।
(2) Give the feminine forms of the following:-
(1) राक्षस, (2) राजा, (3) साधु, (4) सर्वज्ञ।
(3) Make necessary correction in any three-
(1) प्रातरद्य वृष्टिर्बभूव। (2) वर्द्धन्तं ऋणं न उपेक्षेते।
(3) सीता रामेण सह मोदति। (4) स पाठात् विरमते।
(4) Form nouns from any three--
छिद्, था, पत् and हन्।
(5) Form nouns from any three of the following nouns- धैर्य्यम्, भूमि, वेद and वृद्धि।

10. Translate any five of the following into Sanskrit:--
(a) पुष्पपुर नाम का एक सुरम्य नगर है और इसमें नन्द नामक एक राजा रहते थे। (b) अपने बड़े भाई की आज्ञा से

लक्ष्मण ने सीता को वन में छोड़ दिया। (c) राजा भगीरथ की प्रार्थना से गंगा स्वर्ग से नीचे आई (d) यदि हम लोग सूर्य्य की ओर देर तक देखें तो अन्धे हो जाँयगे। (e) वह एक दुष्ट बालक है और सदा स्कूल से अनुपस्थित रहता है। (f) यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम अपने देश के शत्रु समझे जावोगे।

(उत्तर) COMPULSORY 1923.

2. रुदितस्य अनुसृतिः तस्याः क्रिया तया (षष्ठी तत्) स्वस्व-शास्त्रस्य सिद्धान्त तस्य दार्ढ्यं (षष्ठी तत्) सकलं वैभवं (कर्मधा०) मम सकलवैभवं तस्य त्यागः (षष्ठी तत्)
5. उत् + स्मि + क्त्व। (आर्षप्रयोगः) उप + धा + क्त। प्र + श्रि + क्त। त्वि + अच।
6. (a) लिट्—रुरोद। आप। उवास। लङ्—अरोदीत्। आप्नोत्। अवसत्। (b) अस्थि, अस्थिनी, अस्थीनि। पुनः। अस्थ्ना इत्यादि।
7. (a) अथकिम्। अहो ते कार्यकलापः नूनं स आगमिष्यति।
   (b) (1) चत्वार इमे। (2) तच्छ्रुत्वा। (3) वानर आहूत। (4) चौरैरत्र। (5) प्रभृत्येकत्र।
   (c) (1) विजयतां राजन्। (2) हवींषि आहर। (3) नगरमधिवसति। (4) राजा शत्रून् पराजयते।
8. सत्यमेव श्रेष्ठो धर्म इति युधिष्ठिरं नारदः प्राह। कस्मिंश्चिद्वने एकः चतुर्दन्तः गज आसीत्। पूर्वपुरुषक्रमागतस्य गृहस्य त्यागो न सुकरः। वृष्टिर्गता। परिभ्रमणायबहिरस्माभिर्गन्तव्यम्। स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। अनुपस्थिते त्वयि तव पितुः किं जातमिति त्वं जानासि ?

(उत्तर) ADDITIONAL 1923.

3. लिट्—तुष्टाव। विवेश। चकार, चक्रे। लङ्—अस्तौत्। अविशत्। अकरोत्, अकुरुत।

5. (a) धिगिमाम् (b) क्वचिदुपविष्टः (c) यद्येनं (d) हरीरक्षति।

6. गम्भीर + ष्यञ्। स्थिर + ष्यञ्। किम् + अर्हिल् + चित्। नि + अस् + घञ्।

8. संख्या, सखिभ्याम्, सखिभिः। महान्, महन्तौ, महन्तः। अमुष्य, अमुयोः, अमीषाम्।

9. (1) (a) दैववशात् मम व्यापारो नष्टः। (b) मम पदानि स्खलितानि। (c) वैरं मा कुरु। (d) स मद्वाक्यं श्रुत्वा गृहं ययौ।

(2) (1) राक्षसी। (2) राज्ञी। (3) साध्वी। (4) सर्वज्ञा।

(3) (1) प्रातरद्यावृष्टिरभूत्। (2) वर्द्धमानं ऋणं नोपेक्षेत। (3) सीता रामेण सह मोदते। (4) स पाठात् विरमति।

(4) छेदः। यानम्। पतनम्। हननम्।

(5) धैर्यवान्। भौमः। वैदिकः। वृद्धिमान्।

10. (a) आसीत् पुष्पपुरे नाम रम्ये नगरे नन्दो नाम नृपतिः। (b) ज्येष्ठस्य भ्रातुराज्ञया लक्ष्मणः सीतां वने तत्याज। (c) भगीरथनृपतेः प्रार्थनया गंगा स्वर्गादवततार। (d) यदि वयं सूर्यं दीर्घकालं यावत् पश्येम तदा अन्धा भवेम। (e) दुष्टोऽसौ बालकः विद्यालये सदैवानुपस्थितो भवति। (f) यदि यूयमेवं करिष्यथ तदा स्वदेशस्य शत्रव एव भविष्यथ।

स्कूल लीविंग सार्टिफिकेट परीक्षा।

SANSKRIT PAPER (I) 1923.

2. Give the rules of Sandhi in *any two* of the following:—भूमिं स्पृष्ट्वा, वीतरागेणेदम्, यावदेतेन, सर्वोऽपि and विनिद्रोजातः।

3. Decline the bases of *any three* in the 7th Vibhakti only—मांसरुचयः, निद्राम्, जीवन्, तेन, लक्ष्म्या and वणिक्।

4. Derive—स्पृष्ट्वा, श्रुत्वा, अध्यवसितम्, आदिष्टवान् and परिहीयते and conjugate the roots of any three in लङ् and विधिलिङ् 2nd person only.

5. Expound and name the Samasas in *any two* of the following—
मांसरुचयः, पक्षिशावकाः, लङ्केश्वरः; and राजलक्ष्मीः।

6. Change the voice of यदि राजलक्ष्मीर्भोजं गमिष्यति तर्हि जीवन्नपि मृतोऽहम्।

7. Form sentences using *any two* of the following:—(a) वि + धा + ल्यप्। कृ + शतृ + श्या। अभि + इष् + क्त। दृश् + णिच् + त्वा।

8. Correct the following:—तत समेत्य बुद्धिसागरेणाब्रवीत्। एतत्पत्रं ब्राह्मणाय दातव्यः।

9. Translate into Sanskrit:—

(a) उस सरोवर के पास पहुँच कर वानर ने राजा से कहा—जो लोग आधा सूर्य निकलने पर इस सरोवर में स्नान करते हैं उन्हीं को सिद्धि होती है। (b) ऐसा सोचकर वङ्गदेश के राजा ने दिन के तीसरे पहर को अपने मित्र रत्नसेन को बुलाने के लिये अपने अंगरक्षक को भेजा। (c) जुलाहे ने कहा—यदि ऐसा ही है तो मैं अपने घर जाकर अपनी स्त्री से पूछ कर आता हूँ, तब तुम देना।

SANSKRIT PAPER (11)

2. Translate the following into Sanskrit:—

(a) आज दो दिन से मदन और मोहन दोनों में बोल चाल नहीं है। (b) रोटी बना कर रख दो। (c) मुझे देख कर वह अपने स्थान से खड़ा हो गया। (d) आज आप कहाँ चलेंगे? आज क्या है? (e) लड़का सो गया है, उसको जगाना उचित नहीं।

4. Decline the bases—परिवर्त्तिनि, समुन्नतिम्, शरदाम् and शासनः in तृतीया and पञ्चमी only.

6. Expound the Samasas in मालानिर्माणकुशलः and प्रचुरधनाशया।

7. Derive संसार and समुन्नति and conjugate their roots in लट् 3rd person only.

8. correct, the following:—

(a) नाहं मरणं विभेमि। (b) तस्य मनो सुखो नास्ति। (c) सीता रामेण मोदति।

(उत्तर) Paper (1) 1923.

1. सन्धिप्रकरण देखो।

3. मांसरुचौ, मांसरुच्योः, मांसरुचिषु। निद्रायां, निद्रयोः निद्रासु। जीवति, जीवतोः, जीवत्सु। तस्मिन्, तयोः, तेषु। लक्ष्म्यां, लक्ष्म्योः, लक्ष्मीषु। वणिजि, वणिजोः, वणिक्षु।

4. स्पृश् + क्त्वा। श्रु + क्त्वा। अधि + अव + षो + क्त। आ + दिश् + क्तवत्। परि + हा + भावे लट् ते। लङ्—अस्पृशः, अस्पृशतं, अस्पृशत। अश्रृणोः, अश्रृणुतं, अश्रृणुत। अस्यः, अस्यतं, अस्यत। अदिशः, अदिशतम्, अदिशत। अजहाः, अजहीतं, अजहीत। लिङ्—स्पृशेः, स्पृशेतं, स्पृशेत। शृणुयाः, शृणुयातं, शृणुयात। स्येः, स्येतं, स्येत। दिशेः, दिशेतं, दिशेत। जह्याः, जह्यातं, जह्यात।

5. मांसे रुचिर्येषां ते (बहु०) पक्षिणः शावकाः लङ्कस्य ईश्वरः; राज्ञः लक्ष्मीः (६ष्ठी तत्) ।

6. राजलक्ष्म्या भोजः गमिष्येत तर्हि जीवताऽपि मृतेन मया (भविष्यते) ।

7. विधाय गुरुवन्दनम् । कार्यं कुर्वता तेनाहं दृष्टः । स यौवराज्येऽभिषिक्तः । बहुविधानि उदाहरणानि दर्शयित्वा विषयपुष्टिं चकार ।

8. ततः समेत्य बुद्धिसागरोऽब्रवीत् । पत्रमेतत् ब्राह्मणाय दातव्यम् ।

9. (a) तं सरोवरं प्राप्य वानरः राजानं प्राह, अर्द्धोदिते सूर्ये योऽस्मिन् सरोवरे स्नाति स एव सिद्धिं प्राप्नोति । (b) एवं विचिन्त्य वंगदेशाधिपः दिवसस्य तृतीये प्रहरे रत्नसेननाम्नः स्वमित्रस्यानयनाय स्वाङ्गरक्षकं प्राहिणोत् । (c) तन्तुवायः प्राह—यद्येवं तर्हि गृहं स्वभार्यां पृष्ट्वा प्रतिनिवृत्ते मयि दास्यसि ।

(उत्तर) SANSKRIT PAPER (II)

3. (a) आदिनद्वयात् मदनो मोहनश्च न आलपतः । (b) करपङ्क्तिका विधातव्या । (c) मां दृष्ट्वैव स स्वासनादुदतिष्ठत् । (d) क्वाद्य गमिष्यति भवान् ? साम्प्रतं किमस्ति ? (e) सुप्तोऽयं शिशुः न प्रबोधव्यः । 4. तृतीया—परिवर्तिना । समुन्नत्या । शरदा । शासनेन । पञ्चमी—परिवर्तिनः । समुन्नतेः । शरदः । शासनात् । 6. मालायाः निर्माणं (६ष्ठी) तत्र कुशलः (७मी तत्) प्रचुरं धनं (कर्मधा०) तस्य आशया (३ या तत्) 7. सम् + सृ + घञ् । सम् + उत् + नम् + क्तिः । सरति, सरतः; सरन्ति । नमति, नमतः, नमन्ति । 8. नाहं मरणात् बिभेमि । तस्य मनसि सुखं नास्ति । सीता रामेण मोदते ।

ग्रंथमाला-कार्यालय की पुस्तकें